Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

31

२००९

सन् 1952-53

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Pros. Serial Nos. A-4-35.

Subject.

Service Book & Personal file.

Personal file of Mr. Attar Chand

Joined on 1.4.48

Previous References.

Later References.

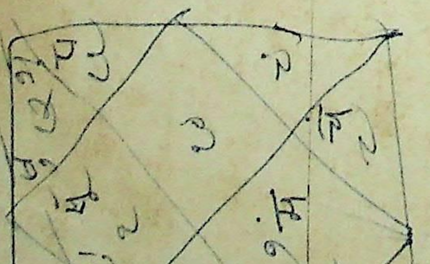

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलम० श्रीमद्राजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंह म. बहादुर C. I. E
सोलन

॥ ॐ ॥

श्रीगणेशायनमः

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीष्टम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु ॥

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्रीआनन्दमयी माता

भारत के विख्यात जन्माङ्गकर्ता
एवं ग्रन्थकार

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

राजा बुधः

मन्त्रिरविः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ महदुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयं

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतञ्च

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २००६, शके १८७४, सन् १९५२-५३ ई०, जयहिन्द सं० ५, (१५ अगस्त से ६)

गुरुवर्य श्री ६ पूज्यपाद कै० बा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी., गणकचक्रचूडामणीत्याद्युपाधिधारिणां एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-विद्वत्पञ्चाननपूज्यश्री ६ पं०केदारनाथसाहित्यभूषणज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्यपं०रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम् । गणितकर्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ ।

बांकीपुर, पटना ❀ मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, नेपालीखपरा, बनारस ❀ किनारी बाजार देहली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ
गतवर्षों की भविष्यवाणियों का सिंहावलोकन	१–२
विद्वत्सु किञ्चिद्विवेदनम्	३
सद्य आरोग्यकरं श्रीसूर्यार्घ्यदानविधानम्	४
दैनिकलग्नसारिणी	५–१०
दैनिकलग्नसारिणी देखने की रीति चन्द्रोदयास्त शंकु से इष्ट की रीति प्रसूतिलग्नविचार बालारिष्ट	११–१३
पुरुष एवं स्त्री जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलादि मातृ-पितृसन्तानादि नाशयोगाः	१४
स्त्रीजातक बालकदन्तोत्पत्तिफल कन्याजन्मनक्षत्रफल	१५
गण्डमूलोत्पन्नबालकजन्मफल	१६
बालकष्टावली नक्षत्रकष्टावली	१७–२०
रोगोत्पत्ती कुयोगाः, रोगविनाड़ी तिथिवार कष्टावली कालाङ्गविभाग	२१
अनिष्टप्रद दान-जप-स्नानौषधी शनिचक्र	२२
गोचरग्रहाणां द्वादशभा[illegible] फलबोधकचक्र	२३
ग्रहाणां दृष्ट्यादिच[illegible]	२४
नक्षत्रराशिज्ञान जन्म[illegible] विशेष विचार	२५
भावी विचार	२६
वर्षाविज्ञानसारिणी अनावृष्टि शान्ति	२७
द्वादशराशियों का मासिक फल	२८–२९
चैत्र शु० १ को वर्षफलश्रवण सृष्टिक्रम	३०
वर्षके राजा आदिका फल विश्वेस्तम्भलाभखर्च	३१–३२
आकाशी कौंसिल का विचार	३३–३४
२४ पक्ष (चैत्रादिमास)	३५–५८
तेजीमंदी निकालने की ध्रुवा	५९
शुभकार्यों के लिये वर्जितकाल, आवश्यक-मुहूर्त, मेलापकसारिणी, विवाहादौ त्रिबलशोधन, विवाह के दशदोष, लग्नशुद्धि, उपयोगी मुहूर्त	६०–७४
पक्की नगप्रश्नफल दशा वर्षलग्नदशमदैनिकग्रह तथा चन्द्रशुद्धाङ्गनमुहूर्तवैदिकनक्षत्रों का विवरण तथा जैनपर्व	७५–१०५
ग्रहणनिर्णय	१०६

॥ आशीराशंसना ॥

जयन्ति श्रीमहाविद्यापदपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥१॥
श्रीदुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनी धर्मधुर वहन् भागवतोत्तमः ॥२॥
बघाटेशः सोलनाख्य'राजधान्यामुदारधीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥३॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥४॥

१ पुरी नवपलान्यस्ति रेवातः सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्गलाद्रि (७१११) मितांगुलपलप्रभा ॥

पञ्चांग कर्ता के सुपुत्र—उपसम्पादक

साहित्याचार्य

श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री—प्रियव्रत शर्मा शास्त्री

बृहत् मार्त्तण्ड पञ्चाग—जिसमें भारत के प्रसिद्ध २ नगरों का दिनमान घटीपल सूर्योदयास्त रेलवे घण्टा मिनट सहित अक्षांश ८ से ३[illegible] को [illegible] सारिणी तथा विद्वानों के [illegible]

अंकदड़ा ज्ञानार्थ अद्भुत विचार

अथ सारणविद्या

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ
५	५	४	४	३	३	४	४	२	२	२	२
ओ	औ	अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज
१	१	५	५	५	४	३	२	१	५	४	३
झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
२	१	५	४	३	२	१	५	४	३	२	१
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
५	४	३	२	१	४	३	२	१	४	३	२	१

अंक निकालने का प्रकार—सुवर्णपुष्प ग्रंथ में लिखा है कि जिस तारीख का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र के नामाक्षरानुसार अंक उपर्युक्त सारिणी में से लेकर उन सबका योग करो तदनन्तर उस योग को ३ से गुणा करके सात का भाग देदो जो शेष बचे उस में गत दिन के आये हुए दड़े के अंक में मिला दो जो आवे वही अंक आनेवाला जानना। उदाहरण—जैसे भरणी नक्षत्र है तो इसके सारिणी के अनुसार अंक लिये तो भ २, र ३, णी १ आए, इनका योग ६ हुआ ३ से गुणा किया तो १८ हुए इसे ७ का भाग दिया तो ४ शेष रहे इस में गतदिन के दड़े का आया हुआ अंक ५ मिलाया तो ९ यह आगे का अंक बना। कोई महापुरुष उपर्युक्त नक्षत्र के प्राप्तांकमें सूर्यचन्द्र के राश्यंक मिलाकर गणित करने का संकेत करते हैं सो अनुभव करके निर्णय करना चाहिये। पंचांग कर्ता)

भृगुसंहिता

हमको भृगुसंहिता का प्राचीन हस्तलिखित चमत्कारी फलादेशवाला सार्वदेशिक खंड मिला है जो ज्योतिषियों का तो जीवनधन ही माना जाता है। हमारी इच्छा इसे भाषाटीका करके छपाने की है कम से कम १ हजार ग्राहक पेशगी बनने पर छपेगा। ग्राहक बनने के लिये ५) भेज कर रसीद प्राप्त करना जरूरी है। जिस पंडित के पास यह ग्रंथ होगा उसे लक्ष्मी की कमी (पैसे की तंगी) कदापि न सता सकेगी। पत्र व्यवहार व पेशगी नीचे लिखे पते पर ही भेजें। पुस्तक विक्रेता—

मे०. लाला बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग द्वारा घोषित गतवर्षों की भविष्यवाणियों का सिंहावलोकन

प्रभु कृपासे श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग सं० १९८५ विक्रमी से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और अपनी शुद्धता तथा अनेक विशेषताओं तथा चमत्कार पूर्ण ९० प्रतिशत सत्य भविष्यवाणियों के कारण अत्यन्त लोकप्रिय होकर अपनी बाल्यावस्था से ही इसने आशातीत उन्नति एवं सुख्याति प्राप्त करके भारतीय पञ्चाङ्गों में उच्चस्थान प्राप्तकर लिया है। इसका वार्षिक मासिक पाक्षिक फलादेश (राजनीतिक सामाजिक और व्यापारिक भविष्य) तेजी मन्दी आदि बराबर मिलते हैं जिनका कुछ दिग्दर्शनमात्र लिख रहे हैं।

(१) सं० १९९० के श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग पृ० ४४ पर लिखा था कि "माघमास में मनुष्य और पशुओं को महाकष्ट प्रजा में उत्पात इसी वर्ष की अपनी उर्दूजन्त्री के पृ० ११ में तो इस कुयोग का स्पष्टीकरण करते हुए स्पष्ट लिखा था कि "पूर्व में १३ जनवरी से १५ जनवरी तक भूकम्प या भीषण अग्नि काण्ड से लाखों रुपयों और प्राणियों की हानि होगी" तदनुसार ऐसा ही हुआ अर्थात् ठीक १५ जनवरी १९३४ (माघ कृ० ३०) को हमसे पूर्व अर्थात्—विहार में भीषण भूकम्प हुआ जिसमें असंख्य प्राणी और लाखों रुपयों की सम्पत्ति नष्ट हुई थी।

(२) सं० १९९[illegible] के इस पञ्चाङ्ग पृष्ठ ३० पर लिखा था कि "किसी दो तीन राष्ट्रों में युद्ध छिड़ने और भीषण क्रान्ति होने की सम्भावना है" तदनुसार इटली और अबीसीनिया का युद्ध हुआ था।

(३) सं० १९९५ वि० के इस पञ्चाङ्ग पृष्ठ २९ पर लिखा था कि "अब ग्रहस्थिति संसारको एक भयावह मार्ग की ओर ले जाना चाहती है" तदनुसार संसार में जो भारी परिवर्तन हुआ और विश्वव्यापी युद्ध की तैयारियां हुई वह किसी से छिपी हुई नहीं है।

(४) सं० १९९६ वि० के इस पञ्चाङ्ग पृष्ठ २८पर लिखा था कि "इस वर्ष शासक वर्ग दुःखित रहेगा"..."शनि भौम अन्योन्य स्थान एवं पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध करेंगे यह दोनों परस्पर कट्टर शत्रु हैं लड़ाई के मुख्य बलवान् तामसी प्रवृत्त के ग्रह हैं यह शासकवर्ग को युद्धादि भयंकर उपद्रव के लिए उत्सुक करेंगे......संसार के कई भागों में युद्ध उत्पात घोर अशान्ति होगी" इत्यादि फलतः ये सब बातें अक्षरशः सत्यसिद्ध हुई अर्थात शासकों में इतनी घबराहट और अशान्ति रही कि इस वर्ष भाद्रपद मास में (१ सितम्बर १९३९ ईसवी को) जर्मनीने पोलेण्ड पर आक्रमण करके यूरोप में महायुद्ध का सूत्रपात कर दिया था और आगे यह अशान्ति बढ़ती ही गई थी। सं० १९९६ वि० के आश्विन कृष्णपक्ष के फलादेश में लिखा था कि "राष्ट्र संचालकों मे परस्पर शान्तिचर्चा चलेगी जो असफल होगी" तदनुसार ऐसा ही हुआ, आश्विन कृष्णपक्ष (अक्टूबर) में जर्मनी और ब्रिटेन में हित समझौते के प्रयत्न आरम्भ हुए किन्तु वे सब असफल रहे॥

(५) सं० १९९७ के श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग की आकाशी कौंसिल के विचार में "इस वर्ष ग्रहों का प्रभाव वैसा ही है जैसा सं० १९७१ (सन् १९१४ ई०) में गत जर्मन महायुद्ध छिड़ने के आरम्भ में था, अतः यूरोपमें युद्धरूपी ज्वालामुखी अब भयंकर रूप में फट निकलना [illegible] नहीं अपितु निश्चित प्रतीत होता है"........ आगे क्रमशः यह विषवृक्ष (युद्ध) खूब बढ़ने लगेगा। इसी पञ्चाङ्ग में आगे पृष्ठ २५ पर लिखा था कि "अमेरिका यूरोपादि एवं दिशा विदिशाओं के राजा लोग भयभीत होकर भागते फिरें" आदि तदनुसार इसी वर्ष सं० १९९७ वि० के आरम्भ से ही जर्मनीनें नारवे बेल्जीयम हालेण्ड लक्जमबर्ग आदि पर भयानक आक्रमण करके घोर संग्राम और भीषण नरसंहार किया बाद इन देशों का निपात हुआ तथा इनके शासकगण राजा राणी मन्त्री आदि मारे मारे भागते फिरे इसी वर्ष ज्येष्ठशुक्ल में महा अशुभ युद्धोत्पातादि लिखा था तदनसार इसी ज्येष्ठशुक्ल में ही फ्रान्स में महायुद्ध हुआ जिसमें लाखों प्राणी मारे गए अन्त में इसी पक्षमें फ्रान्स का पतन भी हो गया यह सब विज्ञ जनोंको विदित ही है।

(६) सं० १९९८ के इस पञ्चाङ्गके पृष्ठ २८ पर लिखा था कि "वर्तमान में जिन शक्ति शाली राष्ट्रों म परस्पर मैत्रीका गठबन्धन दिखाई दे रहा है यह चिरस्थायी नहीं रहेगा आज के मित्र कलको शत्रु बनकर एक दूसरे सर्वनाश की तैयारी में जुट जावेंगे तदनुसार कन्धे से कन्धा भिड़ा अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ रहे जर्मनी रूसकी मैत्री एकाएक २२ जून सन् १९४१ को टूट गई और सहसा शत्रुता धारणकर परस्पर भिड़ गए थे।

(७) सं० २००२ के पञ्चाङ्ग में श्री नेहरूजी की जन्मकुण्डली के फल में हमने लिखा था कि "सं० २००२ ज्येष्ठ तक शुक्रान्तर है तदनन्तर ६ मास का सूर्यान्तर भोगकर भौमदशा प्रवेश होगी जो आपको दशामध्य में भारत का सर्वोच्च नेता बनावेगी" फलतः आजकल भारतके प्रधान मन्त्री के रूप में आप विराज रहे हैं।

(८) सं० २००३ की आकाशी कौन्सिल में लिखा था कि "भारत की उलझी हुई समस्याको परस्पर हल करने के लिए कई उच्चाधिकारियों को भी द्वीपान्तरों से दौड़ धूप करते हुए यहां आना पड़ेगा........"स्वराज्यांश की प्राप्ति अवश्य होगी" तदनुसार यूरोपीय मिशन भारत आया और भारत में राष्ट्रिय गवर्नमेण्ट बनी जिसका किसी को स्वप्नमें भी ध्यान नहीं था॥

(९) गत सं० २००५ के इस पंचाङ्ग पृ० ३ पर लिखा था कि "यद्यपि उद्दण्ड अनार्यों से भारत को हानि पहुंचाने गुप्त व प्रकट रूपसे कई अकाण्ड काण्ड होंगे तथापि अन्त में परिणाम भारत के लिये विजय प्रद ही रहेगा...भारत के शत्रु नतमस्तक होंगे" तदनुसार निजाम मन्त्री लायक अली आदिने अनेक गुप्त षड्यन्त्रों से भारत को हानि पहुंचाने के प्रयत्न किये और प्रकट में दुष्ट रजाकारों ने भी हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार किये और निजाम की फौजने भारतीय सैनिकों के साथ संघर्ष करके अपना बल दिखाया पर अन्तमें इस पञ्चाङ्ग की सत्य भविष्यवाणी के अनुसार निजाम की हार होकर रजाकारों के हौसले गिर गये परिणाम में भारत की विजय रही जिससे भारत के शत्रु नतमस्तक होगये।

(१०) सं० २००७ के कार्तिक कृष्णपक्ष के फल में लिखा था कि यह चतुर्ग्रही-योग है............"किसी महाराजाधिकारीको दुष्ट से खतरा करेगा सावधान" तदनुसार तिब्बताधीश को कम्यूनिष्टों से और तभी नेपाल नरेश को भी अपने ही मन्त्री से खतरा हुआ था जिसे भागकर देहली में शरण लेनी पड़ी थी यह बात किसी को भूली हुई नहीं है इसी सं० २००७ की मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष के फल में लिखा था कि "तिथि ५ के अवस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...त्र और वारियल तेज हो। इस तिथि से ४० दिन के अन्दर किसी प्रसिद्ध सम्मा... की मृत्यु होवे" तदनुसार पञ्चमी के बाद तीसरे ही दिन महामान्य प्रसिद्ध ...रत लोह पुरुष श्रीपटेल की मृत्यु हुई स्मरण रहे कि श्रीपटेल महोदय की असली जन्मकुण्डली हमें नहीं मिली थी स्थूलेष्ट मिला था यही कारण है कि व्यक्तिगत ...में उनका मृत्युसंकेत नहीं दे सके यहां समष्टिगत फलादेश में ग्रहगति का फल बराबर उनपर घटित हुवा है जो कम चमत्कार की बात नहीं आगे सर्वज्ञ तो ईश्वर ही है। फिर भी हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इतना राजनैतिक सामाजिक और व्यापार सम्बन्धी चमत्कारिक भविष्य आपको अन्यत्र किसी पञ्चाङ्ग में नहीं मिलेगा। यदि विश्वास न हो तो श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग के गत वर्षों की फाईल उठाकर देखिये आपको पता चलेगा कि इस पञ्चाङ्ग में बड़े ही स्फुट रूप से गत यूरोपीय महायुद्ध को विश्वव्यापी होने एवं अमेरिका के युद्ध में कूदने का समय तथा पूर्व से भी युद्ध का भय (जापान के युद्ध में आना) तथा अतिवृष्टि से हानि कोठे मकान गिरने का समय संसार का नक्शा बदलना तथा रेल मोटर की दुर्घटनाओं का यथावत् होना एवं व्यापारार्थ रूई गुड़ अनाजादिक विषय में जो जो विचार लिखे थे वह सब ईश्वर की कृपा से ठीक ही मिलते गए और भविष्य में भी पूर्ण मिलने की आशा है। अन्य पञ्चाङ्गों के साथ मुकाबला (तुलना) करके देख लें वर्तमान में भी बहुधा पञ्चाङ्गकर्ता इसीका अनुकरण करके अपना नाम प्रसिद्ध कर रहे हैं। और भी देखिये हमारे लिखे भविष्य को भारत के प्रधान मन्त्री श्री १०८ नेहरू जी ने भी उत्सुकता के साथ पढ़ा है सनातन धर्मी संसार के उदीयमान सुप्रसिद्ध नेता श्री १०५ त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी ने भी लिखा है कि "श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग के भविष्य बहुधा ठीक मिलते हैं मैंने कई बार इसका अनुभव किया है इस पञ्चाङ्ग का गणित सर्वथा शास्त्रशुद्ध और अत्यन्त सूक्ष्म होता है। ग्रहों के उदयास्त और ग्रहणादि इसी पञ्चाङ्ग के ठीक ठीक मिलते चले आ रहे हैं। उदाहरणार्थ गत सं० १९८५ के सूर्य ग्रहणका अन्य सभी पञ्चाङ्गों में जब ग्रहण का मोक्ष लिखा था उस समय श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग में स्पर्शकाल लिखा था, वही यथावत् ठीक मिला। इसी प्रकार सं० १९९० का कङ्कण सूर्य ग्रहण भी श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में सर्व प्रथम लिखा था तदनुसार कुरुक्षेत्रादि में जहाँ जहां लिखा था वहां वहां वैसे ही कङ्कणग्रहण दृश्य हुआ पञ्जाब व राजपूताने के अन्य किसी पञ्चाङ्गों में यह ग्रहण कङ्कणाकृति नहीं लिखा था। गुरुशुक्रास्तोदय तो सदा से ही श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग के ठीक ठीक मिलते आ रहे हैं। कई बार शुक्रबिम्ब उदयास्त के निर्दिष्ट समय पर विद्वानों को प्रत्यक्ष दिखला दिया है। अनेकों विद्वानों के प्रमाण पत्र इस विषय में मिले हैं। देखिये सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा के रजतोत्सव प्रकाशके निर्माता स्वा० पं० लक्ष्मीदत्तदेव ज्योतिषरत्न ऊधमपुर (जम्मू) वालों ने लिखा था कि "मैं श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग को सभी पंचांगों में से उत्तम मानता हूं इसका गणित बहुत शुद्ध है। मैं इसी पञ्चाङ्ग के शुक्रास्तोदयको शुद्ध मानकर प्रत्यक्ष आकाश में देखकर विवाहादिकृत्य करवाता हूं"।

करणनवाङ्कुर ग्रन्थ तथा पञ्चाङ्गकर्ता श्री पं० मल्लिनाथशर्मा चौमाल ज्योतिषाचार्य चूरू बीकानेर से लिखते हैं कि "श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग का गणित शुद्ध पाया गया है शुक्रास्तोदय के विषय में तो काशी के सुप्रसिद्ध विश्वपञ्चाङ्ग जैसे ... में भी गणित ... नहीं होता। किन्तु ... शुक्रोदयास्तादि गणित दृक् तुल्य शुद्ध होता है, इसका मैंने खूब अनुभव किया है"॥ इसके अतिरिक्त शास्त्रार्थ महारथी श्रीमाधवाचार्य जी ने कोल से लिखा था कि "श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग को मैं अपने देश के लिये गौरव की वस्तु मानता हूं पञ्जाब के पञ्चाङ्गों में एक मात्र आपका ही गणित ठीक उतरता है इसका मुझे हर्ष है।"

लाहौर के दैनिक हिन्दी मिलाप ने अपने ७ जनवरी १९३९ क अङ्क म लिखा था कि "दक्षिण भारत में लो० तिलक द्वारा सञ्चालित एक शुद्धपञ्चाङ्ग सूक्ष्म गणित का निकलता है इधर उत्तर भारत में एसे पञ्चाङ्ग की परमावश्यकता थी श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग द्वारा इस त्रुटि को दूर करवाकर श्रीनघाट नरेश जी ने धार्मिक जगत् का बड़ा उपकार किया है"॥ अजमेर के राष्ट्रिय पत्र "नवज्योति" ने अपने १९ नवम्बर १९३८ के अंक में लिखा था कि "श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग पर से जितना ठीक आकाशदर्शन हमने होता देखा है उतना अधिकतर अन्य पञ्चाङ्गों पर से हमें देखने को नहीं मिला, इसके भविष्य भी प्रायः सही निकलते हैं। अखिलभारतीय पञ्चाङ्ग संशोधन कमेटी इन्दौर के अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य विद्याभूषण श्री पं० दीनानाथशास्त्री चुलेट महोदय ने भी इस पञ्चाङ्ग के उदयास्त तथा ग्रहस्पष्ट आदिक को शुद्ध मानकर सम्मानित किया है जो सम्मान आजतक किसी पञ्जाबदेशीय पञ्चाङ्ग को नहीं मिला। और भी सरस्वती आदि के बड़े बड़े सम्पादकों महामहोपाध्यायों तथा ज्योतिषाचार्यादि महानुभावों के विस्तृत प्रशंसापत्र श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग पर प्राप्त हुए हैं। किन्तु स्थानाभाव के कारण हम उनके सारांश को भी लिखने में असमर्थ हैं॥

चरक संहिता हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्री पं० जयदेवजी विद्यालंकार कृत सरल, सुविस्तृत तथा विवेचनात्मक हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिये उक्त श्री जयदेवजी के हिन्दी अनुवाद से बढ़कर आज तक कोई अनुवाद नहीं छपा। यह इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि यह इसका चौथा संस्करण छप कर तैयार हुआ है। सुन्दर कपड़े की दो जिल्दों में सम्पूर्ण पुस्तक का मूल्य ३२) रु० कमीशन काटकर २८) रु०।

मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुक्लास्तोदय के विषय में तो काशी के सुप्रसिद्ध विश्वपञ्चाङ्ग जैसे पञ्चाङ्गों में भी गणित [illegible]
ऐसा क्यों होता- किन्तु [illegible]

विद्वत्सु किञ्चिन्निवेदनम् ।

पञ्चाङ्गकमदः श्रीमन्मार्तण्डाख्यं प्रवर्तितम् ।
देशे विद्वन्मनःपद्मोद्भवे सूर्यायतां सदा ॥ १ ॥

सौरपक्षार्षतिथ्यादिसप्रमाणं सयुक्तिकम् ।
सोपपत्तिकमाम्नातं धर्मशास्त्रमतेन यत् ॥ २ ॥

तदत्र स्वीकृतं येन धर्मकर्मकलापके ।
कालभेदेन वैगुण्यं विद्वत्तल्लजनिन्दितम् ॥ ३ ॥

आर्षानार्षाद्वभौ वादौ प्रवृत्तौ भारते चिरात् ।
तत्रार्षवादिनः पूर्वे परे प्रत्यक्षवादिनः ॥ ४ ॥

प्राच्यं स्थूलं न चाकाशे दृश्यं वेधैर्यथातथम् ।
तद्दोषं मुनिभिः प्रोक्तं "कालभेदोऽत्र केवलम्" ॥ ५ ॥

धर्मप्रमुख्ये राष्ट्रेऽस्मिन् धर्मप्राणजनेप्सिताम् ।
रक्षितुं सर्वदा धर्मक्रियाकालव्यवस्थितिम् ॥ ६ ॥

मान्यैर्नक्षत्रविद्वर्गमौलिरत्नैः सुधार्मिकैः ।
आर्षमेव मतं तावत्संस्तुतं मुक्तकण्ठकम् ॥ ७ ॥

नवीनादृश्यवक्तारो वेधयन्त्रैः स्फुटीकृतं ।
खे प्रत्यक्षभवं सूक्ष्मं गणितं संप्रचक्षते ॥ ८ ॥

तेषां मतिरियं साध्वी कलौ शिल्पयुगे तथा ।
पाश्चात्यसंस्कृतेरेष रागो गूढो दुराहरः ॥ ९ ॥

धर्माधर्मविवेकस्य लेशो यत्र न विद्यते ।
म्लेच्छतायाश्च साम्राज्यं यत्र विजृम्भतेतराम् ॥ १० ॥

तेषां शताब्दपर्यन्तं प्राप्तानां निघ्नतां चिरात् ।
हिन्दुसंस्कृतिसाहित्यसूर्योऽस्तप्रायतामयात् ॥ ११ ॥

[illegible]दयवेलेयं पुनरद्य समागता ।
[illegible]री दृश्यतां सर्वैः पश्चिमा न च भारतैः ॥ १२ ॥

यावत्सारिकला भूया भारते भासततराम् ।
तस्यां तुष्यन्तु ते विज्ञास्तद्द्रुहः कौशिका न किम् ॥ १३ ॥

अस्मद्विशालसाहित्यं जागरूकं जयावहम् ।
संस्कृतिर्विगतप्राया प्राप्तस्थाना भवेत्पुनः ॥ १४ ॥

सर्वैरपि च स्वप्राचां शिक्षागौरवमद्भुतम् ।
ज्ञात्वा तत्सक्रियं कर्तुं यथाशक्तिप्रयस्यताम् ॥ १५ ॥

तदेतद्भारतं भूयादितीशं प्रार्थयामहे ।
मनुर्यं तज्जनुर्यस्मिन्गौरवेणेदमब्रवीत् ॥ १६ ॥

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ १७ ॥

स्मृतयः सत्पुराणास्ते तथा वेदत्रयी च सा ।
किंपुनः सकलं शास्त्रं धर्ममूलकमस्ति नः ॥ १८ ॥

धर्मः सम्मानितो यस्यां भयः पुण्यावहाः क्रियाः ।
यस्यामीश्वरपूजायाः श्रेयःस्त्रिजगदुत्तरम् ॥ १९ ॥

ईशावतरणं साक्षाद्धर्मरक्षणहेतवे ।
यस्यां भवति सा भूमिः पुण्यभूमिः समुच्यते ॥ २० ॥

जन्मना समलंकृत्य याञ्च प्राञ्चो महर्षयः ।
ददृशुस्तपसा तावत्सूक्तान्ध्यात्ममूलकान् ॥ २१ ॥

तेन चञ्चद्गुणं सत्यधर्मप्रतिकृति-स्मृतम् ।
शुद्धं विश्वैर्नमस्कार्यमदसीयं चरित्रकम् ॥ २२ ॥

पाश्चात्यसभ्यताभूतं प्रभूतं परगौरवम् ।
बुधाना धारणा धीषु धेया नैव कदाचन ॥ २३ ॥

ये च काङ्क्षन्ति राष्ट्रस्याभ्युदयं शाश्वतं पुनः ।
तथा यतन्तां ते नाम धर्मः प्रमुखतां व्रजेत् ॥ २४ ॥

जगद्गुरौ भारतेऽस्मिन् शिक्षां संप्राप्तुमिच्छया ।
राष्ट्रान्तरीया आयान्तो गौरवं वर्धयन्तु नः ॥ २५ ॥

अस्माभिरेष साधीयान् सिद्धान्तो रचनान्वितः ।
कृतः प्रकुष्यतामुप्तं प्ररूढं गौरवांकुरम् ॥ २६ ॥

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

कालं नैव विरुन्धानो लोके प्राप्नोति कश्चन ।
विवेको महनीयःस्याद्यो हि तथ्ययुतो भवेत् ॥ २७ ॥

नात्र नो वादिता तावत्केनचिच्चाप्यणीयसी ।
"परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ २८ ॥

प्रभोर्वचनपीयूषं स्वादं स्वादं मुहुर्मुहुः ।
तृप्यन्तस्तर्पयन्तश्च भारतान् सुखमश्नुमः ॥ २९ ॥

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ ३० ॥

राष्ट्रस्वतंत्रतालक्ष्मीः वर्धतामनुवासरम् ।
विभूतिभिः पूरयन्ती पृथिव्या वसुधापदम् ॥ ३१ ॥

इति प्रार्थयते पुष्प-शरशत्रुमहर्निशम् ।
सत्यव्रतः सदा विद्वच्चरणाब्जमधुव्रतः ॥ ३२ ॥

कर्मठगुरु

यह द्विजातिमात्र के लिये नित्यक्रिया एवं कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। इसके आधार पर साधारण पठित जब भी विद्वानों के आगे बैठकर सर्वप्रकार के कर्म निस्संकोच करा सकता है इसकी अद्भुत शैली देखने योग्य है। जप, मन्त्र पुरश्चरणादि के अनेक विधान और सिद्धिप्रद तांत्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्धपुत्रेष्टि विधि और कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। नीचे टिप्पणी में प्रमाण के साथ सब बातें स्पष्ट कर दी गई हैं जिससे सन्देह या भ्रम का कोई स्थान ही नहीं रहता। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक कहीं नहीं छपा। विशेष क्या गागर में सागर भरा हुआ है। मू० ५)।

मोतीलाल बनारसीदास नेपालीखपरा बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सद्य आरोग्यकरं सूर्य्यार्घ्यदानविधानम्

——:०:——

सुदिने कृतनित्यक्रिय आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम अमुकस्य वा अमुक ज्वरादिव्याधिसमूलविनाशद्वारा सद्य आरोग्यार्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं हंसादिसप्तति-नामभिः श्रीसूर्याय सप्तत्यर्घ्यदानमहं करिष्ये ।

इति संकल्प्य भूतशुद्ध्यादि कृत्वा सामान्यार्घ्यं कल्पयेत् । विगृह्य पाणियुग्मेन ताम्रपात्रं सुनिर्मलम् । जानुभ्यामवनीं गत्वा परिपूर्य्य जलेन च ॥१॥ करवीरादिकुसुमैः रक्तचन्दनमिश्रितैः । दूर्वांकुरैरक्षतैश्च निक्षिप्तैः पात्रमध्यतः ॥२॥ दद्यादर्घमनर्घ्याय सवित्रे ध्यानपूर्वकम् ॥ उपमौलीसमानीय तत्पात्रे नान्यदिङ्मनाः ॥३॥ प्रतिमन्त्रं नमस्कुर्यादुदयास्तमिते रवौ । अनया नामसप्तत्या महामन्त्ररहस्यया ॥४॥ एवमर्घ्यं प्रकल्प्य पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रणम्य यथोक्तविधिना प्रत्येकनाम्ना बृहत्पात्रे घटे जले वा अर्घ्यं दद्यात्—तद्यथा—ॐ हंसाय नमः ॥१॥ ॐ भानवे नमः ॥२॥ ॐ सहस्रांशवे नमः ॥३॥ तपनाय नमः ॥४॥ ॐ तापनाय नमः ॥५॥ ॐ रवये नमः ॥६॥ ॐ विकर्तनाय नमः ॥७॥ ॐ विवस्वते नमः ॥८॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥९॥ ॐ विभावसवे नमः ॥१०॥ ॐ विश्वरूपाय नमः ॥११॥ ॐ विश्वकर्त्रे नमः ॥१२॥ ॐ मार्तंडाय नमः ॥१३॥ ॐ मिहिराय नमः ॥१४॥ ॐ अंशुमते नमः ॥१५॥ ॐ आदित्याय नमः ॥१६॥ ॐ उष्णगवे नमः ॥१७॥ ॐ सूर्य्याय नमः ॥१८॥ ॐ अर्यम्णे नमः ॥१९॥ ॐ ब्रध्नाय नमः ॥२०॥ ॐ दिवाकराय नमः ॥२१॥ ॐ द्वादशात्मने नमः ॥२२॥ ॐ सप्तहयाय नमः ॥२३॥ ॐ भास्कराय नमः ॥२४॥ ॐ अहस्कराय नमः ॥२५॥ ॐ खगाय नमः ॥२६॥ ॐ सुराय नमः ॥२७॥ ॐ प्रभाकराय नमः ॥२८॥ ॐ श्रीमते नमः ॥२९॥ ॐ लोकचक्षुषे नमः ॥३०॥ ॐ ग्रहेश्वराय नमः ॥३१॥ ॐ लोकेशाय नमः ॥३२॥ ॐ लोकसाक्षिणे नमः ॥३३॥ ॐ तमोरये नमः ॥३४॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥३५॥ ॐ शुचये नमः ॥३६॥ ॐ गभस्तिहस्ताय नमः ॥३७॥ ॐ तीव्रांशवे नमः ॥३८॥ ॐ तरणये नमः ॥३९॥ ॐ सुमहोरणये नमः ॥४०॥ ॐ द्युमणये नमः ॥४१॥ ॐ हरिदश्वाय नमः ॥४२॥ ॐ अर्काय नमः ॥४३॥ ॐ भानुमते नमः ॥४४॥ ॐ भयनाशनाय नमः ॥४५॥ ॐ छन्दोश्वाय नमः ॥४६॥ ॐ वेदवेद्याय नमः ॥४७॥ ॐ भास्वते नमः ॥४८॥ ॐ पूष्णे नमः ॥४९॥ ॐ वृषाकपये नमः ॥५०॥ ॐ एकचक्ररथाय नमः ॥५१॥ ॐ मित्राय नमः ॥५२॥ ॐ मन्देहारये नमः ॥५३॥ ॐ तमिस्रहन्त्रे नमः ॥५४॥ ॐ दैत्यहन्त्रे नमः ॥५५॥ ॐ पापहर्त्रे नमः ॥५६॥ ॐ धर्माय नमः ॥५७॥ ॐ प्रकाशकाय नमः ॥५८॥ ॐ—हेलिकाय नमः ॥५९॥ ॐ चित्रभानवे नमः ॥६०॥ ॐ कलिघ्नाय नमः ॥६१॥ ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः ॥६२॥ ॐ दिक्पतये नमः ॥६३॥ ॐ पद्मिनीनाथाय नमः ॥६४॥ ॐ कुशेशयकराय नमः ॥६५॥ ॐ हरये नमः ॥६६॥ ॐ घर्मरश्मये नमः ॥६७॥ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः ॥६८॥ ॐ चण्डांशवे नमः ॥६९॥ ॐ कश्यपात्मजाय नमः ॥७०॥ एभिःसप्ततिसंख्याकैः पुण्यैः सूर्यस्य नामभिः । प्रणवादिचतुर्थ्यन्तैर्नमस्कारसमायुतैः ॥१॥ प्रत्येकमुच्चरन्नाम दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवाकरं । एवं कुर्वन्नरो याति न दारिद्र्यं न शोकभाक् ॥२॥ व्याधिभिर्मुच्यते घोरैरपि जन्मान्तरार्जितैः । विनौषधैर्विनावैद्यैर्विनापथ्यपरिग्रहैः ॥३॥ कालेन निधनं प्राप्य सूर्यलोके [illegible] ॥ [illegible] विधानस्य [illegible] ॥

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखे, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे । चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखे । सदैव ऐसा ही करें । सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे । (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें । भोजन करने के बाद आधा घंटा बाईं करवट लेटे, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलाया करें जल पीने बाद बाईं करवट लेते और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें । रोग पास न फटकने पायेंगे । (३) जिस से कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आयेगा । (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जाएगी । (५) शत्रु, रूठे मित्र, या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें, उस पुरुष की मूर्ति नाभि में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें, नाभि में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर करें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी । (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा । (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़निश्चयपूर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी । (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री-पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे । (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएँ पूर्ण होंगी ।

॥ अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः ॥

मंगलामन्त्रः	पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	भ्रामरीमन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले वीरकारिणीप्रसादे फट् स्वाहा	ॐ श्रीधनदे धन्ये स्वाहा	ॐ भ्रामरिजगतामधीश्वरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा

भद्रिका मन्त्रः	उल्कामन्त्रः	सिद्धामन्त्रः	संकटामंत्रः
ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	ॐ उल्के मम रोगं नाशय जंभय स्वाहा	ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	ॐ ह्रीं संकट मम रोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्रम्

दिने	दिने	दिने	दिने	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
प्र॰ प्रहर	द्वि॰ प्रहर	तृ॰ प्रहर	च॰ प्रहर	प्र॰ प्रहर	द्वि॰ प्रहर	तृ॰ प्रहर	च॰ प्रहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अपेराक्षोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१२	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।८	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।४	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अपेराक्षोत्तर घं० मि०

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	•१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।१५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५६	७।१६
२	९।१९	११।१०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, इससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	प्रविष्टि
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२	१
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८	२
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४	३
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०	४
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६	५
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२	६
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८	७
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४	८
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०	९
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६	१०
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२	११
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८	१२
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४	१३
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०	१४
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५	१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११	१६
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७	१७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३	१८
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९	१९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५	२०
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१	२१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७	२२
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३	२३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९	२४
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५	२५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१	२६
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७	२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३	२८
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९	२९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५	३०

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है. उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति---

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं। वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे---वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है अत: मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्---तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं भुजाभ्याम् ॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाडयश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ---जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान को घट्यादि से गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उसमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उसमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति---

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घण्टे मिन्टों को घटा कर जो घंटे मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे अर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन का स्वदेशीय सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घण्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट---१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन---

...किसी स्थान पर अंगरेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिये कि सूक्ष्मेष्ट ...आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे---परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ---परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्याह्न छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुङ्निजेष्टभा शराहताहर्मितिमुद्धरेत्तया। क्रमान्मतापूर्वपराह्णखण्डयोर्द्धयोरवाप्ता गतगम्यनाडिका ॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकु की अंगुल व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करे फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दे, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर दो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रक्खें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष----जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष---माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं' जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८। ३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन---माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४। ३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क---माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याण प्रद है।

सिंह---माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, नमली सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते [illegible]न्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक [illegible] पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ विग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२। ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, १ स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे हो ९० वर्ष जीव।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ [illegible]

में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचार:—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि स अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च न मूल त्रिकोण राशि का केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित। ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिका गृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा—सूर्य की पूर्व चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण बुध की उत्तर गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के मक अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशी भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा, शीघ्र ही दूसरी राशी पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीत तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञाम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहै: स्युरुपसूतिका:—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो उसके अंश देखे। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हो, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्याजोड़ना अन्यथा नहीं [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गतग्रह लग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार——

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडंकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्——षट्त्रिकोण वा लग्न रबि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहैं गर्गवचन परिमाण ॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के पट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिन्ह दरशाहु ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनुवा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद ॥

बालारिष्ट——

दो०——धूनाष्टमतनु पाप खग,बरहैं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगाः——तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय धर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगाः——पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ॥

दुःखदयोगाः——रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख बिस्वावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि [illegible]जताय ॥

[illegible]न्धनयोगाः——क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर [illegible]से कारागार ॥

सुखदयोगाः——अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गेह में परे तो जानो सुख संग ॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीव(नपुंसक)योगाः——दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिब भानु ॥

कुष्टयोगाः——लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून ॥

केमद्रुमः——आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

सर्पवेष्टित योगाः——यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः——चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन का उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे——शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार——जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर——प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ठया भानुभानुप्रकीतिता । नन्दा-[illegible]या-रिक्ता-पूर्णा च तिथयः क्रमात् ॥

तीसका यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती है । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने ।

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	शूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म	९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर.	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावाः		सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकीर्तियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ मातृसुखनाशयोगः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्दमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये ।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ॥

भ्रातृनाशयोगाः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसे योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

संतानसुखनाशयोगः—

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव ॥ पुत्र धर्म अरु लग्न पति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ॥

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पाँचवें गुरु बसै नीच जातमन साई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज ॥

जारजयोगाः—भानु चन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अंष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों, अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के [illegible] २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ स्त्री जातक---क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल हैं, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहँ कुजनीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहै भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होइं वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्य (विष कन्या) योगाः---चौ०---रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय॥४॥ जन्म लग्न द्वैशुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परें शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०---धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्य (विषकन्या) भंग योगाः---जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादि योगाः---ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्काविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगाः---चौपाई---केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ हैं सुत वाके---चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा---कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ हैं तीन॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः---पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास---कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में [illegible]नी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय [illegible] माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र [illegible]मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मंत्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल---यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालक की दन्तोत्पत्ति मास फल---

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छ`में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन फलम्---वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्---

शीर्ष	मुखे	कण्ठे ५	हृदये	बाहु	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानु	पाद	स्थान
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी.
पशुना.	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्र फलम्---

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः॥

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूला	रेवती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक ...ता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिये, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	में	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाहु	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानु	पादे	स्थान
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटी.
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा.	फलम्

अथ मूल निवास चक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थान	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद ...ता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता । शुक्ला ...तुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे कृश्यते महादोषकरो भवेत् । शुभग्रहसमायोगे ...षच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ । शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्म दंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः । जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत ...न्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते । तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तभृद्भिः प्रपूरयेत् । शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥
बालकाम्बापितृस्नानं विप्रैः सम्पादिते सति । जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः । मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाश माप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता के भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	फल

मघा पाद फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ॥

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुखतार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्।

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जाने अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यति में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ।।					स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलिविधान व समय		
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन, ज्वर, अरुचि, अंगशोष ।	नदीके दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर लोहबान	श्वेतभात, ५पूर्णपोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।	राई खस आक के फूलबिल्ली और मनुष्य के बाल
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग, भयकृशता ।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलोंके आटेके सतिये १०	भात एकसेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामें चौरस्तेपर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टा ग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा	निम्बपत्र गोघृत ।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा ।	एकसेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत-ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एकसेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशामें किसी वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसन गो श्रृंग, सांप
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमिलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता ।	तिलचूर्ण एकसेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प ।	भात १ सेर आटेके पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्षके नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	कीकांचली नीम के पत्ते, पुरुष
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज ।	एक सेर चावलों का आटा ।	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठः चामुण्डे सर्वरिचण्डिके ठःठःस्वाहा	औरबिल्ली के बाल, गोघृत ।
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हंसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा ।	नदीके दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना ।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई,
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपर मौनहोकर रखना ।	विडालिकाविधानोक्त	हाथी दांत, घृत ।
अष्टमदिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप ।	जल के दोनोंकिना-रों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५ ।	गेहूं कीरोटी, मसूरकीदालहरासाग छागमांस, संध्यामेंचौरस्तेपररखना	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा ।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी सुहाली उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना ।	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहनहुंफट्स्वाहा	गोश्रृंग, लसुन,
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास ।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुनेचावल, गोघृत, सा-यंकालदक्षिणमें चौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा ।	सांप की कांचली
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता ।	काले उड़दोंका आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेतभात ७ पूड़े, सुहाली ७ सायं व प्रातः दक्षिणमेंचौरस्तेपररखना	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।	निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के
द्वादश दिन मास वर्ष में [illegible]भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप ।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७ मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिणमें चौरस्ते पर रखना ।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय २ मर्दय २ शोषय २ हुं ३ हन २ दुष्टानां ह्रूं ह्रूं फटस्वाहा	बाल, राई, गोघृत ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम् ।

यस्मिनृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिंगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः ।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्या [दतुलं धनञ्च]

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टादनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीरमोदक गुडनैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दरोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देव-स्त्वासवितामध्वानवतु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसि ॐयमाय नमः।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नबडाधीका नैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसिजिन्वति । ॐ अग्नये नमः ॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवे-नआवः । सुबध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विषः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधि तण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्नं सुबध्वं महते क्षत्रायमह-तेज्यैष्ठ्यायमहतेजान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै विषएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणना राजा । ॐ चंद्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभ कृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥६॥	१० हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति-र्जातमदितिर्जनित्वम्। ॐ अदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महा कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीप[illegible] नैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासु [illegible]	१० [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल- मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ सर्प्पेभ्योनमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदन गन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायि- भ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽती तृपन्त पितरः पितरः शुन्दध्वम् ॐपितृभ्यो नमः	१० हजार
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवाद दन्नः भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्यामः ॥ ॐ भगाय नमः ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल- मूलम्	कुक्षिशूल, शिरशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यान्न	तिलाज्य	सुवस्त्र रजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नमः ॥ १२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति- मूलम्	अफारा ऊरु शूल सर्वांग- पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राडबृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वाविहृतम् । वात जूतो यो अभिरक्षतित्म- ना प्रजाः पुपोषपुरुधाविराजति । ॐसवित्र नमः	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव- मूलम्	विचित्रानेक- रोग,अतिकष्ट	केसरअगरगन्धविचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवृ ष.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रियमक्षागौर्नवयोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति- मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्त्रिणो रथासस्ते भिराग हि नियुत्वामसोमपीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा- मूलम्	कुक्षिशूलस- र्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रकृ.वृ. छायापा.दा.वि.भो	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्यपात धियोषिता ॥ ॐ इंद्राग्निभ्यां नमः	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प- मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा.भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृ तं सपर्यत दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश सत् । ॐ मित्राय नमः ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग- मूलम्	व्याकुलतापित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन मनोहर सुपुष्प	तिल तण्डुल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवेहवे सुहवं शूर- मिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन मघवाधात्विन्द्रः ॐशक्राय नमः ॥१८॥	५ हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार- मूलम्	उदरतथामुख- रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्णा.कृ.पिछा पात्र दा.कु.पू.वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा। तांविश्वेदेवऋतुभिःसंवदानःप्रजा- पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः ।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पास- मूलम्	शिरपीडाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पास- मूलम्	ऊरुशूल कटि पीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंमेये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिविषमादयध्वम् ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वां. पीडा त्रि. भय	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यान्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव- मसि विष्णवेत्वा ॐविष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज- मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गोदा. ब्रा.भोजन	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र- मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोपवित्रेण शतधारेण सुप्त्वाकामधुक्षः वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल- मूलम्	सन्निपातमय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा.भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ- सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुण- स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन- मासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपा.)	०	१२	२१	१९	भृंगराज मूलम्	शरीरपीडात्रि व्याकुलतावमन	केसरचंदनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनैवेद्य	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्न श्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृ- थिवीसमुद्रः। विश्वेदेवाःऋतावधोहुवानः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः॥	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बु- ध्न्य)	१०	२०	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसा- र कामला रोग	चंदनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिं सीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्या प्रजननायराजस्पोषायसुप्रजास्त्वा- यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ- मूलम्	चित्तभ्रम उद शू.ज्वर बा.पि.	रक्तचंदनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ.छा.दा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥२७॥	५ हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि विना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है॥

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती हैं। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ओं

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरू करे। विधि–सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशिका, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरू (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरू, दशम भाव में जानू, एकादश भाव में जंघा, और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः														जपनीयमन्त्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुन्थेशकाले

सूर्यादि ग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगानश्येयुर्मंत्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
[illegible]	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति व रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधि बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्लेर्भयं। लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥ १ ॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढसती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्घ्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥ २ ॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६ कंगनी ७।

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान [illegible]

साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिचक्र

इस वर्ष मार्ग. शु. ७ को शनि चित्रा के तीसरे चरण पर अर्थात् तुला राशि में प्रवेश करेंगे जिनका चित्रा नक्षत्र होगा उनके शनि मुख पर होगा फल हानि। ऐसे ही चक्रद्वारा काशीनाथजी के मत से सब नक्षत्रों का फल जानें। शनि का पाद विचार आगे के पृष्ठानुसार देखें।

शनिचक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
चि.	मुख	हानि
स्वा. वि. अनु. ज्ये.	द. हस्त	लाभ
मू. पूषा. उषा.	द. पाद	भ्रमण
श्र. ध. श.	वा. पाद	भ्रमण
पूभा. उभा. रे.	वा. हस्त	रोग
अ. भ.	मस्तक	राज्य
कृ. रो. मृ.	नेत्र	सुख
आ. पु. पु. श्ले. म.	हृदय	लक्ष्मी
पूफा. उफा.	गुदा	मृत्यु
ह.	द. कुक्षि	भय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धिः	धनला.	द्रव्यना.
चंद्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	बंधनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा.	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना-	दौर्मन.	धनला.	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	ग्रहा.
चं. मं. बृ.	सू. बु	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. मं. चं.	बु श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श,	श.	मं बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं,	शत्रवः

यह यन्त्र शनिवार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

शनि–यन्त्र

११	७	१४
३१	११	९
८	१५	१०

अथ ग्रहणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि २।	मा १॥	मा. १	म. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकक्षभोग
आदौ	भांत्ये	भादौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशे प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्टचर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्परागं	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्तं	लाजवर्तं

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती॥ अथ शनैश्चर पाद विचार—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावें उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल हानि॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ १॥ अथ रजतपाद फलम्—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे॥ २२॥ अथ ताम्रपाद फलम्—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे॥ ३॥ अथ लोहपाद फलम्—शरीरपीड़ां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां [illegible]पीड़ाम्। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम्॥ ४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि.	द. भौम मूंगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ग्रहाणां दृष्टयादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्ट ग्रहस्य वर्षे दानोपाय साधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन.वि. पू. भा.	भ. पूफा. पू. षा.	पुष्य. अ. उभा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु: १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	[illegible]			

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशिज्ञाने विशेष:

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशय:	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी,	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीयच०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीयच०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशय:	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीयच०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीयच०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्र[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्यु:कथञ्चन। तत:पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदै: ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दित: । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वर: स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि–नामराश्यो: प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशे: प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशे: प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशे: प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्–निर्णय:—वैश्वप्रान्त्यांघ्रि: श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो । उस प्रकार को प्राय: सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है । अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हों तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये । मूल्य १।) रु० ।

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये । क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है । इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है । उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना ।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है ।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है ।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ०–शे० । द०×मं=यो. शे.—यो=शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है ।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है ।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये ।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना ।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है ।

टिप्पणी—(१) जश्रौर्ज्ञ:, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशि: । कषसंयोगे क्ष:, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशि: । एवं घ्यालारामस्य कुम्भराशि: । (२) यथा–ऋषभदेव: ऋतकराम: लृतराम: । (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं तत: । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने चूडोपनयनं वेद–व्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान–मेषलोन्मोको विवाह: षोडशक्रिया: ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	कारोबार मध्यम, शत्रु-नाश चित्तभ्रम शुभ में खर्च,	लाभ ठीक उत्साह अच्छा, मित्र मिलाप	लाभ मध्यम नीच से भय, चित्त अशान्त वृथा खर्च	रक्त विकार गृहचिंता कारा-बार ढीला सफर में कष्ट	नये कामका विचार वायु पीड़ा गृह की चिन्ता शुभ में खर्च	नीच से लाभ कार्य सिद्धि में रुकावट उदासी मित्रमिलाप
वृष	विवाद में जय, अफसरों से खुशी, नवीन काम में रुचि	कार्यसिद्धि कारोबार ठीक मित्र से खुशी सन्तान चिन्ता	सज्जन मिलाप शिरपीड़ा सफर से कुछ लाभ बन्धु सुख	कार्य सिद्धि पड़ोसी व रिश्ते-दारों से खुशी सफर कष्ट	जायदाद व यात्रा का चिन्ता, लाभ कम अच्छे पुरुष से मेल	कारोबारसे लाभ चित्त अशात बन्धु से संतोष वायु पीड़ा
मिथुन	खर्च से हैरानी, पुत्र स्त्री चिन्ता लाभमें कमी, धर्मलाभ	लाभ उत्तम खच भी ज्यादह उत्साह बड़े बन्धुचिन्ता	अकस्मात् लाभ, अग्नि वा जल काभय धर्म में रुचि चिन्तानाश	धन चिन्ता सोच विचार झगड़े से कष्ट संतति द्वारा खर्च	लाभ खर्च सम गुप्त चिन्ता नये कार्य का उत्साह शत्रुभय	लाभ दीखते हुए भी न मिले पुत्र स्त्री से सुख उदर कष्ट
कर्क	कुटुम्ब में क्लेश, कारोबार अच्छा, सन्तान व स्त्री सुख मध्यम,	वाहन सुख नीच से लाभ खर्च अधिक मासांत में चिन्ता	भाग्योदय में विघ्न बेचैनी लाभसे खर्च ज्यादह रोगभय	कार्य सिद्धि लाभमध्यम मास का मध्य शुभ पित्त पीड़ा	कारोबार से लाभ बंधु-सुख शत्रुनाश उद्यम वृद्धि।	बन्धु व नौकरों से सुख कारोबार मध्यम गुप्त चिता
सिंह	कारोबार की चिन्ता, अचानक हानि, नीचभय गुप्त चिन्ता	कारोबार की चिन्ता सज्जन मिलाप वृथा खर्च वाहन भय	कारोवार खराब, हैरानी मित्र विरोध, स्त्रीपुत्र चिन्ता	लाभ खर्च सम मित्र बन्धुओं से कष्ट उदासी शिर-पीड़ा	लाभ से खर्च विशेष अफसर से भय स्त्री पुत्र चिन्ता	धन मान की चिन्ता व्यर्थ विवाद संतति सुख सफर
कन्या	स्त्रीसुख उत्तम, बन्धुस्नेह वृद्धि, कारोबार की चिन्ता	कुटुम्ब मे क्लेश सफर से भय कारोबार कुछ ठीक	संसार से नफरत पुत्र से संतोष, शत्रुभय, धर्मलाभ	शत्रु जलादिसे भय स्त्री चिन्ता उदर पीड़ा उद्योगहीनता,	वायु विकार पैसे की चिन्ता उत्साह वृद्धि से नया काम	बंधु कष्ट वृथा खर्च इधर उधर की दौड़ धूप
तुला	लाभ में विघ्न, यात्रा, झगड़े आदि में वृथा खर्च चित्तभ्रम	स्वास्थ्य अच्छा श्वेत वस्तु से हानि शत्रुभय गुप्तचिन्ता	हानिलाभसम मास मध्यअशुभ चित्त खिन्न स्त्रीसे संतोष हो	रक्तपित्त पीड़ा स्त्रीसुख राज्य भय वृथा. खर्च अड़चनें	शरीर सुख मध्यम कारोबार ढीला शुभ समाचार सुनें।	लेन देन का झगड़ा सफर में कष्ट रोग कारोबार मध्यम
वृश्चिक	स्वास्थ्य उत्तम भाग्य वृद्धि कारोबार श्रेष्ठ वाहन चिन्ता	कारोबार में कुछ हानि दुस्व-प्न पुत्र स्त्री चिन्ता धर्ममें रुचि	संबन्धियों वा मित्रों से अन-बन, सफर स्त्रीसुख पुत्रचिन्ता	बन्धुद्वारा लाभ कारोबार मध्यम उत्साहपूर्ण वायुपीड़ा	शत्रुनाश राजपक्ष से विजय लाभ अच्छा सफर में कष्ट।	किसी जीव से खुशी कार्य सिद्धि लाभ मध्यम उत्साह
धनु	सन्ततिचिन्ता, कारोबार मध्यमराज्यपक्ष शुभ धर्मलाभ	बन्धुओं से सन्तोष वृथा यात्रा मास का मध्य लाभप्रद	बनेबनाये काम में बिगाड़ इज्जत की चिन्ता लाभमें कमी	धन-हानि उदर तथा शिर में पीड़ा बन्धु मित्र मिलाप	लाभ कम कारोबार गड़बड़ चित्तखिन्न वृथा खर्च	गत मास की अपेक्षा श्रेष्ठ मन कुछ शान्त मित्र बन्धु सुख
मकर	उद्योग से लाभ, स्त्रीसुख, अफ-सर से खुशी शरीर निर्बल	मित्रलाभ धोखे का भय उन्नति में विघ्न सन्तान कष्ट	लाभ अच्छा वाहनसुख नेत्र व मस्तक पीड़ा संतति सुख	विवाद में जय कारोबार मध्यम अस्वस्थता जलभय	शरीर में पीड़ा मित्र बन्धु की चिन्ता लाभ अच्छा पशुभय	कारोबार उत्तम वायुविकार भाग्योदय खुशी पशु लाभ
कुम्भ	बन्धुचिन्ता लाभ में रुकावट स्वास्थ्य खराब, वृथा खर्च	जमीन मकानकी चिन्ताकारो-बार मध्यम, रक्त पित्त पीड़ा	गुप्त चिन्ता, गतमास से लाभ अच्छा बन्धुविरोध, स्थानान्तर	उद्योग में शिथिलता लाभ कम बन्धु कष्ट धोखे का भय	शत्रुभय मित्र वियोग बने बनाये काम में बिगाड़	लाभ मध्यम राजभय सफर पुत्र स्त्री सुख गुप्तचिंता
मीन	लाभ मध्यम स्त्री के कारण कष्ट पशुभय मित्र मिलाप	यात्रा से कष्ट लाभ उत्तम खर्च भी विशेष शत्रुभय	वृथायात्रा, लाभमध्यम हिम्मत पूर्ण, नये कार्य का विचार	रोग भय कारोबार मध्यम संतान व शत्रु चिन्ता	लाभ अच्छा चित्त प्रसन्न राज-पक्ष शुभ स्वास्थ्य कुछ ठीक	धार्मिक कृत्य में उत्साह लाभ अच्छा शुभ खर्च जीव चिंता

नोट—उपर्युक्त द्वादशराशियों का फल सामूहिकरूपेण स्थूल मान से मिलता है, सूक्ष्म ठीक ठीक मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशय:	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	स्वास्थ्य मध्यम बंधुसुखशत्रु नाश कारोबार में तरक्की	धन लाभ शुभ खर्च शत्रु हानि रोग भय संतति कष्ट	बर्चेनी होकर शान्ति लाभ ठीक पशु वा वाहन सुख हो	शरीरसुख उत्तम लाभ मध्यम स्त्रीसुख धर्म लाभ।	लाभ अच्छा, चिन्ता प्रद समाचार यशवृद्धि व्यर्थ खर्च	स्वास्थ्य मध्यम स्त्री पुत्र चिंता लाभ उत्तम जाने आनमें कष्ट,
वृष	लाभ उत्तम शुभ में खर्चस्त्री पुत्र चिंता खर्च से हैरानी	कुटुंब से क्लेश अंगपीड़ा बंधु चिन्ता लाभ उत्तम सफर	स्वास्थ्यठीक गुप्त चिन्ता लाभ खर्च सम नये कार्य से लाभ	शत्रुनाश कार्यान्तर का विचार शुभ में खर्च लाभ अच्छा।	स्वास्थ्य की चिन्ता घरेलु मामले से परेशानी लाभ उत्तम	नेत्र वा शिर में विकार शत्रु नाश मित्र मिलाप यश लाभ
मिथुन	शत्रु भय लाभ मध्यम क्रोध अधिक राजमान बंधु सुख	कारोबार मध्यम यश व धन की चिन्ता शरीर स्वस्थ	खर्च से हैरानी लाभ उत्तम पशु पीड़ा उदर में पीड़ा।	पशुलाभ कारोबार उत्तम धर्म में प्रवृत्ति शत्रुनाश।	शत्रुनाश विवाद में जय सफर पुत्र चिंता ऐश्वर्य वृद्धि	उत्साह वृद्धि स[illegible]क वा पुत्र से प्रसन्नता रोग भय।
कर्क	वायुपीड़ा कारोबार के नये विचार ठगों से सावधान	स्त्रीपीड़ा कार्य सिद्धि लाभ खर्च सम बड़े पुरुष से भय।	लाभ होकर जाता रहे वृथा कलंक व यात्रा शत्रु नाश।	मित्रादिक से मदद हो लाभ-कम कार्य सिद्धि में विघ्न।	कारोबार कमजोर घरेलु फिकर अचानक यात्रा	दुःस्वप्न शिरपीड़ा गतमास की अपेक्षा लाभ अच्छा।
सिंह	किसी झगड़ेमें मत पड़ोलाभ से खर्च ज्यादे धर्म में रुचि	शत्रु पीड़ा मस्तक व हृदय में कष्ट लाभ कम मित्र मिलाप	लाभ साधारण स्त्री कारण खर्च वाहन और दुष्टसे भय।	अधिक परिश्रम से भी लाभ कम बंधु सुख वृथा यात्रा	चित्त उदास अकस्मात् कुछ लाभ वायुपीड़ा बंधु विरोध	इच्छितकार्य न होने से चित्त खिन्न विवाद में जय चोरभय
कन्या	शत्रु से सावधान पशु पीड़ा मित्रबंधु चिन्ता यात्रामें कष्ट	शरीर कमजोर चित्त चचल किसी की सहायता प्राप्त हो।	चित्तभ्रम घरमें क्लेश तरक्की में रुकावट लाभ कम।	यात्रा कार्य सिद्धि मानहानि मस्तक व पैर में रोग।	धर्म कर्ममें अरुचि आलस्य वृद्धि चित्त अशान्त लाभ कम	लाभसे खर्च अधिक कोषमें कमी स्वास्थ्य ठीक सफर।
तुला	वृथा विवाद कारोबार की चिन्ता नेत्र वा शिर में पीडा	लाभकम धर्म में रुचि शत्रु पीड़ा वायु विकार रथयात्रा	खर्च ज्यादे मित्र चिंता विवाद में पराजय अंग पीड़ा	उचित खर्च होते हुए भी तंगी गृह चिंता कारोबार सुस्त।	विवाद भय लाभमें कमी बन्धु चिन्ता शरीर अस्वस्थ	कष्टसे लाभ नीचसे भय गुप्त चिन्ता वृथा यात्रा पशुपीड़ा
वृश्चिक	कारोबार उत्तम गुप्तचिन्ता शत्रुभय संतति कष्ट।	प्रिय वस्तु की चिन्ता लाभ श्रेष्ठ चौर भय मान वृद्धि।	संतति कष्ट कारोबार अच्छा शरीर स्वस्थ बंधु सुख।	गुप्तांग में [illegible]ड़ा मानसिक क्लेश चोरभय लाभ मध्यम	अचानक हानि दुष्टभय यात्रा से लाभ शिर छाती में रोग।	राजपक्ष मध्यम उदर विकार कारोबार ढीला शत्रु भय
धनु	संतति सुख भाग्य वृद्धि सफरमें कष्ट शुभ में खर्च	व्यापार से लाभ बन्धु चिन्ता शरीर नीरोग सत्समागम	भूमि मकान की चिंता लाभ होकर कम रहे बंधु विरोध	मानवृद्धि राज्य से सुख वायु पीड़ा लाभ उत्तम पुत्र सुख।	किसी की बिमारीमें खर्च सफर लाभ अच्छा स्त्री से अनबन	व्यापारादि से लाभ चित्त में उत्साह सन्तति सुख सफर
मकर	कारोबार ठीक अचानक यात्रा स्त्री द्वारा खर्च उदर पीड़ा	विशेषखर्च बन्धु सुख राज पक्ष से जय स्वास्थ्य मध्यम	लाभ उत्तम धर्म में रुचि नये कार्य का विचार शत्रु भय	कार्य सिद्धि सफर कारो-बार ठीक।	वायु पीड़ा हैरानी लाभ खर्च संमान कारोबार ठीक।	धर्ममें रुचि कारोबारमें वृद्धि उदर पीड़ा राजमें विजय।
कुंभ	स्त्री सुख वृथा विवाद नये कार्य से हानि राज व शत्रु भय	लाभ होकर भी न मिले यशकी चिन्ता वृथा सफर स्त्री सुख।	मासमध्यमें लाभ श्रेष्ठ यात्रा में कष्ट दुःस्वप्न वृथा विवाद	अशुभ विचार लाभ अच्छा विलास सुख नौकर की चिंता।	लाभ अच्छा शुभमें खर्च मित्र बन्धु सुख उत्साह वृद्धि।	वायु विकार कारोबार से लाभ बन्धु कष्ट परिणाम शुभ
मीन	लाभ ठीक पुत्र सुख स्त्री व यशकी चिन्ता मित्रसुख दु स्वप्न	कफ वायुपीड़ा लाभ मध्यम मासान्त में कोई फिकर।	लाभ अच्छा शुभ समाचार से खुशी स्त्रीद्वारा व्ययमान बढ़े	नेत्र व मस्तक में रोग लाभ मध्यम पुत्रादि की चिन्ता।	उद्योग करने पर भी लाभ कम उदर वा शिरमें कष्ट	गत मासकीअपेक्षा लाभ अच्छा शत्रु नाश सफर बन्धु सुख

नोट—उपर्युक्त द्वादशराशियों का फल स्थूल रूप से मिलता है, सूक्ष्म ठीक ठीक मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यका आर्द्रा प्रवेश सामयिक फलविचार—

शनिवार को इष्ट घटी २९।१८ पर वृश्चिक लग्न में श्री सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होंगे। उस समय तात्कालिक तिथि ३०है फल—युद्धमें प्रवृत्त दोनों पक्षों के राजाओं को हानि रहे। वार शनिफल—संसार में अशान्ति का साम्राज्य रहे। नक्षत्र मृगशिर का फल—अन्न वस्त्र घृत की उत्पत्ति विशेष हो। योग गण्ड है फल-प्रजामें प्रसन्नता हो। समयफल—कहीं कहीं खेतियों में नुकसान पहुँचे अन्न तृण महंगा हो। लग्नफल—धान्य की उत्पत्ति मध्यम हो। मष राशिस्थ गुरुफल—सुभिक्ष हो राजाओं में विग्रह वस्त्र सुवर्ण चान्दी तांबा कपास सस्ते हों।

स्तम्भचतुष्टय विचार—इस वर्ष जलस्तम्भ का सम्पर्क घटचादि ३६।१७ है अतः वर्षा यू० पी० पंजाब में प्रायः अच्छी होगी राजपूताने व जांगल देश में स्वल्प होगी। तृण का स्तम्भ ४८ घटी के आसन्न है अतः घास की उत्पत्ति अच्छी होगी। और वायु स्तम्भ का अभाव है अतः वायु का वेग अधिक न होगा। अन्न का स्तम्भ केवल २ घडी मात्र है अतः अन्न की उत्पत्ति बहुत कम होगी।

आर्षमान (वर्षरक्षा के चार किले) पहिले आर्ष गत पौष की अमावस मूल का २० विश्वे के लगभग है। दूसरा आर्ष अक्षयतृतीया रोहिणी का १५ विश्वे है, तीसरा श्रावण की पूर्णमासी को श्रवणका १४ विश्वे हैं। चौथा आर्ष कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका का किञ्चिन्मात्र भी नहीं है अतः वर्ष के चारों आर्ष मान देखते हुए ज्ञात होता है कि यह वर्ष प्रजा के लिये सर्वथा सुखशान्तिप्रद सिद्ध नहीं होगा। गृहस्थों को नई नई उलझनों का सामना करना पड़ेगा।

अखै तीज रोहिणी नहिं होई। | राखी श्रवणों हीन विचारो। | महीमाह खलबली प्रकाशे।
पौष अमावस मूल न जोई॥ | कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो॥ | कहे भड्ली साख विनाशे॥

॥ अथ लाभव्ययचक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४	लाभ
५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८	व्यय

लाभव्यय देखने की रीति—लाभ और व्यय के अंकों को जोड़कर एक घटावे, और ८ का भाग देवे शेष १।२।६।७ बचे तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।०० बचें तो लाभ बहुत कम होवे, और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्

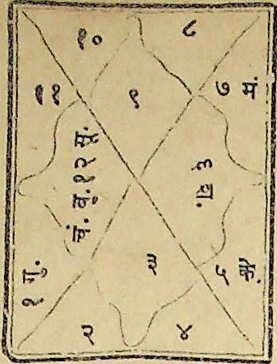

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुं०

मेषलग्नम् (जगल्लग्नम्)

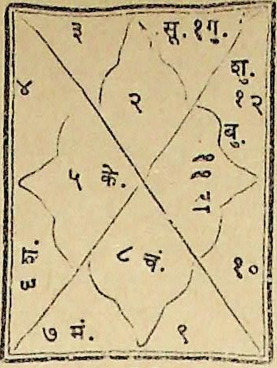

आकाशी कौंसिल का विचार

आर्द्राप्रवेशलग्नम्

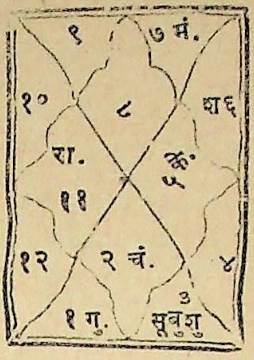

स्वतन्त्र भारत के षष्ठ वर्ष प्रवेश की कुं०

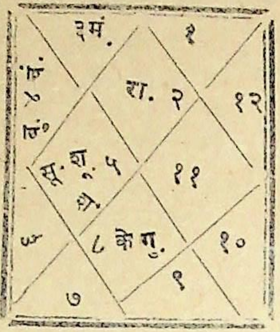

ता० १५ अगस्त सन् १९४७
इष्ट ४५।२०

विमृश्य ग्रहसद्गतिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥

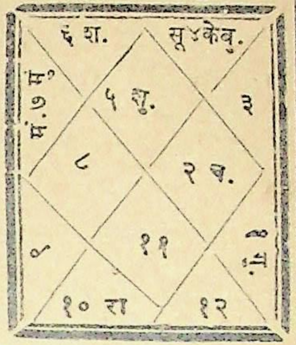

ता० १५ अगस्त सन् १९५२
इष्ट २।५८

इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद) के राजा मन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्ष विचार पूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों के वर्ष प्रवेशादि लग्नों और शकुन शास्त्र व सूक्ष्म ग्रह योगों को ध्यान में रखते हुए तथा तत्तद्देशीय राष्ट्रनायकों की दशा वर्ष प्रवेश आदि अनेक प्रकार की ऊहापोह के अनन्तर श्री प्रभु कृपा से ज्ञात होता है कि भारत में अब परस्पर विरोधात्मक नीतियाँ देशकी आशाजनक शुभ परिस्थितिको छिन्न भिन्न करने पर उतारु होंगी, जो शुद्धान्तःकरण दयालु देश भक्तों को पग पग पर चिन्ता कष्टप्रद प्रमाणित होती रहेंगी। वर्ष लग्न में शनि और वर्षेश लग्न में भी दशमें राहु की स्थिति है अतः जनता जीवनोपयोगी वस्तुओं के अभाव के साथ साथ पूंजी का भी कष्टप्रद अभाव अनुभव करेगी। पूंजी और करैन्सी के भी झगड़े होंगे, बेकारों की परिस्थिति सरकार को प्रधान चिन्ता का कारण बनेगी। स्व० भारत की वर्ष कुण्डली में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...तथा सामाजिक विषयों में महत्व पूर्ण क्रान्ति होगी। उच्च-वर्णों को शारीरिक व मानसिक कष्ट बहुत होंगे। आत्म हत्याएं भी हों। विश्व में प्रायः सर्वत्र शान्ति का अभाव रहेगा। कम्युनिस्ट पूरे एशिया पर फैलने का भगीरथ प्रयत्न करेंगे। स्वतन्त्र भारत के वर्ष में नवमें गुरु हैं यह भारत की जनता में धार्मिक जोश उत्पन्न करेंगे। कई अचिन्तित घटनाओं से सर्व साधारण जनता में अचंभा होगा।

सौराष्ट्र राजपूताना सिंध का पूर्वीय विभाग कलकत्ता देहली दक्षिण हैदराबाद इन प्रान्तों की जनता में खून चोरी डाके तथा सांप्रदायिक संघर्ष से आतङ्क बना रहेगा। इस वर्ष जिसे शनि राहु अशुभ होंगे, उसके घर में दूध देनेवाले पशुओं की हानि होगी। उन्हें चाहिये कि श्री महावीर जी की आराधना करें।

यह वर्ष राष्ट्रिय दूतों और राजकीय महापुरुषों को अशुभ और फौजी ठेकेदारों को लाभप्रद रहेगा। वर्ष के मध्यमें ब्रह्मा चीन जापान में प्रकृति कोप भूकम्पादि से असंख्य प्राणियों की हानि होगी। उधर जर्मनी में फिर नाजी पक्ष जीवित सा होने लगेगा। साम्यवाद को मिटाने में असफल प्रयत्न होगा। भूगोल के दक्षिण विभाग में वैज्ञानिक लोग विष जीव अणु आदि से भयंकर हानि पहुंचाने के प्रयोगों का सफल अन्वेषण करेंगे।

भारतीय प्रान्तों के शुभाशुभज्ञानार्थ कूर्म चक्र

रे. अश्वि. भ. इन्द्र प्रस्थ हरिद्वार कुरुक्षेत्र	आर्द्रा. पुन. पुष्य पंजाब, गौड़, मगध, हस्तीनपुर	श्ले. म. पूफा. अंग, बंग, कलिंग, कौशल, बिहार, आसाम
ध. पूभा. उभा नेपाल, काश्मीर केदार खंड	कृ. रो. मृ. साकेत, मिथिला, कौशाम्बी	उफा. ह. चि. किष्किन्धा, महेन्द्र दर्दुर
उषा. श्र. श. गुजरात, मरुस्थल सौभाग्य	ज्ये. मू. पूषा. मालवा, उज्जैन, सिन्धु सौराष्ट्र	स्वा. वि. अनु. कच्छ, नासिक कोङ्कण, महाराष्ट्र

अमेरिका—ग्रह-स्थिति से इस वर्ष ज्ञात होता है कि अमेरिका सर्व-प्रकार अपनी बल वृद्धि करता रहेगा। मजदूर पार्टी में असन्तोष की ज्वाला धधकेगी। रिपब्लिकन पार्टी की सत्ता कमजोर करने के लिए अनेक षड्यन्त्र होंगे। शासक वर्ग की युद्ध की ओर प्रगति रहेगी। और स्वयं आक्रमणात्मक नीति अपनावेगा। एशिया खण्ड में प्रभुत्व स्थापित करता हुआ अन्त में स्वयं परस्पर गृह-युद्ध जैसी स्थिति में जा पड़ेगा। कार्तिक से यहां के राजमहलों व कारखानों में अग्निकाण्ड व विस्फोटकद्रव्यों से हानि और मित्रराष्ट्रों से मतभेद क योग हैं। वैशाख में यहां की प्रजा भययुक्त रहे। आषाढ़ के बाद भयंकर दुर्घटनाएं हों। रशिया से कटुता बढ़े।

जापान—इस वर्ष जापान में औद्योगिक संस्थाओं में वृद्धि होगी। व्यापार से ...भ आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हो धीरे २ युद्ध के वातावरण बनने का प्रसंग उप-

किस राशि को ग्रहविशेष से किस किस देश का शुभाशुभ देखना चाहिए। उसका चक्र

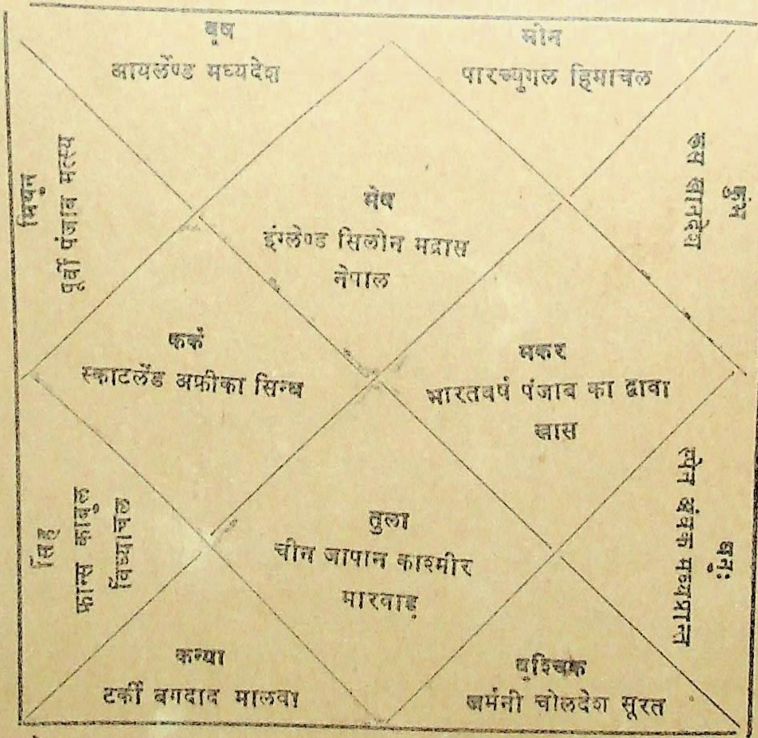

स्थित होगा परन्तु युद्ध म अभी प्रत्यक्षभाग नहीं ले सकेगा। आश्विन शुक्ल ६ (२५—९—५२) के पश्चात जापान पर साम्यवादियों का आक्रमण संभव है। जिससे प्रजा में भारी आतंक और हानि हो।

लालचीन—यहां का मन्त्री मण्डल बलवान् होगा। और उसकी योजनाएं सफल होंगी। साम्यवाद की पुष्टि हो।

रूस—इस वर्ष इस देशपर शनैश्चर का प्रभाव है। जिससे सुख शांति में विघ्न उपस्थित होगा। गुरु गति के कारण हानि सहकर भी यह युद्ध नीति में प्रगति शील ही रहेगा। अभी कुछ काल विश्वयुद्ध से पृथक् रहने के विचार से मायावी ढंग से परस्पर शान्ति की बातचीत करेगा। आषाढ़ शु० १ के अनन्तर इसके शत्रु इसके समीपस्थ या इसके मित्र राष्ट्रों पर आक्रमण करें ऐसा संभव है। तत्पश्चात् इसका भी प्रत्याक्रमण होगा। इससे पहले मास्को में अग्रगण्यों की सम्मिलित मन्त्रणा भी होगी।

इंग्लैण्ड—इस वर्ष इस देश की आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। किसी अग्रगण्य नेता व अधिकारी का स्थान खाली हो। व्यापारिक क्षेत्र में प्रायः हानि ही रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

[illegible] के बाद यूरोप में चिन्ताजनक स्थिति उत्पन्न [illegible] के द्वारा अन्यराष्ट्रों से सुलह कर ले ऐसा संभव है। ब्रिटेन के भाग्य का सितारा वि० सं० २०१४ तक गिरता चला जावेगा।

पाकिस्तान—इस वर्ष इस देश के चीन, काबुल और भारत के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। परस्पर और कटुता बढ़ेगी। कन्या का शनैश्चर और मेष का गुरु इसकी आक्रमणात्मक नीति बराबर बनाए रक्खेंगे। जिससे लाभ के बदले हानि होगी। जनता द्वारा किसी शासक का कड़ा विरोध होगा। और किसी प्रधान व्यक्ति की जुदाई का शोक सहन करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति भारी कमजोर होगी। जनता में कष्ट निराशा अव्यवस्था फैलेगी। पूर्वी पाकिस्तान में नये अधिकारियों को हैरानी उठानी पड़ेगी। जनता से अनबन रहे। पाकिस्तान के विचारों को शनैश्चर २०११ वि० तक बिगाड़ रक्खेंगे। पता नहीं, शनैश्चर देवता क्या क्या गुल खिलाएगा।

भारत सरकार—भारत की प्रधान प्रभाव राशि पर राहु और मेष में गुरु बैठे हैं जो भारत की विदेशीय नीति और शासन में विशेष परिवर्तन के सूचक हैं। वर्ष के धन-स्थान में शनि और बुध द्वादश स्थान में पड़े हैं जो सरकार की आर्थिक स्थिति अभी सुधरने न देंगे। फिर भी अन्य आश्रित होकर उद्योग धंदों में वृद्धि होगी। कहीं उत्पादन केन्द्रों में असन्तोष होकर हड़ताल गोली काण्डादि होंगे।

अन्तः कलह के बहुधा योग पाये जाते हैं। फिर भी सरकार की उच्च योग्यता के कारण अन्यदेशों में भारत की ख्याति तथा कीर्ति बढ़ेगी। एक बार विषकुम्भ पयोमुखवाले कुटिल राष्ट्रों से सम्बन्ध बिगड़ने की स्थिति आ जावेगी। वर्ष में मंगल राहु की स्थिति उपद्रववालों व साम्प्रदायिकता को उभारनेवालों को सरकार द्वारा दबा देने का सफल प्रयत्न करेगी। स्वतन्त्र भारत की वर्ष कुण्डली में छठे राहु भौम से दृष्ट पड़े हैं अतः भारत के शत्रु हानि उठाकर हतोत्साह होंगे। भारत के शत्रुओं की चालें निष्फल होंगी। कार्तिक शु० ८ बाद भारत का किसी राष्ट्र से समझौता हो। अन्न की समस्या इस वर्ष भी खराब रहेगी। सरकार को देशान्तरों से अन्न मंगाना ही पड़ेगा।

वैशाख से श्रावण के मध्य कोई सरकार के प्रमुख पद से अस्वस्थतावश पदत्याग या विश्राम लेवें ऐसा योग बना है।

कांग्रेस—इस वर्ष यद्यपि कांग्रेस की वर्ष कुण्डली के अनुसार कांग्रेस की प्रतिष्ठा में कुछ न्यूनता के योग हैं फिर भी बुध गुरु प्रभाव बलात् कांग्रेस की सत्ता बलवान् रहेगी। ग्यारह प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्री मण्डल ही बनेंगे। तीन प्रान्तों में विरोधी पक्ष से सम्मिलित मन्त्रीमण्डल बनेंगे। जिनमें कांग्रेस विरोधी प्रधान होंगे। केन्द्रीय सरकार में बहुमत कांग्रेस का ही रहेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—इस वर्ष आकस्मिक उत्थान होगा हिन्दुत्व की रक्षा के लिये इनकी ओर से विशेष प्रयत्न होंगे हम गतवर्ष के पञ्चांग में लिख चुके हैं कि श्री गोलवलकर महोदय आगे के तीन वर्षों में उच्च नेता माने जायेंगे सो ग्रहस्थिति के पुनः विचार से भी यही सिद्ध है।

शासक व, नेता लोग—श्री राष्ट्रपति के जन्म लग्न की राशि में छम है कोई [illegible] समस्याएं खड़ी होंगी। स्वास्थ्य में वात, कफ कष्ट देंगे विश्राम की आवश्यकता पड़ेगा। श्री नेहरूजी—इस वर्ष आपके भाग्येश गुरु का गोचर भ्रमण जन्म के भृगु से दृष्ट राज्यस्थान में रहेगा जो अन्य राष्ट्रों के कुछ शासकों से आपको कठिन लिखा पढ़ी करने पर उद्यत करेगा। अन्त में परिणाम आपको यशस्वी करेगा। देशान्तर यात्रा के भी योग हैं। वर्ष के पूर्वार्ध में आपको सावधानी चाहिये। त्या. मू. श्री गो. गणेश दत्तजी—इस वर्ष के पूर्वार्ध में जनहित कार्यों में आपको अच्छी सफलता मिलेगी यश भी बढ़ेगा। फिर उत्तम लाभ के बाद वाजबी खर्च करते हुए पीछे कुछ तंगीका अनुभव होगा। इस वर्ष जनता में नये नये नेताओं की वृद्धि होगी कुछ पुराने नेता भी पुनः कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होंगे। आषाढ़ के आसन्न ग्वालियर नरेश को और पौष के करीब मेवाड़ नरेश को तद्देशीय प्रधान को कष्ट हो।

भारत की वर्षा वायु—इस वर्ष वायु के तुफानों (वातक्षोभ) से वृक्षों को हानि और कई प्रदेशों में असामयिक वर्षा होगी। ज्येष्ठ प्र० २८ तक गर्मी खूब पड़े। आषाढ़ शु० १० से श्रा० कृ० ७ तक आकाश में बादल चाल खूब रहेगी। ज्ये० कृ० ७ के बाद गर्मी से बढ़ा हुआ तापमान बूंदाबांदी से कुछ कम होकर फिर बढ़ जायगा। श्रा० शु० ९ से भाद्र० कृ० ११ तक भारत में भारी वर्षा होगी। भाद्रपद में तो झड़ी लगकर ५ वा ७ दिन ऐसी वर्षा होगी कि त्राहि त्राहि करा देगी। कई जगह मकानों के नीचे जीव दबकर मरेंगे। किसानों के पशु भी नष्ट हों। आसाम बङ्गाल पञ्जाब बिहार में नदियों की बाढ़ से जन-धन की हानि के साथ रेलवे लाइन को भी हानि पहुंचेगी। शीतकाल में कई प्रदेशों में वर्षा के अभाव से वा कोहरे ओले आदि से फसल को हानि पहुंचे।

इस ग्राम में वर्षा कब होगी, इसका विचार—

ग्रामभंसौम्यनाड़ीस्थं तत्र चन्द्रसितौ स्थितौ।
क्रूरयोगे महावृष्टिरल्पा क्रूरस्य दर्शने॥

जिस ग्राम का नक्षत्र सौम्यनाड़ी (आर्द्रा, हस्त पू० षा० ऊ० षा० उ० भा०) में हो उस पर चन्द्रमा तथा शुक्र बैठे हों, तब उनके साथ कोई क्रूर ग्रह भी हो तो उस समय उस ग्राम में बहुत वर्षा होगी। किन्तु जो उनको क्रूर ग्रह देखे तो वर्षा थोड़ी हो।

व्यापारिक—इस वर्ष व्यापार पर से कुछ अंकुश उठेगा। वर्षारंभ में उल्टे सुल्टे समाचारों से बाजार की परिस्थिति खराब हो जायगी। तेजी-मन्दी बहुत चलेगी। विदेशीय खनिज पदार्थ और गौ भेंड बकरी के भाव तेज रहेंगे।

रुई—रुई में मई ता० १४ के लगभग मन्दी चले, तो १ मास तक मन्दी का ध्यान रखकर कमावें। फिर ११ जुलाई से मन्दी अगस्त में तेज, ८ सितंबर से फिर मन्दी का ख्याल रखें। लाभ होगा।

सोना चांदी—अप्रेल से जून तक घटे भाव खरीदने वाले और जुलाई बाद हरेक ऊँचे भाव बेचने वाले लाभ में रहेंगे। जून ११ स १६ तक सोनाचान्दी में खासी मन्दी हो। अक्टूबर ११ से २३ तक तेजी हो। माघ के चन्द्र ग्रहण के बाद धीरे धीरे सुवर्ण में भारी मन्दा आवे। [illegible]

संवत् २००९ शाके १८७४ [illegible] (... से १० अप्र. १९५२ ई.) उ. द.गो. वसन्त ऋतुः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००९ शाके १८७४ चैत्रशुक्ल पक्ष

दि. मा.	ति. घा.	न. घ.	यो. घ.	क.	सू. उ.	सू. अ.	मुहूर्त	राश्यन्तर	लग्न	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	उ.भा.	[illegible]	कि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भान.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रथम में ... पीछे पूर्व में दिखेंगे। ति. ३ से बुध और ति. ११ से शु. पश्चिम में अस्त होंगे। शु. प्रातः पूर्व में † दीखेगा।

- चन्द्रोबुधः ५८।२६ सम्वत्सरारम्भः नवरात्रारम्भः घटस्था ‡
- पू. भायां शुक्रः १४।५५ चन्द्रदर्शनम् पंचकस. ६।२७
- पश्चिमास्तो बुधः ४।५० रज्जब मु. ७ गणगौरी ३ पू. मत्स्यज.
- भ. १०।५३ उ. ४।१२ या. ‡पनं वर्षफलश्च. नि. प. भक्षणम्
- रेवत्याम् रविः १०।१४
- अश्वि. १ मेषे गुरुः ४।१० मेला माईसररवाना
- श. ४९।१६ उ. अप्रेल ४ ता. २०
- भ. २१।३६ या. श्री दुर्गा ८ मेला श्री मनसा देवी
- श्रीराम ९ व्रतम्
- मीने शुक्रः २३।१५
- भ. २६।४७ उ.
- भ. ०।१३ या. पश्चिमास्तो गुरुः ५३।२४ कामदा ११ व्र. गु. अ.
- उ. भाद्रा शुक्रः ६।१४ प्रदोषव्रतम्
- श्रीमहावीरजैन जयन्ती.
- भ. १८।३२ उ. ४८।५० या. सत्यव्रतम्
- वै. स्नानारंभः

चैत्रशुक्ल ८ बुध—स्पष्टम् ०।० दिनगणः ६२०७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	६	११	०	१०	५	१०	४
१९	२४	२५	०	२७	१८	५	५
७	३८	७	२५	४	३१	२३	२३
३०	३१	१५	४०	९	१३	३३	३३
५९	६	३७	१४	७३	४	३	३
७	२५	४८	१६	४३	४२	११	११
मार्गी	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	वि.	रे.	[illegible]	[illegible]	ह.	ध.	म.
१	२	३	१	२	३	४	२

इस पक्ष में गेहूं चना मूंगी मोठ आदि पहले कुछ तेज रह कर पीछे मन्दा गिरे। रुई और तिल कपड़ा के भाव में कुछ मंदी। रुई के भाव में खासी मंदी चले। सुवर्ण चांदी तांबा कली आदि धातु उपधातु तेज हों। आयात निर्यात पर नियन्त्रण रहेगा।

ति. ११ से रुई और खेवर तेज तथा सोना चांदी धनाज मंदा. ति. १।११।१२ को कहीं बूंदाबांदी हो।

शकुनविचार—यदि द्वितीया को चन्द्र स्थान स्थ बादलों से ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाय तो धूम्रादि वस्तु की कीमत बढ़े। चैत्र सुदी की पंचमी दक्षिण पूर्व वायु, वर्षा भी होवे कहु भादों

चैत्रशुक्ल १५ गुरा—स्पष्टम् ०।० दिनगणः ६२१५

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	६	११	०	११	५	१०	४
२६	२३	१९	२	६	१७	४	४
५९	३२	७	२०	१३	५४	५८	५८
१५	३	४६	२२	४	१७	८	८
५८	९	४३	१४	७३	४	३	३
४८	४७	३३	२४	३३	३३	११	११
मार्गी	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	वि.	रे.	[illegible]	[illegible]	ह.	ध.	म.
४	२	१	१	२	३	४	२

तेज विकाय। चैत्र मास में गुड़, दही मिष्टान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मण दम्पति की पूजा कर धार्मिक वस्त्र और मिठाई उनको दें; यह गौरीव्रत कल्याणकारक है। यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ वैशाखकृष्णपक्षः २

दि. मा.		ति. वा.		घ. प.		न.	. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अं.	मु.	लग्न सञ्चारः	सू. उ. घंटे		सू. अ. घंटे		निरयसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३१	३६	१	शु.	२३	८१	चि.	२	११	ह.	१०	४७	कौ.	१८	३२	३०	११	१५	तुलायाम्	६	५	६	४५	११	२७	५८	०
३१	४१	२	श.	१६	०४	स्वा.	२	२३	व.	६	४०	ग.	१६	४४	३१	१२	१६	वृ.४६।३८	६	४	६	४६	११	२८	५६	४४
३१	४५	३	र.	१३	४६	वि.	[illegible]	[illegible]	सि.	[illegible]	[illegible]	वि.	१३	४६	१	१३	१७	वृश्चिके	६	३	६	४७	११	२९	५५	२६
३१	५०	४	सो.	९	५०	ज्ये.	५६	४४	व.	४९	२७	बा.	९	५०	२	१४	१८	ध.५६।४४	६	१	६	४७	०	०	५४	७
३१	५५	५	मं.	५	३	मू.	५३	१८	प.	४२	२८	तै.	५	३०	३	१५	१९	धनुषि	६	१	६	४८	०	१	५२	४६
अवम		६	मं.	५४	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	०	७	बु.	१३	५३	पूषा	४९	३०	शि.	३५	६	वि.	२७	१६	४	१६	२०	धनुषि	६	०	६	४९	०	२	५१	२२
३२	४	८	गु.	४७	५०	उषा.	४५	२२	सि.	२७	३१	बा.	२०	५२	५	१७	२१	म.३।२८	५	५९	६	५०	०	३	४९	५५
३२	९	९	शु.	[illegible]	[illegible]	श्र.	४१	१२	सा.	१९	४६	तै.	१४	४८	६	१८	२२	मकरे	५	५७	६	५०	०	४	४८	२६
३२	१४	१०	श.	३५	५२	ध.	३७	१२	शु.	१२	१०	व.	८	५०	७	१९	२३	कुंभ९।१२	५	५६	६	५१	०	५	४६	५६
३२	१९	११	र.	३०	२१	श.	३३	३६	शु.	[illegible]	[illegible]	व.	३	६	८	२०	२४	कुंभे	५	५५	६	५२	०	६	४५	२३
३२	२४	१२	सो.	२५	२२	पूभा.	३०	३४	ऐ.	५१	१५	तै.	२५	२२	९	२१	२५	मी१६।१९	५	५[illegible]	६	५३	०	७	४३	४७
३२	२८	१३	मं.	२१	१०	उभा.	२८	४२	वै.	४५	२८	व.	२१	१०	१०	२२	२६	मीने	५	५३	६	५४	०	८	४२	९
३२	३१	१४	बु.	१७	४८	रे.	२६	५६	वि.	४०	२७	श.	१७	४८	११	२३	२७	मे.२६।५६	५	५२	६	५४	०	९	४०	३०
३२	३५	३०	गु.	१५	३४	अ.	२६	३८	प्री.	२६	१८	ना.	१५	३४	१२	२४	२८	मेषे	५	५१	६	५४	०	१०	३८	४९

(११अप्र. से २४अप्र. १९५२ई.) उत्तरा.गोलो वसन्तर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्यास्त बाद पूर्व में देखें, ति. ३ से पूर्व में बुध उदय होगा। गुरु अस्त है। शुक्र प्रातः पूर्व में दीखेगा।

§या. मेला वैशाखी पूर्वोदयो बुधः१७।१० श्रीगणेश ४ व्र.

भ. ४५।१५ उ.

भ. १३।४६ या. अश्वि. सं. मेषर्कः ४।४१ मु. ३० पुण्यं १९।४१§

व. उभा. बुधः २४।३७ अश्वि. २ गुरुः ७।५८

भ. ५९।४० उ.

षष्ठिक्षयः

भ. २७।१६ या.

रेवत्यां शुक्रः ५७।३४

†१२।० सा. वृषे भानुः २३।४० पंचक आ. ९।१२ ग्रीष्मर्तुः प्रा.

भ. ८।५० उ. ३५।५२ या. मार्गी बुधः १७।५ अगस्त्योऽस्तः †

वरूथिनी ११ व्र.

प्रदोषव्रत

भ. २१।१० उ. ४९।२९ या.

रेवत्यां बुधः ५९।४७ व. स्वात्यां भौमः ४५।४९ पंचक स. २६।५६

मेला पञ्चपुर (पंजौर)

वैशाखकृष्ण ८ गुराविष्ट०।० दिनगणः ६२२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	११	५	१०	४
३	२१	१६	४	१५	१०	४	४
४९	५८	०	१	२९	२२	३५	३५
५५	५	२१	२३	१५	५८	५४	५४
५८	१५	१०	१४	७३	४	३	३
३३	१५	६२	२५	४८	२२	११	११
पौ.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि.	वि.	उभा.	अश्वि.	उभा.	ह.	ध.	म.
१	१	४	२	४	३	४	२

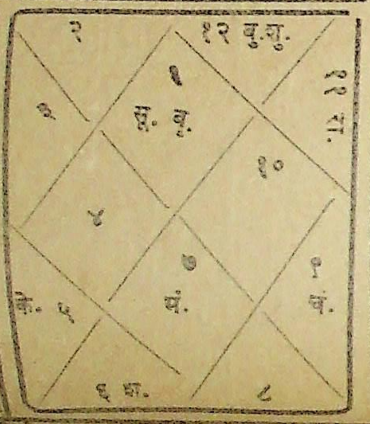

इस पक्ष में गेहूं जौ चना अलसी लाख रूई घृत के भाव में मंदा रहे। सुवर्ण चांदी के भाव में तेजी। प्रजा में रोगभय गुड़ बिनौले अलसी तिल तेल मंदे। पक्ष के अन्त में रूई धातु गेहूं रसकश और ऊन के वस्त्र में तेजी आवे, सट्टे के सौद में भारी तेजी हो उत्तर में वायु का जोर ति. २।३।४। ११।१२ को बादल चाल व कहीं २ बूंदा बांदी हो।

वैशाख बदी आठें दिना बिजली गर्जन होय।
संवत अच्छा जानिये संशय करो न कोय ॥
वैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघजो जान।
धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत् मान ॥
वैशाख मास में प्याऊ (छबील) लगानी

वैशाखकृष्ण ३० गुरावि़ष्टम् ०।० दिनगणः ६२२९

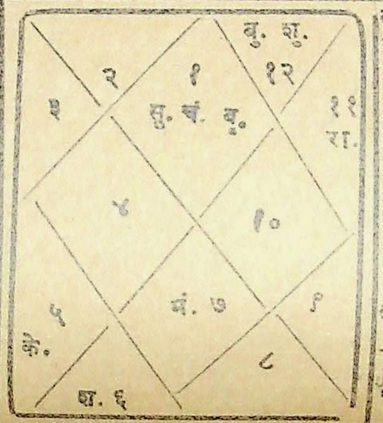

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	११	५	१०	४
१०	१९	१६	५	२४	१६	४	४
३८	५५	४०	४२	५	५३	१३	१३
४९	२७	४	११	३	३२	३९	३९
५८	१९	१८	१४	७३	४	३	३
१९	१५	५७	२४	१९	४	११	११
औ.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि.	स्वा	रे.	अश्वि.	रे.	ह.	ध.	म.
४	४	१		३	३	४	२

चाहिये और [illegible] ... र, इत्यादि। फूलों के हार सुन्दर सुन्दर नये नये केले तथा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh,Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

... छतरी, बारीक कपड़े, ... इत्यादि। फलों के हार सुन्दर सुन्दर नये नये केले तथा

संवत् २००९ शकः १८७४ वैशाखशुक्लपक्षः ३

(२५अप्रै.से ९मई, १९५२ ई०) उत्त. गो. ग्रीष्मर्तुः।

ग्रहदर्शन—बृ. शु. सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेंगे। श. मं. सूर्यास्त बाद पूर्व में। ति. १० से पूर्व में गुरु उदय होंगे।

दि. मा		ति. वा.		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.
३२	३९	१	शु.	१४	३०	भ.	२७	३२	आ.	३३	८	व.
३२	४२	२	श.	१४	४३	कृ.	२९	४०	सौ.	३१	०	कौ.
३२	४६	३	र.	१६	१४	रो.	३३	७	शो.	२९	५३	ग.
३२	५०	४	सो.	१८	५१	मृ.	३७	३२	अ.	२९	३६	वि.
३२	५३	५	मं.	२२	३८	आ.	४३	१३	सु.	३०	१६	बा.
३२	५७	६	बु.	२७	१४	पुन.	४९	२७	धृ.	३१	२४	तै.
३३	१	७	गु.	३२	१८	पु.	१६	०	शू.	३२	५५	व.
३३	४	८	शु.	३७	२८	श्ले.	६०	०	गं.	३४	३७	वि.
३३	८	९	श.	४२	१४	श्ले.	२	२९	वृ.	३५	४९	बा.
३३	१२	१०	र.	४६	२०	म.	८	२७	ध्रु.	३६	३९	तै.
३३	१५	११	सो.	४९	२०	पू.फा	१३	४१	व्या.	३६	४२	व.
३३	१९	१२	मं.	५१	१५	उ.फा	१७	४५	ह.	३५	५१	बा.
३३	२३	१३	बु	५१	५३	ह.	२०	४१	व.	३४	१	कौ.
३३	२७	१४	गु.	५१	९	चि.	२२	११	सि.	३१	१०	ग.
३३	३०	१५	शु.	४९	१४	स्वा.	२२	४८	व्य.	२७	२३	वि.

घ. प.		हिं.	अं.	मु.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
१४	३०	१३	२५	२९	वृ. ४०।१४	५	५०	६	५५	०	११	३७	५
१४	४३	१४	२६	१	वृषे.	५	४९	६	५६	०	१२	३५	१९
१६	१४	१५	२७	२	वृषे.	५	४८	६	५६	०	१३	३३	२५
१८	२१	१६	२८	३	मि. ५।२३	५	४७	६	५६	०	१४	३१	३८
२२	३८	१७	२९	४	मिथुने	५	४६	६	५७	०	१५	२९	४६
२७	१४	१८	३०	५	क. ३२।५३	५	४५	६	५७	०	१६	२६	५३
३२	१८	१९	१म	६	कर्के	५	४५	६	५८	०	१७	२५	५८
४	५३	२०	२	७	कर्क	५	४४	६	५९	०	१८	२४	०
९	५१	२१	३	८	सिं. २।२९	५	४३	७	००	०	१९	२२	०
१४	१७	२२	४	९	सिंहे	५	४२	७	००	०	२०	१९	५७
१७	५०	२३	५	१०	क. २९।४२	५	४२	७	१	०	२१	१७	५२
२०	२०	२४	६	११	कन्यायां	५	४१	७	२	०	२२	१५	४७
२१	३६	२५	७	१२	तु ५१।३१	५	४०	७	२	०	२३	१३	४०
२१	३१	२६	८	१३	तुलायां	५	३९	७	३	०	२४	११	३१
२०	११	२७	९	१४	तुलायां	५	३८	७	३	०	२५	९	२०

चन्द्रदर्शनम्

भरण्यां रविः ४६।५ सावान ८ श्री परसुरामज. ३ (रात्रि प्रथम†

म. ४७।३२ उ. व. हस्ते २ शनिः २३।२० अक्षया ३ त्रेतायुगादि

भ. १८।५१ या. अश्वि. मेषे शुक्रः ०।२१ अश्वि. ३ गुरुः १।३४

† याम व्यापिनी होने से)

§ सत्यव्रतम्

भ. ३२।१८ उ. मई ५ ता० ३१ श्रीगङ्गाजन्म ७

भ. ४।५३ या. +जौ गेहूं चने के सत्तू, दही, चावल, पंखा छत्री=

=और जूता पितृ तथा देवताओं के निमित्त ब्राह्मणों को दान दें।

पूर्वोदयगुरुः ४२।०० गु. उ.

भ. १७।५० उ. ४९।२० या. मोहिनी ११ व्र. स्मा. वैष्ण.

निम्बार्काणां ११ व्र.

प्रदोषव्रतम् चि. ।।।ऽबु.।ऽ।।ल. ९ अन्या.

भ. ५१।९ उ. श्री नृसिंह १४ व्र.

भ. २०।११ या. अश्वि. मेषे बुधः ४२।५५ भरण्यां शुक्रः ४१।२‡

‡श्रीबुद्धजयन्ती. यमाय सान्नजलकुम्भदान. वै. स्ना. स. कूर्मज. §

वैशाखशुक्ल ८—शुक्रहृष्टम् ०।० दिनगण: ६२३७

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	०	५	१०	४
१८	१७	२१	७	१	१६	३	३
२४	५	४३	३६	५४	२२	४८	४८
०	४७	५२	३६	११	४५	१४	१४
५८	२१	५०	१४	७३	३	३	३
२	४३	२१	१३	३९	३६	११	११
सौ.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	स्वा.	रे.	कृत्ति.	कृत्ति.	ह.	ध.	म.
२	४	२	१	२	२	४	२

इस पक्ष में वायु का जोर प्रबल रहे। गेहूं जौ अलसी का भाव सम रहे। रूई में घटा बढ़ी चले अन्त में ३० टका तेज हो, चांदी में भी घटा बढ़ी के बाद करीब ३ टका तेज, ऊन में १५।२० टका मंदा। सोने में १॥ टका तेज यहां पर वास्ते गेहूं संग्रह करना अच्छा है इससे गृहस्थीजन शीतकाल में सुखी रहेंगे। ति० ४।१०।११ को हवा के साथ कहीं वर्षा वा बूंदा बांदी हो।

घा० वि०—वैशाख सुदी सातें दिना बाजे पूर्व बाय। बादल हो बिजली दिखें और बूंद पड़ जाय। धान्य इकट्ठे तुम करो सुनलो ध्यान लगाय। भादों मास में लाभ हो इसमें संशय नाय। वैशाख सुदी षष्ठी दिना बादल हो भरपूर। चातुर्मास वर्षा नहिं घटे प्रजा की नूर। वैशाखशुक्ल ३ को यदि गंगास्नान देवदर्शन किया जाय तो अक्षय फल देता है। इस पक्ष में सभी रस सुवर्ण, अन्न के साथ पानी के घड़े, +

वैशाखशुक्ल १५ शुक्रहृष्टम् ०।० दिनगण: ६२४४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	६	११	०	०	५	१०	४
२५	१४	२९	९	१२	१५	३	३
९	३४	६	१५	२९	५९	२५	२५
२०	३६	४३	४७	१८	३१	१९	५९
५७	२१	७१	१४	७३	३	३	३
४९	३१	१०	८	३६	७	११	११
सौ.	व.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	स्वा	रे	कृत्ति.	कृत्ति.	ह.	ध.	म.
४	३	४	१	४	२	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. घ.	दि. प.	ति.	न. घ.	न. प.	न.	यो. घ.	यो. प.	यो.	क. घ.	क. प.	क.	ध. घ.	ध. प.	[illegible]
३३	३४	१ कृ.	३९	११	वि.	२४	४	व.	२२	४०	बा.	१७	४२	[illegible]
३३	३८	२ कृ.	४२	२०	अनु.	२०	१८	व.	१७	८	कौ.	१४	१५	[illegible]
३३	४१	३ बु.	[illegible]	२८	ज्ये.	१०	४२	सि.	१०	५७	व.	९	५४	[illegible]
३३	४५	४ श.	३२	३	मू.	११	२५	शि.	५६	५८	व.	४	४६	[illegible]
३३	४९	५ बु.	२६	१०	पू. षा.	१	[illegible]	शु.	४९	२३	[illegible]	२६	१०	[illegible]
३३	५२	६ गु.	२०	५	उ. षा.	६	५	ध्रु.	४१	४१	ब.	२०	५	[illegible]
३३	५६	७ शु.	१३	५४	श्र.	५८	२३	व्या.	३४	८	ग.	१३	५५	[illegible]
३४	०	८ श.	७	५५	ध.	५४	४०	ह.	२६	३३	वि.	७	५५	[illegible]
३४	३	९ र.	२	३०	शत.	११	३०	व.	१९	४१	तै.	२	३०	[illegible]
क्षयम्	[illegible]	१० सो.	५४	५५	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]
३४	[illegible]	११ मं.	[illegible]	५८	उ. भा.	४२	[illegible]	[illegible]	१२	८	व.	२५	६	[illegible]
३४	[illegible]	१२ बु.	[illegible]	[illegible]	रे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१२	बा.	२१	[illegible]	[illegible]
३४	[illegible]	१३ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७	४९	[illegible]	१८	२१	[illegible]
३४	[illegible]	१४ शु.	[illegible]	[illegible]	कृ.	४७	[illegible]	[illegible]	५४	[illegible]	[illegible]	१६	३३	[illegible]
३४	[illegible]	३० श.	[illegible]	[illegible]	रो.	४२	[illegible]	[illegible]	५२	[illegible]	च.	१५	[illegible]	[illegible]

	सूर्योदय	दिन	रात्रि	उदयकाल			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	वृष चक्र	५	[illegible]	०	२७	४	५५
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	०	२८	[illegible]	[illegible]
[illegible]	मिथुन	५	[illegible]	०	२९	०	२०
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	०	२९	५८	[illegible]
[illegible]	कर्क	५	[illegible]	१	०	५५	[illegible]
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	[illegible]	१	५३	[illegible]
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	[illegible]	२	५०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	[illegible]	३	४८	२५
०	०	०	०	०	०	०	०
[illegible]	मीन	५	[illegible]	१	४	४५	[illegible]
[illegible]	[illegible]	५	[illegible]	१	५	४३	[illegible]
[illegible]	मेष	५	[illegible]	१	६	४०	[illegible]
[illegible]	मेष	५	[illegible]	१	७	३८	[illegible]
[illegible]	वृ.	५	[illegible]	१	८	३५	[illegible]

ग्रहदर्शन बु. गु. सूर्योदय से पहले पूर्व में देखें। शुक्र ति. १३ से अस्त होगा। श. मं. पूर्व रात्रि में पूर्व में दीखेंगे।

क्रांति. रविः २०।७ धनिष्ठा ३ राहुः मघा १ केतुश्च ५३।५,

म. ९।५४ उ. ३७।२९ या. अश्वि. ४ गुरुः ८।१९ श्रीगणेश ४ व्र.

संवृषेऽर्कः २।३ मु. ३० पुण्य. १८।३ या.

म. २०।५ उ. ४७।० या.

पंचक आः ३०।२२

‡ मन्त्र से मूर्ति ब्राह्मण को देवे।

म. २१।४७ उ. ५७।१४ या. भरण्यां बुधः ५८।२

दशमीक्षयः

अपरा ११ व्र. स्मा (भद्रकाली)

कृत्तिका शुक्रः २२।४० या. मिथुने भानुः २७।३७ अपरा ११ व्र. †

म. ४७।८ उ. प्रदोष व्र. शुक्रास्त. पूर्व ४०।१२ [ग. अ.]

म. १६।२३ या. †वै. पञ्चकम. ४७।२७

वृषे शुक्रः १५।३४ श्रीवटसावित्री ३० व्र.

ज्येष्ठकृष्णपक्षः ८ भगवानिष्टम् ०।० दिनगण: ६२५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	[illegible]	०	०	०	५	१०	४	[illegible]
२	११	१०	११	२२	१५	३	३	[illegible]
०	५१	१३	[illegible]	७	१८	२७	०	०
५२	३२	५१	२०	५३	३०	३४	३४	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	१८	२१	१३	[illegible]	[illegible]	३	३	[illegible]
३६	१७	२१	४८	[illegible]	३६	११	११	[illegible]
व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में घी खाण्ड गुड़ का भाव कुछ तेज रहेगा गेहूँ आदि अनाज का भाव कुछ पहले मंदा होकर पीछे तेज होगा। गर्मी अधिक पड़े। पश्चात् में कहीं बूंदाबांदी के कारण बढ़ा हुआ तापमान कम हो जायगा। तृषार्त जंगली जीवों को पानी पीने को मिलेगा। मोती जवाहरात और चतुष्पद पशु तेज रहेंगे तिल तेल मंदा, चांदी २ टका मंदी। ति. १।२।४।१२।१३।२४।३० को बादल वर्षा कहीं बूंदाबांदी होवे।

इस अमावस्या को वैधव्य नाश करने वाला 'वटसावित्री' व्रत होता है। ज्ये० कृष्ण ३० को पतिव्रता स्त्रियां वट के नीचे [illegible] सत्यवान के साथ सावित्री की (अभाव में [illegible]) मूर्ति बनाकर जल, पुष्प, व धूप दीप नैवेद्य हल्दी, कुंकुम और कुंकुम केसर आदि उपचारों से विधिपूर्वक पूजन कर और 'ओंकार पूर्विका देवी वीणा-

ज्येष्ठकृष्णपक्षः ३० शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगण: ६२५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	०	०	०	५	१०	४	[illegible]
८	१	२०	१२	२१	१५	२	२	[illegible]
३५	१५	९	२९	४०	२४	४१	४१	[illegible]
४६	९	४९	४५	५३	५०	२१	२१	[illegible]
५७	१४	[illegible]	१३	७३	१	३	३	[illegible]
२६	२९	३४	४०	३९	५३	११	११	[illegible]
व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	[illegible]
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	[illegible]	[illegible]
कृ.	स्वा.	म.	[illegible]	कृ.	ह.	ध.	म.	[illegible]
४	२	३	४	१	२	३	१	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शाका १८७४ ज्येष्ठशुक्लपक्षः ५ (२४ जून से ८ जुलाई १९५२ ई०) उ. गोलो ग्रीष्मर्त्तुः।

ग्रहदर्शन मं. श. पूर्वरात्रि में पूर्व से खमध्य की तरफ आते हुए दीखेंगे। गु. सूर्योदय से पहले पूर्व में देखें। शु. अस्त है। ति.†

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	सू.	चं.	बु.	लग्न सम्बादः	सू.उ. रेलवे		सू.अ. रेलवे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३४	२१	१	शु.	४७	३१	म.	४२	३६	वृ.	५०	५९	कि.	१६	४७	११	२४	२९	वृ	५	२९	७	१४	१	१	३३	१०	रोहि. रविः २८।२ †५ से बुध पूर्व में उदय होगा
३४	२२	२	र.	५०	३	पु.	२६	५४	ध्रु	५०	३५	बा.	१८	४७	१२	२५	३०	मि २८।४५	५	२९	७	१५	१	१०	३०	३२	चन्द्रदर्शनम्
३४	२४	३	चं.	५१	४	आ	६०	०	वृ.	५१	६	[illegible]	२१	५४	१३	२६	१	मिथुने	५	२८	७	१५	१	११	२७	५३	रंभा ३ व्र. कृत्तिका. बुधः ३२।३६ भरण्यां १ गुरुः ४१।३९ ‡
३४	२५	४	भं.	५८	१३	आ	२	१४	गं.	५२	१३	व.	२५	५९	१४	२७	२	क.५१।४८	५	२८	७	१६	१	१२	२५	१२	भ. २५।५९ उ. ५८।१३ या. ‡रमजान मु. ९ रोजा शुरु
३४	२६	५	बु.	६०	०	पुन	८	१९	वृ.	५३	४५	व	३०	४३	१५	२८	३	कर्के	५	२८	७	१६	१	१३	२२	३१	वृषे बुधः १६।३७ पूर्वास्तो बुधः ५८।३
३४	२९	५	गु.	३	१३	पु.	१४	४८	ध्रु.	५५	२६	बा.	३	१३	१६	२९	४	कर्के	५	२८	७	१६	१	१४	१९	४८	
३४	३१	६	शु.	८	१७	श्ले.	२१	२४	व्या.	५६	५२	तै.	८	१७	१७	३०	५	सिं २१।२४	५	२८	७	१६	१	१५	१७	४	
३४	३२	७	श.	१३	१	म.	२७	३३	ह.	५७	५३	व.	१३	१	१८	३१	६	सिंहे	५	२८	७	१७	१	१६	१४	२०	भ. १३।१ उ. ४५।३ या. रोहि. शुक्रः २४।१५
३४	३४	८	र.	१७	५	पूफा	३२	५५	व.	५८	१०	व.	१७	५	१९	मू.	७	कं.४८।५२	५	२८	७	१७	१	१७	११	३३	जून ६ ता. ३०
३४	३६	९	चं.	२०	१	उफा	३७	१३	सि.	५७	२३	कौ.	२०	१	२०	२	८	कन्यायां	५	२८	७	१७	१	१८	८	४४	रोहि. बुधः ११।५६
३४	३७	१०	भं.	२१	५९	ह.	४०	२६	व्य.	५६	१	व.	२१	५९	२१	३	९	कन्यायां	५	२८	७	१८	१	१९	५	५४	भ. ५२।१६ उ. श्री गंगादशहरा
३४	३९	११	बु.	२२	३३	चि	४२	२२	व.	५३	२७	वि.	२२	३३	२२	४	१०	तु.११।२४	५	२७	७	१९	१	२०	३	३	भ. २२।३३ या. निर्जला ११ व्र. सर्वेषाम्
३४	४०	१२	गु.	२१	४७	स्वा	४२	[illegible]	[illegible]	४९	५२	बा.	२१	४७	२३	५	११	तुलायां	५	२७	७	१९	१	२१	०	११	प्रदोषव्र.
३४	४२	१३	शु.	१९	५१	वि.	४२	३४	शि.	४५	२२	तै.	१९	५१	२४	६	१२	वृ.२७।४१	५	२७	७	१९	१	२१	५७	१८	
३४	४३	१४	श.	१६	४९	अनु	४१	१	सि.	४०	०	व.	१६	४९	२५	७	१३	वृश्चिके	५	२७	७	२०	१	२२	५४	२४	भ. १६।४९ उ. ४४।४९ या. मृगे रविः २६।५३ सत्यव्र.
३४	४४	१५	र.	१२	५०	ज्ये.	३८	३५	सा.	३३	५१	व.	१२	१०	२६	८	१४	ध.३८।३५	५	२७	७	२१	१	२३	५१	३०	मृगे बुधः १८।२३

ज्येष्ठशुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६२६७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१	६	१	०	१	५	१०	४
१७	८	७	१४	१०	१५	२	२
११	३५	२९	३१	४३	१२	१२	१२
३३	२७	४६	२९	५७	९	५३	५३
१७	८	[illegible]	१३	७२	१	२	२
१६	८	१९	१६	४५	२	११	११
क्रां	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रो.	[illegible]	कृ.	भ.	रो.	ह	ध.	म.
३	१	४	१	१	२	३	१

इस पक्ष में अलसी गेहूं चना चावल के भाव में मंदा। ति.५ से तेज हो। रूई में घटा बढ़ी चांदी तेज घृत खंड गुड़ तिल तेल सरसों तेज हो। पूर्वीय देशों में विग्रह लड़ाई। ति. ६ से केशर चंदन रेशम के भावों में तेजी हो।

ति. ४।५।६ को कहीं कहीं बादल बूंदा बांदी हो वायु प्रबल चले।

शकुन विचार—ज्येष्ठसुदी सप्तमदिने बिजुरी मघ निहार। दक्षिण दिशि वायु चले तिल से लाभ अपार॥ तिथि पूर्णमासी को वर्षा होने पर दुर्भिक्ष होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को संवत्सर का मुख माना है इसलिये उस दिन विशेष स्नान और दान करने से बिना दी हुई वस्तु पर अपना

ज्येष्ठशुक्लरवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६२७४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१	६	१	०	१	५	१०	४
२३	८	२२	१६	१९	१५	१	१
५१	४	३९	२	२०	७	५०	५०
३०	४२	१७	३	४	४६	३८	३८
१७	२	[illegible]	१२	७३	०	३	३
६	२	१७	४३	४३	२०	११	११
क्रां	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	[illegible]	रो.	भ.	रो.	ह.	ध.	म.
१	१	४	१	३	२	३	१

हक जमा लेना नाना प्रकार की अवैध हिंसा और परस्त्री सेवन, कटु, तथा मिथ्याभाषण, चुगली, निंदा व्यर्थ भाषण, पराई वस्तु को चाहना, दूसरे का बुरा सोचना ये १० पाप दूर होते हैं। यदि गंगा में न जा सकें तो सतलज आदि नदी में ही स्नान करके गंगा की पूजा करें।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शाका १८७४ आषाढकृष्णपक्षः ६ (९जूनसे २२जून१९५२ई०) उ.गो.ग्रीष्मर्त्तुः सा.क.द.

दि.मा.		ति.वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ति.	अं.	मु.	चन्द्रसञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		नित्यतृतीयपञ्चष्टः उदयकाले			
३४	४६	१	चं.	७	५९	मू.	३५	२५	शु.	२७	१७	कौ.	७	५९	२७	९	१५	धनुषि	५	२७	७	२१	१	२४	४८	३४
३४	४८	२	मं.	२	[illegible]	पू.षा	३१	४६	शु.	२०	७	व.	२	[illegible]	२८	१०	१६	म.४५।४४	५	२६	७	२२	१	२५	४५	३७
अवम्		३	बु.	५४	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	४९	४	बु.	५०	३०	उ.षा	२७	३८	ब्र.	१२	२८	ब.	२१	१४	२९	११	१७	मकरे	५	२६	७	२२	१	२६	४२	१९
३४	५१	५	गु.	४४	१६	श्र.	२१	२८	ऐ.	५३	२१	कौ	१७	२१	३०	१२	१८	कु.५१।२५	५	२६	७	२३	१	२७	१९	४०
३४	५२	६	शु.	३८	१५	ध.	१९	[illegible]	वि.	५०	१	ग.	११	२५	३१	१३	१९	कुम्भे	५	२६	७	२३	१	२८	१६	३९
३४	५४	७	श.	३२	३१	श.	१५	३३	प्री.	४	५८	वि.	५	२६	आ.१	१४	२०	मी. ५८।४	५	२६	७	२४	१	२९	३३	१७
३४	५५	८	र.	२७	२२	पू.भा	१[illegible]	१४	आ.	३६	१५	कौ.	२७	२२	२	१५	२१	मीने	५	२६	७	२४	२	०	१०	३६
३४	५७	९	चं.	२२	५८	उ.भा	९	३४	सौ.	३०	१५	ग.	२२	५८	३	१६	२२	मीने	५	२६	७	२४		१	२७	३४
३४	५८	१०	मं.	१९	२५	रे.	७	४६	शो.	२४	५९	वि.	१९	२५	४	१७	२३	मेष७।४६	५	२६	७	२५	२	२	२४	३०
३५	०	११	बु.	१६	५५	अ.	६	५८	अ.	२०	३२	बा.	१६	५५	५	१८	२४	मेषे	५	२६	७	२६	२	३	२१	२६
३५	१	१२	गु.	१५	३८	भ.	७	१८	सु.	१७	२	तै.	१५	३८	६	१९	२५	वृ.२२।४२	५	२६	७	२६	२	४	१८	२१
३५	३	१३	शु.	१५	३६	कृ.	८	५३	घ.	१४	३५	व.	१५	३६	७	२०	२६	वृषे	५	२६	७	२६	२	५	१५	१६
३५	४	१४	श.	१६	५१	रो.	११	४५	शू.	१३	८	श.	१६	५१	८	२१	२७	मि४३।४५	५	२५	७	२७	२	६	१२	११
३५	६	३०	र.	१९	१८	मृ.	१५	४५	गं.	१२	३६	ना.	१९	१८	९	२२	२८	मिथुने	५	२५	७	२७	२	७	९	५

ग्रहदर्शन–मं. श. पूर्व रात्रि में खमध्यासन्न दिखाई देंगे। ति० १३ से बुधपश्चिम में उदय होगा। गु. प्रातः पूर्व में देखें। शु.† †अस्त है

मार्गी सोमः ४४।४२

भ. २९।३६ उ. ५६।३९ या. मार्गीशनिः ४०।०

तृतीयाक्षयः

मिथुने बुधः १९।४५ मृगे शुक्रः १५।१८ भर. २ गुरुः १।२७ ‡

पंचक आ. ५१।२५ ‡श्रीगणेश ४ व्र.

भ. ३८।१५ उ. +२७।४९या. आर्द्राबुधः २३।५

भ. ५।२४ या. सं० मिथुनेऽर्कः २७।४९ मु. ३० पु. ११।४९उ.+

भ. ५१।११ उ. मिथुने शुक्रः ४०।४८

भ. १९।२५ या. पंचक स. ७।४६

योगिनी ११ व्र.

प्रदोष व्र.

भ. १५।३६ उ. ४६।१३ या पुन. बुधः ५४।३३ पश्चिमोदयो ×

अर्द्रायां रविः २९।१८

आर्द्रा शुक्रः ६।५

×बुधः ११।४० सा. कर्के भानः ५७।३१ दक्षिणायनम्

आषाढकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६२८१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	६	२	०	१	५	१०	४
०	८	७	१७	२७	१५	१	१
३०	१९	५९	२८	५६	८	२८	२८
३६	५	१२	५३	४	१७	२२	२२
५६	३	[illegible]	१२	७३	०	३	३
[illegible]९	३१	४४	१६	४६	२५	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	स्वा	आ.	स.	मृ.	ह.	ध.	म.
३	१	१	२	२	२	३	१

इस पक्ष में चांदी सुवर्ण रूई सरसों में घटा बढी। रेशम अलसी गेहूँ मंदा। ति. १२ से रूई शेयर मंदे। तेल मव चांदी तेज, चावल अन्न रस घी तेज बिनौला सरसों तेज सत शण में मंदा आवे। प्रजायें सुख में वरते।

ति. १३ से बिनौले तेज। ति. ४।५।६ को कहीं कहीं बूंदा बांदी और ति. १२।१३ को जोर की वायु के साथ वर्षा होवे।

शकुनविचार–आषाढ़ बदी जो अष्टमी बादल ऊगे चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुःख द्वन्द ॥१॥ काला बादल करबरा धोलों करे सुकाल। चन्दा ऊगे निर्मला निश्चय पड़ दुकाल ॥ आषाढ़ बदी नौमी दिना बिजली बादल होय। धान्य बेच खेती करो

आषाढकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६२८८

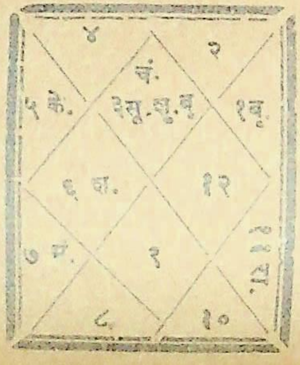

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	६	२	०	२	५	१०	४
७	८	२२	१८	६	१५	१	१
९	५२	५	५२	३२	१३	६	६
५	१३	४२	४४	३१	५५	७	७
५६	८	[illegible]	११	७३	१	३	३
५४	३८	५	४५	४८	५	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आ.	पु.	पु.	भ.	मृ.	ह.	ध.	म.
१	१	१	२	४	२	३	१

संचय करो न कोय ॥ आषाढ में एक बार भोजन करने से बहुत [illegible] ... में वामन भगवान् के लिये जल, दही, अन्न, आंवला आदि

देने चाहिये [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ आषाढ़शुक्लपक्षः ७ (२३ जून. से ७ जु० १९५२ई०) दक्षि[illegible]यनं उत्तर

ग्रहदर्शन–बुध सूर्यास्त बाद पश्चिम में और मं. श. गोलः वर्षर्तुः ख मध्यमें देखें। गुरु सूर्योदयसे पहले पूर्वमें दीखेगा। शुक्र अस्त है।

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. तारीख	अं. तारीख	मु. तारीख	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३५	४	१	चं.	२२	५३	आ.	२०	५३	वृ.	१२	५९	ब.	२२	५३	१०	२३	२९	मिथुने	५	२६	७	२८	२	८	६	०	चन्द्रदर्शनम्
३५	३	२	मं.	२७	१८	पुन.	२६	४९	ध्रु.	१४	२	कौ.	२७	१८	११	२४	१	क. १०।२०	५	२७	७	२८	२	९	२	५४	सव्वाल मु. १० ईद (श्री जगदीशरथयात्रा)
३५	१	३	बु.	३२	१३	पु.	३३	१६	व्या.	१५	३३	ग.	३२	१३	१२	२५	२	कर्के	५	२७	७	२८	२	९	५९	४८	
३५	०	४	गु.	३७	१६	श्ले.	३९	४९	ह.	१७	१५	व.	४	४४	१३	२६	३	सिं ३९।४९	५	२७	७	२८	२	१०	५६	४१	म. ४।४४ उ. ३७।१६ या. कर्के बुधः २०।६
३४	५८	५	शु.	४१	५९	म.	४६	३	व.	१८	४७	ब.	९	३७	१४	२७	४	सिंहे	५	२८	७	२९	२	११	५३	३२	भरण्यां ३ गुरुः ५०।५४
३४	५७	६	श.	४६	३	पू. फा	५१	३६	सि.	१९	५४	कौ	१४	१	१५	२८	५	सिंहे	५	२९	७	२७	२	१२	५०	२३	पुष्ये बुधः १६।५६
३४	५५	७	र.	४९	४	उ. फा	५६	९	व्य.	२०	२०	ग.	१७	३३	१६	२९	६	क. ७।४४	५	२९	७	२७	२	१३	४७	१५	म. ४९।४ उ.
३४	५३	८	चं.	५१	१	ह.	५९	३९	व.	१९	५३	वि.	२०	२	१७	३०	७	कन्यायाम्	५	३०	७	२७	२	१४	४४	७	म. २०।१२ या.
३४	५२	९	मं.	५१	३८	चि.	६०	०	व.	१८	३२	बा.	२१	१९	१८	जु.	८	तु. २०।४८	५	३०	७	२७	२	१५	४०	५९	जुलाई ७ ता. ३१
३४	५०	१०	बु.	५०	५८	चि.	१	४८	शि.	१६	९	तै.	२१	१८	१९	२	९	तुलायां.	५	३१	७	२७	२	१६	३७	५१	पुन. शुक्रः ५६।१६
३४	४९	११	गु.	४९	४	स्वा.	३	४५	सि.	१२	४६	ब.		१	२०	३	१०	वृ. ४७।३३	५	३१	७	२७	२	१७	३४	४३	म. २०।१ उ. ४९।४ या. देवशयनी ११ व्र. स्मा. चातुर्मास्य व्रत †
३४	४७	१२	शु.	४६	३	वि.	२	२८	सा.	८	२३	ब.	१७	३३	२१	४	११	वृश्चिके	५	३२	७	२६	२	१८	३१	३५	निंबा. ११ व्र. †नियमाद्यारम्भश्च.
३४	४६	१३	श.	४२	४	अनु.	५/५८	५/५३	शु.	३/५७	१०/१४	कौ.	१४	३	२२	५	१२	ध ५८।५३	५	३२	७	२६	२	१९	८	२७	पुन. रविः ३३।२० प्रदोष व्र.
३४	४४	१४	र.	३	१६	मू.	५५	४९	ब्र.	५०	३९	ग.	९	४०	२३	६	१३	धनुषि	५	३२	७	२६	२	२०	२५	१९	म. ३७।१६ उ. +परीक्षा ध्वजारोपणम्. मन्वादि सत्यव्रतम्।
३४	४३	१५	चं.	३१	५०	पू. षा	२	१४	ऐं.	४३	३२	वि.	४	३३	२०	७	१४	धनुषि	५	३३	७	२६	२	२१	२२	११	अ. ४।३३ या. आश्लेषा बुध. ५।८ श्रीगुरुव्यासयोः पूजा, वायु- +

आषाढ़ शुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ६२९६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	६	३	०	२	५	१०	४
१४	१०	६	२०	१६	१५	०	०
४४	३४	९	२४	२३	२६	४०	४०
७	४८	५०	७	२	६	४०	४०
५६	१४	९७	११	७३	१	३	३
५२	३१	५९	१०	५०	५१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आ.	स्वा	पु.	भ.	आ	ह.	ध.	म.
३	२	१	३	३	२	३	१

इस पक्ष में पहले रूई १५ या २० तेज, चांदा में करीब २ टका तेज हो। ति. ४ से रूई खांड सोने में मन्दा रहे। श्वेत-वस्त्र भी सस्ता ति. ६ बिनौला तेज पक्षान्त में रस कश तिल ज्वार मोठ उड़द हरड़ और कर्यानेकी वस्तुएँ तेज हों।

ति. ६ से वर्षा कहीं न कहीं होती ही रहेगी प्रायः इस पक्ष में वर्षा सर्वत्र हो जावेगी। ति. १४।१५ को वर्षा अच्छी होगी नदी नालों में पानी खूब चढ़ेगा।

शकुन विचार–आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज। हलफाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज।

चातुर्मास व्रत के आरम्भ करते समय "इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युत। इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि वा भवेत्। तदा भवतु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन!" इस मंत्र से प्रार्थना पूर्वक संकल्प कर चातुर्मास में निम्बू, गलगल, राजमाष, मूली, कद्दू, गन्ना ये वस्तुएँ छोड़ देवे।

आषाढ़ शुक्ल १५ चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३०३

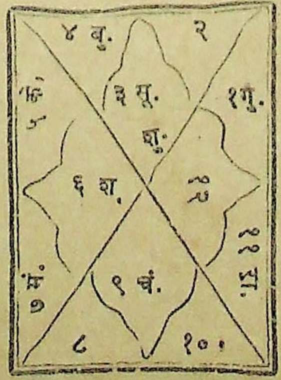

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा	के.
२	६	३	०	२	५	१०	४
२१	१२	१६	२१	२५	१५	०	०
२२	२९	३३	३८	०	४१	१८	१८
११	५१	११	४७	०	५३	२५	२५
५६	१८	८२	१०	७३	२	३	३
५२	१	७	२१	५१	३२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुन	स्वा	पु.	भ.	पुन	ह.	ध.	म.
१	२	४	३	२	२	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ श्रावणकृष्णपक्षः ८

(८जु.से२१जु. १९५२ई०) दक्षि०उत्तरगोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन बुध सूर्यास्त पीछे पश्चिममें देखें। श. मं. खमध्यसे पश्चिमको जाते हुए दीखेंगे। गुरु पश्चिम रात्रिमें पूर्वमें देखें ‡

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. आषाढ़	अं. जुलाई	मु. [illegible]	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३४	४१	१	सं.	२५	५५	उ.षा	४८	१२	वै.	३६	७	कौ.	२५	५५	२५	८	१५	म.६।१४	५	३४	७	२६	२	२२	१९	२	‡शु. अस्त है।
३४	४०	२	बु.	१९	४६	श्र.	४४	२	वि.	२८	३२	ग.	१९	४६	२६	९	१६	मकरे	५	३४	७	२६	२	२३	१५	५३	भ. ४६।३९ उ.
३४	३८	३	गु.	१३	३२	ध.	३९	५२	प्री.	२०	५२	वि.	१३	३२	२७	१०	१७	कुं.१२।५७	५	३५	७	२६	२	२४	१२	४५	भ. १३।३२ या. पंचक आ. १२।५७ श्री गणेश ४ व्र.
३४	३६	४	शु.	७	२७	श.	३५	५८	आ.	१३	२३	बा.	७	२७	२८	११	१८	कुम्भे	५	३५	७	२५	२	२५	९	३९	कर्केशुक्रः ३।४२
३४	३५	५	श.	१	४१	पू.भा	३२	३०	सौ.	६ ५९	१० २६	तै.	१	४१	२९	१२	१९	मी१८।२२	५	३५	७	२५	२	२६	६	३४	भ. ५६।२६ उ. मकरे राहुः कर्के केतुः ४७।२६
अवम		६	श.	५४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठिक्षयः
३४	३३	७	र.	५१	५९	उभा	२९	३९	अ.	५३	१७	वि.	२४	१२	३०	१३	२०	मीने	५	३६	७	२५	२	२७	३	२९	भ. २४।१२ या पुष्ये शुक्रः ४६।१२
३४	३२	८	चं.	४८	२०	रे.	२७	४०	सु.	४७	५०	बा.	२०	१०	३१	१४	२१	मे.२७।४०	५	३६	७	२५	२	२८	०	२४	पंचकसमाप्ति २७।४०
३४	३०	९	मं.	४५	४३	अ.	२६	३५	धृ.	४३	१४	तै.	१७	१	३२	१५	२२	मेषे	५	३७	७	२५	२	२८	५७	१९	
३४	२९	१०	बु.	४४	१९	भ.	२६	३८	शू.	३९	३२	व.	१५	१	श्र	१६	२३	वृ.४१।५६	५	३८	७	२५	२	२९	५४	१६	भ. १५।१ उ. ४४।१९ या. सं कर्केऽर्कः ६।५ कु०१५ पु०यं २२।५ या.
३४	२७	११	गु.	४४	८	कृ.	२७	५२	गं.	३६	५२	ब.	१४	१३	२	१७	२४	वृषे	५	३८	७	२५	३	०	५१	१४	भरण्यां ४ गुरुः २४।८ कामदा ११व्र.
३४	२६	१२	शु.	४५	१७	रो.	३०	२६	वृ.	३५	१३	कौ.	१४	४२	३	१८	२५	वृषे	५	३८	७	२४	३	१	४८	१३	
३४	२४	१३	श.	४७	३५	मृ.	३४	१३	ध्रु.	३४	३४	ग.	१६	२६	४	१९	२६	मि.२।२९	५	३९	७	२४	३	२	४५	११	भ-४७।३५ उ. प्रदोषव्र. पुष्ये रविः ३६।४२ म. सिंहे बुधः ४६।३४
३४	२२	१४	र.	५१	४	आ.	३९	७	व्या.	३४	४४	वि.	१९	१९	५	२०	२७	मिथुने	५	३९	७	२४	३	३	४२	१०	भ. १९।१९ या.
३४	२१	३०	चं.	५५	२६	पुन.	४४	४९	ह.	३५	४१	च.	२३	१५	६	२१	२८	क.२८।२३	५	४०	७	२३	३	४	३९	९	हरियाली ३० सोमवती पुण्यम्

श्रावणकृष्ण ८ चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	६	३	०	३	५	९	३
२८	१४	२४	२२	३	१६	२९	२९
०	५०	५४	४८	३६	२	५६	५६
२४	४८	५३	१२	५९	१५	९	९
५६	२१	६३	९	७३	३	३	३
५५	४३	१७	३६	५१	११	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पुन.	स्वा	आश्ले	भ.	पु.	ह.	ध.	आश्ले
३	३	३	३	१	२	२	४

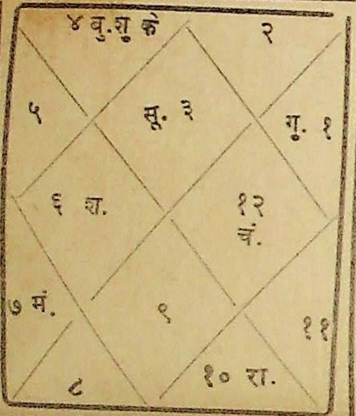

इस पक्ष में घी तेल गुड़ शक्कर में तेजी अलसी एरंड का भाव एकाएक बढ़े। रूई का भाव ति. ११ तक खासा गिरेगा। ति. १२ से रूई चाँदी सोना में तेजी रहे। शेयर और खांड शक्कर कपूर में मंदी अनाज तेज। ति. १।२।४।५।९।१० को वर्षा के अच्छे योग हैं कहीं अति वृष्टि से काफी हानि हो।

शकुनविचार—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल। पवन चले तो अति बुरी पड़े हला-हल काल। श्रावण बदी एकादशी, जो नभ वर्षा होय, अच्छा संवत् होयगा, संशय करो न कोय।

श्रावणमें प्रति सोमवारको यदि समर्थ हो तो निराहार व्रत रखे नहीं तो रात्रिको

श्रावणकृष्ण३० चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३१७

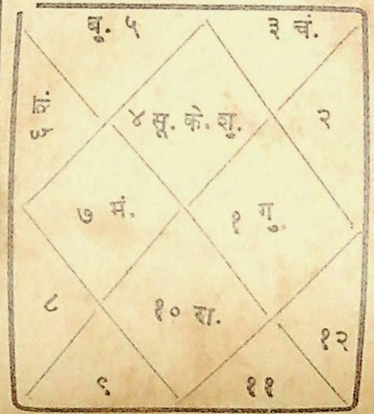

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
३	६	४	०	३	५	९	३
४	१७	०	२३	१२	१६	२९	२९
३९	३५	४९	११	१३	२६	३३	३३
९	३६	४८	५७	५३	४९	५३	५३
५६	२४	४०	८	७३	३	३	३
५९	४२	१	४२	५०	४५	११	११
	मा	मा.	मा	मा	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पु.	स्वा	म.	भ.	पु.	ह.	ध.	आश्ले
१	४	१	४	३	२	२	४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	श्रावण	अगस्त	जिल्काद	सञ्चारः	बेल्वे		रेल्वे		उदय काले			
३४	१९	१	मं.	६०	०	पु.	५१	१२	व.	३७	५	कि.	२७	५२	७	२२	२९	कर्के	५	४०	७	२३	३	५	३६	८
३४	१७	१	बु.	०	१८	श्ले.	५७	४५	सि.	३८	४६	ब.	०	१८	८	२३	३०	सि५७।४५	५	४१	७	२२	३	६	३३	९
३४	१४	२	गु.	५	२६	म.	६०	०	व्य.	४०	११	कौ.	५	२६	९	२४	१	सिंहे	५	४१	७	२२	३	७	३०	१०
३४	११	३	शु.	१०	११	म.	४	४	व.	४१	२७	ग.	१०	११	१०	२५	२	सिंहे	५	४२	७	२१	३	८	२७	१२
३४	७	४	श.	१४	१९	पूफा	९	४६	प.	४१	५९	वि.	१४	१९	११	२६	३	कं.२५।५८	५	४२	७	२१	३	९	२४	१६
३४	३	५	र.	१७	२७	उफा.	१४	३६	शि.	४१	३९	बा.	१७	२७	१२	२७	४	कन्यायां	५	४३	७	२०	३	१०	२१	२१
३४	०	६	चं.	१९	३१	ह.	१८	२०	सि.	४०	२९	तै.	१९	३१	१३	२८	५	तु.४९।३४	५	४३	७	१९	३	११	१८	२७
३३	५७	७	मं.	२०	१३	चि.	२०	४९	सा.	३८	१५	व.	२०	१३	१४	२९	६	तुलायां	५	४४	७	१९	३	१२	१५	३५
३३	५३	८	बु.	१९	४०	स्वा.	२१	५७	शु.	३५	१	ब.	१९	४०	१५	३०	७	तुलायां	५	४५	७	१८	३	१३	१२	४४
३३	५०	९	गु.	१७	५३	वि.	२२	१	शु.	३०	४७	कौ.	१७	५३	१६	३१	८	व.७।०	५	४५	७	१८	३	१४	९	५५
३३	४७	१०	शु.	१४	५७	अनु.	२०	४९	ब्र.	२५	४३	ग.	१४	५७	१७	अ१	९	वृश्चिके	५	४६	७	१७	३	१५	७	६
३३	४३	११	श.	११	३	ज्ये.	१८	४८	ऐ.	१९	५२	वि.	११	३	१८	२	१०	ध.१८।४८	५	४७	७	१६	३	१६	४	१८
३३	४०	१२	र.	६	१८	मू.	१५	५३	वै.	१३	२२	बा.	६	१८	१९	३	११	धनुषि	५	४८	७	१५	३	१७	१	३१
३३	३६	१३	चं.	०	५४	पूषा.	१२	२३	वि.	६ ५८	५८ ५४	तै.	०	५४	२०	४	१२	म.२६।२३	५	४९	७	१४	३	१७	५८	४६
अवम		१४	चं.	५४	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	३३	१५	मं.	४८	५६	उषा.	८	२५	आ.	५१	१९	वि.	२२	०	२१	५	१३	मकरे	५	४९	७	१३	३	१८	५६	२

... अगस्त १९५२ई.) दक्षिणायन ...

ग्रहदर्शन–ति. १३ से बु. पश्चिम में अस्त होगा। ति. १० से पश्चिम में शु. उदय होगा। श. मं. सूर्यास्त बाद पश्चिम में + दिखेंगे। गु. अर्द्धरात्रि पू. में देखें.

सा. सिंहे भानुः ३५।२३ नक्तव्रतारम्भः

चन्द्रदर्शनम्

आश्लेषा शुक्रः ३६।१२ हस्ते ३ शनिः २०।४४ जिल्काद मु. ११ †

भ. ४२।१५ उ. † सँवारा ३

भ. १४।१९ या. विशा. भौमः ३३।५७

ऋषितर्पण (पूर्णमासी को ग्रहण के कारण) नाग ५

भ. २०।१३ उ. ४९।५६ या. वक्रीबुधः ४५।४५ श्री तुलसीजय.

श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी व श्री चिन्तपूर्णी

§ ४९।५८ लो. मा. श्री तिलकजयन्ती

भ. ४३।० उ. अगस्त ८ ता. ३१ श. ३ शुक्रोदयः पश्चिमे §

भ. ११।३ या. आश्ले. रविः ३७।२९ पवित्रा ११ व्र.

श्री विष्णोः पवित्रार्पणम् प्रदोषव्र.

भ. ५५।४ उ. म. सिंहे शुक्रः २५।३६ पश्चिमास्तो बुध. ५६।५१

चतुर्दशीक्षयः ‡मेला श्री अमरनाथ काश्मीर

भ. २२।० या. सत्यव्र. रक्षाबन्धनं भद्रोत्तरं (रखडी) चन्द्रग्र. ‡

श्रावणशुक्ल ८ बुध-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३२६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	०	३	५	९	३
१३	२१	३	२५	२३	१७	२९	२९
१२	३४	४७	४	१८	४	५	५
४४	४९	४४	२	३८	२१	१५	१५
५७	२८	१	७	७३	४	३	३
९	५	४६	२७	५४	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पु. ३	वि. १	म. २	भ. ४	पूफा. २	ह. ३	ध. २	श्ले ४

इस पक्ष में रस-कश अनाज घी तेज। ति. ४ तक रूई में घटाबढ़ी ज्यादह होगी खल मंदा रहे। ति. ५ से रूई में तेजी १५-२० की होगी ति. ८ से मूंगफली तिल्ल बिनौला तेज गेहूं चना जौ के भाव में तेजी रहे। पक्षान्त में चाँदी करीब २ टका मंदी. ति. १२ से रंगीन वस्त्र और नारियल तेज ति. ८ से कच्चे और कमजोर मकानों में रहनेवाले पुरुषों को कष्ट, कहीं २ मकान गिरने से जीव दब के मरें। नदियों में बाढ़ से हानि ति. १।२।५।६।१३।१५ को वर्षा के योग हैं।

श्रावणशुक्ल १५ भौम-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	०	४	५	९	३
१८	२४	२	२५	०	१७	२८	२८
५६	२९	१५	४५	४२	३२	४६	४६
२	५३	४७	५८	२३	५३	१०	१०
५७	२९	२७	६	७३	४	३	३
१६	५४	१	३७	५६	५४	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले. १	वि. २	म. १	भ. ४	म. १	ह. ३	ध. २	श्ले. ४

श० वि०—श्रावणशुक्ला पंचमी और छटको जान कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान ॥ श्रावण शुक्ला पञ्चमी नागपञ्चमी होती है। इस दिन दर्वाजे के दोनों तरफ गोबर के सर्प बनाकर घी, दूध, जल, खिल्लां धूप, दही और दूर्वा से पूजा करें और ब्राह्मण को पुष्पोपहारादि से सन्तुष्ट करें ऐसा करने से सर्पभय नहीं रहता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ भाद्रपदकृष्णपक्षः १७ (६ अ. से २० अ. १९५२ ई०) दक्षिणायन उ.गो. वर्षर्तुः

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. श्रावण	अ. अगस्त	म. जिल्काद	चन्द्र. सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३३	३०	१	बु.	४२	४०	ध.	४	१६	सौ.	४३	३५	बा.	१५	४९	२२	६	१४	कुं. ३२।१०	५	५०	७	१३	३	१९	५६	१९
३३	२७	२	गु.	३६	३९	श.	५६	४	शो.	३६	२	तै.	९	४१	२३	७	१५	कुंभे	५	५१	७	१२	३	२०	५०	३८
३३	२३	३	शु.	३०	५१	पूभा	५२	२९	अ.	२८	४४	व.	३	४५	२४	८	१६	मी ३८।२३	५	५१	७	१२	३	२१	४७	५९
३३	१९	४	श.	२५	३७	उभा	४९	२	सु.	२१	५०	बा.	२५	३७	२५	९	१७	मीने	५	५१	७	१०	३	२२	४५	२२
३३	१५	५	र.	२१	७	रे.	४७	१७	धृ.	१५	३१	तै.	२१	७	२६	१०	१८	मे ४७।१७	५	५२	७	९	३	२३	४२	४६
३३	१२	६	चं.	१७	२६	अ.	४५	५५	शू.	९	५३	व.	१७	२६	२७	११	१९	मेषे	५	५३	७	८	३	२४	४०	१०
३३	८	७	मं.	१४	४५	भ.	४५	४१	गं.	५	४	ब.	१४	४५	२८	१२	२०	मेष	५	५४	७	७	३	२५	३७	३५
३३	५	८	बु.	१३	१८	कृ.	४६	३८	वृ.	५८	१३	कौ.	१३	१८	२९	१३	२१	वृ. ०।५५	५	५४	७	७	३	२६	३५	१
३३	१	९	गु.	१३	३	रो.	४८	५२	व्या	५६	१७	ग.	१३	३	३०	१४	२२	वृषे	५	५५	७	६	३	२७	३२	२९
३२	५७	१०	शु.	१४	८	मृ.	५२	२१	ह.	५५	२४	वि.	१४	८	३१	१५	२३	मि २०।३६	५	५५	७	५	३	२८	३०	०
३२	५४	११	श.	१६	२६	आ.	५६	५६	व.	५५	२३	बा.	१८	२६	भा.	१६	२४	मिथुने	५	५५	७	४	३	२९	२७	३३
३२	५०	१२	र.	१९	५१	पुन.	६०	०	सि.	५६	९	तै.	१९	५१	२	१७	२५	क. ४६।६	५	५६	७	३	४	०	२५	८
३२	४६	१३	चं.	२४	१२	पुन.	२	३०	व्य.	५७	२२	व.	२४	१२	३	१८	२६	कर्के	५	५७	७	२	४	१	२२	४४
३२	४३	१४	मं.	२९	७	पु.	८	४३	व.	५८	५४	श.	२९	७	४	१९	२७	कर्के	५	५८	७	१	४	२	२०	२१
३२	३९	३०	बु.	३४	१२	श्ले.	१५	१४	प.	६०	०	च.	१	३९	५	२०	२८	सि १५।१४	५	५८	७	०	४	३	१८	०

ग्रहदर्शन – शु. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और मं. ख मध्य से पश्चिमको आता हुआ दिखेगा। बु. अस्त है। गु. पूर्व ‡

पंचक आ. ३२।१० × ४७।१७ रे. ।।।ऽ श. ऽ चौ. ।ऽ। ऽ ल.गो.
†भारते स्वतन्त्रोत्सवम्। (मेला आजादी) जय हिन्द सं. ६ प्रा·
भ. ३।४५ उ. ३०।५१ या. वक्री अश्ले. कर्के बुधः ३७।५६+
रे. ।।।ऽ श. ।।ऽ।। ल. ३ + कज्जलो ३. श्री गणे. ४ व्र.
चन्दन ६ व्र. चन्द्रोदय रेल्वे रात्रौ१०।० पंचक समा. ×
भ. १७।२६ उ. ४६।५ या ÷ रो. ऽ रा. ।।।।।ऽ।। ल. ३
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्र. स्मा. चन्द्रोदय घं. ११. मि. १४
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्र. वैष्णवानाम् चं. उ. घं. ११।५७÷
भ. ४३।३५ उ. कृत्ति. १ गुरुः २१।२०
भ. १४।८ या.पू. फा. शुक्रः१४।५२ वृश्चिके भौमः २५।३६†
मघा सं.सिंहेऽर्कः ३३।५१मु.१५ पुण्य १७।५१उ. अजा ११ व्र.
प्रदोषव्रतं गोवत्स १२ पू. ‡ रात्रिमें पूर्व में दिखेगा।
भ. २४।१२ उ. ५६। ३९ या.

कुशोत्पाटिनी ३० "ॐ हुं फट्" इति मन्त्रेण

भाद्रपदकृष्ण ८ बुध-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	०	४	५	९	३
२६	२८	२६	२६	१०	१८	२८	२८
३५	४०	३१	३३	३३	१४	२०	२०
१	११	१६	४	४९	२९	४३	४३
७	३२	४६	५	७३	५	३	३
६	२१	३९	१९	५५	२५	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ले.	वि.	श्ले.		म.	ह.	ध.	पू.
३	३	३	[illegible]	४	३	२	४

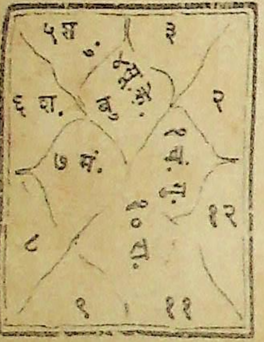

इस पक्ष में लाल रंग के पशु महंगे प्रत्येक अनाज भी तेज हो वस्त्र मंदा रूई में २० मंदा चांदी १।। या २ तेज खांड श्वेत वस्त्र सस्ता, ति. ९ से प्रत्येक धातुओं में तेजी का ध्यान रखकर व्यापार करें। रूई में २० मंदा भारतसरकार को प्रजा के लिये बहुत कुछ व्यय करना पड़ेगा। ति. २।३।९।१०।३० को वर्षा के अच्छे योग हैं।

श० वि०—भादोकारी तीज में उत्तर दिशा प्रदोष। बादल लख सुख मानिये मिटे मिटाया दोष। संग्रह करलो अन्न का रुका रहे षट मास। लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास॥ भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द। धान्य-समृद्धि पशु बढ़े प्रजा में हो आनन्द॥

भाद्रपद में दही छोड़ना चाहिये। इस

भाद्रपदकृष्ण ३० बुध–इष्टम् ०।० दिनगणः ६३४७

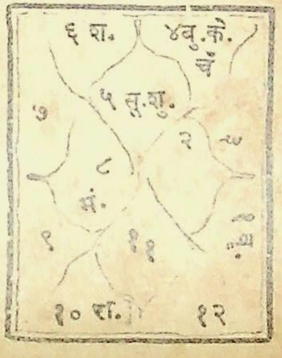

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	०	४	५	९	३
३	२	२२	२७	११	१८	२७	२७
१८	३४	९	५	११	५४	५८	५८
०	१२	४५	३५	२८	१८	२७	२७
५७	३४	२१	४	७३	५	३	३
३९	४	२	६	५८	५२	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	वि.	श्ले.	कृ.	पूफा.	ह.	ध.	पू.
१	४	२	१	२	३	२	४

अष्टमी को कृष्ण की पूजा और व्रत करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। व्रत न रखने से दोष लगता है। लिखा है कि यदि कोई भी स्त्री या पुरुष कृष्णाष्टमी का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सवत् २००९ शकः १८७४ भाद्रपदशुक्लपक्षः ११

(२१ अगस्तसे ४ सित. १९५२ ई०) द. अ. उ. गो.

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ह्रि.	अं.	मु.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३२	३५	१	गु.	३९	२	म.	२१	३८	प.	०	२६	किं.	६	३७	६	२१	२९	सिंहे	५	५८	६	५९	४	४	१५	४०
३२	३२	२	शु.	४३	१५	पू.फा	२७	३१	शि.	१	३६	बा.	११	८	७	२२	३०	क.४३।४७	५	५९	६	५८	४	५	१३	२२
३२	२८	३	श.	४६	३१	उ.फा	३२	३४	सि.	२	१५	तै.	१४	५३	८	२३	१	कन्यायाम्	५	५९	६	५७	४	६	११	६
३२	२४	४	र.	४८	४१	ह.	३६	२९	सा.	२	४	व.	१७	३६	९	२४	२	कन्यायाम्	५	५९	६	५६	४	७	८	५१
३२	१९	५	चं.	४९	३५	चि.	३९	१५	शु.	५	३ ५८	ब.	१९	८	१०	२५	३	तु. ७।५२	६	०	६	५५	४	८	[illegible]	३१
३२	१५	६	मं.	४९	१०	स्वा.	४०	४५	ब्र.	५५	५३	कौ.	१९	२२	११	२६	४	तुलायाम्	६	१	६	५४	४	९	४	३०
३२	१०	७	बु.	४७	३०	वि.	४१	१	ऐं.	५१	४९	ग.	१८	२०	१२	२७	५	वृ.२५।५७	६	१	६	५३	४	१०	२	२२
३२	५	८	गु.	४४	४२	अनु.	४०	६	वै.	४६	५२	वि.	१६	६	१३	२८	६	वृश्चिके	६	२	६	५२	४	११	०	१६
३२	०	९	शु.	४०	५३	ज्ये.	३८	१४	वि	४१	७	बा.	१२	४७	१४	२९	७	ध.३८।१४	६	३	६	५०	४	११	५८	१२
३१	५५	१०	श.	३६	१५	मू.	३५	३१	प्री.	३४	४२	तै.	८	३४	१५	३०	८	धनुषि	६	४	६	४९	४	१२	५६	१०
३१	५०	११	र.	३०	५७	पू.षा	३२	५	आ.	२७	४२	व.	३	३६	१६	३१	९	म. ४६।७	६	४	६	४७	४	१३	५४	९
३१	४६	१२	चं.	२५	९	उ.षा	२८	१४	सौ.	२०	१८	बा.	२५	९	१७	मि	१०	मकरे	६	५	६	४६	४	१४	५२	९
३१	४१	१३	मं.	१९	४	श्र.	२४	७	शो.	१२	४२	तै.	१९	४	१८	३	११	कुं.५१।५८	६	६	६	४५	४	१५	५०	११
३१	३६	१४	बु.	१२	५४	ध.	१९	५०	अ	४ ५७	५५ १७	व.	१२	५४	१९	३	१२	कुंभे	६	६	६	४४	४	१६	४८	१६
३१	३१	१५	गु.	६	५०	श.	१५	४६	शू.	४९	५१	व.	६	५०	२०	४	१३	मी०५७।५८	६	७	६	४३	४	१७	४६	२५

ग्रहदर्शन–ति. १ से बु. पूर्वमें उदय होगा। सा. कन्या. शरदृतुः। गु. शनि सूर्यास्त पीछे पश्चिम में और मं खमध्य से पश्चिम को‡

अनुराधा. भौमः १९।५७ पूर्वोदयो बुधः १२।३२
मार्गी बुधः ५३।० चन्द्रदर्शनम् उ. फा.।।।।ऽ चौ.घ.मेला श्रीबाबा+
जिल्हेज मु. १२ हरतालिका ३ व्र.
भ. १७।३६ उ. ४८।४१ या कलङ्क ४ (पत्थर ४) चन्द्रास्तः ÷
ऋषि ५ चि. ।।।।ऽ. रो.।ऽ।। ल.ऽन्य गो ÷घं ८।४१
उ. फा शुक्रः ४।४ स्वा. ।।।।।।।।। ल.ऽन्य गो० सूर्यषष्ठी व्र.
भ.४७।३० उ.‡आता हुआ दिखगा गु.पूर्व रात्रिमें पूर्वमें दिखेंगे।
भ. १६।६ या० कन्यायां शुक्रः ४६।३१ श्री दधीचि जयन्ती
श्रीचन्द्र ९ (उदासीन संप्रदाय का महोत्सव) भृगुवार के कारण†
पू. फा. रविः २४।४२ हस्ते ४ शनिः ४३।३७ †विशेषपर्व है
भ. ३।३६ उ. ३०।५७ या. पद्मा ११ व्र. स.
सितंबर ९ ता० ३० प्रदोषव्रतं श्र. ।।।।ऽचौ. ।।।। ल.ऽन्य गो. ×
पंचक आ. ५१।५८ ×श्रीवामन १२ मेला अंबाला व पटियाला
भ. १२।५४ उ. ३९।५२ या मघा सिंहे बुधः ८।४३ अगस्त्योदयः =
प्रौष्ठपदी १५ महालयारम्भः =५०।४८ अनन्त १४ व्र. सत्य व्र.
+गुसाईंयाणा कुराली ४८ उऽ।। ल.गो३ सा. कन्यायां भानुः ५८।३१

भाद्रपदशुक्ल८गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	०	४	५	९	३
११	७	२३	२७	२९	१९	२७	२७
०	१५	४२	३१	२	४२	३३	३३
१६	२	३९	३२	४५	४९	०	०
५७	३५	३६	२	७३	६	३	३
५४	५४	५१	३५	५२	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	[illegible]	[illegible]	कृ	[illegible]	ह.	ध.	[illegible]
४	२	३	१	१	३	२	४

इस पक्ष में खाँड़ गुड़ चांदी में २–२।। की तेजी आवेगी। ति ९ से गेहूं जौ चना लालमिरची रेशम तेज। तेल अलसी बिनौला मूंगफली तेज होकर बाद मंदी गिरे। ति. ८ से चावल और घास का भाव कुछ दिन तेज रहे। पक्षान्त में सूत वस्त्र तथा खट्टे पदार्थों में तेजी खाँड गुड़ में मंदी। ति. १।३।४।७।१२। १३।१४ को वर्षा के योग हैं।

घा० वि–भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी जल्दी बेचो नाज। जो चन्दा निर्मल उगे घन ना बिजली होय। गेहूँ जौ संचय करी लाभ सवाया होय।

भाद्रपदशुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३६२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	०	५	५	९	३
१७	११	१	२७	७	२०	२७	२७
४६	३१	१३	४४	३९	२७	१०	१०
२५	४७	१६	२७	४७	४३	४४	४४
५८	३६	८५	१	७३	६	३	३
९	५९	४३	१८	५७	३५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	म.	कृ.	[illegible]	ह	ध.	श्ले
२	३	१	१	४	४	२	४

भाद्रपद शुक्ला ४ को चन्द्रदर्शन करने से झूठा कलङ्क लगता है। अतः इस दिन चन्द्र का दर्शन न करे और यदि भूल-चूक से हो जाये तो "ॐ सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारकमारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥ इस [illegible] पूर्व अथवा उत्तर की तरफ मुंह करके जपने से दोष का परिहार हो जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वि.सा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.															
३१	२६	१	शु.	१	९	पूभा.	१२	२	शू.	४२	४७	कौ.	१	९	२१	५	१४	मीने	६	८	६	४२	४	१८	४४	३५
अवम्		२	शु.	५४	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२२	३	श.	५१	२०	उभा.	८	५०	गं.	३६	१६	ब.	२३	३५	२२	६	१५	मीने	६	८	६	४०	४	१९	४२	४६
३१	१७	४	र.	४७	४१	रे.	६	२७	वृ.	३०	२६	ब.	१९	३०	२३	७	१६	मे.६।२७	६	८	६	३९	४	२०	४०	५९
३१	१२	५	चं.	४५	००	अ.	४	५१	ध्रु.	२५	२१	कौ.	१६	२०	२४	८	१७	मेषे	६	९	६	३८	४	२१	३९	१३
३१	७	६	मं.	४३	३१	भ.	४	१९	व्या.	२१	९	ग.	१४	१५	२५	९	१८	वृ.१९।२८	६	९	६	३६	४	२२	३७	३०
३१	२	७	बु.	४३	१८	कृ.	४	५७	ह.	१७	५६	वि.	१३	२५	२६	१०	१९	वृषे	६	१०	६	३५	४	२३	३५	४८
३०	५८	८	गु.	४४	२४	रो.	६	५२	व.	१५	४३	बा.	१३	५१	२७	११	२०	मि३८।२८	६	११	६	३४	४	२४	३४	९
३०	५३	९	शु.	४६	४२	मृ.	१०	४	सि.	१४	३३	तै.	१५	३३	२८	१२	२१	मिथुने	६	११	६	३२	४	२५	३२	३३
३०	४८	१०	श.	५०	१०	आ.	१४	२३	व्य.	१४	९	व.	१८	२६	२९	१३	२२	मिथुने	६	१२	६	३१	४	२६	३०	५९
३०	४३	११	र.	५४	३३	पुन.	१९	४४	व.	१४	३८	ब.	२२	२१	३०	१४	२३	क.३।२४	६	१३	६	३०	४	२७	२९	३९
३०	३८	१२	चं.	५९	३१	पु.	२५	४७	प.	१५	४१	कौ.	२७	२	३१	१५	२४	कर्के	६	१३	६	२८	४	२८	२८	२
३०	३४	१३	मं.	६०	००	श्ले.	३२	२०	शि.	१७	५	ग.	३२	५	आ१	१६	२५	सिं३२।२०	६	१४	६	२७	४	२९	२६	३५
३०	२९	१३	बु.	४	४०	म.	३८	४३	सि.	१८	३६	व.	४	४०	२	१७	२६	सिंहे	६	१४	६	२६	५	०	२५	९
३०	२४	१४	गु.	९	३६	पू.फा	४४	४३	सा.	१९	४९	श.	९	३६	३	१८	२७	सिंहे	६	१४	६	२४	५	१	२३	४६
३०	१९	३०	शु.	१३	५४	उ.फ	५०	१	शु.१	२०	३३	ना.	१३	५४	४	१९	२८	कं.१।२	६	१४	६	२३	५	२	२२	२४

ग्रह दर्शन शु. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और म० के मध्य से पश्चिमको आता हुआ दीखेगा। नि. ६ ब. पूर्व में अस्त होगा†

हस्ते शुक्रः ५३। ४८ पितृपक्षः

द्वितीयाक्षयः †.गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में दिखेंगे।

भ. २३।३५ उ. ५१।२ या.

श्रीगणेश ४ व्र. पंचक स. ६।२७

भ. ४३।३१ उ. वक्री गुरुः ४२।५१ पूर्वास्तो बुधः ५४।५५

भ. १३।२५ या. =४३।४८ प्रदोषव्र.

पू. फा. बुधः ११।१६

ज्येष्ठा भौम ८।०

भ. १८।२६ उ. ५०।१० या उ. फा. रविः ९।१४ घनि. १राहुः+

इन्दिरा ११ व्र. स्मा. वै. +अश्लेषे केतुः ३९।३५

निंवा ११ व्र, जन्मोत्सव धर्ममार्तण्ड श्री१०५बघाट नरेशजीसोलन

सं. कन्यायामर्कः ३४।१६ मु. ३० पुण्य १८।१६ उ.चित्रा.शुक्रः=

भ. ४।४० उ. ३७।८ या शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्

उ. फा. बुधः २७।४३ अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धं सर्वपितॄणां श्रा.

देवकार्येऽमावस्या

आश्विनकृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
४	७	४	०	५	५	९	३
२४	१५	१२	२७	१६	२१	२६	२६
३४	५६	५९	४७	१७	१४	४८	४८
९	१६	१८	४७	७	४१	२८	२८
५८	३८	वक्री	०	७३	६	३	३
२१	२३	१२	९	५३	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	अनु	म.	कृ.	ह.	ह.	घ.	श्ले.
४	४	४	१	२	४	२	४

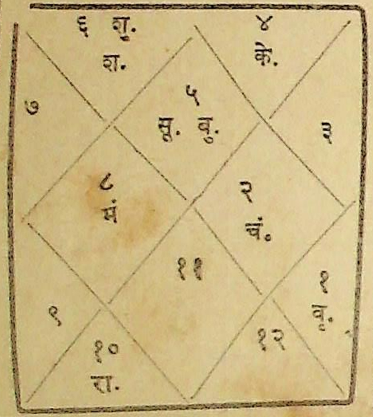

इस पक्ष में रूई सूत चांदी गेहूं और चावल तेज। चंदन इतर आदिक सुगंधित द्रव्य तथा तेल और तेलवाले द्रव्य तेज हों। सो तेल आदिक पदार्थ यहाँ से पहले खरीद कर रखने वालों को २ मास के अंदर अच्छा लाभ होगा। ऊनी वस्त्र तथा सोने के भाव में काफी घटा वढ़ी बाद तेज हो। उड़द मघ संग्रह से लाभ। ति.५। ६।११ को कहीं २ वर्षा होवे।

श्राद्ध समय निर्णय एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में, वृद्धिनिमित्तक प्रातःकाल में, दैविक पूर्वाह्न में, और पार्वणश्राद्ध अपराह्न में करना चाहिये। दिनमानके पाँच भाग करने पर पहिले भागको प्रातः,

आश्विनकृष्ण ३० शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३७७

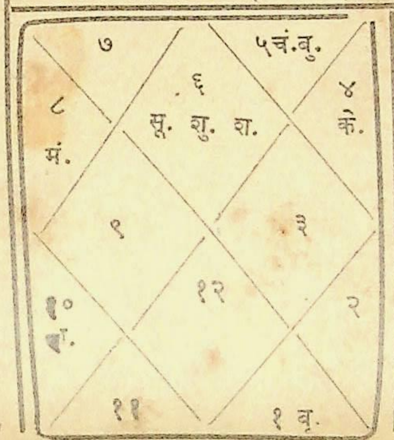

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	७	४	०	५	५	९	३
२	२१	२७	२७	२६	२२	२६	२६
२२	१०	५९	३९	७	१०	२३	२३
२४	३	२८	१८	४८	१९	१	१
५८	३९	वक्री	१	७३	७	३	३
३८	३४	४५	४८	५२	५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.	ज्ये.	उ.फा.	कृ.	चि.	ह.	घ.	श्ले.
२	२	१	१	१	४	१	३

द्वितीय को संगव, तीसरेको मध्याह्न, चौथेको अपराह्न और पांचवें को सायाह्न कहते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह परलोकमें तृप्ति और यशको प्राप्त करता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकाः १८७४ आश्विनशुक्लपक्षः १३

दि. मा.		ति. वा		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हिं.	अं.	मु.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३०	१४	१	श.	१७	१६	ह.	५४	१०	शु.	२०	३२	ब	१७	१६	५	२०	२९	कन्यायाम्	६	१५	६	२२	५	३	२१	५
३०	९	२	र.	१९	३१	चि.	५७	१४	ब्र.	१९	३८	कौ.	१९	३१	६	२१	३०	तु.२५।४२	६	१६	६	२०	५	४	१९	४७
३०	४	३	चं.	२०	२८	स्वा.	५९	१	ऐं.	१७	४५	ग.	२०	२८	७	२२	१	तुलायाम्	६	१७	६	१९	५	५	१८	३५
३०	०	४	मं.	२०	१५	वि.	५९	३४	वै.	१४	५२	वि.	२०	१५	८	२३	२	वृ.४४।२६	६	१७	६	१८	५	६	१७	२४
२९	५५	५	बु.	१८	४२	अनु.	५८	५४	वि.	१०	५७	बा.	१८	४२	९	२४	३	वृश्चिके	६	१८	६	१६	५	७	१६	१५
२९	५०	६	गु.	१६	१	ज्ये.	५७	१५	प्री.	६	१०	तै.	१६	१	१०	२५	४	ध.५७।१५	६	१९	६	१५	५	८	१५	७
२९	४६	७	शु.	१२	२०	मू.	५४	४४	आ.	३ / ५४	३१ / २३	व.	१२	२०	११	२६	५	धनुषि	६	२०	६	१३	५	९	१४	२
२९	४२	८	श.	७	४६	पू.षा	५१	३१	शो	४७	१७	ब.	७	४६	१२	२७	६	धनुषि	६	२१	६	१२	५	१०	१२	५९
२९	३७	९	र.	२	३३	उ.षा	४७	४४	अ.	३९	५५	कौ.	२	३३	१३	२८	७	म. ५।३४	६	२१	६	११	५	११	११	५३
अवम		१०	र.	५४	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	३२	११	चं.	५०	५१	श्र.	४३	३८	सु.	३२	१७	ब.	२३	५१	१४	२९	८	मकरे	६	२२	६	१०	५	१२	११	१
२९	२८	१२	मं.	४४	४६	ध.	३९	२३	धृ.	२४	२८	ब.	१७	४८	१५	३०	९	कुं.११।३०	६	२३	६	९	५	१३	१०	५
२९	२३	१३	बु.	३८	४७	श.	३५	१८	शू.	१६	४४	कौ.	११	४६	१६	अ१	१०	कुंभे	६	२३	६	८	५	१४	९	१०
२९	१९	१४	गु.	३३	६	पूभा	३१	२८	गं.	९	१०	ग.	५	३६	१७	२	११	मी१७।२५	६	२४	६	६	५	१५	८	१८
२९	१५	१५	शु.	२७	५४	उभा	२८	९	वृ.	१ / ५५	५५ / ११	वि.	०	३०	१८	३	१२	मीने	६	२४	६	५	५	१६	७	२९

(२० सितं० से ३ अक्तू० १९५२ ई०) द. अ. सा.
ग्रहदर्शनम्-बुध अस्त है गुरु सूर्यास्त तु. दक्षि. गो. शरदृतुः ।
के बाद पूर्वमें और श. पश्चिममें दीखेंगें मं. खमध्य से पश्चिम §

कन्या. बुधः ४।३२ शारदनवरात्रारंभः घटस्थापनं, मातामहश्राद्धम्
चन्द्रदर्शनम् §को आता दिखेगा । ति० ५ से शनि अस्तहोगा ।
भ. ५०।२२ उ. तुलायां शुक्रः ८।४१ सा. तुला. भानुः ५१।५८+
भ. २०।१५ या. +मुहर्रम मु. १ सन् १३७२ हिजरी
पश्चिमास्तः शनिः २।२९ऽनु. ।।।। ऽनु, ऽरो.घ.४४ उ.मु ।।।।ल.ऽन्य गं।
हस्ते बुधः ३१।२६ ✕मूखी वा तारादेवी उ.षा. ।।।।।ऽअग्निऽ।।। ल.५
भ. १२।२० उ. ४०।३ या. हस्ते रविः ४६।४८ श्रीसरस्वत्यावा-÷
स्वात्यां शुक्रः २३।५५ श्रीसरस्वतीपूजनम् दुर्गा ८ मेला. ज्वाला-✕
चित्रा १ शनिः ४२।५४ अपराजिता पूजनम् विजया १० मेला ‡
तिथिक्षय
भ. २३।५१ उ. ५०।५१ या. श्रीसरस्वतीविसर्जनम् पापां†
निबा. ११ व्र. पंचक आ. ११।३० †कुशा ११ व्र. स्मा. वैष्ण.
अक्टूबर१० ता० ३१ प्रदोषव्रतं. ताजिया =महात्मागान्धीजयन्ती
भ. ३३।६ उ. मू. धनुषि भौमः २।५७ शरत् १५ कोजागरी व्र.=
भ. ०।३० या. चित्रा बुधः १२।१६ सत्यव्रतं कार्तिक स्ना. प्रा.
‡दशहरा रावणवधः ÷हनम् । मू. ।।। ।।।ऽ।ऽ ल.३

आश्विनशुक्ल ८-शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६३८५

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के.
५	७	५	०	६	५	९	३
१०	२६	१२	२७	५	२३	२५	२५
१२	३१	३७	१८	५८	७	५०	५७
१९	५६	४७	९	१८	३५	३४	३४
५८	४०	१०१	३	७३	७	३	३
५७	४५	७	१६	४७	१३	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	ज्ये.	ह.	कृ.	चि.	ह.	ध.	श्ले
१	३	१	१	४	४	१	३

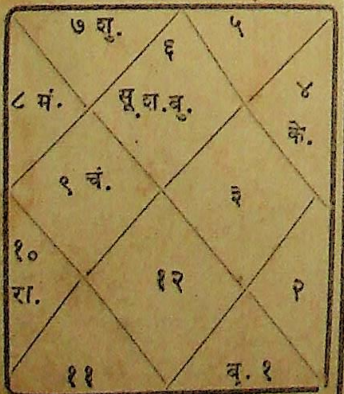

इस पक्ष में रूई चांदी सोने में घटा बढ़ी रुख मंदा । गेहूं जौ चना अलसी सरसों तेजी साथ ही घी गुड़ तेल तिल भी तेज । प्रजा में कहीं फिसाद राजाओंमें विरोध। ति.५।९।१३।१४को कहीं२ बादल चाल तथा बूंदा बांदी हो पशु स्त्री बालकों को पीडा।

श० वि०—साते आठें ववार सुदी जो वर्षा हो जाय । राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ।।१।।

कन्यापूजनविधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्या की पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रतिदिन एक एक बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे । नित्य नौ कन्याओं की पूजा करने से भूमि और द्विगुणित करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है । एक वर्ष की कन्या का पूजन न करे । और भी विशेष

आश्विनशुक्ल १५ शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	५	०	६	५	९	३
१६	०	२२	२६	१३	२३	२५	२५
७	३९	५९	५४	२०	५१	३८	३८
२९	३९	२०	३३	४२	१४	२९	२९
५९	४१	१०१	४	७३	७	३	३
११	४०	४७	२४	४२	९	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	मू.	ह.	कृ.	स्वा	चि	ध.	श्ले
२	१	४	१	३	१	१	३

यह है कि सर्व कार्यों की सिद्धिके लिये ब्राह्मणी, युद्धके लिये क्षत्रिया, धनकेलिये वैश्या, पुत्र के लिये शूद्रा और दारुण कार्य की सिद्धि के लिये अन्त्यजकन्याकी विधि पूर्वक पूजा करे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...त् २००९ शकः १८७४ आश्विनकृष्णपक्षः १२ ... (प्रोसित.स १९ सित. १९५२ ई.) ...

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	म.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
३१	२६	१	गु.	१	९	पूभा.	१२	२	शू.	४२	४७	कौ.	१	९	२१	५	१४	मीने	६	८	६	४२	४	१८	४४	३५
अवम		२	गु.	५४	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२२	३	श.	५१	२०	उभा.	८	५०	गं.	३६	१६	व.	२३	३५	२२	६	१५	मीने	६	८	६	४०	४	१९	४२	४६
३१	१७	४	र.	४७	४१	रे.	६	२७	वृ.	३०	२६	ब.	१९	३०	२३	७	१६	मे.६।२७	६	८	६	३९	४	२०	४०	५९
३१	१२	५	चं.	४५	००	अ.	४	५१	ध्रु.	२५	२१	कौ.	१६	२०	२४	८	१७	मेषे	६	९	६	३८	४	२१	३९	१३
३१	७	६	मं.	४३	३१	भ.	४	१९	व्या.	२१	९	ग.	१४	१५	२५	९	१८	वृ.१९।२८	६	९	६	३६	४	२२	३७	३०
३१	२	७	बु.	४३	१८	कृ.	४	५७	ह.	१७	५६	वि.	१३	२५	२६	१०	१९	वृषे	६	१०	६	३५	४	२३	२५	४८
३०	५८	८	गु.	४४	२४	रो.	६	५२	व.	१५	४३	बा.	१३	५१	२७	११	२०	मि३८।२८	६	११	६	३४	४	२४	३४	९
३०	५३	९	शु.	४६	४२	मृ.	१०	४	सि.	१४	३३	तै.	१५	३३	२८	१२	२१	मिथुने	६	११	६	३२	४	२५	३२	३३
३०	४८	१०	श.	५०	१०	आ.	१४	२३	व्य.	१४	९	व.	१८	२६	२९	१३	२२	मिथुने	६	१२	६	३१	४	२६	३०	५९
३०	४३	११	र.	५४	३३	पुन.	१९	४४	व.	१४	३८	ब.	२२	२१	३०	१४	२३	क.३।२४	६	१३	६	३०	४	२७	२९	३९
३०	३८	१२	चं.	५९	३१	पु.	२५	४७	प.	१५	४१	कौ.	२७	२	३१	१५	२४	कर्के	६	१३	६	२८	४	२८	२८	२
३०	३४	१३	मं.	६०	००	श्ले.	३२	२०	शि.	१७	५	ग.	३२	५	आ	१६	२५	सि३२।२०	६	१४	६	२७	४	२९	२६	३५
३०	२९	१३	बु.	४	४०	म.	३८	४३	सि.	१८	३६	व.	४	४०	२	१७	२६	सिंहे	६	१४	६	२६	५	०	२५	९
३०	२४	१४	गु.	९	३६	पू.फा	४४	४३	सा.	१९	४९	श.	९	३६	३	१८	२७	सिंहे	६	१४	६	२४	५	१	२३	४६
३०	१९	३०	शु.	१३	५४	उ.फ	५०	१	शु.	२०	३३	ना.	१३	५४	४	१९	२८	कं.१।२	६	१४	६	२३	५	२	२२	२४

ग्रह दर्शन शु. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और मं॰ ख मध्य से पश्चिमको आता हुआ दीखेगा। ति. ६ ब. पूर्व में अस्त होगा†

हस्ते शुक्रः ५३ । ४८ पितृपक्षः

द्वितीयाक्षयः †.गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में दिखेंगे।

भ. २३।३५ उ. ५१।२ या.

श्रीगणेश ४ व्र. पंचक स. ६।२७

भ. ४३।३१ उ. वक्री गुरुः ४२।५१ पूर्वास्तो बुधः ५४।५५

भ. १३।२५ या. =४३।४८ प्रदोषव्र.

पू. फा. बुधः ११।१६

ज्येष्ठा भौमः ८।०

भ. १८।२६ उ. ५०।१० या उ. फा. रविः ९।१४ धनि. १राहुः+

इन्दिरा ११ व्र. स्मा. वै. +अश्लेषे केतुः ३९।३५

निंबा ११ व्र, जन्मोत्सव धर्ममार्तण्ड श्री १०५ बघाट नरेशजी सोलन

सं. कन्यायामर्कः ३४।१६ मृ. ३० पुष्य १८।१६ उ. चित्रा. शुक्रः=

भ. ४।४० उ. ३७।८ या शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्

उ. फा. बुधः २७।४३ अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धं सर्वपितृणां श्रा.

देवकार्येऽमावस्या

आश्विनकृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
४	७	४	०	५	५	९	३
२४	१५	१२	२७	१६	२१	२६	२६
३४	५६	५९	४७	१७	१४	४८	४८
९	१६	१८	४७	७	४१	२८	२८
५८	३८	[illegible]	०	७३	६	३	३
५९	२३	१२	९	५३	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा	अनु	म.	कृ.	ह.	ह.	ध.	श्ले.
४	४	४	१	२	४	२	४

इस पक्ष में रूई सूत चांदी गेहूं और चावल तेज। चंदन इतर आदिक सुगंधित द्रव्य तथा तेल और तेलवाले द्रव्य तेज हों। सो तेल आदिक पदार्थ यहाँ से पहले खरीद कर रखने वालों को २ मास के अंदर अच्छा लाभ होगा। ऊनी वस्त्र तथा सोने के भाव में काफी घटा बढ़ी बाद तेज हो। उड़द मघ संग्रह से लाभ। ति.५। ६।११ को कहीं २ वर्षा होवे।

श्राद्ध समय निर्णय एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में, वृद्धिनिमित्तक प्रातःकाल में, दैविक पूर्वाह्न में, और पार्वणश्राद्ध अपराह्न में करना चाहिये। दिनमानके पांच भाग करने पर पहिले भागको प्रातः, द्वितीय को संगव, तीसरेको मध्याह्न, चौथेको अपराह्न और पांचवें को सायाह्न कहते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह परलोकमें तृप्ति और यशको प्राप्त करता है।

आश्विनकृष्ण ३० शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३७७

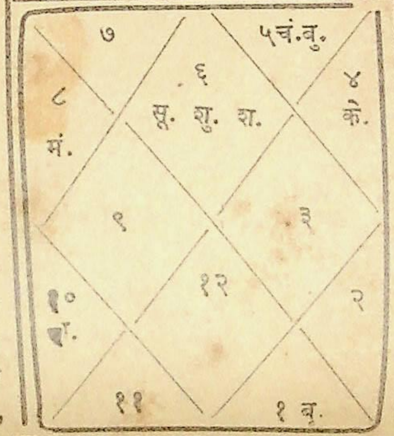

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	७	४	०	५	५	९	३
२	२१	२७	२७	२६	२२	२६	२६
२२	१०	५९	३९	७	१०	२३	२३
२४	३	२८	१८	४८	१९	१	१
५८	३९	[illegible]	१	७३	७	३	३
३८	३४	४५	४८	५२	५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा	ज्ये.	उ.फा	कृ.	चि.	ह.	ध.	श्ले
२	२	१	१	१	४	१	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शका १८७४ आश्विनशुक्लपक्षः १३ (२० सितं० से ३ अक्तू० १९५२ ई०) द. अ. सा.

दि. मा.		ति.	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. आश्विन	अं. अक्तूबर	मु. मुहर्रम	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३०	१४	१	श.	१७	१६	हृ.	५४	१०	शु.	२०	३२	ब	१७	१६	५	२०	२९	कन्यायाम्	६	१५	६	२२	५	३	२१	५
३०	९	२	र.	१९	३१	चि.	५७	१४	ब्र.	१९	३८	कौ.	१९	३१	६	२१	३०	तु.२५।४२	६	१६	६	२०	५	४	१९	४७
३०	४	३	चं.	२०	२८	स्वा.	५९	१	ऐं.	१७	४५	ग.	२०	२८	७	२२	१	तुलायाम्	६	१७	६	१९	५	५	१८	३५
३०	०	४	मं.	२०	१५	वि.	५९	३४	वै.	१४	५२	वि.	२०	१५	८	२३	२	वृ.४४।२६	६	[illegible]	६	१८	५	६	१७	२४
२९	५५	५	बु.	१८	४२	अनु.	५८	५४	वि.	१०	५७	बा.	१८	४२	९	२४	३	वृश्चिके	६	१८	६	१६	५	७	१६	१५
२९	५०	६	गु.	१६	१	ज्ये.	५७	१५	प्री.	६	१०	तै.	१६	१	१०	२५	४	ध.५७।१५	६	१९	६	१५	५	८	१५	७
२९	४६	७	शु.	१२	२०	मू.	५४	४४	आ.	० / ५४	३१ / १३	व.	१२	२०	११	२६	५	धनुषि	६	२०	६	१३	५	९	१४	२
२९	४२	८	श.	७	४६	पू.षा	५१	३१	शो	४७	१७	व.	७	४६	१२	२७	६	धनुषि	६	२१	६	१२	५	१०	१२	५९
२९	३७	९	र.	२	३३	उ.षा	४७	४४	अ.	३९	५५	कौ.	२	३३	१३	२८	७	म. ५।३४	६	२१	६	११	५	११	११	५३
अवम		१०	र.	५४	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	३२	११	चं.	५०	५१	श्र.	४३	३८	सु.	३२	१७	व.	२३	५१	१४	२९	८	मकरे	६	२२	६	१०	५	१२	११	१
२९	२८	१२	मं.	४४	४६	ध.	३९	२३	धृ.	२४	२८	व.	१७	४८	१५	३०	९	कुं.११।३०	६	२३	६	९	५	१३	१०	५
२९	२३	१३	बु.	३८	४७	श.	३५	१८	शू.	१६	४४	कौ.	११	४६	१६	अ१	१०	कुंभे	६	२३	६	८	५	१४	९	१०
२९	१९	१४	गु.	३३	६	पूभा	३१	२८	गं.	९	१०	ग.	५	२६	१७	२	११	मी१७।२५	६	२४	६	६	५	१५	८	१८
२९	१५	१५	शु.	२७	५४	उभा	२८	९	वृ.	१ / ५५	५५ / ११	वि.	०	३०	१८	३	१२	मीने	६	२४	६	५	५	१६	७	२९

ग्रहदर्शनम्-बुध अस्त है गुरु सूर्यास्त तु. दक्षि. गो. शरदृतुः। के बाद पूर्वमें और शु. पश्चिममें दीखेंगे मं. खमध्य से पश्चिम §

कन्या. बुधः ४।३२ शारदनवरात्रारंभः घटस्थापनं, मातामहश्राद्धम्
चन्द्रदर्शनम् §को आता दिखेगा। ति० ५ से शनि अस्तहोगा।
भ. ५०।२२ उ. तुलायां शुक्रः ८।४१ सा. तुला. भानुः ५१।५८+
भ. २०।१५ या. +मुहर्रम मु. १ सन् १३७२ हिजरी
पश्चिमास्तः शनिः २।२९ऽनु. ।।।। ऽनु, ऽरो.घ.४४ उ.मु ।।।।ल.ऽन्य गो
हस्ते बुधः ३१।२६ ✕मूखी वा तारादेवी उ.षा. ।।।।ऽअग्निऽ।। ल.५
भ. १२।२० उ. ४०।३ या. हस्ते रविः ४६।४८ श्रीसरस्वत्यावा-÷
स्वात्यां शुक्रः ३३।५५ श्रीसरस्वतीपूजनम् दुर्गा ८ मेला. ज्वाला-✕
चित्रा १ शनिः ४२।५४ अपराजिता पूजनम् विजया १० मेला ‡
तिथिक्षय
भ. २३।५१ उ. ५०।५१ या. श्रीसरस्वतीविसर्जनम् पापां†
निबा. ११ व्र. पंचक आ. ११।३० †कुशा ११ व्र. स्मा. वैष्ण.
अक्टूबर१० ता० ३१ प्रदोषव्रतं. ताजिया =महात्मागान्धीजयन्ती
भ. ३३।६ उ. मू. धनुषि भौमः २।५७ शरत् १५ कोजागरी व्र.=
भ. ०।३० या. चित्रा बुधः १२।१६ सत्यव्रतं कार्तिक स्ना. प्रा.
‡दशहरा रावणवधः ÷हनम् । मू. ।।। ।।।ऽ।ऽ ल.३

आश्विनशुक्ल ८–शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६३८५

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के.
५	७	५	०	६	५	९	३
१०	२६	१२	२७	५	२३	२५	२५
१२	३१	३७	१८	५८	७	[illegible]	५७
१९	५६	४७	९	१८	३५	३४	३४
५८	४०	१०६	३	७३	७	३	३
५७	४५	७	१६	४७	१३	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	ज्ये.	ह.	कृ.	चि.	ह.	ध.	श्ले
१	२	१	१	४	४	१	३

इस पक्ष में रुई चांदी सोने में घटा बढ़ी रुख मंदा। गेहूं जौ चना अलसी सरसों तेजी साथ ही घी गुड़ तेल तिल भी तेज। प्रजा में कहीं फिसाद राजाओंमें विरोध। ति.५।९।१३।१४को कहीं२ बादल चाल तथा बूंदा बांदी हो पशु स्त्री बालकों को पीडा।

श० वि०—साते आठे क्वार सुदी जो वर्षा ही जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥

कन्यापूजनविधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्या की पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रतिदिन एक एक बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे। नित्य नौ कन्याओं की पूजा करने से भूमि और द्विगुणित करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। एक वर्ष की कन्या का पूजन न करे। और भी विशेष

आश्विनशुक्ल १५ शुक्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ६३९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	५	०	६	५	९	३
१६	०	२२	२६	१३	२३	२५	२५
७	३९	५९	५४	२०	५१	३८	३८
२९	३९	२०	३३	४२	१४	२९	२९
५९	४१	१०१	४	७३	१७	३	३
११	४०	४७	२४	४२	९	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	मू.	ह.	कृ.	स्वा	चि.	ध.	श्ले
२	१	४	१	३	१	१	३

कि सर्व कार्यों की सिद्धिके लिये ब्राह्मणी, युद्धके लिये क्षत्रिया, धनकेलिये वैश्या, सुख के लिये शूद्रा और दारुण कार्य की सिद्धि के लिये अन्त्यजकन्याकी विधि पूर्वक पूजा करे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible]त् २००९ शकः १८७४ आश्विनकृष्णपक्षः १२ (५ सितं. से १९ सितं. १९५२ ई.) द. अ. उ. गो. शरदृ

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	सू.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		निरयणसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३१	२६	१	श.	१	९	पूभा.	१२	२	शू.	४२	४७	कौ.	१	९	२१	५	१४	मीने	६	८	६	४२	४	१८	४४	३५
अवम्		२	शु.	५४	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२२	३	श.	५१	२०	उभा.	८	५०	गं.	३६	१६	ब.	२३	३५	२२	६	१५	मीने	६	८	६	४०	४	१९	४२	४६
३१	१७	४	र.	४७	४१	रे.	६	२७	बृ.	३०	२६	ब.	१९	३०	२३	७	१६	मे. ६।२७	६	८	६	३९	४	२०	४०	५९
३१	१२	५	सं.	४५	००	अ.	४	५१	ध्रु.	२५	२१	कौ.	१६	२०	२४	८	१७	मेषे	६	९	६	३८	४	२१	३९	१३
३१	७	६	मं.	४३	३१	भ.	४	१९	व्या.	२१	९	ग.	१४	१५	२५	९	१८	वृ. १९।२८	६	९	६	३६	४	२२	३७	३०
३१	२	७	बु.	४३	१८	कृ.	४	५७	ह.	१७	५६	वि.	१३	२५	२६	१०	१९	वृषे	६	१०	६	३५	४	२३	३५	४८
३०	५८	८	गु.	४४	२४	रो.	६	५२	व.	१५	४३	बा.	१३	५१	२७	११	२०	मि ३८।२८	६	११	६	३४	४	२४	३४	९
३०	५३	९	शु.	४६	४२	मृ.	१०	४	सि.	१४	३३	तै.	१५	३३	२८	१२	२१	मिथुने	६	११	६	३२	४	२५	३२	३३
३०	४८	१०	श.	५०	१०	आ.	१४	२३	व्य.	१४	९	व.	१८	२६	२९	१३	२२	मिथुने	६	१२	६	३१	४	२६	३०	५९
३०	४३	११	र.	५४	३३	पुन.	१९	४४	व.	१४	३८	ब.	२२	२१	३०	१४	२३	क. ३।२४	६	१३	६	३०	४	२७	२९	३९
३०	३८	१२	सं.	५९	३१	पु.	२५	४७	प.	१५	४१	कौ.	२७	२	३१	१५	२४	कर्के	६	१३	६	२८	४	२८	२८	२
३०	३४	१३	मं.	६०	००	श्ले.	३२	२०	शि.	१७	५	ग.	३२	५	आ	१६	२५	सि ३२।२०	६	१४	६	२७	४	२९	२६	३५
३०	२९	१३	बु.	४	४०	म.	३८	४३	सि.	१८	३६	व.	४	४०	२	१७	२६	सिंहे	६	१४	६	२६	५	०	२५	९
३०	२४	१४	गु.	९	३६	पू. फा	४४	४३	सा.	१९	४९	श.	९	३६	३	१८	२७	सिंहे	६	१४	६	२४	५	१	२३	४६
३०	१९	३०	शु.	१३	५४	उ.फ	५०	१	शु.	२०	३३	ना.	१३	५४	४	१९	२८	क. १।२	६	१४	६	२३	५	२	२२	२४

ग्रह दर्शन शु. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और मं.. ख मध्य से पश्चिमको आता हुआ दीखेगा। नि. ६ ब. पूर्व में अस्त होगा†

हस्ते शुक्रः ५३। ४८ पितृपक्षः

द्वितीयाक्षयः † गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में दिखेंगे।

भ. २३।३५ उ. ५१।२ या.

श्रीगणेश ४ व्र. पंचक स. ६।२७

भ. ४३।३१ उ. वक्री गुरुः ४२।५१ पूर्वास्तो बुधः ५४।५५

भ. १३।२५ या. =४३।४८ प्रदोषव्र.

पू. फा. बुधः ११।१६

ज्येष्ठा भौम॰ ८।०

भ. १८।२६ उ. ५०।१० या उ. फा. रविः ९।१४ धनि. १ राहुः+

इन्दिरा ११ व्र. स्मा. वै. +अश्ले३ केतुः ३९।३५

निंबा ११ व्र, जन्मोत्सव धर्ममार्तण्ड श्री १०५ बघाट नरेशजीसोलन

सं. कन्यायामर्कः ३४।१६ मु. ३० पुण्य १८।१६ उ. चित्रा. शुक्रः=

भ. ४।४० उ. ३७।८ या शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्

उ. फा. बुधः २७।४३ अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धं सर्वपितृणां श्रा.

देवकार्येऽमावस्या

आश्विनकृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
४	७	४	०	५	५	९	३
२४	१५	१२	२७	१६	२१	२६	२६
३४	५६	५९	४७	१७	१४	४८	४८
९	१६	१८	४७	७	४१	२८	२८
५८	३८	[illegible]	०	७३	६	३	३
२१	२३	१२	९	५३	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	अनु	म.	कृ.	ह.	ह.	ध.	श्ले.
४	४	४	१	२	४	२	४

इस पक्ष में रूई सूत चांदी गेहूं और चावल तेज। चंदन इतर आदिक सुगंधित द्रव्य तथा तेल और तेलवाले द्रव्य तेज हों। सो तेल आदिक पदार्थ यहाँ से पहले खरीद कर रखने वालों को २ मास के अंदर अच्छा लाभ होगा। ऊनी वस्त्र तथा सोने के भाव में काफी घटा वढ़ी बाद तेज हो। उड़द मध संग्रह से लाभ। ति. ५।६।११ को कहीं २ वर्षा होवे।

श्राद्ध समय निर्णय एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में, वृद्धिनिमित्तक प्रातःकाल में, दैविक पूर्वाह्न में, और पार्वणश्राद्ध अपराह्न में करना चाहिये। दिनमानके पांच भाग करने पर पहिले भागको प्रातः, द्वितीय को संगव, तीसरेको मध्याह्न, चौथेको अपराह्न और पांचवें को सायाह्न कहते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह परलोकमें तृप्ति और यशको प्राप्त करता है।

आश्विनकृष्ण ३० शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६३७७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	७	४	०	५	५	९	[illegible]
२	२१	२७	२७	२६	२२	२६	२[illegible]
२२	१०	५९	३९	७	१०	२३	२[illegible]
२४	३	२८	१८	४८	१९	१	[illegible]
५८	३९	[illegible]	१	७३	७	३	[illegible]
३८	३४	४५	४८	५२	५	११	१[illegible]
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.	ज्ये.	उ.फा.	कृ.	चि.	ह.	ध.	श्ले.
२	२	१	१	१	४	१	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ आश्विनशुक्लपक्षः १३																	हिं.	सं.	मु.	चन्द्र.	सू. उ.		सू. अ.		नित्यसूर्यस्पष्टः			
दि. मा.		ति. वा		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.							सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
३०	१४	१	श.	१७	१६	ह.	५४	१०	शु.	२०	३२	ब	१७	१६	५	२०	२९	कन्यायाम्	६	१५	६	२२	५	३	२१	५
३०	९	२	र.	१९	३१	चि.	५७	१४	ब्र.	१९	३८	कौ.	१९	३१	६	२१	३०	तु.२५।४२	६	१६	६	२०	५	४	१९	४७
३०	४	३	चं.	२०	२८	स्वा.	५९	१	ऐं.	१७	४५	ग.	२०	२८	७	२२	१	तुलायाम्	६	१७	६	१९	५	५	१८	३५
३०	०	४	मं.	२०	१५	वि.	५९	३४	वै.	१४	५२	वि.	२०	१५	८	२३	२	वृ.४४।२६	६	१७	६	१८	५	६	१७	२४
२९	५५	५	बु.	१८	४२	अनु.	५८	५४	वि.	१०	५७	बा.	१८	४२	९	२४	३	वृश्चिके	६	१८	६	१६	५	७	१६	१५
२९	५०	६	गु.	१६	१	ज्ये.	५७	१५	प्री.	६	१०	तै.	१६	१	१०	२५	४	ध.५७।१५	६	१९	६	१५	५	८	१५	७
२९	४६	७	शु.	१२	२०	मू.	५४	४४	आ.	० १४	३१ १३	ज.	१२	२०	११	२६	५	धनुषि	६	२०	६	१३	५	९	१४	२
२९	४२	८	श.	७	४६	पू.षा	५१	३१	सौ	४७	१७	व.	७	४६	१२	२७	६	धनुषि	६	२१	६	१२	५	१०	१२	५९
२९	३७	९	र.	२	३३	उ.षा	४७	४४	श.	३९	५५	कौ.	२	३३	१३	२८	७	म.५।३४	६	२१	६	११	५	११	११	५१
अवम		१०	र.	५४	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	३२	११	चं.	५०	५१	श्र.	४३	३८	सु.	३२	१७	व.	२३	५१	१४	२९	८	मकरे	६	२२	६	१०	५	१२	११	१
२९	२८	१२	मं.	४४	४६	ध.	३९	२३	धृ.	२४	२८	व.	१७	४८	१५	३०	९	कुं.११।३०	६	२३	६	९	५	१३	१०	५
२९	२३	१३	बु.	३८	४७	श.	३५	१८	शू.	१६	४४	कौ.	११	४६	१६	अ१	१०	कुंभे	६	२३	६	८	५	१४	९	१०
२९	१९	१४	गु.	३३	६	पू.भा	३१	२८	गं.	९	१०	ग.	५	३६	१७	२	११	मी१७।२५	६	२४	६	६	५	१५	८	१८
२९	१५	१५	शु.	२७	५४	उभा	२८	९	वृ.	५५	५५ ११	वि.	०	३०	१८	३	१२	मीने	६	२४	६	५	५	१६	७	२९

(२० सितं० से ३ अक्तू० १९५२ ई०) द. अ. सा.

ग्रहदर्शनम्-बुध अस्त है गुरु सूर्यास्त तु. दक्षि. गो. शरदृतुः । के वाद पूर्वमें और शु. पश्चिममें दीखेंगे मं. खमध्य से पश्चिम §

कन्या. बुधः ४।३२ शारदनवरात्रारंभः घटस्थापनं, मातामहश्राद्धम् चन्द्रदर्शनम् §को आता दिखेगा । ति० ५ से शनि अस्तहोगा । भ. ५०।२२ उ. तुलायां शुक्रः ८।४१ सा. तुला. भानुः ५१।५८+ भ. २०।१५ या. +मुहर्रम मु. १ सन् १३७२ हिजरी पश्चिमास्तः शनिः २।२९ऽनु. ।।।। ऽनु, ऽरो.घ.४४ उ.मु ।।।।ल.ऽन्य गो हस्ते बुधः ३१।२६ ✕मूखी वा तारादेवी उ.षा. ।।।।ऽअग्निऽ।। ल.५ भ. १२।२० उ. ४०।३ या. हस्ते रविः ४६।४८ श्रीसरस्वत्यावा-÷ स्वात्यां शुक्रः ३३।५५ श्रीसरस्वतीपूजनम् दुर्गा ८ मेला. ज्वाला·✕ चित्रा १ शनिः ४२।५४ अपराजिता पूजनम् विजया १० मेला ‡ तिथिक्षय

भ. २३।५१ उ. ५०।५१ या. श्रीसरस्वतीविसर्जनम् पापां† निबा. ११ व्र. पंचक आ. ११।३० †कुशा ११ व्र. स्मा. वैष्ण. अक्टूबर१० ता० ३१ प्रदोषव्रतं. ताजिया =महात्मागान्धीजयन्ती भ. ३३।६ उ. मू. धनुषि भौमः २।५७ शरत् १५ कोजागरी व्र.= भ. ०।३० या. चित्रा बुधः १२।१६ सत्यव्रतं कार्तिक स्ना. प्रा. ‡दशहरा रावणवधः ÷हनम् । मू. ।।। ।।।ऽ।ऽ ल.३

आश्विनशुक्ल ८—शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६३८५

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के.
५	७	५	०	६	५	९	३
१०	२६	१२	२७	५	२३	२५	२५
१२	३१	३७	१८	५८	७	५०	५७
१९	५६	४७	९	१८	३५	३४	३४
५८	४०	१०८	३	७३	७	३	३
५७	४५	७	१६	४७	१३	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	ज्ये.	ह.	कृ.	चि.	ह.	ध.	श्ले.
१	३	१	१	४	४	१	३

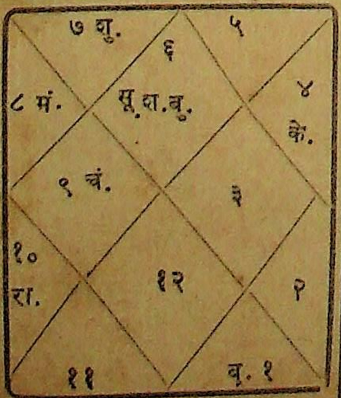

इस पक्ष में रूई चांदी सोने में घटा बढ़ी रुख मंदा । गेहूं जौ चना अलसी सरसों तेजी साथ ही घी गुड़ तेल तिल भी तेज । प्रजा में कहीं फिसाद राजाओंमें विरोध। ति.५।९।१३।१४को कहीं२ बादल चाल तथा बूंदा बांदी हो पशु स्त्री बालकों को पीडा।

श० वि०—साते आठें ववार सुदी जो वर्षा हो जाय । राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥

कन्यापूजनविधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्या की पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रतिदिन एक एक बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे । नित्य नौ कन्याओं की पूजा करने से भूमि और द्विगुणित करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है । एक वर्ष की कन्या का पूजन न करे । और भी विशेष

आश्विनशुक्ल १५ शुक्र—इष्टम् ०।० दिनगणः ६३९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	५	०	६	५	९	३
१६	०	२२	२६	१३	२३	२५	२५
७	३९	५९	५४	२०	५१	३८	३८
२९	३७	२०	३३	४२	१४	२९	२९
५९	४१	१०१	४	७३	७	३	३
११	४०	४७	२४	४२	९	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह.	मू.	ह.	कृ.	स्वा	चि.	ध.	श्ले.
२	१	४	१	३	१	१	३

[illegible] कि सर्व कार्यों की सिद्धिके लिये ब्राह्मणी, युद्धके लिये क्षत्रिया, धनकेलिये वैश्या, सुख के लिये शूद्रा और दारुण कार्य की सिद्धि के लिये अन्त्यजकन्याकी विधि पूर्वक पूजा करे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त् २००९ शकः १८७४ कार्तिककृष्णपक्षः १४ (४अक्टू. से १८ अक्टू. १९५२ ई.) द. गो. शरदृतुः।

ग्रहदर्शन ति. १० से बुध पश्चिम में उदय होगा। गुरु सूर्यास्त बाद पूर्व में और श. मं. पश्चिम में दिखेंगे। शनि अस्त है।

ति. मा. घ.	ति. मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. आश्विन	अं. अक्टू.	मु. सफर	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे घं.	सू. उ. रेल्वे मि.	सू. अ. रेल्वे घं.	सू. अ. रेल्वे मि.	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
२९	१०	१	श.	२३	२६	रे.	२५	२१	व्या.	४९	६	कौ.	२३	२६	१९	४	१३	म. २५।३१	६	२४	६	४	५	१७	६	४३	पंचक स. २५।३१
२९	५	२	र.	१९	४७	अ.	२३	४३	ह.	४३	४५	ग.	१९	४७	२०	५	१४	मेषे	६	२५	६	३	५	१८	५	५८	भ. ४८।२७ उ.
२९	१	३	चं.	१७	८	भ.	२२	५६	व.	३९	१३	वि.	१७	८	२१	६	१५	वृ. ३८।२	६	२६	६	१	५	१९	५	१६	भ. १७।८ या. व. भरण्यां ४ गुरुः १।३३ करक ४ व्र. (करवा ४) †
२८	५९	४	मं.	१५	४५	कृ.	२२	१९	सि.	३५	४१	बा.	१५	४५	२२	७	१६	वृषे	६	२७	६	०	५	२०	४	३०	तुलायां बुधः १२।१७ † चन्द्रोदय रे. घं. ७।४७ रात्रौ
२८	५२	५	बु.	१५	३६	रो.	२४	५६	व्य.	३३	५	तै.	१५	३६	२३	८	१७	मि५६।२२	६	२७	६	०	५	२१	३	५९	विशा. शुक्रः २४।५५
२८	४७	६	गु.	१६	४७	मृ.	२७	४९	व.	३१	३१	व.	१६	४७	२४	९	१८	मिथुने	६	२८	५	५८	५	२२	३	२४	भ. १६।४७ उ. ४७।५८ या.
२८	४२	७	शु.	१९	९	आ.	३१	४८	प.	३०	४६	ब.	१९	९	२५	१०	१९	मिथुने	६	२[illegible]	५	५७	५	२३	२	५०	चित्रा रविः १७।१९ अहोई ८ (सायंकालव्यापिनी होने से)
२८	३७	८	श.	२२	४२	पुन.	३६	५८	शि.	३०	५९	कौ.	२२	४२	२६	११	२०	क. २०।४०	६	२९	५	५७	५	२४	२	१९	स्वात्यां बुधः २०।५३
२८	३२	९	र.	२७	९	पु.	४२	५२	सि.	३१	४९	ग.	२७	९	२७	१२	२१	कर्के	६	२९	५	५६	५	२५	१	५०	भ. ५९।४१ उ.
२८	२८	१०	चं.	३२	१३	श्ले.	४९	१९	सा.	३३	५	वि.	३२	१३	२८	१३	२२	सिं४९।१९	६	३०	५	५५	५	२६	१	२३	भ. ३२।१३ या. पश्चिमोदयो बुधः १८।५६
२८	२३	११	मं.	३७	३०	म.	५५	५०	शु.	३४	३०	ब.	४	५१	२९	१४	२३	सिंहे	६	३०	५	५३	५	२७	०	५९	रमा ११ व्र. सर्वेषाम्
२८	१९	१२	बु.	४२	३०	पूफा.	६०	०	शु.	३५	४५	कौ.	१०	०	३०	१५	२४	सिंहे	६	३१	५	५२	५	२८	०	३८	‡ वृश्चिके शुक्रः ३३।२८ प्रदोष व्र.धन १३ यमाय दीपदानम्
२८	१४	१३	गु.	४६	५२	पूफा.	२	०	ब्र.	३६	३५	ग.	१४	४१	का.१	१६	२५	कं. १८।२२	६	३२	५	५०	५	२९	०	१८	भ. ४६।५२ उ. सं. तुलायामर्कः ५९।५९ मु. ४५ पुण्यं परदिने ‡
२८	९	१४	शु.	५०	२१	उफा.	७	२७	ऐं.	३६	४४	वि.	१८	२६	२	१७	२६	कन्यायाम्	६	३३	५	४८	६	०	०	०	भ. १८।३६ या. श्री हनुमज्जन्मदिनम्
२८	५	३०	श.	५२	४०	ह.	११	५७	वै.	३५	५८	च.	२१	३०	३	१८	२७	तु. ४३।३८	६	३४	५	४७	६	०	५९	४३	श्रीमहालक्ष्मीपूजनम् (दीपमाला) शेषरात्रौ दारिद्र्यनिस्सारणम्

कार्तिककृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६३९९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	६	०	६	५	९	३
२४	६	६	२६	२३	२४	२५	२५
२	१६	६	१२	१०	५०	१३	१३
१९	२१	५९	५८	३२	५	३	३
५९	४२	९५	५	७३	७	३	३
२१	२७	५२	४३	४२	२१	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चि.	मू.	चि.	भ.	वि.	चि.	ध.	श्ले.
१	२	४	४	१	१	१	३

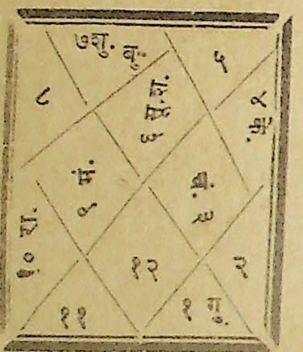

इस पक्ष में रूई घटा बढ़ी होकर तेजी हो। चांदी सूत बिनौला कपड़ा घास लकड़ी का भाव तेज, घी में मंदा होकर तेजी। आश्विन कृष्ण में जो वस्तु तेज हुई हो, उनमें यहां ति. ९ से मंदी आवेगी। चावल सरसों तेल तेज। गेहूँ आदि सर्वधान्यों का भाव समान, मकई बाजरा आदि संग्रह कर लेना ठीक है। रूस अमेरिका में ति. १२ से २४ दिन में किसी प्राकृतिक कोप से हानि हो। ति. १४ के बाद प्रजा में सुख पर अन्न का भाव तेज। ति. १० से १३ तक वायु का जोर हवा के साथ कहीं कहीं बूंदा बूंदी कुछ वर्षा हो।

शकुन विचार

कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय।
आषाढ़मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥

कार्तिककृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६४०६

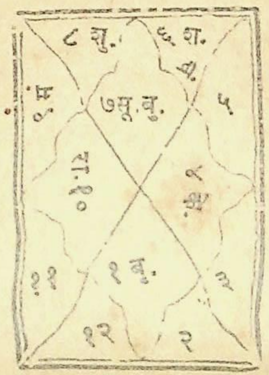

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	८	६	०	७	५	९	३
०	११	१६	२५	१	२५	२४	२४
५९	१६	५७	२८	४६	४१	५०	५०
४३	२७	३८	५१	१२	२४	४७	४७
५९	४३	९०	६	७३	७	३	३
४३	११	४९	४४	३८	१९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चि.	मू.	स्वा.	भ.	वि	चि.	श्र.	श्ले.
३	४	४	४	४	१	१	३

जो मनुष्य कार्तिक मास में प्रातः स्नान करता है, जितेन्द्रिय रहता है, जप करता है, हविष्य भक्षण करता है तथा शान्त रहता है वह सब पापों से छूट जाता है। स्नान संकल्प-"मम वाङ्मनः कायजाशेषपाप-क्षयद्वारा श्रीराधादामोदरप्रीत्यर्थम् अमकतीर्थे कार्तिकस्नानमहं करिष्ये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ कातिक शुक्लपक्षः १५

(१९ अ.स १ नवं.१९५२ ई०) द.गोलो हेमन्तर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२८	०	१	र.	२३	४३	चि.	१५	२०	व.	३४	२१	कि.	२३	११	४	१९	२८	तुलायाम	६	३५	५	४६	६	१	५९	३०
२७	५५	२	चं.	५३	३१	स्वा.	१७	२५	प्री.	३१	४२	बा.	३	३७	५	२०	२९	तुलायाम	६	३६	५	४५	६	२	५९	१९
२७	५०	३	मं.	५२	३	वि.	१८	१५	आ.	२८	२	तै.	२	४७	६	२१	१	वृ. ३।२	६	३७	५	४४	६	३	५९	११
२७	४५	४	बु.	४९	२७	अनु	१७	५४	सौ.	२३	२८	व.	२०	४५	७	२२	२	वृश्चिके	६	३७		४३	६	४	५९	५
२७	४१	५	गु.	४५	०	ज्ये.	१६	२६	शो.	१७	५७	ब.	१७	३८	८	२३	३	ध. १६।२६	६	३७	५	४२	६	५	५९	१
२७	३६	६	शु.	४१	२१	मू.	१४	११	अ.	११	४८	कौ.	१३	३५	९	२४	४	धनपि	६	३८		४१	६	६	५८	५९
२७	३२	७	श.	३६	१४	पू.षा	११	५	सु.	४ ५७	५९ ३९	ग.	८	४७	१०	२५	५	म. २५।१०	६	३९	५	४०	६	७	५९	०
२७	२८	८	र.	३०	३६	उ.षा	७	२६	धृ.	५०	०	वि.	३	२५	११	२६	६	मकरे		४०	५	३९	६	८	५९	३
२७	२४	९	चं.	२४	४०	श्र.	३ ९	२३	शू.	४२	१२	का.	२४	४०	१२	२७	७	कुं. ११।१६	६	४०	५	३८	६	९	५९	७
२७	२१	१०	मं.	१८	३९	ध.	५५	०	वृ.	३४	२०	ग.	१८	३९	१३	२८	८	कुंभे	६	४१	५	३७	६	१०	५९	१२
२७	१७	११	बु.	१२	४४	पू.भा	५१	५	ध्रु.	२६	३९	वि.	१२	४४	१४	२९	९	मी. ३७।४	६	४२	५	३७	६	११	५९	२०
२७	१३	१२	गु.	७	११	उ.भा	४७	३०	व्या.	९	१३	बा.	७	११	१५	३०	१०	मीने	६	४२	५	३६	६	१२	५९	३१
२७	९	१३	शु.	२	३	रे.	४४	४५	ह.	१२	१५	तै.	२	३	१६	३१	११	मे. ४।४५	६	४३	५	३५	६	१३	५९	४४
अवम		१४	श.	५५	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	५	१५	श.	५४	८	अ.	४२	४९	व.	५	५३	वि.	२५	५४	१७	न.	१२	मेष.	६	४४	५	३४	६	१५	०	०

ग्रहदर्शन मं. बु. शु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में और गु. पूर्व में दिखेंगे। शनि नि. १० से उदय होगा।

अन. शुक्रः १६।२७ अन्नकूट गोवर्द्धन पू. बाष्टिका कर्षणम्†
वि. बुधः १।५४ पू. षा भौमः ५०।५६ चन्द्रदर्शनम भाई २ कलम ‡
सफर मु. २ †(रस्साकशी)। ‡दवात पूजा वलराज।
भ. २०।४५ उ. ४९।२७ या. §पूजाऽलंकारादिवारणं च।
स्वात्यां रविः ४१।१ सा वृश्चिके भानुः १०।२४ हेमन्तर्तुप्रा.

भ. ३६।१४ उ. ×वि. भीष्मपंचकारंभः चातु. व्र. स.।
भ, ३।२५ या. चि. २ शनिः ३।३ गोपाष्टमी सायंकाले गवां§
वृश्चिके बुधः १।२५ परिक्रमा ९ स्वर्णगर्भ कूष्मा. दानं. पंचक+
भ. ४५।४१ उ. पूर्वोदयं शनिः ३५।२७ +आ. ३१।१६
भ. १२।४४ या. अनु. बुधः २६।२० प्रबोधिनी ११ व्र. तुलसी×
ज्येष्ठायां शुक्रः १०।५३ प्रदोषव्र.
भ. ५७।४० उ. वैकुण्ठ १४ व्र. पञ्चकस. ४४।४५

भ. २५।५४ या. नवंबर ११ ता. ३० सत्यव्र. मेला श्रीपुष्कर राज व रामतीर्थ श्री गुरुनानक देव जयन्ती. कार्त्तिकस्ना. समाप्ति

कार्तिकशुक्ल ८ रव्याविष्टम् ०।० दिनगणः ६४१४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	८	६	०	७	५	९	३
८	१७	२८	२४	११	२६	२४	२४
५९	४	३५	३१	३३	३९	२५	२५
३	३७	४२	४	२९	३८	१९	१९
६०	४३	८३	७	७३	७	३	३
३	४४	३३	३०	१०	१३	११	११
सो.	मा.	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा १	[illegible] २	वि. ३	भ. ४	ऽनु. ३	चि. १	ध. १	[illegible] ३

इस पक्ष में प्रायः प्रत्येक वस्तु रूई सूत घी अनाज तेल अफीम चांदी में तेजी। फिर ति. ८ के बाद सुवर्ण अफोम घी तेल अनाज के भाव में कुछ मंदा चतुष्पद महंगे। ति. ११ से पहले जो सट्टे की चीजें तेज चल रही हों, उनमें मन्दा जो मन्दी चल रही हों उनमें तेजी का झटका आवेगा। परन्तु लोहा जिस्त सीसा कली कालेपदार्थ और घास लकडी गुड़ खांड़ तेज ही चलेंगे। बाल वृद्ध चतुष्पदों को पीड़ा बड़े जमीदारों को हानि पहुंचे। आकाश निर्मल ति. ७।८।१३।१५ को कहीं कहीं बादल चाल दीखे

भाईदूज के दिन अपनी बहन के घर जाकर वहीं पर उसके हाथ से प्रेम पूर्वक भोजन करे और उसे यथाशक्ति अनेक प्रकार के दान देवे। कार्तिक मास में आंवले के नीचे ब्राह्मणों को भोजन करावे और बाद में आप भी उसी वृक्ष के नीचे भोजन करे आंवले की छाया में श्राद्ध और उसके फलों से विष्णु की पूजा करने से बड़ा भारी पुण्य होता है, क्योंकि सभी देव, ऋषि, यज्ञ और तीर्थों का आंवले के नीचे निवास होता है।

कार्तिकशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६४२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	८	७	०	७	५	९	३
१५	२१	६	२३	१८	२७	२४	२४
०	२८	४७	४४	५३	२२	६	६
०	२३	२	३१	१६	३१	१४	१४
६०	४४	५९	७	७३	७	३	३
१६	७	२९	५६	१७	५	११	११
सो.	मा	मा.	व	मा	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा ३	पूषा [illegible]	ऽनु. २	भ. ४	ज्ये १	चि. २	ध. १	[illegible] ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ मार्गशीर्षकृष्णपक्षः १६

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	ग्रह. सञ्चारः	सू. उ. देहल्यां		सू. अ. देहल्यां		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२७	२	१	र.	५१	३४	भ.	४१	४२	सि.	० / ५५	१३ / २०	बा.	२२	५१	१८	२	१३	वृ. ५७।४	६	४४	५	३३	६	१६	०	१७
२६	५८	२	चं.	५०	१६	कृ.	४१	४५	व.	५१	२१	तै.	२०	५५	१९	३	१४	वृषे	६	४६	५	३२	६	१७	०	३७
२६	५४	३	मं.	५०	११	रो.	४३	२	प.	४८	२३	व.	२०	१३	२०	४	१५	वृषे	६	४७	५	३१	६	१८	०	५८
२६	५०	४	बु.	५१	२९	मृ.	४५	३५	शि.	४६	२४	ब.	२०	५०	२१	५	१६	मि १४।२८	६	४८	५	३१	६	१९	१	२१
२६	४६	५	गु.	५३	५२	आ.	४९	२२	सि.	४५	२४	कौ.	२२	४४	२२	६	१७	मिथुने	६	४९	५	३०	६	२०	१	४६
२६	४३	६	शु.	५७	३९	पुन.	५४	१६	सा.	४५	१६	ग.	२५	४९	२३	७	१८	क. ३८।२	६	५०	५	२९	६	२१	२	१३
२६	३९	७	श.	६०	२	पु.	६०	०	शु.	४५	५४	वि.	२९	५५	२४	८	१९	कर्के	६	५१	५	२८	६	२२	२	४१
२६	३५	७	र.	२	११	श्ले.	६०	०	शु.	४६	५९	ब.	२	११	२५	९	२०	कर्के	६	५१	५	२८	६	२३	३	९
२६	३१	८	चं.	७	२१	श्ले.	६	२०	ब्र.	४८	२२	कौ.	७	२१	२६	१०	२१	सि. ६।२०	६	५१	५	२७	६	२४	३	३९
२६	२७	९	मं.	१२	४२	म.	१२	५०	ऐं.	४९	३८	ग.	१२	४२	२७	११	२२	सिंहे	६	५२	५	२७	६	२५	४	१३
२६	२४	१०	बु.	१७	४७	पूफा.	१९	९	वै.	५०	३४	वि.	१७	४७	२८	१२	२३	क. ३५।३३	६	५३	५	२६	६	२६	४	४९
२६	२०	११	गु.	२२	१५	उफा.	२४	४७	वि.	५०	५४	बा.	२२	१५	२९	१३	२४	कन्यायाम्	६	५४	५	२५	६	२७	५	२६
२६	१६	१२	शु.	२५	४५	ह.	२९	३२	प्री.	५०	२३	तै.	२५	४५	३०	१४	२५	कन्यायाम्	६	५४	५	२४	६	२८	६	४
२६	१२	१३	श.	२८	९	चि.	३३	१२	आ.	४९	२	व.	२८	९	मा. १	१५	२६	तु. १।२२	६	५५	५	२४	६	२९	६	४३
२६	८	१४	र.	२९	१५	स्वा.	३५	३७	सौ.	४६	३८	श.	२९	१५	२	१६	२७	तुलायाम्	६	५६	५	२४	७	०	७	२५
२६	५	३०	चं.	२९	२	वि.	३६	४२	शो.	४३	१५	ना.	२९	२	३	१७	२८	वृ. २१।२६	६	५८	५	२३	७	१	८	९

(२नवं. से १७ नवं. १९५२ई०) द. गोली हेमन्तर्तुः

ग्रहदर्शन मं. बु. शु. सूर्यास्त पीछे पश्चिम में और गुरु पूर्व में दिखाई देंगे। शनि प्रातःकाल पूर्व में दिखाई देगा।

‡ मु. १५ पुण्यं परदिने १ याम या. श्रवणे ४ राहुः आश्ले. §
भ. २०।१३ उ. ५०।११ या. व. भरण्यां ३ गुरुः १।४९
विशा. रविः ५८।१३ श्रीगणेश ४ व्र.

भ. ५७।३९ उ.
भ. २९।५५ या. उ. षा. भौमः ०।५१
ज्येष्ठायां बुधः १८।२८ श्रीमहाकालभैरवजयन्ती ८ अर्धरात्र †
मू. धनुषि शुक्रः ६।३५
भ. ४५।१४ उ.
भ. १७।४७ या. मकरे भौमः २८।२८
उत्पन्ना ११ व्र. सर्वेषाम् †व्यापिनी होने से
मल्ल १२ § २ केतुः ३१।४३
भ. २८।९ उ. ५८।४२ या. प्रदोष व्र. सं. वृश्चिकेऽर्कः ५९।३९ ‡
मेला पुरमण्डलदेविका स्नानं
सोमवती ३०

मार्गशीर्षकृष्ण ८ चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६४२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	८	७	०	७	५	९	३
२४	२८	१७	२२	२९	२८	२३	२३
३	८	२२	३०	५२	२५	३७	३७
३९	५२	१९	४२	०	२७	३६	३६
६०	४४	६१	८	७३	६	३	३
३०	४७	८	११	३	५२	११	११
शी.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
वि.	उ.षा.	ज्ये.	भ.	ज्ये.	चि.	ध.	श्ले.
२	१	१	३	४	२	१	३

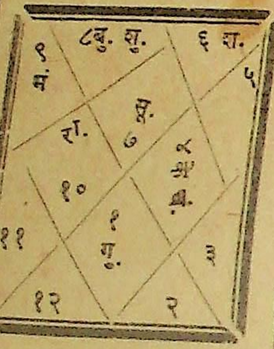

इस पक्ष में चना बाजरा गेहूँ जौ मक्की के भाव में तेजी और खांड़ गुड़ सरसों घी तेल अलसी मंदे सुवर्ण चांदी के भाव में घटा बढ़ी होकर मंदा। शेयरों के भाव में तेजी। ति. १०से रुई ऊन घी तेल अलसी सोना चान्दी में तेजी। पक्षान्त में प्रायः सब वस्तुओं के भाव मंदे रहेंगे। क्रूर वार को सप्तमी वृद्धि सूचित करती है कहीं पृथ्वी पर युद्ध हो प्रजा को भय। ठंडी वायु चले। ति. १०से१३ तक उत्तर भारत में कहीं बूंदा बांदी होवे।

श० वि०—ति. १४।३० को सूर्य बादलों से ढँका रहे तो तृण धान्य महंगा होवे। मार्गकृष्णाष्टमी को कालभैरव के मन्दिर में जाकर व्रत रखने और जागरण

मार्गशीर्षकृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ६४३६

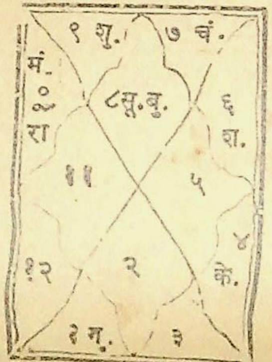

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
७	९	७	०	८	५	९	३
१	३	२२	२१	८	२९	२३	२३
८	२४	४३	३४	१२	१२	१५	१५
९	११	३०	३५	९	१९	१९	१९
६०	४५	२७	७	७२	६	३	३
४४	१४	३४	५४	४४	३४	११	११
शी.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
वि.	उ.षा.	ज्ये.	भ.	मू.	चि.	ध.	श्ले.
४	३	२	३	३	२	४	२

करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। यदि किसी ने व्रत करने की प्रतिज्ञा की हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश उस समय यह व्रत न रख सकें तो किसी अपने प्रतिनिधि से रखा लेवे। व्रत में पुत्र पत्नी, भाई, पति, पुरोहित और मित्र [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ मार्गशीर्षशुक्लपक्षः १७

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		नित्यसूर्यस्पष्टः			
															मार्ग.	नवं०	र. अ.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२६	१	१	सं	२७	३५	अनु.	३६	३९	अ.	३८	५२	ब.	२७	३५	४	१८	२९	वृश्चिके	६	५९	५	२२	७	२	८	५५
२५	५७	२	बु.	२४	५८	ज्ये.	३५	२५	सु.	३३	३८	कौ.	२४	५८	५	१९	३०	ध. ३५।२५	७	०	५	२१	७	३	९	४२
२५	५३	३	गु.	२१	२४	मू.	३३	२३	धृ.	२७	३७	ग.	२१	२४	६	२०	१	धनुषि	७	१	५	२१	७	४	१०	३१
२५	४९	४	शु.	१६	५७	पू.षा	३०	२७	शू.	२०	५७	वि.	१६	५७	७	२१	२	म. ४४।३४	७	२	५	२१	७	५	११	२३
२५	४६	५	श.	११	५२	उ.षा	२६	५५	गं.	१३	४२	बा.	११	५२	८	२२	३	मकरे	७	३	५	२०	७	६	१२	१६
२५	४३	६	र.	६	१८	श्र.	२२	५७	वृ.	६/५८	७/२०	तै.	६	१८	९	२३	४	कु. ५०।५२	७	३	५	२०	७	७	१३	११
२५	४०	७	चं.	०	२६	ध.	१८	४७	व्या.	५०	२३	व.	०	२६	१०	२४	५	कुंभे	७	३	५	२०	७	८	१४	८
अवम्		८	चं.	५४	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३९	९	मं.	४८	४०	श	१४	३४	ह.	४२	३६	बा.	२१	३४	११	२५	६	मी. ५६।३३	७	४	५	२०	७	९	१५	५
२५	३७	१०	बु.	४३	९	पू.भा	१०	३३	व.	३५	२	तै.	१५	५४	१२	२६	७	मीने.	७	५	५	२०	७	१०	१६	३
२५	३५	११	गु.	३८	९	उ.भा	६	५८	सि.	२७	५१	व.	१०	३९	१३	२७	८	मीने.	७	५	५	२०	७	११	१७	३
२५	३४	१२	शु.	३३	५४	रे.	३	५६	व्य.	२१	११	ब.	६	१	१४	२८	९	मे. ३।५६	७	६	५	२०	७	१२	१८	५
२५	३२	१३	श.	३०	२९	अ.	१	४७	व.	१५	१२	कौ.	२	११	१५	२९	१०	मेषे.	७	७	५	२०	७	१३	१९	८
२५	३०	१४	र.	२८	४	भ.	०	२७	प.	१०	१	व.	२८	४	१६	३०	११	वृ. १५।२१	७	७	५	२०	७	१४	२०	१२
२५	२८	१५	चं.	२६	५३	कृ.	०	३	शि.	५	४१	ब.	२६	५३	१७	दि १	१२	वृषे	७	८	५	२०	७	१५	२१	१८

(१८ नवं. से १ दिसं. १९५२ ई०) दक्षिणायनगोलौ

ग्रहदर्शन-मं.शु.सूर्यास्त पीछे पश्चिम में और गुरु पूर्वमें हेमन्तर्त्तुः दीखेंगे। ति. ७ से पश्चिममें बुध अस्त होगा। शनि प्रातःपूर्व में देखें।

अनु० रविः १०।११ चन्द्रदर्शनम्
भ. ४९।१० उ. वक्रीबुधः २६।५७ रबिउलावल मु. ३
भ. १६।५७ या. पू. षा. शुक्रः ६।१ सा. धनुषि भानुः ५७।५

पंचक आ. ५०।५२
भ. ०।२६ उ. २७।२७ या. चित्रा ३ तुलायां शनिः २७।४०+

श्रवणे भौमः ४२।२४ +पश्चिमास्तो बुधः १५।२

भ. १०।३९ उ. ३८।९ या. श्रीगीताजयन्ती मोक्षदा ११व्र.
पंचक स. ३।५६ऽश्वि ऽसू. ऽ।।ऽश ।ऽ।। ल. ऽन्य गो.
व. अनु. बुधः २।६ व. भरण्यां २ गुरुः ५०।० प्रदोषव्रतं
भ. २८।४ उ. ५७।२८ या. पिशाचमोचनश्राद्धम् † ल. ५।६
दिसंबर १२ ता. ३१ सत्यव्र श्रीदत्तात्रेयजयन्ती रो. ।।।ऽ सू.।।ऽ।।†

मार्गशीर्षशुक्ल ७ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ६४४३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
७	९	७	०	८	५	९	३
८	८	२१	२०	१६	२९	२२	२२
१४	४२	५८	४०	५०	५७	५३	५३
८	१५	५६	४९	२४	८	४	४
६०	४५	३६	७	७२	६	३	३
५७	३३	०	२४	३०	१६	११	११
क्रां.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु.	पू.षा	ज्ये	भ.	पू.षा	चि.	श्र.	श्ले
२	४	२	३	२	२	४	२

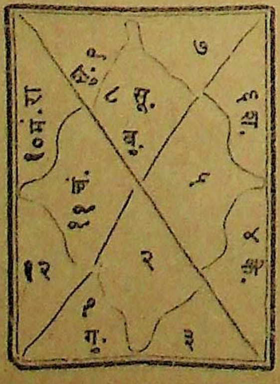

इस पक्ष में मघ मोठ उर्द तेज रूई १५।२० की तेजी होकर बाद मंदी चांदी में घटा बढ़ी होकर ति. ७ से ३।४ की तेजी घी गुड़ शक्कर खांड़ तिल तेल विनोला में तेजी। ति. ७ को रुई में १५ टके मन्दा हो। ति. १० से अफीम धातु तिल जौ का भाव एकदम तेज हो। यहां भारत सरकार का अन्नपर पूरा कन्ट्रोल रहेगा अन्न की तंगी से गरीबों को कष्ट।

ति. ५।६।९।११।१३।१४ को कहीं कहीं बादल चाल बूंदा बांदी हो।

मार्गशीर्षको काम्य-रविवार व्रतमें भक्ष्यपदार्थ लिखते हैं–मार्गशीर्ष में ३ तुलसी के पत्ते खावे, पौष में ३ पल घी (१ पल–३ तोले ४ माशे का होता है) माघ में ३ मुट्ठी तिल, फाल्गुन में ३ पल दही, चैत्र में ३ पल दूध, वैशाख में गोबर, ज्येष्ठ में ३ अञ्जली पानी आषाढ़ में ३ कालीमिर्च, श्रावण में ३ पल सत्तु, भाद्रपद में गोमूत्र के ३ गण्डूष, आश्विन में शक्कर और कार्तिक में हविष्य भक्षण करे।

मार्गशीर्षशुक्ल १५ चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६४५०

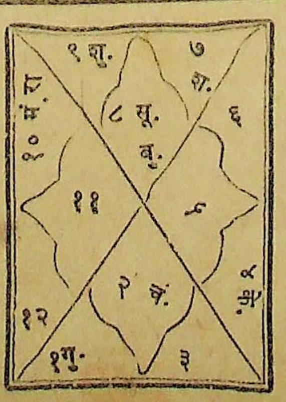

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
७	९	७	०	८	६	९	३
१५	१४	१३	१९	२५	०	२२	२२
२१	१	५९	५२	१६	३९	३०	३०
१८	३०	५९	१८	१०	३१	४८	४८
६१	४५	७९	६	७२	५	३	३
६	४०	१	३५	४	५४	११	११
क्रां.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ऽनु.	श्र.	ऽनु.	भ.	पू.षा	चि.	श्र.	श्ले
४	२	४	२	४	३	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सवत् २००९ शक: १८७४ पोषकृष्णपक्ष: १८

(२ दिस. से १७दिस. १९५२ई.) द.अ. गोलो हेमन्तर्तुः ।
ग्रहदर्शन—ति. ५ से पूर्व में बु. उदय होगा । मं. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और गुरु पूर्व में दिखेंगें । श. प्रातः पूर्व में दिखेगा ।

वि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२६	६	१	मं.	२६	५७	रो.	१	११	सि.	५९	२०/५९	कौ.	२६	५७	१८	२	१३	मि.३२।१८	७	९	५	२०	७	१६	२०	२४
२६	५	२	बु.	२८	२२	मृ.	३	२६	शु.	५८	४१	ग.	२८	२६	१९	३	१४	मिथुने	७	१०	५	२०	७	१७	२३	३१
२६	३	३	गु.	३१	०	आ.	६	५७	शु.	५८	१२	वि.	३१	०	२०	४	१५	क.५५।२४	७	११	५	२०	७	१८	२४	४०
२५	२१	४	शु.	३४	४८	पुन.	११	३३	ब्र.	५८	३५	ब.	२	५४	२१	५	१६	कर्के	७	११	५	२०	७	१९	२५	५०
२५	१९	५	श.	३९	२९	पु.	१७	०	ऐ.	५९	३०	कौ.	७	८	२	६	१७	कर्के	७	११	५	२०	७	२०	२७	०
२५	१८	६	र.	४४	४६	श्ले.	२३	२१	वै.	६०	०	ग.	१२	७	२३	७	१८	सिं२३।२१	७	१२	५	२०	७	२१	२८	११
२५	१६	७	चं.	५०	१३	म.	२९	५२	वै.	०	४६	वि.	१७	२९	२४	८	१९	सिंहे	७	१३	५	२०	७	२२	२९	२४
२५	१५	८	मं.	५५	२२	पू.फा.	३६	१४	वि.	२	६	बा.	२२	४७	२५	९	२०	कं.५२।४२	७	१४	५	२०	७	२३	३०	३९
२५	१३	९	बु.	५९	५१	उ.फा.	४२	५	प्री.	३	९	तै.	२७	३६	२६	१०	२१	कन्यायाम	७	१४	५	२०	७	२४	३१	५५
२५	११	१०	गु.	६०	०	ह.	४७	६	आ.	३	४१	ब.	३१	३७	२७	११	२२	कन्यायाम्	७	१५	५	२०	७	२५	३३	११
२५	१०	१०	शु.	३	२३	चि.	५०	५९	सौ.	३	२९	वि.	३	२३	२८	१२	२३	तु. १९।२	७	१६	५	२०	७	२६	३४	२८
२५	८	११	श.	५	४८	स्वा.	५३	४३	शो.	२	२४	बा.	५	४८	२९	१३	२४	तुलायाम्	७	१७	५	२०	७	२७	३५	४७
२५	७	१२	र.	६	५२	वि.	५५	१६	अ.	०/७	११/१४	तै.	६	५२	३०	१४	२५	वृ.३९।५०	७	१८	५	२०	७	२८	३७	७
२५	५	१३	चं.	६	२७	अनु.	५५	२७	धृ.	५३	९	ब.	६	३७	पौ. १	१५	२६	वृश्चिके	७	१८	५	२०	७	२९	३८	२७
२५	३	१४	मं.	५	१०	ज्ये.	५४	३३	शू.	४८	११	श.	५	१०	२	१६	२७	ध.५४।३३	७	१९	५	२०	८	०	३९	४८
२५	२	३०	बु.	२	३२	मू.	५२	४२	गं.	४२	२३	ना.	२	३२	३	१७	२८	धनुषि	७	२०	५	२१	८	१	४१	१०

ज्येष्ठा. रविः १७।१८ उ. षा. शुक्रः ९।५२
भ. ५९।४१ उ.
भ. ३१।० या. मकरे शुक्रः ५६।५०

पूर्वोदयो बुधः ३१।२२
भ. ४४।४६ उ.
भ. १७।२९ या.
उ. फा. ।।।।ऽ चौ. ऽऽ।। ल. ६ गु.दा.
मार्गी बुधः ४७।४८ उ. फा. ।।।।ऽ चौ. घ. २८ या. ऽऽ।। ल. ऽन्यगो.
भ. ३१।३७ उ.
भ. ३।२३ या.
श्रवणे शुक्रः २०।१ धनिष्ठा भौमः ९।४६ सफला ११ व्र.
प्रदोष व्र. † पुण्यं ५।४ उ. २१।४ या.
भ. ६।३७ उ. ३५।५३ या. मूले सं. धनुष्यर्कः २१।४ मु. ३० †

पोषकृष्ण ८ भौम-इष्टम् ०।० दिनगणः ६४५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	०	९	६	९	३
२३	२०	७	१९	४	१	२२	२२
३०	८	६	४	५०	२४	५	५
३९	३	५	२०	४२	४६	२१	२१
६१	४६	१७	५	७१	५	३	३
१५	५	३२	२७	४०	२६	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये.	श्र.	ऽनु.	भ.	[illegible]	चि.	श्र.	श्ले
३	४	२	२	३	३	४	२

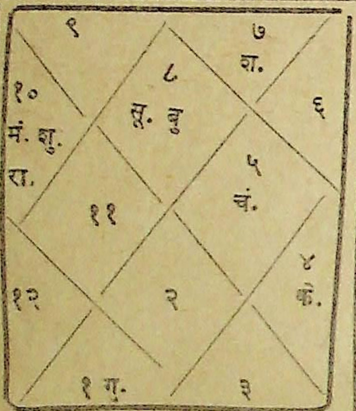

इस पक्ष में रस कस तेज रूई में मंदी आकर पीछे १५।२० की तेजी भी हो । सुवर्ण चांदी पारा चावल अलसी सरसों के भाव तेज । ति. ६ से बिनौला लालमिर्च रेशम तेज । ति. १० से पहले जो पदार्थ तेजी में चल रहे हों उनपर मंदे का और जो मंदे हों उनपर तेजी का असर होगा । ति. ११ से गुड़ खांड़ रूई में कुछ मंदे का और चांदी में तेजी का असर रहेगा । ति. ४।५।६।७ को कहीं कहीं कुछ वर्षा के योग हैं ।

व्रतवाले दिन दातुन नहीं करना चाहिये । लिखा है रविवार, संक्रान्ति, जन्म-मरणाशौच, श्राद्ध, जन्मदिन और अस्पृश्य के स्पर्श हो जाने पर गर्म पानी से स्नान नहीं करना चाहिये।

पोषकृष्ण ३० बुध-इष्टम् ०।० दिनगणः ६४६६

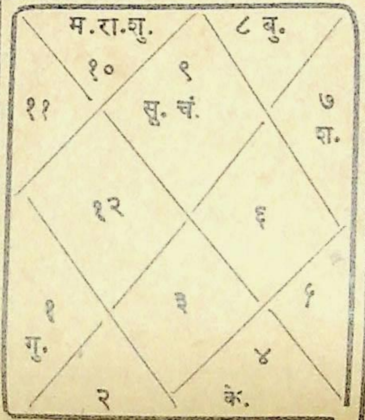

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	७	०	९	६	९	३
१	२६	१०	१८	१४	२	२१	२१
४१	१७	२४	२७	२०	५	३९	३९
१०	१२	२	२३	४	३५	५४	५४
६१	४६	५०	३	७०	४	३	३
२०	१२	५५	५९	४७	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
मू.	व.	ऽनु.	भ.	श्र.	चि.	श्र.	श्ले
१	१	३	२	२	३	४	२

धर्मतत्त्व—इस धर्म के तत्त्व को पहिले सुनो और बाद में निश्चय करलो कि दूसरे की आत्मा को दुखानेवाले कोई भी कार्य हम कभी नहीं करेंग अर्थात् अपने को बुरा लगनेवाला बर्ताव दूसरे से नहीं करना चाहिये ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१८ दिसं. से ३१ दि १९५२ ई०) सा. मकरा उ०

दूसरे से नहीं करना चाहिये।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शका १८७४ पौषशुक्लपक्षः १९ (१८ दिसं. से ३१ दि. १९५२ ई०) सा. मकरा उ०

ग्रहदर्शन—बु. श. प्रातः काल पूर्व द. गो. शिशिर ऋतुः । में दिखेंगे । मं. शु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में तथा गु. पूर्वमें ख[] [] मध्यासन्न दीखेगा ।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
अवम		१	बु.	५६	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तिथिक्षयः
२५	०	२	गु.	५४	३०	पू.षा	१०	०	वृ.	३५	५४	बा.	२६	४३	४	१८	२१	धनुषि	७	२१	५	२१	८	२	४२	३२	चन्द्रदर्शनम्
२४	५९	३	शु.	४९	२५	उ.षा	४६	३६	ध्रु.	२८	५०	तै.	२१	५७	५	१९	१	म. ४१९	७	२१	५	२१	८	३	४३	५४	रवि उलाखर मु. ४
२४	५७	४	श.	४३	४९	श्र.	४२	४६	व्या.	२१	११	व.	१६	३७	६	२०	२	मकर	७	२२	५	२२	८	४	४५	१७	भ. १६।३७ उ. ४३।४९ या. † आ. १०।४३
२४	५६	५	र.	३८	०	ध.	३८	४०	ह.	१३	३२	ब.	१०	५४	७	२१	३	कुं. १०।४३	७	२३	५	२२	८	५	४६	४०	कुंभे भौमः ४८।५९ सा. मकरे भानुः २२।६ उत्तरायणम् पंचक †
२४	५४	६	चं.	३२	५	श	३४	२८	व.	४७	३५ ४४	कौ.	५	२	८	२२	४	कुंभे	७	२४	५	२२	८	६	४८	४	ज्येष्ठायां बुधः ५२।१२ ‡ जी दशमेश
२४	५६	७	मं.	२६	१८	पू.भा	३०	२६	ध्रु.	५०	४	ब.	२६	१८	०	२३	५	मी. १६।२७	७	२४	५	२२	८	७	४९	२८	भ. २६।१८ उ. ५३।३५ या. जन्मदिन सिक्खगुरु श्रीगोविन्दसिंह ‡
२४	५७	८	बु.	२०	५२	उ.भा	२६	४४	व.	४२	४१	ब.	२०	५२	१०	२४	६	मीने	७	२४	५	२३	८	८	५०	५३	धनिष्ठा शुक्रः ४०।२७
२४	५९	९	गु.	१५	२६	रे.	२३	३५	व.	३५	५०	कौ.	१५	५६	११	२५	७	मे. २३।३५	७	२४	५	२४	८	९	१२	१९	पंचकस. २३।३५
२५	०	१०	शु.	११	४७	अ.	२१	१६	शि.	२९	३८	ग.	११	४७	१२	२६	८	मेषे	७	२५	५	२५	८	१०	५३	४६	भ. ४०।८ उ.
२५	२	११	श.	८	२९	भ.	१९	४४	सि.	२८	१०	वि.	८	३०	१३	२७	९	वृ. २४।३७	७	२५	५	२६	८	११	५५	१३	भ. ८।२९ या. पुत्रदा ११ व्र. मेला बा. हरबल्लभ जालंधर
२५	४	१२	र.	६	१३	कृ.	१९	५४	सा.	१९	३१	बा.	६	१३	१४	२८	१०	वृषे	७	२५	५	२७	८	१२	१६	४१	पू.षा. रविः २२।४७ प्रदोष व्रतम् § सत्य व्र.
२५	५	१३	चं.	५	१०	रो.	१९	५७	शु.	१५	५०	तै.	५	१०	१५	२९	११	मि. ५०।५७	७	२६	५	२८	८	१३	५८	८	
२५	७	१४	मं.	५	२३	मृ.	२१	५६	शु.	१३	९	व.	५	२३	१६	३०	१२	मिथुने	७	२६	५	२९	८	१४	५९	३४	भ. ५।२३ उ. ३६।९ या. कुंभे शुक्रः २५।१३ शते भौमः २८।३६ §
२५	९	१५	बु.	६	५५	आ.	२५	१२	ब्र.	११	४१	ब.	६	५५	१७	३१	१३	मिथुने	७	२६	५	३०	८	१६	१	०	माघस्नानव्रतनियमाद्यारंभश्च

पौषशुक्ल ८—बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ६४७३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
८	१०	७	०	९	६	९	३
८	१	१८	१८	२२	२	२१	२१
५०	४१	४	४	३२	३७	१	१७
५३	४	२९	३७	४३	१८	३८	३८
६१	४६	७४	२	७०	४	३	३
२५	१४	५५	४२	१७	२२	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू.	ध.	ज्ये.	भ.	श्र.	चि.	श्र.	श्ले
३	३	१	२	४	३	४	२

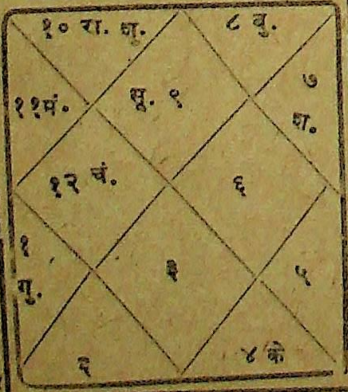

इस पक्ष में रूई पहले तेज होकर पीछे मंदी हो। गुड़ खांड़ नमक चावल चदन केशर मंदा। सब प्रकारके अनाज तेज। ति. ९ से सोना चांदी तथा घी में तेजी। ति. १२ से ऊन चादी घी गुड़ खांड़ विनौला तेज। अन्न के आयात की खबर कहीं से आने के कारण अन्न का भाव कुछ मंदा। खड़ी खेती में किसा प्रकार नुकसान। अतिशीत के कारण प्रजा में रोग। मृत्यु संख्या अधिक। ति. ४।५।६।७।८।९ को वर्षा व बूंदा बादी के योग हैं।

पौष मास में घर, महल, बंगला, कोठी, नगर ग्राम आदि दान करने से बड़ा भारी पुण्य होता है और दाता पर भगवान् विष्णु परम प्रसन्न हो जाते हैं। किस २ कर्म में तात्कालिक तिथि लेनी चाहिये। यह बतलाते हैं—स्नान, तैलमर्दन, दन्त-धावन, दान, मैथुन, मरण और जन्म में तात्कालिकी तिथि लेना चाहिये।

पौषशुक्ल १५ बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः ६४८०

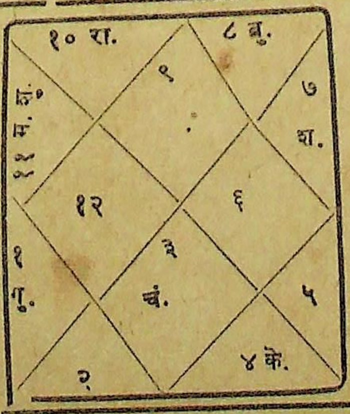

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
८	१०	७	०	१०	६	९	३
१६	७	२७	१७	०	३	२०	२०
१	४	२५	५१	४०	५	५५	५५
०	८	४८	४३	५	२	२२	२२
६१	४६	८४	१	६९	३	३	३
२६	७	१०	१२	८	४१	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुषा	श.	ज्ये.	भ.	ध.	चि.	श्र.	श्ले
१	१	४	२	३	३	४	२

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ माघकृष्णपक्षः १० (१ ज. से १५ ज. १९५३ ई०) उ. द. गो. शिशिरर्तुः।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. पौष.	अं. जन.	मु. र.आ.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	१०	१	गु.	९	४०	पुन.	२९	३५	ऐं.	१०	४२	कौ.	९	४०	१८	१	१४	क.१३।२९	७	२६	५	३०	८	१७	२	२६
२५	१२	२	शु.	१३	३३	पु.	३५	०	वै.	१०	५०	ग.	१३	३३	१९	२	१५	कर्के	७	२६	५	३१	८	१८	३	५२
२५	१४	३	श.	१८	१९	श्ले.	४१	६	वि.	११	३६	वि.	१८	१९	२०	३	१६	सिं.४१।६	७	२६	५	३२	८	१९	५	१७
२५	१५	४	र.	२३	३८	म.	४७	३८	प्री.	१२	४८	बा.	२३	३८	२१	४	१७	सिंहे	७	२७	५	३३	८	२०	६	४२
२५	१७	५	चं.	२९	६	पू.फा	५४	७	आ.	१४	८	तै.	२९	६	२२	५	१८	सिंहे	७	२७	५	३३	८	२१	८	७
२५	१९	६	मं.	३४	१४	उ.फा	६०	०	सौ.	१५	२०	ग.	१	४०	२३	६	१९	कं.१०।३७	७	२७	५	३४	८	२२	९	३३
२५	२०	७	बु.	३८	४२	उ.फा	०	८	शो.	१६	३	वि.	६	२८	२४	७	२०	कन्यायाम्	७	२७	५	३५	८	२३	१०	५८
२५	२२	८	गु.	४२	७	ह.	५	२६	अ.	१६	९	बा.	१०	२४	२५	८	२१	तु.३७।३१	७	२७	५	३६	८	२४	१२	२३
२५	२४	९	शु.	४४	२७	चि.	९	३६	सु.	१५	१९	तै.	१३	१७	२६	९	२२	तुलायाम्	७	२८	५	३६	८	२५	१३	४८
२५	२५	१०	श.	४५	२८	स्वा.	१२	४१	ध.	१३	३७	व.	१४	५७	२७	१०	२३	वृ.५९।१०	७	२८	५	३७	८	२६	१५	१३
२५	२७	११	र.	४५	६	वि.	१४	२६	शु.	१०	५४	ब.	१५	१७	२८	११	२४	वृश्चिके	७	२८	५	३८	८	२७	१६	३७
२५	२८	१२	चं.	४३	३४	अनु.	१४	५१	गं.	७	१०	कौ	१४	२०	२९	१२	२५	वृश्चिके	७	२८	५	३९	८	२८	१८	१
२५	३०	१३	मं.	४१	५३	ज्ये.	१४	२१	वृ.	५६ २	३० ५९	ग.	१२	४३	मा.	१३	२६	ध.१४।२१	७	२८	५	३९	८	२९	१९	२४
२५	३२	१४	बु.	३७	१४	मू.	१२	४०	व्या	५०	४५	वि.	९	३३	२	१४	२७	धनुषि	७	२८	५	४०	९	०	२०	४७
२५	३३	३०	गु.	३२	४४	पू.षा	१०	११	ह.	४३	५४	च.	४	५९	३	१५	२८	म.२४।२२	७	२८	५	४१	९	१	२२	९

ग्रहदर्शन—मं. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और गु. पूर्व से ख मध्यकी तर्फ आता हुआ दिखेगा। श. प्रातः पूर्व में देखें। ति. १२ से पूर्व में †

मूले धनुषि बुधः ४८।५० जनवरी १ ता. ३१ सन् १९५३ ई.

भ. ४५।५६ उ. † बुध अस्त होगा।

भ. १८।१९ या. श्रीगणेश जन्म ४ (संकष्टहरणी) चं. उ. घं. ८।२८

चित्रा ४ शनिः २०।५६

शते शुक्रः १४।५९ मार्गीगुरुः २३।५

भ. ३४।१४ उ.

भ. ६।२८ या. अनन्त श्रीजगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती

भ. १४।५७ उ. ४५।२८ या. उ. षा. रविः २४।११ पू.षा.बुधः ५ ।९

षट्तिला ११ व्र. स्मा. वै.

पूर्वास्तो बुधः ३७।३० निंबा ११ व्र. (लोहड़ीमहोत्सवपंजाबदेशे)

भ. ४१।५३ उ. प्रदोष व्र. सं. मकरेऽर्कः ३९।४२ मु. ३० पुण्यं §

भ. ९।३३ या. § परदिने मध्याह्नं या.।

युगादिमौनी ३० (प्रयागस्नाने महत्फलम्)।

माघकृष्ण८गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६४८८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
८	१०	८	०	१०	६	९	३
२४	१३	९	१७	९	३	२०	२०
१२	१२	२	४९	४६	३१	२९	२९
२३	३२	२४	४४	४१	८	५६	५६
६१	४५	८९	०	६७	२	३	३
२५	५९	२७	३०	४३	५५	११	११
सौ.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पूषा. ४	श. २	मू. ३	भ. २	श. १	चि. ४	श्र. ४	श्ले. २

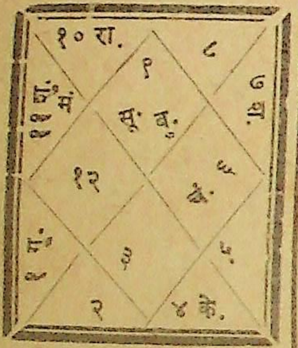

इस पक्ष के शुरू में जो पदार्थ तेज होंगे। वह ति. ६ से मंदे और जो वहां मंदा होंगे, वह तेज हों। अलसी सरसों तथा तम्बाखू चावल के भाव में तेजी। ति. १० से विनौला तेज। रूई कपास मंदी। सोने चांदी के भावों में घटावढ़ी रुख तेज। सरसों गवारा शेयरों के भाव में तेजी हो। शासकों में परस्पर विरोध।

ति. ५ से चांदी कुछ मंदी ति. ५।६।७। १३।१४ को कहीं २ वर्षा के योग है।

माघ में मूली छोड़ देनी चाहिये। जो पुरुष माघ में प्रातः सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदी में स्नान करता है वह अपने सात कुल और माता पिता के साथ देवशरीर धारण कर स्वर्ग में आनन्द से रहता है। स्नान का मन्त्र यह है—"दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्" [illegible]

माघकृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६४९५

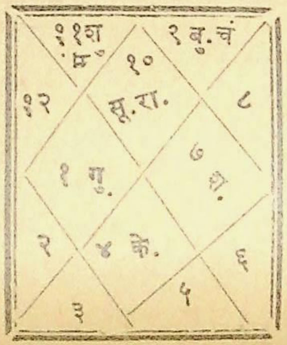

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	८	०	१०	६	९	३
१	१८	१९	१७	१७	३	२०	२०
२२	३४	४१	५९	३५	४९	७	७
९	४४	४४	२	१६	५	४०	४०
६१	४५	९२	१	६६	२	३	३
२२	५८	५०	५०	१२	१५	११	११
सौ.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उषा. २	श. ४	पूषा. २	भ. २	श. ४	चि. ४	श्र. ४	श्ले २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ माघशुक्लपक्षः २१ (१६ जनसे २९ज. १९५३ई०) उत्त.द. भा.शिशिरऋतुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	साघं.	जन्मराशि	ज.कुं.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले				ग्र. दर्शन—मं. शु. सूर्यास्तपीछे पश्चिममें तथा गु. ख मध्य में दीखेंगे बुध अस्त है। श. प्रातः पूर्व में ख मध्यासन्न दिखेगा।
२५	३५	१	शु.	२७	३६	उषा.	६	५६	व.	३६	३०	कि.	०	१०	४	१६	२९	मकरे	७	२८	५	४२	९	२	२३	३०	पू. भा. भौमः ५।२० श्रीवल्लभ जयन्ती ÷पंचक आ. ३१।१०
२५	३७	२	श.	२२	१	श्र.	५९ ३	१३ ८	सि.	२८	४७	कौ.	२२	१	५	१७	३०	कुं. ३१।१०	७	२८	५	४२	९	३	२४	५०	पू. भा. शुक्रः १२।० श्रव. ३ राहुःऽश्ले. १केतुः २४।४९ चन्द्रदर्शनं+
२५	३८	३	र.	१६	१०	ध.	५४	५७	व्य.	२०	५७	ग.	१६	१०	६	१८	१	कुंभे	७	२७	५	४३	९	४	२६	८	भ. ४३।१२ उ. जमादि उलावल मु. ५
२५	४०	४	चं.	१०	१५	पूभा	५०	५२	ह.	१३	४	वि.	१०	१५	७	१९	२	मी३६।५३	७	२७	५	४४	९	५	२७	२५	भ. १०।१५ याव. उ. भा.।।।।ऽचौ.ऽ।।। ल. ९ उ. षा. बुधः‡
२५	४३	५	मं.	४	३१	उभा	४७	६	व.	५७ ५	१२ ९	बा.	४	३१	८	२०	३	मीने	७	२७	५	४४	९	६	२८	४२	अभि.प्र. रविः १०।५६ वसन्त५ उ. भा. ।।।।ऽचौ. घ. ३१या. §
अवम्		६	मं.	५४	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	तिथिक्षयः ‡ २६।५ सा.कुंभें भानुः ४०।५७
२५	४६	७	बु.	५४	१७	रे.	४३	५०	सि.	५०	५१	ग.	२६	४३	९	२१	४	मे ४३।५०	७	२७	५	४५	९	७	२९	५८	भ. ५४।१७ उ. रे.ऽमं.।।।ऽरो२९. उ.ऽऽ।।ल. गो. मकरे बुधः×
२५	४९	८	गु.	५०	१४	अ.	४१	१६	सा.	४४	२७	वि.	२२	१५	१०	२२	५	मेषे	७	२७	५	४६	९	८	३१	१३	भ.२२।१५ या. श्री भीष्म ८(भीष्माय जलदानं)ऽशिव ।।।।ऽ÷
२५	५३	९	शु.	४७	०	भ.	३९	३३	शु.	३८	४३	बा.	१८	३७	११	२३	६	वृ. ५४।२२	७	२७	५	४७	९	९	३२	२८	श्रवणे रविः २६।५९ §।।।। ल. ऽन्यगो आ. रे.ऽमं।।।।. ()
२५	५७	१०	श.	४४	५३	कृ.	३८	५०	शु.	३३	५१	तै.	१५	५६	१२	२४	७	वृषे	७	२६	५	४८	९	१०	३३	४९	अभि. नि. रविः १९।१४ ÷श. ऽ रो. ।ऽ।। ल.ऽन्यगो
२६	१	११	र.	४३	५८	रो.	३९	१९	ब्र.	२९	५०	व.	१४	२५	१३	२५	८	वृषे	७	२५	५	४९	९	११	३४	५४	भ. १४।२५ उ ४३।५८ या. जया ११ व्र.
२६	५	१२	चं.	४४	१९	मृ.	४१	२	ऐं.	२६	४१	ब.	१४	८	१४	२६	९	मि१०।१०	७	२५	५	५०	९	१२	३६	५	मीने शुक्रः ३१।१८ () ऽऽ. ।।ल. ९
२६	८	१३	मं.	४५	५७	आ.	४४	०	वै.	२४	५२	कौ.	१५	८	१५	२७	१०	मिथुने	७	२४	५	५१	९	१३	३७	१५	श्रवणे बुधः ३७।१० भौम प्रदोषव्र.
२६	१२	१४	बु.	४८	५१	पुन.	४८	८	वि.	२३	५१	ग.	१७	२४	१६	२८	११	क. ३२।६	७	२४	५	५२	९	१४	३८	२४	भ. ४८।५१ उ. =सत्य व्र. माघस्नान स. चन्द्रग्रहणम्
२६	१६	१५	गु.	५२	५१	पु.	५३	१९	प्री.	२३	४५	वि.	२०	५१	१७	२९	१२	कर्के	७	२३	५	५२	९	१५	३९	३२	भ. २०।५१ या.उ. भा. यां शुक्रः ४३।४५ मीने भौमः ५७।४=

×३१।२३ रथ ७(अरुणोदयस्नाने महत्फलं पंचक स.४३।५०

माघशुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६५०२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	९	०	१०	६	९	३
८	२३	०	१८	२५	४	१९	१९
३१	५५	४५	१६	११	१	४५	४५
१३	५९	५४	३३	३९	५९	२५	२५
६१	४५	९६	३	६४	१	३	३
१५	५०	१३	१	२७	३२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.	पू.भा.	उ.षा.	भ.	पू.भा.	चि.	श्र.	पुन.
४	२	२	२	२	४	३	१

इस पक्ष में तिल तेल सुपारी अलसी सोना चांदी वस्त्र सूत रुई के भाव में तेजी गेहूं गवारा मकई के भाव समान। गेहूं चना की खेती को कहीं हानि पहूंचे। ति० १० से सुपारी लौंग शक्कर रसकस तेज चांदी में भी काफी तेजी रुई बिनौला गेहूं में कुछ मंदी। किराने की वस्तुओं में घटा बढी नमक मिर्च तेज होकर मंदी काला पशु सस्ता प्रजा में कलह शीत अधिक। आकाश में बादल चाल होते हुए भी वर्षा में रुकावट हो।

माघशुक्ला सप्तमी को सूर्योदय के समय स्नान करने से सूर्यग्रहण स्नानके तुल्य फल होता है।

भीष्माष्टमी—माघ शुक्लाष्टमी को जो मनुष्य भीष्म जी को जल देते हैं उनके एक वर्ष के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। मन्त्र यह है—"ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे" जो मनुष्य शीतकाल में बहुत सी आग जला कर सब जीवों का शीत निवारण करता है वह सब दुःखों से छूट कर विष्णुलोक में जाता है।

माघशुक्ल १५ गुरा विष्टम् ०।० दिनगणः ६५०९

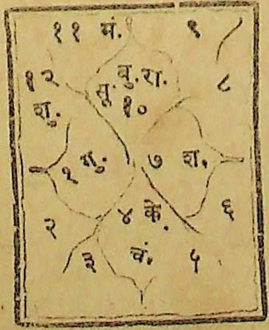

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	९	०	११	६	९	३
१५	२९	१२	१८	२	४	१९	१९
३९	१६	१९	४५	३५	९	२३	२३
२२	३१	९	१९	१	४६	१०	१०
६१	४५	[illegible]	४	६२	०	३	३
८	४४	५६	४६	९	४८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र.	पू.भा.	श्र.	भ.	पू.भा.	चि.	श्र.	पुन.
२	३	१	२	४	४	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ फाल्गुनकृष्णपक्षः २२

३० जन. से १४ फर. १९५३ ई. उत्त. द. गो. शिशिरर्तुः

दि॰मा॰		ति॰वा॰		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	त्रि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		मिश्रसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२६	२०	१	शु.	२७	४१	श्ले.	५९	१८	आ.	२४	२१	बा.	२५	१६	१८	३०	१३	स५९।१८	७	२२	५	५३	९	१६	४०	३८
२६	२४	२	श.	६०	०	म.	६०	०	सौ.	२५	२८	तै.	३०	२२	१९	३१	१४	सिंहे	७	२१	५	५४	९	१७	४१	४२
२६	२७	२	र.	३	३	म.	५	४४	शो.	२६	५२	ग.	३	३	२०	फ	१५	सिंहे	७	२१	५	५६	९	१८	४२	४६
२६	३१	३	चं.	८	२६	पू.फा	१२	२०	अ.	२८	१०	वि.	८	२६	२१	२	१६	कं.२८।५२	७	२१	५	५७	९	१९	४३	४८
२६	३५	४	मं.	१३	३०	उ.फा	१८	३०	सु.	२९	५	बा.	१३	३०	२२	३	१७	कन्यायाम्	७	२०	५	५८	९	२०	४४	४८
२६	३९	५	बु.	१७	५०	ह.	२४	०	ध.	२९	२९	तै.	१७	५०	२३	४	१८	तु.५६।१२	७	१९	५	५९	९	२१	४५	४७
२६	४३	६	गु.	२१	७	चि.	२८	२९	शू.	२२	०	व.	२१	७	२४	५	१९	तुलायाम्	७	१९	५	५९	९	२२	४६	४५
२६	४६	७	शु.	२३	२१	स्वा.	३१	५०	गं.	२७	४०	ब.	२३	२१	२५	६	२०	तुलायाम	७	१९	६	०	९	२३	४७	४२
२६	५०	८	श.	२४	११	वि.	३३	५६	वृ.	२५	१८	कौ.	२४	११	२६	७	२१	वृ.१८।२४	७	१८	६	१	९	२४	४८	३८
२६	५४	९	र.	२३	४१	अनु.	३४	४५	ध्रु.	२१	५६	ग.	२३	४१	२७	८	२२	वृश्चिके	७	१७	६	२	९	२५	४९	३३
२६	५८	१०	चं.	२१	५९	ज्ये.	३४	२२	व्या.	१७	३६	वि.	२१	५९	२८	९	२३	ध.३४।२२	७	१६	६	२	९	२६	५०	२३
२७	२	११	मं.	१९	११	मू.	३२	५५	ह.	१२	२३	बा.	१९	११	२९	१०	२४	धनषि	७	१५	६	३	९	२७	५१	१४
२७	५	१२	बु.	१५	२८	पू.षा	३०	४१	व.	६ ५९	२४ ४५	तै.	१५	२८	३०	११	२५	म.४४।५४	७	१५	६	४	९	२८	५२	४
२७	९	१३	गु.	१०	५१	उ.षा	२७	३४	व्य.	५२	३६	व.	१०	५१	फ	१२	२६	मकरे	७	१४	६	५	९	२९	५२	३३
२७	१३	१४	शु.	५	३९	श्र.	२३	५९	व.	४५	५	श.	५	३९	२	१३	२७	कु.५१।५९	७	१३	६	५	१०	०	५३	४०
२७	१७	३०	श.	०	२	ध.	१९	५८	प.	३७	२०	ना.	०	२	३	१४	२८	कुंभे	७	१२	६	६	१०	१	५४	२६

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में तथा गुरु ख मध्य से पश्चिम की तर्फ आता हुआ दिखेगा. श. पश्चिम रात्रि में पूर्व §

§ में देखें । बु. अस्त है । ‡ ०।० स्वा ।ऽ।।।।।।।ल. ९ ५

भ. ३५।४४ उ. फरवरी २ ता० २८ + ।।।। ल. ऽन्यगो.
भ. ८।२६ या. श्री गणेश ४ व्र. उ. फा. ।।।।ऽ मंऽअग्नि ।ऽ।।†
उ. भा. भौमः १९।५५ †ल. ९ वा.गो.
धनिष्ठा बुधः २५।४५
भ. २१।७ उ. ५२।१४ या धनिष्ठा रविः ३२।४३ वक्री शनिः‡
श्रीसीता जन्म ८ (अर्द्धरात्र व्यापिनी होने से) स्वा०।ऽ।।ऽचो.+
अनु.ऽ वृ. ।।ऽः वृ ।।।ऽ।। ल. ९
भ. ५२।५० उ. कुंभे बुधः १०।२३ अनु.ऽवृ. ।।ऽवृ. ।ऽरो. ।ऽ।।×
भ. २१।५९ या. मू. ।ऽ।।। ।।ऽ।। ल. ८ अत्या अनि. गु. दा
भ. ३ गुरुः ४२।१ विजया ११ व्र. स० ×ल. ऽन्य गो.
शते बुधः ५०।३५ प्रदोष व्र. श्री शिव महारात्रिव्रतम्
भ. १०।५१ उ. ३८।१५ या. सं. कुंभेऽर्कः ७।३ मु. ४५ पुण्यं÷
पंचक आ. ५१।५९ ÷७।३ या. रेवत्यां शुक्रः २५।२१

फाल्गुनकृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	११	९	०	११	६	९	३
२४	६	२७	१९	११	४	१८	११
४८	७	५३	३५	३४	१२	५४	५४
३८	९	३१	३७	१२	९	३४	३४
६०	४५	८०	६	५८	०	३	३
५६	३२	२७	१५	७	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	उ.भा.	ध.	भ.	उ.भा.	चि	श्र.	श्ले.
१	१	२	२	२	४	३	१

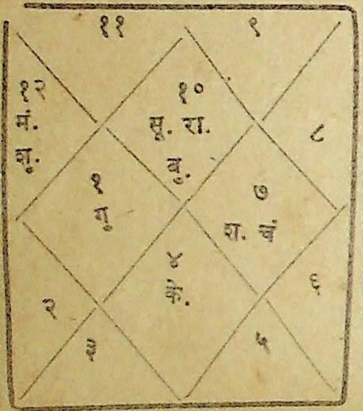

इस पक्ष में गेहू बाजरा अलसी सरसों गुड खांड के भाव में घटा बढी चले आखिर में तेजी में रहने वाले लाभ में रहेंगे चांदी मंदी हो कर बाद तेज, सुवर्ण लकडी चौपाये और घास का भाव भी तेज। रूई में काफी घटा बढी चलेगी, मंदी वाले कमालेंगे शेयरों के भावमें तेजी। शीशा कलाई चावल घी वस्त्र तेल तमाकू में तेजी पक्षान्त में चन्दन कपूर जवाहरात के भाव में मंदा आवे। ति. १।२।४। १४।३० को बादल चाल वायु का जोर रहे।

श० वि०—फाल्गुन वदी तीज को जान। दीखे पवन प्रमान ॥ आसोज शुदीमें वर्षा होय ॥ रात दिना वर्षे मेघ मन मोय।

फाल्गुनकृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५२५

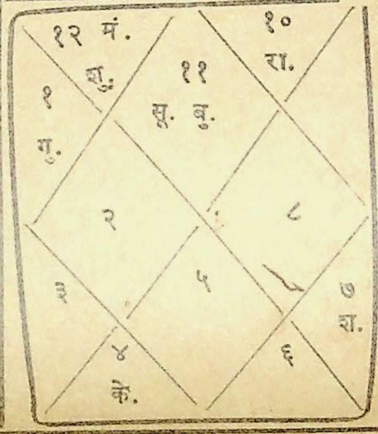

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	१०	०	११	६	९	३
१	११	१०	२०	१८	४	१८	१८
५४	२४	३६	२३	५	८	३२	३२
२६	३९	२८	२०	१३	७	१९	१९
६०	४५	८०	७	५३	०	३	३
४६	१३	४७	१४	४५	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र	उ.भा.	श.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले
३	३	२	३	१	४	३	१

फाल्गुन कारीदूजदिन निर्मल रहे आकाश। श्रावणभादों जल बहु सुघर जाय चौमास ॥ फाल्गुनकृष्ण में शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिए इससे मनुष्य का कल्याण होता है।
[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१५ फर. २८फर. १९५३ई.) उत्त अ.द.गो. शिशिर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ फाल्गुनशुक्लपक्षः २३ (१५ फर. २८फर. १९५३ई.) उत्त अ.द.गो. शिशिर

ग्र०दर्शन-गु.शु.मं.सूर्यास्त बाद पश्चिम में दिखेंगे:वसन्तर्तुश्च ।
ति. ६ से. व. पश्चिम में उदय होगा। श. पूर्व रात्रि में पूर्व मे+ +समय की तर्फ देखें।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ग्रि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट उदयकाले				
अवम		१	श.	५४	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	क्षयतिथिः
२७	२१	२	र.	४८	१६	श.	१५	४७	शि.	२९	२८	बा.	२१	१२	४	१५	२९	मी०५७।४३	७	११	६	७	१०	२	५५	११	चन्द्रदर्शनम्
२७	२४	३	चं.	४२	३१	पू.भा	११	४२	सि.	२१	४४	तै.	१५	२३	५	१६	१	मीने	७	११	६	८	१०	३	५५	५३	जमादि उलाखर मु. ६ बार्हस्पत्यमानेन पराभव संवत्सरारम्भ ३१।२
२७	२८	४	मं.	३७	९	उ.भा	७	५३	सा.	१४	१४	व.	९	५०	६	१९	२	मीने	७	१०	६	८	१०	४	५६	३२	भ. ९।५० उ. ३७।९ या.
२७	३२	५	बु.	३२	१९	रे.	४	२८	शु.	७	५	ब.	४	४४	७	१८	३	मे.४।२८	७	९	६	९	१०	५	५७	१०	शते रवि. ४२।२२ सा. मीने भानुः ११।४९ पंचक स. ४।२८†
२७	३६	६	गु.	२८	१७	अ.	१ / ५९	४४ / ५४	शु. / गु.	० / ५४	३१ / ३८	तै.	२८	१७	८	१९	४	मेषे.	७	८	६	१०	१०	६	५७	४६	पू. भायां बुधः ७।२६ पश्चिमोदयो बुधः १२।२५
२७	४१	७	शु.	२५	८	कृ.	५८	५५	ऐं.	४९	३२	व.	२५	८	९	२०	५	वृ.१४।३९	७	७	६	११	१०	७	५८	२१	भ. २५।८ उ. ५४।५ या. रेवत्यां भौमः ५९।४९
२७	४६	८	श.	२३	३	रो.	५९	८	वै.	४५	१७	ब.	२३	३	१०	२१	६	वृषे.	७	६	६	१२	१०	८	५८	५४	होलाष्टकारम्भः † ऽश्वि. ऽमं. ।।।ऽश. ऽचो ।।।। ल. ९
२७	५१	९	र.	२२	१०	मृ.	६०	०	वि.	४२	२	कौ.	२२	१०	११	२२	७	मि२९।५१	७	५	६	१३	१०	९	५९	२५	
२७	५६	१०	चं.	२२	३६	मृ.	०	३४	प्री.	३९	४५	ग.	२२	३६	१२	२३	८	मिथुने	७	३	६	१४	१०	१०	५९	५३	भ. ५३।२९ उ.
२८	१	११	मं.	२४	२२	आ	३	१७	आ	३८	३४	वि.	२४	२२	१३	२४	९	क.५१।१२	७	२	६	१४	१०	१२	०	१९	भ. २४।२२ या. आमला ११ व्र. स.
२८	६	१२	बु.	२७	१५	पुन.	७	११	सौ.	३८	११	बा.	२७	१५	१४	२५	१०	कर्के	७	१	६	१४	१०	१३	०	४२	मीने बुधः ६।६
२८	११	१३	गु.	३१	१८	पु.	१२	१२	शो.	३८	४१	तै.	३१	१८	१५	२६	११	कॅ	७	०	६	१५	१०	१४	१	३	प्रदोष व्रतं
२८	१६	१४	शु.	३६	७	श्ले.	१८	५	अ.	३९	४२	ग.	३	४२	१६	२७	१२	सि.१८।५	६	५९	६	१६	१०	१५	१	२३	भ. ३६।७ उ. उभायां बुधः २८।१३ ‡ दहनम्
२८	२१	१५	श.	४१	२६	म.	२४	३२	सु.	४१	५	वि.	८	४६	१७	२८	१३	सिंहे.	६	५८	६	१७	१०	१६	१	४२	भ. ८।४६ या. आश्वि. मेषेशुक्रः ५९।४४ सत्यव्र. होलिका‡

फाल्गुनशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	१०	०	११	६	९	३
८	१६	२३	२१	२४	३	१८	१८
५८	४०	१७	१८	१	५९	१०	१०
५४	८	१३	३४	२	८	५	५
६०	४४	१०	८	४८	१	३	३
३३	५८	४	२१	३७	३५	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	रे.	पू.भा.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले.
१	१	१	३	३	४	३	१

इस पक्षमें अनाज और तांबा पीतल जस्ता के भाव में कुछ सस्तापन हो। ति. ६ के लगभग व्यापारिक क्षेत्र में घबराहट होगी क्यों कि यहां तेज हुई वस्तु मंदी, और मंदी हुई वस्तु एकाएक तेज होगी। रूई में काफी घटाबढ़ी होकर मंदी का झटका आवेगा घी गुड़ खांड तिल अलसी सरसों तेज. ति. १० से रूई चांदी में मंदी विनौला तेज अनाज और रसकस का भाव समान। ति. ५।६।७ बादल चाल और वायु का जोर रहेगा। मं. चं. शु. का योग मीन में है भविष्यके वर्षमें वर्षा कम अनाज तेज।

फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिए। होली के दाह के समय यदि पूर्व की हवा हो तो राजा प्रजामें सुख, कोण की हो तो दुर्भिक्ष पश्चिम उत्तर और ईशान की हो तो सुभिक्ष, सुख, अग्निकोण की हो तो अग्निभय वायव्यकी हो तो वायु अधिक नैरृत्यकी हो तो भय और यदि चारों तरफकी जोरदार हवा चले तो राजाओं में युद्ध और प्रजा का नाश होता है।

फाल्गुनशुक्ल १५ शनावष्टम् ०।० दिनगणः ६५३९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	११	०	११	६	९	३
१६	२१	४	२२	२९	३	१७	१७
१	५३	०	२१	१९	४५	४७	४७
४२	५२	१९	२	२०	३	५१	५१
६	४४	५६	९	४२	२	३	३
१९	४३	६	१७	१८	१८	११	११
	मा	मा	मा.	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	रे.	पू.भा.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले.
३	२	१	३	४	४	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ फाल्गुनकृष्णपक्षः २२

दि.मा.		ति.वा		घ.	प.	न.	घ.	प	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. ता.	अं. फरवरी	मु. हि. ता.	लग्न सञ्चारः	सू.उ. रेहवे		सू.अ. देहवे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२६	२०	१	गु.	२७	४१	श्ले.	५९	१०	आ.	२४	२१	बा.	२५	१६	१८	३०	१३	स५९।१८	७	२२	५	५३	९	१६	४०	३८
२६	२४	२	शु.	६०	०	म.	६०	०	सौ.	२५	२८	तै.	३०	२२	१९	३१	१४	सिंहे	७	२१	५	५४	९	१७	४१	४२
२६	२८	३	श.	३	३	म.	५	४४	शो.	२६	५२	ग.	३	३	२०	फ	१५	सिंहे	७	२१	५	५६	९	१८	४२	४६
२६	३१	३	चं.	८	२६	पू.फा	१२	२०	अ.	२८	१०	वि.	८	२६	२१	२	१६	कं.२८।५२	७	२१	५	५७	९	१९	४३	४८
२६	३५	४	मं.	१३	३०	उ.फा	१८	३०	सु.	२९	५	बा.	१३	३०	२२	३	१७	कन्यायाम्	७	२०	५	५८	९	२०	४४	४८
२६	३९	५	बु.	१७	५०	ह.	२४	०	ध.	२९	२९	तै.	१७	५०	२३	४	१८	तु.५६।१२	७	१९	५	५९	९	२१	४५	४९
२६	४३	६	गु.	२१	७	चि.	२८	२९	शू.	२९	०	व.	२१	७	२४	५	१९	तुलायाम्	७	१९	५	५९	९	२२	४६	४७
२६	४६	७	शु.	२३	२१	स्वा.	३१	५०	ग.	२७	४०	ब.	२३	२१	२५	६	२०	तुलायाम्	७	१९	६	०	९	२३	४७	४२
२६	५०	८	श.	२४	११	वि.	३३	५६	वृ.	२५	१८	कौ.	२४	११	२६	७	२१	वृ.१८।२४	७	१८	६	१	९	२४	४८	३८
२६	५४	९	र.	२३	४१	अनु.	३४	४५	ध्रु.	२१	५६	ग.	२३	४१	२७	८	२२	वृश्चिके	७	१७	६	२	९	२५	४९	३३
२६	५८	१०	चं.	२१	५९	ज्ये.	३४	२२	व्या.	१९	३६	वि.	२१	५९	२८	९	२३	ध.३४।२२	७	१६	६	३	९	२६	५०	२३
२७	२	११	मं.	१९	११	मू.	३२	५५	ह.	१२	२३	बा.	१९	११	२९	१०	२४	धनषि	७	१५	६	३	९	२७	५१	१४
२७	५	१२	बु.	१५	२८	पू.षा	३०	४१	व.	६ ५९	२४ ४५	तै.	१५	२८	३०	११	२५	म.४४।५४	७	१५	६	४	९	२८	५२	४
२७	९	१३	गु.	१०	५१	उ.षा	२७	३४	व्य.	५२	३६	व.	१०	५१	फ	१२	२६	मकरे	७	१४	६	५	९	२९	५२	३३
२७	१३	१४	शु.	५	३९	श्र.	२३	५९	व.	४५	५	श.	५	३०	२	१३	२७	कु.५१।५९	७	१३	६	५	१०	०	५३	४०
२७	१७	३०	श.	०	२	ध.	१९	५८	प.	३७	२०	ना.	०	२	३	१४	२८	कुम्भे	७	१२	६	६	१०	१	५४	२६

३० जन. से १४ फर. १९५३ ई. उत्त. द. गो. शिशिरर्तुः

ग्रहदर्शन–मं. श. सूर्यास्त बाद पश्चिम में तथा गुरु ख मध्य से पश्चिम की तर्फ आता हुआ दिखेगा. श. पश्चिम रात्रि में पूर्व §

§ में देखें । बु. अस्त है । ‡ ०।० स्वा ।ऽ।।।।।।।ल. ९

भ. ३५।४४ उ. फरवरी २ ता० २८ + ।।।। ल. ऽन्यगो.

भ. ८।२६ या. श्री गणेश ४ व्र. उ. फा. ।।।।ऽ मंऽअग्नि ।ऽ।।†

उ. भा. भौमः १९।५५ †ल. ९ वा.गो.

धनिष्ठा बुधः २५।४५

भ. २१।७ उ. ५२।१४ या धनिष्ठा रविः ३२।४३ वक्री शनिः‡

श्रीसीता जन्म ८ (अर्द्धरात्र व्यापिनी होने से) स्वा०।ऽ।।।ऽचौ.+

अनु.ऽ वृ. ।।ऽः वृ ।।।ऽ।। ल. ९

भ. ५२।५० उ. कुंभे बुधः १०।२३ अनु.ऽवृ. ।।ऽवृ. ।ऽरो. ।ऽ।। ✕

भ. २१।५९ या. मू. ।ऽ।।। ।।ऽ।। ल. ८ अत्या अनि. गु. दा

भ. ३ गुरुः ४२।१ विजया ११ व्र. स० ✕ल. ऽन्य गो.

शते बुधः ५०।३५ प्रदोष व्र. श्री शिव महारात्रिव्रतम्

भ. १०।५१ उ. ३८।१५ या. सं. कुंभेऽर्कः ७।३ मु. ४५ पुण्यं÷

पंचक आ. ५१।५९ ÷७।३ या. रेवत्यां शुक्रः २५।२१

फाल्गुनकृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	११	९	०	११	६	९	३
२४	६	२७	१९	११	४	१८	११
४८	७	५३	३५	३४	१२	५४	५४
३८	९	३१	३७	१२	९	३४	३४
६०	४५	[illegible]	६	५८	०	३	३
५६	३२	२७	१५	७	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	उ.भा.	ध.	भ.	उ.भा.	चि.	श्र.	श्ले.
१	१	२	२	३	४	३	१

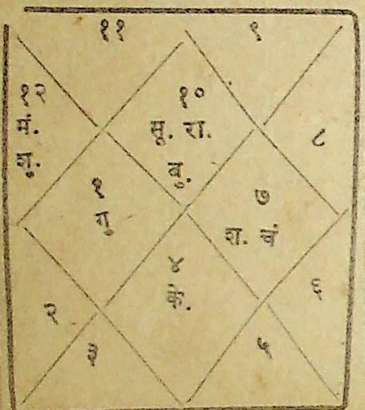

इस पक्ष मे गेहू बाजरा अलसी सरसों गुड खांड के भाव में घटा बढी चले आखिर में तेजी में रहने वाले लाभ में रहेंगे चांदी मंदी हो कर बाद तेज, सुवर्ण लकडी चौपाये और घास का भाव भी तेज। रुई में काफी घटा बढ़ी चलेगी, मंदी वाले कमालेंगे शेयरों के भावमें तेजी। शीशा कलाई चावल घी वस्त्र तेल तमाकू में तेजी पक्षान्त में चन्दन कपूर जवाहरात के भाव में मंदा आवे। ति. १।२।४। १४।३० को बादल चाल वायु का जोर रहे।

श० वि०–फाल्गुन वदी तीज को जान। दीखे पवन प्रमान ।। आसोज सुदीमें वर्षा होय ।। रात दिना वर्षे मेघ मन मोय।

फाल्गुनकृष्ण ३० शनाविष्टस् ०।० दिनगणः ६५२५

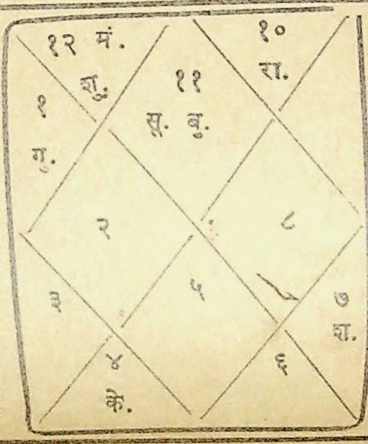

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	१०	०	११	६	९	३
१	११	१०	२०	१८	४	१८	१८
५४	२४	३६	२३	५	८	३२	३२
२६	३९	२८	२०	१३	७	१९	१९
६०	४५	[illegible]	७	५३	०	३	३
४६	१३	४७	१४	४५	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ	उ.भा.	श.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले
३	३	२	३	१	४	३	१

फाल्गुन कारीदूजदिन निर्मल रहे आकाश। श्रावणभादों जल बहु सुधर जाय चौमास ।। फाल्गुनकृष्ण में शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिए इससे मनुष्य का कल्याण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१५ फर. २८फर. १९५३ई.) उत्त.अ.द.गो. शिशिर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ शकः १८७४ फाल्गुनशुक्लपक्षः २३ (१५ फर. २८फर. १९५३ई.) उत्त.अ.द.गो. शिशिर

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	त्रिं फाल्गुन	अं. फरवरी	मृ. ज.ला.	चन्द्र सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट उदयकाले			
अवम		१	श.	१४	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	२१	२	र.	४८	१६	श.	१५	४७	शि.	२९	२८	बा.	२१	१२	४	१५	२९	मो५७।४३	७	११	६	७	१०	२	५५	११
२७	२४	३	चं.	४२	३१	पू.भा	११	४२	सि.	२१	४४	तै.	१९	२३	५	१६	१	मीने	७	११	६	८	१०	३	५५	५३
२७	२८	४	मं.	३७	९	उ.भा	७	५३	सा.	१४	१४	व.	९	५०	६	१७	२	मीने	७	१०	६	८	१०	४	५६	३२
२७	३२	५	बु.	३२	१९	रे.	४	२८	शु.	७	५	ब.	४	४४	७	१८	३	मे.४।२८	७	९	६	९	१०	५	५७	१०
२७	३६	६	गु.	२८	१७	अ.	५ / ५९	४४ / ५४	शु.	० / ५४	३१ / ३८	तै.	२८	१७	८	१९	४	मेषे.	७	८	६	१०	१०	६	५७	४६
२७	४१	७	शु.	२५	८	कृ.	५८	५५	ऐं.	४९	३२	व.	३५	८	९	२०	५	वृ.१४।३९	७	७	६	११	१०	७	५८	२१
२७	४६	८	श.	२३	३	रो.	५९	८	वै.	४५	१७	ब.	२३	३	१०	२१	६	वृषे.	७	६	६	१२	१०	८	५८	५४
२७	५१	९	र.	२२	१०	मृ.	६०	०	वि.	४२	२	कौ.	२२	१०	११	२२	७	मि२९।५१	७	५	६	१३	१०	९	५९	२५
२७	५६	१०	चं.	२२	३६	मृ.	०	३४	प्री.	३९	४९	ग.	२२	३६	१२	२३	८	मिथुने	७	३	६	१४	१०	१०	५९	५३
२८	१	११	मं.	२४	२२	आ.	३	१७	आ	३८	३४	वि.	२४	२२	१३	२४	९	क.५१।१२	७	२	६	१४	१०	१२	०	१९
२८	६	१२	बु.	२७	१५	पुन.	७	११	सौ.	३८	११	बा.	२७	१५	१४	२५	१०	कर्के	७	१	६	१४	१०	१३	०	४२
२८	११	१३	गु.	३१	१८	पु.	१२	१२	शो.	३८	४१	तै.	३१	१८	१५	२६	११	कर्के	७	०	६	१५	१०	१४	१	३
२८	१६	१४	शु.	३६	९	श्ले.	१८	५	अ.	३९	४२	ग.	३	४२	१६	२७	१२	सि.१८।५	६	५९	६	१६	१०	१५	१	२३
२८	२१	१५	श.	४१	२६	म.	२४	३२	सु.	४१	५	वि.	८	४६	१७	२८	१३	सिंहे.	६	५८	६	१७	१०	१६	१	४२

ग्र०दर्शन-गु.शु.मं.सूर्यास्त बाद पश्चिम में दिखेंगे.वसन्तर्तुश्च ।
ति. ६ से. व. पश्चिम में उदय होगा। श. पूर्व रात्रि में पूर्व से+

क्षयतिथिः +समय की तर्फ देखें ।
चन्द्रदर्शनम्
जमादि उलाखर मु. ६ बार्हस्पत्यमानेन पराभव संवत्सरारम्भ ३१।२९
भ. ९।५० उ. ३७।९ या.
शते रवि. ४२।२२ सा. मीने भानुः ११।४९ पंचक स. ४।२८†
पू. भायां बुधः ७।२६ पश्चिमोदयो बुधः १२।२५
भ. २५।८ उ. ५४।५ या. रेवत्यां भौमः ५९।४९
होलाष्टकारम्भः † ऽश्वि. ऽमं. ।।।ऽश. ऽचौ ।।.। ल. ९

भ. ५३।२९ उ.
भ. २४।२२ या. आमला ११ व्र. स.
मीने बुधः ६।६
प्रदोष व्रतं
भ. ३६।७ उ. उभायां बुधः २८।१३ ‡ दहनम्
भ. ८।४६ या. आश्वि. मेषेशुक्रः ५९।४४ सत्यव्र. होलिका‡

फाल्गुनशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५३२

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	१०	०	११	६	९	३
८	१६	२३	२१	२४	३	१८	१८
५८	४०	१७	१८	१	५९	१०	१०
५४	८	१३	३४	२	८	५	५
६०	४४	[illegible]	८	४८	१	३	३
३३	५८	४	२१	३७	३५	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	रे.	पू.भा.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले.
१	१	१	३	३	४	३	१

इस पक्षमें अनाज और तांबा पीतल जस्ता के भाव में कुछ सस्तापन हो। ति. ६ के लगभग व्यापारिक क्षेत्र में घबराहट होगी क्यों कि यहां तेज हुई वस्तु मंदी, और मंदी हुई वस्तु एकाएक तेज होगी। रूई में काफी घटाबढ़ी होकर मंदी का झटका आवेगा घी गुड़ खांड तिल अलसी सरसों तेज. ति. १० से रूई चांदी में मंदी विनौला तेज अनाज और रसकस का भाव समान। ति. ५।६।७ वादल चाल और वायु का जोर रहेगा। मं. चं. शु. का योग मीन में है भविष्यके वर्षमें वर्षा कम अनाज तेज।

फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिए। होली के दाह के समय यदि पूर्व की हवा हो तो राजा प्रजामें सुख, कोण की हो तो दुर्भिक्ष पश्चिम उत्तर और ईशान की हो तो सुभिक्ष, सुख, अग्निकोण की हो तो अग्निभय वायव्यकी हो तो वायु अधिक ऊपरकी हो तो भय और यदि चारों तरफकी जोरदार हवा चले तो राजाओं में युद्ध और प्रजा का नाश होता है।

फाल्गुनशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५३९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	११	०	११	६	९	३
१६	२१	४	२२	२९	३	१७	१७
१	५३	०	२१	१९	४५	४७	४७
४२	५२	१९	२	२०	२	५१	५१
६	४४	५६	९	४२	२	३	३
१९	४३	६	१७	१८	१८	११	११
	मा	मा	मा.	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	रे.	पू.भा.	भ.	रे.	चि.	श्र.	श्ले
३	२	१	३	४	४	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation; Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहदर्शन—बु. गु. शु. मं. सूर्यास्त पीछे पश्चिम में दिखेंगे। शनि पूर्व रात्रि में पूर्व से ख मध्य को आता हुआ दिखेगा।

वि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	फाल्गु.	मार्च	अं. क्र.	सञ्चारः	रेल्वे		बेल्वे		उदयकाले				
२८	२६	१	र.	४६	४९	पू.	३१	६	शु.	४२	३१	बा.	१४	७	१८	१	१४	कुं.४७।४१	६	५५	६	१८	[illegible]	१७	१	५९	मार्च ३ ता. ३१ होला १ मेलाश्री आनन्दपुर साहिब आम्र†
२८	३०	२	चं.	५१	४६	उ.फा	३७	२५	सु.	४३	४०	तै.	१९	१८	१९	२	१५	कन्यायाम्	६	५३	६	१९	१०	१८	२	१४	
२८	३५	३	मं.	५५	५९	ह.	४३	४	गं.	४४	१८	व.	२३	५२	२०	३	१६	कन्यायाम्	६	५२	६	२०	१०	१९	२	२७	भ. २३।५२ उ. ५५।५९ या. पूभायां रविः ५७।१९
२८	४०	४	बु.	५९	५	चि.	४७	४८	वृ.	४४	११	ब.	२७	३२	२१	४	१७	तु. १५।२६	६	५१	६	२१	१०	२०	२	३९	श्रीगणेश ४ † पुष्पप्राशनम्
२८	४५	५	गु.	६०	०	स्वा	११	२५	ध्रु.	४३	१०	कौ.	३०	७	२२	५	१८	तुलायाम्	६	४९	६	२१	१०	२१	२	४९	मेला शीतला माता कुराली
२८	५०	५	शु.	१	१०	वि.	५३	४६	व्या.	४१	१०	तै.	१	१०	२३	६	१९	वृ. ३८।११	६	४८	६	२२	१०	२२	२	५७	भरण्यां ४ गुरुः ४।४३
२८	५५	६	श.	१	५०	अनु.	५४	४९	ह.	३८	१०	व.	१	५०	२४	७	२०	वृश्चिके	६	४७	६	२३	१०	२३	३	२	भ. १।५० उ. ३१।३१ या. अनु.ऽचं. ऽ।ऽ वृ. ।।।।। ल ९ अत्या.
२९	०	७	र.	१	१३	ज्ये.	५४	४३	व.	३४	९	ब.	१	१३	२५	८	२१	ध. ५४।४३	६	४६	६	२४	१०	२४	३	४	
अवम्		८	र.	५८	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तिथिक्षयः
२९	५	९	चं.	१६	२५	मू.	५३	२८	सि.	२९	१५	तै.	२७	५३	२६	९	२२	धनुषि	६	४४	६	२४	१०	२५	३	४	वक्री बुधः ३०।२२ व. चित्रा ३ शनिः १२।१२
२९	१०	१०	मं.	१२	३३	पू.षा	५१	२६	व्य.	२३	३५	व.	२४	२९	२७	१०	२३	धनुषि	६	४३	६	२५	१०	२६	३	३	भ. २४।२९ उ. ५२।३३ या. अश्वि मेषे भौमः ५६।३२ पश्चिमा ‡
२९	१५	११	बु.	४७	४९	उ.षा	४८	२९	व.	१७	१६	ब.	२०	११	२८	११	२४	म. ५।४२	६	४३	६	२५	१०	२७	२	५९	पापमोचनी ११ व्र. स्मा. वै. ‡स्तो बुधः ४०।५२
२९	२०	१२	गु.	४२	३२	श्र	४४	५७	प.	१०	१८	कौ.	१५	१०	२९	१२	२५	मकरे	६	४२	६	२६	१०	२८	२	५३	निम्बा. ११व्र. +१३।२४. या. पंचक आ. १२।५९
२९	२५	१३	शु.	३६	४९	ध.	४१	१	शि.	५७ २	५७ १७	ग.	९	४०	चै.	१३	२६	कुं. १२।५९	६	४१	६	२७	१०	२९	२	४५	भ. ३६।४९ उ. प्रदोष व्र. संमीनेऽर्कः ५७।२४ मु. १५ पु. परदिने+
२९	३०	१४	श.	३०	५२	श.	३६	५३	सा.	४७	३०	बि.	३	५०	२	१४	२७	कुंभे	६	३९	६	२७	११	०	२	३४	भ. ३।५० या. मेला पृथूदक (पिहोवा)
२९	३५	३०	र.	२४	५१	पू.भा.	३२	४७	शु.	३१	४७	ना.	२४	५१	३	१५	२८	मी १८।४८	६	३८	६	२८	११	१	२	२२	मन्वादिः चान्द्र संवत्सर समाप्तिः

चैत्रकृष्ण ७ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५४७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	११	०	०	६	९	३
२४	२७	९	२३	४	३	१७	१७
३	४९	४३	३९	६	२३	२२	२२
४	५१	२६	३३	२३	४०	२५	२५
६०	४४	१४	१०	३०	२	३	३
२	२०	३१	१३	५४	५७	११	११
मो.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.	रे.	उ.भा.	भ.	अश्वि.	चि.	श्र.	श्ले.
२	४	२	४	२	४	३	१

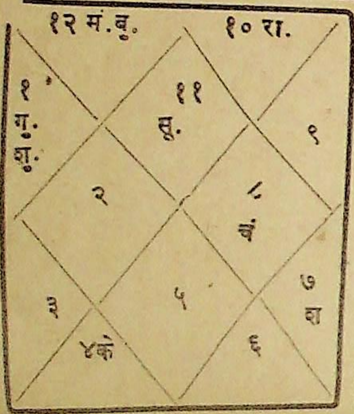

इस पक्षमें रूई चादीं सोना और खांड गुड़ नमक घी गेहूं आदि में तेजी अलसी व ऊनके भाव में मंदी होकर ति. ९ से तेजी आवे। ति. १० से चांदी में ४ टका तेजी। मघ जवाहरात ऊंट घोड़ा आदि पशु और मशीनरी के सामान के भाव में तेजी तांवा पीतल कलई में पहले मंदी होकर फिर तेजी कहीं कारखानों के मजदूरों व मिल मालिकों में परस्पर वैमनस्य। वायु का जोर रहेगा ति. १० के लगभग कहीं बादल चाल बूंदा बांदी होगी।

श० वि०—चौथ पंचमी चैत्र वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥

चैत्रकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५५४

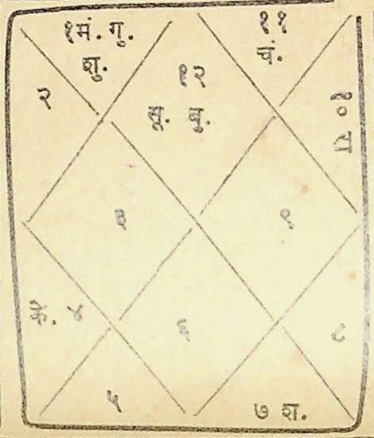

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
११	०	११	०	०	६	९	३
१	२	७	२४	७	३	१७	१७
२	५८	३१	५४	२	०	०	०
२२	५३	११	२२	५५	४२	११	११
५९	४४	४१	११	३०	३	३	३
४८	२	४६	३	५९	३२	११	११
मो.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.	अश्वि.	उ.भा.	भ.	अश्वि.	चि.	श्र.	श्ले.
४	१	२	४	३	३	३	१

मंगलाचरण—चन्द्रमौलि शंकर चरण बार बार शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय॥ चैत्र कृष्ण १ भृगु बार को "आम्रमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमं तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये" इस मन्त्र से आम की मंजरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ तेजी मन्दी निकालने की विधि।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा ।

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	वृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुवा		२०८५

अथ तिथि ध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपत ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोद० ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावा १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥ ३ ॥

अश्वि १७६	भरणी ६८३	कृत्ति ३७०	रोहि० ७७५	मृग ६८२	आर्द्रा १४६	पुन ५४०
पुष्य ६३४	अश्ले १७०	मघा ७३	पू.फ ८५	उ.फ १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा ७३४	अनु ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू० षा ६१४	उ.षा ६२३
अभि ६८३	श्रव ६५७	धनि ५००	शत० ५६४	पूभा ३३६	उभा १८३	रेवती ७२०

अथ मास ध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशा० ६३	ज्येष्ठ ६५
आषा ६७	श्राव ६९	भाद्र ७१
अश्वि ७३	कार्ति ५१	मार्ग ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गु ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु ५२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा ग्रामों की ध्रुवा ॥ ६ ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरद्वार २७२	विकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १६८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगन १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	ताम्बा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांशा २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रूई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हेसिअन ७३८	सुता १०३	तमाकू २४०	सुपारी २५२	लाह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसो ८५८	राहर ३३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेडा ६१८	हाथी ८३०	घोड़ा ८३५

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १ तेज	चन्द्र २ अतिमन्द	भौम ३ तेज
राहु ४ अतितेज	बृहस्पति५ मन्द	शनि ६ तेज
बुध ७ सम	केतु ८ तेज	शुक्र ९ तेज

॥ अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति ॥

जिस देशकी जिस वस्तुकी, जिस दिन तेजी मन्दी निकालना हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवाओंका योग (जोड़) कर नौ ९ का भाग देकर शेषसे जिस दिनका विचारना है उस दिनसे शेष तुल्य कोष्ठमें ८ आठवें चक्रमें देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेवा ।

उदाहरण—जैसे कलकत्तेमें वैशाख सुदी तृतीया ३ गुरुवारको कृतिका नक्षत्रमें चांदीकी तेजी मन्दी जाननी है। तो कलकत्तेकी ध्रुवा २४७ वैशाखकी ६३ तृतीया ध्रुवा ४८१ गुरुवार ध्रुवा ७१३ कृतिका नक्षत्र ध्रुवा ३७० चांदीकी ७६० सूर्य मेष राशिका ध्रुवा ५२० सबका जोड़ ३१५४ इसमें ९ का भाग देनेसे शेष बचा ४ अतः ८वें चक्रमें देखा तो गुरुसे चौथा ग्रह केतु हुआ इसका फल आठवें ८ चक्रमें तेज लिखा है। विशेष अचूक तेजी मन्दी जानना हो तो हमारा लिखित 'अर्घ मार्तण्ड' ग्रन्थ १०) ६० का देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सर्व शुभ कार्यों के लिये वर्जित काल—जन्ममास, [illegible] पात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूलयोगके आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघात-योग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल पापग्रह, का नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मूहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हों, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थान, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १०दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादश-चन्द्रप्रशंसा-गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—

वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्मविष्ट्यां तु सिद्ध्यति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवा-परार्द्धजाविष्टिः पूर्वार्द्धोत्थिता यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ला शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादि पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगा–गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकर) गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ॥

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽञ्जवलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ । शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. । शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल समरात्रि है ॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी नक्षत्र गर्भाधान के लिये मध्यम हैं ।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन, संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहिली चार रात्रियां, ज्येष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १०, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापग्रहयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं ।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयका लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रखें ।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं ॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है ॥

तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये ॥

मेधाजननसंस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथकी अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को शोभा २ चार बार मधु घृत चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है ।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. ह. श्र. रे. मृ. हों तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है ॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं । अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये ।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्म काल से ११वें या १२वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ॥

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६। ७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है ॥

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम, शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है । शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालका का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनी (कटिसूत्र) बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे । आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ।। इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है ।।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है । किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं ।।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म-मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६वें दिन या ६वें, ७वें, ८वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है ।।

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है।

मुण्डन का मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध.. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये ।।

मुण्डनकर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथाकुलधर्मंवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ।।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वेही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल—शनि [illegible] हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, [illegible] तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ।।

विशेषफल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है ।। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड़ इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं ।। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७ वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश,विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता हैं, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ।।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उषा० शत० नक्षत्र शुभ हैं ।।

सीने पिरोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं ।।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु-(धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उस के बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा. रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राहय है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य है) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय [illegible] पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण:	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शला० में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. घ.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा.	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	११
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वैर वर्ग देखने का कोष्ठक स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि नाड़ीमें आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापकसारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी हैं। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरणमें हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्वर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुकेगोयुग्ममथीकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ॥

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्याया	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	०॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२७	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०६१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -६	१८॥ -१६	१७॥ ३६	११॥ १६	९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ २	१८ ३४	१० ०१३६	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१५ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१०॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१० १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १२	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ०४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२९॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२१॥	२३॥ १	१३॥ १६	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	२३॥ -४	१४॥ ३०	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	२०॥ ३६	१६॥ २६	२९॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६॥	२७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३०	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८॥ ३	२०॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ -४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	२२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१० २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	११ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४-	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३८	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	२१॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	२०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ २	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३८	२३॥ ५+	२५॥	२५॥	१९॥ ३	१९ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१९ ३१	१६	१९॥ ४	१९॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १५	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	२॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१२॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ २५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	२५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३८	१६॥ -१२६	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१५	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १२५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	२५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	२१ ३२	२१ १	१६ १२	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ २	२७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ २	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२२	१२ १३	१४ १३	२१॥	२२॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	११ २३६	२८॥ ६	२२ १	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ २	२५॥	२९॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ५	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२२	१३॥ ३	१४ ३	२७	२८॥	२३ +५	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ।।	२२॥ २	४॥ १३६	१८॥ २	२३ ४+	१८॥ १५	२०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	१९॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०६	२५॥ ६+	२७	३२	-५	२७	२२ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ।।	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८।। १६	२०।। ३६	१२ ३५	२० १५	१८।। ५+	१९	११ ३	२५	२४।।	१०।। १३	१३।। १२	१३।। १२६	२० ४	२० ३६	२८ ३	२७ ०	३३।।	२२।। ४	६।। ३६	२०।। ४	२७	१३ १३	२१ १	२३।। १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८।। १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२१ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७।।	२८	२३ ३	१२।। ३	२८	२५।।	२५।। ४	२७।। ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	१ ३४०	२१।। ४	१६।। ४	२३	२७	३२ ३	२१।। ३	२२।। ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८।। ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८।। ५+	२० १५	२० ५+	२०।।	२०।।	१७ ३	१६।। ३	१८।। १	१७।। १२	१७।। १४२	१८।। ४+	२६ ४+	३३।।	११ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१।। ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५।। १३	१५।। ३	२१।।	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३।। १६	१२।। १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६।। ६+	१६।। १६	१४।। ३६	१२।। २	१३।। १३	२९।।	११ ६	१२।। १६	१२।। ६	१८ -५	१८ ५-	१४।। -३५	२४।। ३	२२।। १	२१।। १२	१७ १२	१८	२६	२१।। ६	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१।।	२१।। ४+	१५।। ४१	७।। १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५।।	१९।। १	१९ १५	१८ १५२	९।। ३५
	अनु १	२३।। ६	१४।। ३६	१८।। -६	२३।।	२७।।	२०।। ३	१० ३६	१५ २६	१९।। ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४।।	२०।। ३	२८।।	२४	२५	२१ ३	६।। ३४	२०।। ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५।। २४+	१३।। ३४	२२।। ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४।।	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७।। १६	२३।। -६	२८।।	२२।। १	२९।।	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९।। ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३।। १	१५।। १३	११ १३	११ ३	२४	१९।। ४	१४।। ४	१९ ४	३१।।	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६।। १४	१६।। १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९।। १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	११।। ३५	१९ १५	२५ ५+	१९।। ६	१२।। १६	१२।। ६	२१	१४ १३	१२ ३	७।। ३६	१७।। ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९।। १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२।। ४+	१६।। +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५।। १	१३।। १४	१४।। ४	१९।। ४	२८।।	२१।। ३	१४।। १३	१६।। १३	२४।। १	२६
	पूषा १	२५।। +५	१७।। ३५	१९।। -१२४	१४ १६२	१८।। ६	१०।। ३६	१९ ३	२६	२७	२२।। ६	१४।। २३६	१६।। १५	२२ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८।।	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६।। -१४	१५।। ३४	१७।। -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२।। ४	५।। १३४	१४।। १३	२३।। १	२८।।	२९।।	२२।। ३	३०।।
	उषा ।	२४ ५+	२५।। ५+	११।। १३५	६ १३६	१० २३६	१६।। २६	२५ २+	२६	२७	२२।। ६	२२।। ६	८।। १६३	८।। १५३	२४ ५+	२ ५+	२८।।	२८।।	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८।। १३४	२३।। ४+	१७।। -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३।। १४	२२।। १	२३।। १	२८।।	२९।।	३०।।	२२।। ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८।।	१४।। १३	१२ १३५	१६ २३५	२२।। २५+	१९।। २६+	२४।। -६	२२।। -६	२८	२८	१४ १३	४।। १३६	२० ५	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५।। १५	२२।। -१	२१।। ३	१४।। १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४।। १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५।। १+	१५।। +१४	१६।। १४+	२१।। ४+	२९।।	३०।।	२२।। ३
	श्र १	२८	२७	१८।। ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९।। -६	२२।। -६	२८	२८ २+	१४ ३	५।। ३६	१८।। ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२२।। ३	१४।। ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२।। ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७।। ४+	२०।। ४+	२८।।	२९।।	३३।। ३
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३।। +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१८।। -६	२३	१३ ३	२७	१८।। ६	८।। १३६	१०।। १६	१५।। १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८।।	२६	१२ ३	२६	२०।। ४	६।। ३४१	१४।। ४१	२५।। १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७।। १४	२४।। १	१५ १३	२२।। +२
कुम्भ	ध ।।	१९।।	१०।। १३२	२५।।	३०	२५।। ६	१७।। ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४।।	१०।। १३	१८।। १	१७।। १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४।। -५	२५	११ ३	२५	२९।।	१५।। १३	२३।। १	१६।। १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७।। १	१६।। १४	६।। १३४	१३।। ४२
	शत १	१४।। ३	२७।। १	२६।।	३१	२५ १	२६।।	२७ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६।। ३६	१३ ६	१९ ६	२५।।	१९।। १	१९।। १३	१०।। १३६	१०।। २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६।।	२०	१८ ३	२२।। ३	२४।। १	२४।। १	१७ १४	१७।। ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३४०	१४।। १४	१५।। ४
	पूभा ।।।	१७।। ३	२४।। २+	१९।। -१	२४ -१	३०	३०	२३।। ५+	१७ ३५	१७ ३५	१९।। ३६	१९।। ६	१२ १६	१८।। १	२४।।	१६।। ३	१५।। ३६	१५।। ३६+	१७।। १६	१८।। १५-	२६ ५+	२० -१५	२०।। १	२६।।	११ १३	१५ १३	२१।।	२१।।	२२।। +४	२२।। ४+	१८।। -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९।। ४२
मीन	पूभा ।	१८।। ३४	२१।। ४२	१६।। -१४	१९ १	२५	२५	२८	१७।। ३	१७।। ३	१७ ३५	२५ ५	१७।। १५	१६।। -१६	२२।। ६+	१४।। ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८।। ६	१२।। १६	१९ -१५	२५ +५	९।। १३५	१४ १२	२८।।	२८।।	२८।।	२८।।	१४।। १	१५।। १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०।। +२
	उभा १	२३।। ४+	१५।। ३४	१८।। -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६।।	३६ ५	१२ ३५	२० १५	१७।। -१६	१५ ३६	२५।। ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६९	१९ ६	१२।। १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३।। -१	२१।। ३	२९।।	२९।।	२९।।	१४।। १३	५।। १३४	२४।। १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३।। ४+	१०।। ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४।। ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२।। ६+	२२।। ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०।। ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८।।	२०।। ३	२३।। १	२१।। ३	२२।। -२	१३।। ४२	१५।। ४	१७।। ४२	२९।। +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह—अयोजिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्ता शुद्धिमेलके । यन्मनश्चक्षुषो यस्मिन् वरे यस्या च योषिति । सन्तोषो जायते तत्र नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

ग्रहमेलापकविचार:—वर की कुण्डली में १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पुर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। और कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शील स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल (अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली), झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करें।

वाग्दान—(कुड़माई—सगाई) से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्रय, (२) मृत्युः, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्त अमावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे, तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरणमुहूर्त—उ. पा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३. अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिये।

वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्व सम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं वदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥" द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। "वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥"

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिये यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिये यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (−) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार आगे देखो पृष्ठ ६७

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनार्थदः
चरणे	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. भा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिं. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों, तब मन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये॥

अनुष्ठानारम्भमुहूर्तम्—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ, फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा तिथिर्यस्य-देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुनः, पु. उ. ३. ह. स्वा. चि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्र के उदय में शुभे लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है। सूर्यनक्षत्र से महाप्रयोगारम्भ दिन नक्षत्र ३ तक अशुभ, ६ तक शुभ, १३ तक अशुभ, १७ तक शुभ, २० तक अशुभ, २७ तक शुभ जाने।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽब्जनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ) ॥ वर्गोत्तमं वितात्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ ग्वन्याादि लग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्याथह्लास्तारा राशयो धिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः । "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" षाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी । पो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेस्ते रिपुनीचगे नहि भवे भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः । ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे । लग्नाधिपौ यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये ॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । ऊनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		स्याद्दशविशोपका-
			५	५	९					
			६	६	१०				स्थानानि	धिकम्
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैवं फलं विधत्ते ॥ मार्ग माघ फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा: भा. आश्वि का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूली लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजित्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधूप्रवेश का मूहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् । रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य समयमाह—वधू प्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध. गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहन.
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चि	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रच मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है॥

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	
अभि.	उषा.	पूषा	रे.	पूभा.	श.	भ.	पुन.	म.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्रका विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मू.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पू भा.	उ भा.	अ	कृ	मृ.	पुन	उ फा	ह	श्र. न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोषः—

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है॥

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुगमचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यः
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

१० दग्धा तिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वेः (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहारः—चित्रांगते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादमादरात् (वसिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥ जामित्रपरिहारः-(व्यवहारसमुच्चये)-स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्र वर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिंतामणावपि-एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापः	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं कान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं.मं.		विद्धभञ्च			गोधूली त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनात्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादि लग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्यायह्वास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः । "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी । दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेस्ते रिपुनीचगे नहि भवे भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः । ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे । लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये ॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		स्याद्दशविशोपका-
			५	५	९					
			६	६	१०				स्थानानि	धिकम्
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैवं फलं विधत्ते ॥ मार्ग माघ फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा: भा. आश्वि का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूली लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्टेऽष्टमे शशी । तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुर्नविवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भंग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजित्भेषु पुर्नविवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधूप्रवेश का मूहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् । रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य समयमाह—वधू प्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—व्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध. गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा ... म. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ हैं । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष:—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे ऐकादशाहे समवासरेषु । नचात्र ऋक्षं न तिथिर्न-योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह-सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अंधा होता है ।

विशेष:—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वा प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम् । महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत् । तत्रार्घ्यमन्त्रः—ॐ नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दन ! मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

प्रथम स्त्री-संगममुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यंत ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथमदिन स्त्री सङ्ग करे ।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे, सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे, अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजत-दन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

रोमजवस्त्रधारणमुहूर्तः—नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि । शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तारा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यंत शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्-भिन्नेषु भेषु. चं. बु. शु वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

द्वयंग-(बरोजा)-मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः पतिगृहे गमः । पितृगृहे स्थिता या च स द्वयंग इति कीर्तितः ॥ ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. ध. पुन. रे. एषु नक्षत्रेषु, सत्तिथौ सुलग्ने विवाहोक्तमासेषु राहोर्दक्षिण-पृष्ठगे च सति स्त्रीणां द्वयंगः शुभः ॥

द्वयंगार्थ राहोर्दिक् ज्ञानम्

सूर्य राशि	राहु दिशा
१।५।९	पूर्व
२।६।१०	दक्षिण
३।७।११	पश्चिम
४।८।१२	उत्तर

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार का शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभा-शुभ फल जाने ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्ता-मारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामि-सेवकयोः राशीशयोनि मैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भे. रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त:—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि, एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्र-युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन न देना चाहिये । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयाणां कार्यम् ।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है । वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं । इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं । गृहारम्भे वत्सचक्रम् विशेष:—पुष्य. उ. ३. रो. म. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं ।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त:—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. म. अ. श्ले. म. ज्ये. म. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है ।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् वासकर्तुनक्षत्र यावदद गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभ:
पृष्ठे	७	हानि:नैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभ:
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४, श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ ७ हस्ति, ८ (०) । इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना । गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए । ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और नही चार द्वार वाले घर में । ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है । अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है ॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुण कर २७ का भाग दे । जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने । इस नक्षत्र को आठ से भाग देवें । शेषांक तुल्य व्यय जाने । आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचार:—

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक धाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निजल फटा हुआ हो तो अशुभ है ॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे । खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़; राख, बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो । गृहारम्भ मुहूर्त:—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और पौष महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है । केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना ।

गृहारम्भ वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह:
अ. पावे	४	शून्यमसत्
पृ. पावे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति:
द. कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छ	३	स्वामिनाश:
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीडा असत्

विशेष:—पुष्य. उ. ३. रो. मृ. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो इस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होता है । रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुध-वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं । वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है ।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पांचवे, सप्तम नवमे जोय । दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय । तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्ज्जनीया: । अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तडाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता ।

गृहमध्ये कूपविचार :—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचार: ।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद । ४ मस्तक के मृत्युप्रद । ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक । ५ गर्भ के नाशक । २ भुज के भोगदायक । २ चरण के नाशक । यह चूल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें ।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्त :—

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-मासेषु शोभना: । प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य-(मार्ग) कार्तिक-मासयो: ॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बु. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४था ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है ।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी ब. श्रा. का. और मार्गशीर्ष फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष. वृष	मि. क. सि.	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सि. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खात दिशा ज्ञानं	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध वा मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तमजल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

गणना क्रमः—मध्यपूर्व-आग्नेय दक्षिणादि क्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिम्। गणना-क्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व. पुन. पु. श्ले. जलाभावः	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजल	पश्चिम मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	नैर्ऋत्य. वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिने। मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ले देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषणलग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः— . ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करना। इसके बाद आहुति चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सुर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेष्वथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखहवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैर्रचितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमी रहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा-(आर्द्रा)-द्यपादस्थे संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ॥

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—अश्वि. पुन. पु. ह. चि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पु. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिनें, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ, (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल सूर्यनक्षत्र तक गिनें (चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुखं शुभ	नक्षत्र संख्या फलम्

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्वि. श मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ८।१२।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११। वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहुर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं ॥

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं. बु.	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वारा	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उफा

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कालज्ञानम्		योगिनीवासचक्रम्								
शनौ	पूर्वे	पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तरे.	ईशा.	दिशा
शुक्रे	आग्नेयां	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि
गुरौ	दक्षिणे									
बुधे	नैर्ऋत्ये									
भौमे	पश्चिमे									
चन्द्रे	वायव्ये									
रवौ	उत्तरे									
सम्मुखे नेष्ट										

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रामें बायें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलिमें पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्				एकस्मिन्राशौ आवश्यके घटचात्मकचन्द्रवासचक्रम्									घटचात्मक चन्द्रवास
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे	पू.	द.	प.	उ.	पु.	द.	प.	उ.	दिशा	जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी	कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.										
धनु	मकर	कुम्भ	मीन										

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति ॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः।

सर्वांकसिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायाँ चलते समय दक्षिण व नैऋत्य मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर में या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्							रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्							
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटि	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३।।।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७।।	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।।।	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।।	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक्य दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखना शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुदध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट अंगहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	लाभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाओं आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी ।

नौका यात्रा मुहूर्त--चि. ह. पु. मू. पूर्वा. रे. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूले सति शुभः ।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः---मृ. रे .अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु; ३।५।६।८।९।११। १२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः४।८।शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः; सू.मं. वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि । मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेषः---प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं । नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.		कुं.	सि.	म.	मि.	ध.	वृष	मि.	सिं	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.		चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	श.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	स्त्रीचन्द्रघा.
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	शु.	प.	धृ.	प्री.	शु.	ऽगं	बृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है । "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम् ।"

वाम दक्षिण निर्देश---

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगट) के चढ़ने का जाने । सरठ के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथाङ्गविभागे पल्ली---(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम्	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंध	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यक्षाणि---यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं । इतोऽन्यदभेषु निंद्याः ।।

पल्लीपाते कर्तव्यकर्म---पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है ।

छिक्का फलम्---छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा---छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं; पीनस सरदी खांस फल हीनी । छींक पीठि की कुशल उचारें; बाईं कारज सबै सवारे ।।१।। सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी ।। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ।।३।। कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले ।

अथ शुभ छिक्का---आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने । वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्काः शुभावहाः ।। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ।।

तीर्थ में मुण्डन विचार---मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ।

हर प्रकार की पुस्तकें---मिलने का पता---

मोतीलाल बनारसीदास नेपालीखपरा पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रह अतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओं में विग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देशक्षय	वनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हों
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	वर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर-	गृहस्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब-	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्र बालकवध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सब वस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
महास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनका पक्ष	प्रजानाश

अथ वासरक्रमेण तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त-हानि	विपत्ति	सुख सुभोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तत्राह—

रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांति वैधृतावपि। षष्ठयष्टम्योश्च विष्ट्यां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काकस्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत-छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं॥

अथ काकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत्॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकारका होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थप्रार्थित (जागृतावस्थामें इच्छाकी हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित (दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)॥ पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

शुभस्वप्न:—राजा विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनका दर्शन तथा | स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शुभस्वप्न :—राजा विप्र, देवता, गुरु, श्वेत [illegible] आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण रक्त पीत, पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा वहियों में बहुत गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्रवाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्ध पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना सूर्यमण्डल का दीखना अपना मरना दीखें तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्रीप्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्यालाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चर्बी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत, चन्दन, श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी, समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है, राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाय बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये इसको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न :—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना रुई कपास, तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। घरे मनुष्य का अपने [illegible] वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक है। अपनी स्त्री को कमीज को मरी स्त्री ले आवे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊँट, गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत, प्रेत, चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होती है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुर्निर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे स्थिरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११, १, ४, ७, १०, ५, ९. इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है ९।४ में पापग्रह हो; पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

चोर किस दिशा में है ?

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से वार सूर्य से गिने नौ और मिलाय लग्न का अंक जोड़ ४ से भाग देवे शून्य शेष रहे तो पूर्व एक बचे तो दक्षिण, २ बचे तो पश्चिम, ३ बचे तो उत्तर, दिशा कहें। हारजीत के प्रश्न करते समय पूछनेवाला स्वयं अपना स्तन कर्ण शिर हाथ मुख नाक कमर स्पर्श करे तो जीत कहे और अंगस्पर्श करे तो हार होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्रश्न—जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ । मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥ १ ॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः ।

कार्य सिद्ध होगा कि नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्धि होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने । अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है । विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहनी ।

क्रय विक्रय प्रश्न—प्रश्नलग्न का स्वामी क्रेता (खरीदने वाला), ग्यारहवें घर का स्वामी विक्रेता (बेचने वाला) और लग्न क्रयाणक (खरीदने योग्य वस्तु) है, ऐसा जानो । यदि लग्न बली हो अर्थात् उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखें या शुभ ग्रह उसमें पड़े हों अथवा केन्द्र में शुभ ग्रहों का योग हो तो वस्तु के खरीदने वाले को लाभ रहेगा । यदि ग्यारहवां भाव पूर्ववत् बली हो तो बेचने वाले को लाभ जानो । कितना लाभ होगा ? इसके जानने के लिये लाभेश का बल विचारो; यदि वह अपने घर में रहे तो दुगुना, शत्रु के घर में हो तो सवाया, सम घर का हो तो ड्योढा और मित्र का हो तो चतुर्थांश लाभ होगा; इसी प्रकार खरीदने वाले को भी जानना चाहिये । प्रश्न का उत्तर देने में योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ॥

क्या यह बात सत्य है ?—प्रश्न काल के वार तात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो, फिर उसे ४ से भाग देना, शेष १ । ३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो ॥

स्त्री पुरुष में प्रथम किस की मृत्यु होगी ?

स्त्री पुरुष के नाम की मात्रा को ४ गुणा करें, जो अक्षर होवे उनको दुगुना कर जोड़ देवे फिर ३ का भाग देवे यदि २ शेष रहे तो प्रथम स्त्री की मृत्यु और १ या ० बाकी रहे तो प्रथम पुरुष की मृत्यु जानना । किन्तु मात्रा जोड़ने में भूल न करें ॥

प्रवासी प्रश्न—प्रश्नकर्ता के उच्चारण किये हुए अक्षरों को (वा फल का नाम लेवे तो फलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें १ जोड़ दे, फिर सात का भाग देने से एक [illegible] प्रवासी आना चाहता है । २ शेष रहे तो मार्ग के अर्द्ध भाग में है । ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है । ४ बचे तो घर में लाभ सहित आ गया है । ५ बचे तो रोगी है । ६ बचे तो पीड़ित है । ७ बचे तो आने का यत्न करता है ॥ धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याणपूर्वक है ॥

देशांतर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा मार्ग में है । स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले । द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले । प्रश्न लग्न में बुध चंद्र हों और शुभग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा ॥

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं ?

साहूकार (जिस से नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दें, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले । २ शेष रहे तो न मिले । तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले ॥

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इस की केवल गत घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे ॥

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तात्कालिक तिथि की संख्या को ४ गुणा करके दो से भाग देना जो लब्धि आवे उसको तीन गुणा करके ४ से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें । १ शेष बचे तो विलम्ब से सन्तान पुत्र लाभ होगा चिरंजीविता के लिये पार्थिव-शिवपूजन करना चाहिए । २ शेष रहे तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवा लक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे । ३ शेष बचे तो शीघ्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा । ४ (०) शेष बचे तो सन्तान सुख शीघ्र होगा ॥

विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्न से २।३।६।७। [illegible] स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति [illegible] हो जायगा यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा । यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो यद्वा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा ।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्

तृतीय नवम द्वादश षष्ठ स्थान में प्रश्नलग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना । यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता । यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष, चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष, सूर्य के होने से देवी दोष, अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहे, शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती का दोष) और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना । व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है । परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं । दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोषसूचक ग्रह भी नीच शत्रुक्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होता है । बलवान् पापग्रह केन्द्र में हों तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं यदि शुभ ग्रह केन्द्रस्थान में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है ।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़े और ८ का भाग देवे शेष ३।७ बचें तो देवता की, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना । उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता । भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, एक (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) कः [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

❋ अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः ❋

मित्र मिलाप प्र. १			मुकदमा प्र. २			यात्रा प्र. ३		
७	२	१	४	२	१	५	४	३
३	६	५	३	९	८	१	६	९
४	९	८	६	७	५	२	८	७
पशु लेने का प्र. ४			**लाभालाभ का प्र. ५**			**नौकरी का प्र. ६**		
२	१	३	७	४	५	१	५	८
४	५	६	२	८	९	७	३	६
७	९	८	६	३	१	९	४	२
विद्या परीक्षा प्र. ७			**परदेशी प्र. ८**			**शत्रुनाश प्र. ९**		
७	८	५	९	७	४	६	८	९
४	३	२	३	२	८	२	१	३
९	१	६	१	६	५	४	५	७

प्रश्नकर्ता पुष्प धूप दक्षिणा आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के नवघरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रक्खे, फिर उसी विषय के फल चक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवें, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टभय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ धनुर्विचार के गमन करो लाभ होगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु अब खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम।

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ सांझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से ज्यादा लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पास है तो बेचो।
९ माल में ज्यादा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, चेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ दान् [illegible] शत्रु दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिंता का प्र० १०			कर्ज लेना देना प्र० ११			खेती करूं या नहीं प्र० १२		
७	८	२	१	३	२	१	८	३
९	६	१	८	९	६	६	४	७
३	४	५	५	४	७	५	२	९
रोगी का प्र० १३			**गर्भ में क्या है प्र० १४**			**चोरी गई का प्र० १५**		
९	६	२	७	६	१	८	७	३
७	५	८	४	२	८	४	९	६
३	४	१	३	५	९	२	५	१
पुत्र गोद लेना प्र० १६			**अनाज खरीद का प्र० १७**			**विवाह शादी प्र० १८**		
३	५	९	८	७	५	५	४	३
४	१	८	९	४	३	२	१	६
२	६	७	२	१	६	८	९	७

रोजगार का प्र० १९		
६	७	९
२	४	८
१	५	३

गुप्त चिन्ता का फल (१०)

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुःख से वास्ता पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता [illegible] है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)

१ जहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ धोखा देने भय है आगे नहीं रहें।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करूं या नहीं फल (१२)

१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ बाढ़ के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग पितर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी है।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार से किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)

१ इस गर्भ को बताना नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ [illegible] माल न मिलेगा।
४ चोर पकड़ा है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को दी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर [illegible] माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)

१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करावेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी मिलेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुनासिब निकलेगा।
८ घर में अमन रहेगा।
९ मुनासिब नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)

१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ सांझी व्यापार न करें।
६ देर से मिलेगा।
७ अनाज में उतार होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल [illegible] है।

विवाह शादी का फल (१८)

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा परन्तु अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ [illegible] मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ [illegible]
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ [illegible] से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ [illegible]
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखवावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहें। यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्यनाश होवे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशा चान्तदशा ज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६			
कृ.उ.फा.उ.षा			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८
चं	०	६	०
मं	०	४	६
रा	०	१०	१४
बृ	०	९	१८
श	०	११	१२
बु	०	१०	६
के	०	४	६
शु	१	०	०

चन्द्रदशा वर्ष १०			
रो. ह. श्रवण			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
चं	०	१०	०
मं	०	७	०
रा	१	६	०
बृ	१	४	०
श	१	७	०
बु	१	५	०
के	०	७	०
शु	१	८	०
र	०	६	०

भौमदशा वर्ष ७			
मृ. चि. ध.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
मं	०	४	२७
रा	१	०	१८
बृ	०	११	६
श	१	१	९
बु	०	११	२७
के	०	४	२७
शु	१	२	०
र	०	४	६
चं	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८			
आ. स्वा. श.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२
बृ	२	४	२४
श	२	१०	६
बु	२	६	१८
के	१	०	१८
शु	३	०	०
र	०	१०	२४
चं	१	६	०
मं	१	०	१८

गुरुदशा वर्ष १६			
पुन. वि. पूभा.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
बृ	२	१	१८
श	२	६	१२
बु	२	३	६
के	०	११	६
शु	२	८	०
र	०	९	१८
चं	१	४	०
मं	०	११	६
रा	२	४	२४

शनिदशा वर्ष १९			
पु. ऽनु. उ. भा.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
श	३	०	३
बु	२	८	९
के	१	१	९
शु	३	२	०
र	०	११	१२
चं	१	७	०
मं	१	१	९
रा	२	१०	६
बृ	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७			
श्ले. ज्ये. रे.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७
के	०	११	२७
शु	२	१०	०
र	०	१०	६
चं	१	५	०
मं	०	११	२७
रा	२	६	१८
बृ	२	३	६
श	२	८	९

केतुदशा वर्ष ७			
म. मू. अ.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
के	०	४	२७
शु	१	२	०
र	०	४	६
चं	०	७	०
मं	०	४	२७
रा	१	०	१८
बृ	०	११	६
श	१	१	९
बु	०	११	२७

शुक्रदशा वर्ष २०			
पूफा.पूषा. भ.			
तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.
शु	३	४	०
र	१	०	०
चं	१	८	०
मं	१	२	०
रा	३	०	०
बृ	२	८	०
श	३	२	०
बु	२	१०	०
के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			अ. श्ले. ऽनु. पूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहाः
भ. म. ज्ये. उभा			कृ पूफा मू रे.			रो. उफा. पूषा.			मृ. ह. उषा.			जन्म नक्षत्र
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	सूक्ष्मदशा मं. धा भ. सि. नेष्ट-
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	दशा—पि. भ्रा. उ. सं.
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटा कर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों में भाग देवें लब्ध अंक वर्ष. फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी. फिर शेष को ६० से गुणाकर [illegible]

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलबोधकचक्रम्—

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखं	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टं	पीड़ा	पुण्योद.	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पी.	जयः	स्त्रीकष्टं	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मुन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

*** अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् ***

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि ल. प
बृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	रा ल. प.

अथ वर्षबलम्

वर्षफलसाधनप्रकार :—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसीगताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घटचादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट-सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से की हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६।, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बु०) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्र शत्रु ज्ञानम्—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वेंहों तो सम, १।४।७।१०वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११वें १० कला ४।१०वें १५ कला, और १७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्म लग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो। फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना; राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्मस्पष्ट लग्न होता है॥

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दे, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीगतेन मुद्दादशा

मं.	पिं.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१५	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२६६
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२६६
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदय पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४५	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४५	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्न-सारणी में कोष्ठक देखो तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घटयादि ९।१५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ इस इष्टकोष्ठक से अल्प-कोष्ठक सारणी में देखो तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिये। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इनको ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ की प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह युक्त स्पष्ट लग्न हुआ। अब दशमलग्नसाधनम्—सूर्योदयात्

११) २ (०।१०।५५
६०
१२०
११०
१०
६०
६००
६०५

(यदि इष्ट में से निदार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट का जन्म-कालीन इष्ट मान कर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशियुक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि करने से सप्तमभाव होता है।

भावसाधनम्—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीय भाव की आरम्भ सन्धि होगी, फिर उसी आरम्भ सन्धि में षष्ठांशयुक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांशयुक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभ सन्धि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थ भाव की आरम्भसन्धि से लग्न की विराम सन्धि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भ सन्धि में एक राशियुक्त करने से पंचम भाव की आरम्भ सन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशियुक्त करने से पंचम भाव होगी, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमय दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

(विनद्रयान्तरकरणात्सूक्ष्मगतिः) केतकी अहर्गणः ६२०० मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र
चैत्रशुक्लपक्षः ।	१	बु	११।१२। ८।५४	६।२५।१३।१२	११।२७।१९।५२	११।२८।४६। ८	१०।१८।२७।५०	५।१९। ४।३४	१०।५।४५।४७	२।१६।४३।५५	५।२७।३९।२२
	२	गु	११।१३। ८।१६	६।२५। ९।४२	११।२७।१९।४५	११।२९। ०।१९	१०।१९।४१।३९	५।१८।१९।४४	१०।५।४२।३६	२।१६।४४।२६	५।२७।३७।४७
	३	शु	११।१४। ७।३५	६।२५। ५।४४	११।२७।१३।२३	११।२९।१४।३०	१०।२०।५५।२७	५।१८।५४।५६	१०।५।३९।२६	२।१६।४४।५९	५।२७।३६।१२
	४	श	११।१५। ६।५२	६।२५। १।१६	११।२७। ०।४७	११।२९।२८।४२	१०।२२। ९।१३	५।१८।५०। ९	१०।५।३६।१५	२।१६।४५।३५	५।२७।३४।३६
	५	र	११।१६। ६। ६	६।२४।५६।१८	११।२६।४१।५६	११।२९।४२।५५	१०।२३।२२।५९	५।१८।४५।२३	१०।५।३३। ५	२।१६।४६।१३	५।२७।३२।५९
	६	चं	११।१७। ५।२०	६।२४।५०।५१	११।२६।१६।३७	११।२९।५७। ९	१०।२४।३६।४४	५।१८।४०।३८	१०।५।२९।५४	२।१६।४६।५४	५।२७।३१।२३
	७	मं	११।१८। ४।३१	६।२४।४४।५६	११।२५।४५। ३	०। ०।११।२४	१०।२५।५०।२७	५।१८।३५।५४	१०।५।२६।४३	२।१६।४७।३९	५।२७।२९।४६
	८	बु	११।१९। ३।३८	६।२४।३८।३१	११।२५। ७।१५	०। ०।२५।४०	१०।२७। ४। ९	५।१८।३१।१२	१०।५।२३।३३	२।१६।४८।२६	५।२७।२८। ९
	९	गु	११।२०। २।४३	६।२४।३१।३७	११।२४।२३।१३	०। ०।३९।५८	१०।२८।१७।४९	५।१८।२६।३१	१०।५।२०।२२	२।१६।४९।१६	५।२७।२६।३१
	१०	शु	११।२१। १।४८	६।२४।२४।२३	११।२३।३६।३७	०। ०।५४।१६	१०।२९।३१।२८	५।१८।२२।५१	१०।५।१७।१२	२।१६।५०। ९	५।२७।२४।५३
	१०	श	११।२२। ०।४९	६।२४।१६।४४	११।२२।५०।३३	०। १। ८।३५	११। ०।४५। ७	५।१८।१७।१२	१०।५।१४। १	२।१६।५१। ४	५।२७।२३।१५
	११	र	११।२२।५९।४८	६।२४। ८।३९	११।२२। ४।५९	०। १।२२।५४	११। १।५८।४४	५।१८।१२।३५	१०।५।१०।५१	२।१६।५२। २	५।२७।२१।३६
	१२	चं	११।२३।५८।४४	६।२४। ०। ८	११।२१।१९।५५	०। १।३७।१५	११। ३।१२।२१	५।१८। ७।५९	१०।५। ७।४०	२।१६।५३। ३	५।२७।१९।५७
	१३	मं	११।२४।५७।३९	६।२३।५१।११	११।२०।३५।२२	०। १।५१।३७	११। ४।२५।५७	५।१८। ३।२४	१०।५। ४।३०	२।१६।५४। ७	५।२७।१८।१८
	१४	बु	११।२५।५६।३१	६।२३।४१।५०	११।१९।५१।१९	०। २। ५।५९	११। ५।३९।३१	५।१७।५८।५०	१०।५। १।१९	२।१६।५५।१४	५।२७।१६।३९
	१५	गु	११।२६।५५।२१	६।२३।२३। ३	११।१९। ७।४६	०। २।२०।२३	११। ६।५३। ४	५।१७।५४।१७	१०।४।५८। ८	२।१६।५६।२४	५।२७।१४।५९
वैशाखकृष्णपक्षः ।	१	शु	११।२७।५४। ९	६।२३।२१।५०	११।१८।२४।४३	०। २।३४।४८	११। ८। ६।३६	५।१७।४९।४६	१०।४।५४।५८	२।१६।५७।३६	५।२७।१३।१९
	२	श	११।२८।५२।५७	६।२३। ९।१०	११।१७।४७।२७	०। २।४९।१४	११। ९।२०।२५	५।१७।४५।१२	१०।४।५१।४७	२।१६।५८।५३	५।२७।११।३९
	३	र	११।२९।५१।४३	६।२२।५५।५९	११।१७।१५।२९	०। ३।३ ।४०	११।१०।३४।१३	५।१७।४०।४०	१०।४।४८।३६	२।१७। ०।१३	५।२७। ९।५८
	४	चं	०। ०।५०।२७	६।२२।४२।१८	११।१६।४८।४७	०। ३।१८। ५	११।११।४८। ०	५।१७।३६।११	१०।४।४५।२६	२।१७। १।३६	५।२७। ८।१८
	५	मं	०। १।४९। ९	६।२२।२८। ४	११।१६।२७।२२	०। ३।३२।३१	११।१३। १।४६	५।१७।३१।४४	१०।४।४२।१५	२।१७। ३। १	५।२७। ६।३९
	७	बु	०। २।४७।४९	६।२२।१३।२०	११।१६।११। ३	०। ३।४६।५७	११।१४।१५।३१	५।१७।२७।२०	१०।४।३९। ४	२।१७। ४।२९	५।२७। ५। ०
	८	गु	०। ३।४६।२७	६।२१।५८। ५	११।१६। ०।२१	०। ४। १।२२	११।१५।२९।१५	५।१७।२२।५८	१०।४।३५।५४	२।१७। ६। १	५।२७। ३।२२
	९	शु	०। ४।४५। ३	६।२१।४२।२०	११।१५।५५।३५	०। ४।१५।४७	११।१६।४२।५९	५।१७।१८।३८	१०।४।३२।४३	२।१७। ७।३६	५।२७। १।४४
	१०	श	०। ५।४३।३६	६।२१।२६। २	११।१५।५४।२५	०। ४।३०।११	११।१७।५६।४२	५।१७।१४।२०	१०।४।२९।३३	२।१७। ९।१४	५।२७। ०। ७
	११	र	०। ६।४२। ९	६।२१। ९। ५	११।१५।५९।४३	०। ४।४४।३६	११।१९।१०।२४	५।१७।१०। ५	१०।४।२६।२२	२।१७।१०।५५	५।२६।५८।३०
	१२	चं	०। ७।४०।३९	६।२०।५१।३०	११।१६। ७।५६	०। ४।५९। ०	११।२०।२४। ५	५।१७। ५।५१	१०।४।२३।११	२।१७।१२।३८	५।२६।५६।५४
	१३	मं	०। ८।३९। ७	६।२०।३३।२३	११।१६। ७। ४	०। ५।१३।२४	११।२१।३७।४५	५।१७। १।४३	१०।४।२०। ०	२।१७।१४।२४	५।२६।५५।१८
	१४	बु	०। ९।३७।३१	६।२०।१४।४२	११।१६।२१। ७	०। ५।२७।४७	११।२२।५१।२४	५।१६।५७।३६	१०।४।१६।५०	२।१७।१६।१३	५।२६।५३।४३
	३०	गु	०।१०।३५।५५	६।१९।५५।२७	११।१६।४०। ४	०। ५।४२।११	११।२४। ५। ३	५।१६।५३।३२	१०।४।१३।३९	२।१७।१८। ५	५।२६।५२। ८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६२३० मासारंभे

मास	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
वैशाखशुक्लपक्षः ।	१	शु	०।११।३४।१६	६।१९।३५।४०	११।१७। ३।५६	०। ५।५६।३४	११।२५।१८।४१	५।१६।४९।२९	१०। ४।१०।२८	२।१७।२०। ०	५।२६।५०।३४
	२	श	०।१२।३२।३५	६।१९।१५।१९	११।१७।३२।४२	०। ६।१०।५७	११।२६।३२।१८	५।१६।४५।२८	१०। ४। ७।१८	२।१७।२१।५९	५।२६।४९। १
	३	र	०।१३।३०।५३	६।१८।५४।२५	११।१८। ६।२५	०। ६।२५।१९	११।२७।४५।५४	५।१६।४१।३१	१०। ४। ४। ७	२।१७।२४। ०	५।२६।४७।२८
	४	चं	०।१४।२९।११	६।१८।३३।४०	११।१८।४३। ४	०। ६।३९।३७	११।२८।५९।३४	५।१६।३७।३७	१०। ४। ०।५७	२।१७।२६। २	५।२६।४५।५४
	५	मं	०।१५।२७।२७	६।१८।१०।५५	११।१९।२३। ७	०। ६।५३।५३	०। ०।१३।१४	५।१६।३३।४७	१०। ३।५७।४६	२।१७।२८। ५	५।२६।४४।२०
	६	बु	०।१६।२५।४१	६।१७।४९।१२	११।२०। ६।३६	०। ७। ८। ८	०। १।२६।५३	५।१६।३०। २	१०। ३।५४।३५	२।१७।३०।११	५।२६।४२।४७
	७	बु	०।१७।२३।५४	६।१७।२७।३०	११।२०।५३।३१	०। ७।२२।२३	०। २।४०।३२	५।१६।२६।२१	१०। ३।५१।२५	२।१७।३२।२१	५।२६।४१।१५
	८	शु	०।१८।२२। ४	६।१७। ५।४७	११।२१।४३।५२	०। ७।३६।३६	०। ३।५४।११	५।१६।२२।४५	१०। ३।४८।१४	२।१७।३४।३३	५।२६।३९।४४
	९	श	०।१९।२०।१३	६।१६।४४। ७	११।२२।३७।३९	०। ७।५०।४९	०। ५। ७।५०	५।१६।१९।१३	१०। ३।४५। ३	२।१७।३६।४७	५।२६।३८।१४
	१०	र	०।२०।१८।२०	६।१६।२२।२९	११।२३।३४।५२	०। ८। ५। १	०। ६।२१।२८	५।१६।१५।४५	१०। ३।४१।५३	२।१७।३९। ४	५।२६।३६।४५
	११	चं	०।२१।१६।२६	६।१६। ०।५४	११।२४।३५।३१	०। ८।१९।१२	०। ७।३५। ६	५।१६।१२।२२	१०। ३।३८।४२	२।१७।४१।२४	५।२६।३५।१७
	१२	मं	०।२२।१४।३०	६।१५।३९।१७	११।२५।३९।१७	०। ८।३३।२२	०। ८।४८।४५	५।१६। ९। २	१०। ३।३५।३१	२।१७।४३।४६	५।२६।३३।४९
	१३	बु	०।२३।१२।३२	६।१५।१७।४३	११।२६।४५।४५	०। ८।४७।३१	०।१०। २।२३	५।१६। ५।४८	१०। ३।३२।२१	२।१७।४६।११	५।२६।३२।२३
	१४	गु	०।२४।१०।३२	६।१४।५६। ९	११।२७।५४।५३	०। ९। १।३९	०।११।१६। १	५।१६। २।३८	१०। ३।२९।१०	२।१७।४८।३९	५।२६।३०।५८
	१५	शु	०।२५। ८।२९	६।१४।३४।३६	११।२९। ६।४३	०। ९।१५।४७	०।१२।२९।३८	५।१५।५९।३१	१०। ३।२५।५९	२।१७।५१। ९	५।२६।२९।३३
ज्येष्ठकृष्णपक्षः ।	१	श	०।२६। ६।२५	६।१४।१३। ४	०। ०।२२।१२	०। ९।२९।५४	०।१३।४३।१६	५।१५।५६।२८	१०। ३।२२।४९	२।१७।५३।४१	५।२६।२८। ९
	२	र	०।२७। ४।२०	६।१३।५१।३३	०। १।३८।२३	०। ९।४३।५९	०।१४।५६।५३	५।१५।५३।३१	१०। ३।१९।३८	२।१७।५६।१७	५।२६।२६।४७
	३	चं	०।२८। २।१३	६।१३।३०। ४	०। २।५८।१४	०। ९।५८। ३	०।१६।१०।३०	५।१५।५०।३८	१०। ३।१६।२७	२।१७।५८।५५	५।२६।२५।२५
	४	मं	०।२९। ०। ४	६।१३। ८।३५	०। ४।२०।४६	०।१०।१२। ७	०।१७।२४। ७	५।१५।४७।४९	१०। ३।१३।१७	२।१८। १।३७	५।२६।२४। ४
	५	बु	०।२९।५७।५६	६।१२।४८।२३	०। ५।४५।५७	०।१०।२५।५९	०।१८।३७।४८	५।१५।४५। ६	१०। ३।१०। ६	२।१८। ४।१७	५।२६।२२।४४
	६	गु	१। ०।५५।४६	६।१२।२८।४९	०। ७।१३।१२	०।१०।३९।४९	०।१९।५१।३०	५।१५।४२।२८	१०। ३। ६।५५	२।१८। ६।५८	५।२६।२१।२४
	७	शु	१। १।५३।३४	६।१२। ९।५३	०। ८।४२।३३	०।१०।५३।३९	०।२१। ५।१२	५।१५।३९।५६	१०। ३। ३।४४	२।१८। ९।४१	५।२६।२०। ६
	८	श	१। २।५१।२२	६।११।५१।३६	०।१०।१३।५९	०।११। ७।२७	०।२२।१८।५३	५।१५।३७।३०	१०। ३। ०।३४	२।१८।१२।२७	५।२६।१८।५१
	९	र	१। ३।४९। ८	६।११।३५।५६	०।११।४७।३१	०।११।२१।१२	०।२३।३२।३४	५।१५।३५। ९	१०। २।५७।२३	२।१८।१५।१५	५।२६।१७।३७
	११	चं	१। ४।४६।५२	६।११।१६।५५	०।१३।२३। ८	०।११।३४।५७	०।२४।४६।१४	५।१५।३२।५४	१०। २।५४।१२	२।१८।१८। ४	५।२६।१६।२४
	१२	मं	१। ५।४४।३६	६।११। ०।३२	०।१५। ०।५०	०।११।४८।४१	०।२५।५९।५४	५।१५।३०।४५	१०। २।५१। १	२।१८।२०।५५	५।२६।१५।१२
	१३	बु	१। ६।४२।१८	६।१०।४४।४६	०।१६।४०।३७	०।१२। २।२४	०।२७।१३।३४	५।१५।२८।४१	१०। २।४७।५१	२।१८।२३।४९	५।२६।१४। २
	१४	गु	१। ७।३९।५९	६।१०।२९।३८	०।१८।२४।१५	०।१२।१६। ५	०।२८।२७।१४	५।१५।२६।४३	१०। २।४४।४०	२।१८।२६।४५	५।२६।१२।५३
	३०	शु	१। ८।३७।३८	६।१०।१५। ९	०।२०। ९।४९	०।१२।२९।४५	०।२९।४०।५३	५।१५।२४।५०	१०। २।४१।२९	२।१८।२९।४२	५।२६।११।४६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६२५९ मासारंभे ।

मास	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
ज्येष्ठशुक्लपक्षः ।	१	श	१। ९।३५।१५	६।१०। १।१८	०।२१।५७।१९	०।१२।४३।२३	१। ०।५४।३२	५।१५।२३। ३	१०। २।३८।१९	२।१८।३३।४१	५।२६।१०।४०
	२	र	१।१०।३२।५२	६। ९।४८। ४	०।२३।४६।४४	०।१२।५७। ०	१। २। ८।११	५।१५।२१।२२	१०। २।३५। ८	२।१८।३५।४३	५।२६। ९।३५
	३	चं	१।११।३०।२७	६। ९।३५।२८	०।२५।३८।१७	०।१३।१०।३५	१। ३।२१।४९	५।१५।१९।४६	१०। २।३१।५७	२।१८।३८।४७	५।२६। ८।३२
	४	मं	१।१२।२८।००	६। ९।२३।३१	०।२७।३१।५१	०।१३।२४। ९	१। ४।३५।२७	५।१५।१८।१५	१०। २।२८।४६	२।१८।४१।५२	५।२६। ७।३०
	५	बु	१।१३।२५।३२	६। ९।१२।१२	०।२९।२७।२५	०।१३।३७।४२	१। ५।४९। ५	५।१५।१६।५३	१०। २।२५।३६	२।१८।४५। १	५।२६। ६।२९
	५	गु	१।१४।२३। ४	६। ९। १।३०	१। १।२५। १	०।१३।५१।१४	१। ७। २।४२	५।१५।१५।३२	१०। २।२२।२५	२।१८।४८।११	५।२६। ५।३१
	६	शु	१।१५।२०।३५	६। ८।५१।४३	१। ३।२४।५२	०।१४। ४।४१	१। ८।१६।२७	५।१५।१४।१९	१०। २।१९।१४	२।१८।५१।१८	५।२६। ४।३५
	७	श	१।१६।१८। ५	६। ८।४३।३५	१। ५।२६।२७	०।१४।१८। ३	१। ९।३०।१२	५।१५।१३।११	१०। २।१६। ४	२।१८।५४।२५	५।२६। ३।४१
	८	र	१।१७।१५।३४	६। ८।३५।२७	१। ७।२९।४६	०।१४।३१।१९	१।१०।४३।५७	५।१५।१२। ९	१०। २।१२।५३	२।१८।५७।३४	५।२६। २।४८
	९	चं	१।१८।१३। ३	६। ८।२८।५९	१। ९।३४।४८	०।१४।४४।३२	१।११।५७।४१	५।१५।११।१४	१०। २। ९।४२	२।१९। ०।४४	५।२६। १।५६
	१०	मं	१।१९।१०।३१	६। ८।२२।५६	१।११।४१।३५	०।१४।५७।३९	१।१३।११।२६	५।१५।१०।२५	१०। २। ६।३२	२।१९। ३।५६	५।२६। १। ६
	११	बु	१।२०। ७।५७	६। ८।१७।४१	१।१३।५०। ५	०।१५।१०।४१	१।१४।२५।१०	५।१५। ९।४१	१०। २। ३।२१	२।१९। ७। ९	५।२६। ०।१७
	१२	गु	१।२१। ५।२२	६। ८।१३।१६	१।१६। ०।१९	०।१५।२३।३८	१।१५।३८।५४	५।१५। ९। २	१०। २। ०।१०	२।१९।१०।२४	५।२५।५९।३०
	१३	शु	१।२२। २।४७	६। ८। ९।४०	१।१८।१२।१८	०।१५।३६।३२	१।१६।५२।३७	५।१५। ८।३१	१०। १।५६।५९	२।१९।१३।४१	५।२५।५८।४४
	१४	श	१।२३। ०।११	६। ८। ६।४४	१।२०।२६। ०	०।१५।४९।२०	१।१८। ६।२१	५।१५। ८। ६	१०। १।५३।४९	२।१९।१६।५९	५।२५।५८। ०
	१५	र	१।२३।५७।३३	६। ८। ४।४२	१।२२।४१।१७	०।१६। २। ३	१।१९।२०। ४	५।१५। ७।४६	१०। १।५०।३८	२।१९।२०।१८	५।२५।५७।१७
आषाढकृष्णपक्षः ।	१	चं	१।२४।५४।५५	६। ८। ३।३०	१।२४।५२।१०	०।१६।१४।४१	१।२०।३३।४७	५।१५। ७।३२	१०। १।४७।२७	२।१९।२३।३९	५।२५।५६।३६
	२	मं	१।२५।५२।१६	६। ८। ३।११	१।२७। ४।३७	०।१६।२७।१४	१।२१।४७।२९	५।१५। ७।२४	१०। १।४४।१६	२।१९।२७। २	५।२५।५५।५६
	४	बु	१।२६।४९।३६	६। ८। ३।४३	१।२९।१६।४०	०।१६।३९।४२	१।२३। १।१२	५।१५। ७।२२	१०। १।४१। ५	२।१९।३०।२६	५।२५।५५।१८
	५	गु	१।२७।४६।५५	६। ८। ५। ८	२। १।२८।२१	०।१६।५२। ५	१।२४।१४।५४	५।१५। ७।२६	१०। १।३७।५५	२।१९।३३।५२	५।२५।५४।४१
	६	शु	१।२८।४४।१३	६। ८। ७।२५	२। ३।३९।३६	०।१७। ४।२३	१।२५।२८।३६	५।१५। ७।३६	१०। १।३४।४४	२।१९।३७।१९	५।२५।५४। ५
	७	श	१।२९।४१।३०	६। ८।१०।३४	२। ५।५०।२८	०।१७।१६।३७	१।२६।४२।१८	५।१५। ७।५२	१०। १।३१।३३	२।१९।४०।४८	५।२५।५३।३१
	८	र	२। ०।३८।४८	६। ८।१४। ५	२। ७।५९।१२	०।१७।२८।५३	१।२७।५६। ४	५।१५। ८।१७	१०। १।२८।२२	२।१९।४४।१७	५।२५।५३। १
	९	चं	२। १।३६। ६	६। ८।१८।२०	२।१०। ५।५९	०।१७।४१। ५	१।२९। ९।५०	५।१५। ८।४८	१०। १।२५।१२	२।१९।४७।४७	५।२५।५२।३३
	१०	मं	२। २।३३।२३	६। ८।२३।१९	२।१२।१०।४८	०।१७।५३।११	२। ०।२३।३६	५।१५। ९।२५	१०। १।२२। १	२।१९।५१।१७	५।२५।५२। ६
	११	बु	२। ३।३०।४०	६। ८।२९। २	२।१४।१३।४१	०।१८। ५।१६	२। १।३७।२२	५।१५।१०। ८	१०। १।१८।५०	२।१९।५४।४७	५।२५।५१।४१
	१२	गु	२। ४।२७।५६	६। ८।३५।२९	२।१६।१४।१७	०।१८।१७।१५	२। २।५१। ९	५।१५।१०।५६	१०। १।१५।३९	२।१९।५८।१८	५।२५।५१।१८
	१३	शु	२। ५।२५।१२	६। ८।४२।४०	२।१८।१३।१५	०।१८।२९। ९	२। ४। ४।५६	५।१५।११।५०	१०। १।१२।२८	२।२०। १।४९	५।२५।५०।५६
	१४	श	२। ६।२२।२८	६। ८।५०।३५	२।२०।१०।३७	०।१८।४०।५९	२। ५।१८।४३	५।१५।१२।५०	१०। १। ९।१७	२।२०। ५।२१	५।२५।५०।३७
	३०	र	२। ७।१९।४४	६। ८।५९।१३	२।२२। ५।४२	०।१८।५२।४४	२। ६।३२।३१	५।१५।१३।५५	१०। १। ६। ७	२।२०। ८।५३	५।२५।५०।२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कैतकी अहर्गणः ६२८९ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आषाढशुक्लपक्षः ।	१	चं	२।८।१६।५९	६।९।८।३५	२।२३।५८।४५	०।१९।४।२५	२।७।४६।१९	५।१५।२५।६	१०।१।२।५६	२।२०।१२।२६	५।२५।५०।४
	२	मं	२।९।१४।१३	६।९।१८।४२	२।२५।४३।४०	०।१९।१६।१	२।९।०।७	५।१५।१६।२१	१०।०।५९।४५	२।२०।१५।५९	५।२५।४९।५०
	३	बु	२।१०।११।२७	६।९।२९।३३	२।२७।३८।२५	०।१९।२७।३३	२।१०।११।५५	५।१५।१७।४६	१०।०।५६।३४	२।२०।१९।३२	५।२५।४९।३८
	४	गु	२।११।८।४०	६।९।४१।८	२।२९।२५।१	०।१९।३९।१	२।११।२७।४४	५।१५।१९।१४	१०।०।५३।२४	२।२०।२३।६	५।२५।४९।२७
	५	शु	२।१२।५।५३	६।९।५३।२७	३।१।९।२७	०।१९।५०।२४	२।१२।४१।३३	५।१५।२०।४८	१०।०।५०।१३	२।२०।२६।४०	५।२५।४९।१८
	६	श	२।१३।३।६	६।१०।६।३०	३।२।५१।४४	०।२०।१।४३	२।१३।५५।२३	५।१५।२२।२९	१०।०।४७।२	२।२०।३०।१५	५।२५।४९।१०
	७	र	२।१४।०।१८	६।१०।२०।१७	३।४।३१।५१	०।२०।१२।५७	२।१५।९।१२	५।१५।२४।१५	१०।०।४३।५१	२।२०।३३।५०	५।२५।४९।४
	८	चं	२।१४।५७।३०	६।१०।३४।४८	३।६।९।५०	०।२०।२४।७	२।१६।२३।२	५।१५।२६।६	१०।०।४०।४०	२।२०।३७।२६	५।२५।४९।१
	९	मं	२।१५।५४।४३	६।१०।४९।३९	३।७।४४।३५	०।२०।३५।७	२।१७।३६।५३	५।१५।२८।५	१०।०।३७।३०	२।२०।४१।६	५।२५।४९।२
	१०	बु	२।१६।५१।५६	६।११।५।२	३।९।२०।३०	०।२०।४६।०	२।१८।५०।४५	५।१५।३०।९	१०।०।३४।१९	२।२०।४४।४७	५।२५।४९।६
	११	गु	२।१७।४९।९	६।११।२०।५७	३।१०।५३।३७	०।२०।५६।४७	२।२०।४।३६	५।१५।३२।१९	१०।०।३१।८	२।२०।४८।२७	५।२५।४९।११
	१२	शु	२।१८।४६।२२	६।११।३७।२३	३।१२।२९।५५	०।२१।७।२६	२।२१।१८।२७	५।१५।३४।३४	१०।०।२७।५७	२।२०।५२।७	५।२५।४९।१७
	१३	श	२।१९।४३।३५	६।११।५४।२१	३।१३।४६।३९	०।२१।१७।५९	२।२२।३२।१८	५।१५।३६।५५	१०।०।२४।४६	२।२०।५५।४६	५।२५।४९।२५
	१४	र	२।२०।४०।४८	६।१२।११।५०	३।१५।१।४	०।२१।२८।२६	२।२३।४६।९	५।१५।३९।२१	१०।०।२१।३६	२।२०।५९।२५	५।२५।४९।३६
	१५	चं	२।२१।३८।१	६।१२।२९।५१	३।१६।३३।११	०।२१।३८।४७	२।२५।०।०	५।१५।४१।५३	१०।०।१८।२५	२।२१।३।४	५।२५।४९।४९
श्रावणकृष्णपक्षः ।	१	मं	२।२२।३५।१५	६।१२।४८।२५	३।१७।५२।५९	०।२१।४९।१	२।२६।१३।५२	५।१५।४४।३१	१०।०।१५।१४	२।२१।६।४३	५।२५।५०।२५
	२	बु	२।२३।३२।२८	६।१३।७।३०	३।१९।१०।२०	०।२१।५९।९	२।२७।२७।४३	५।१५।४७।१४	१०।०।१२।३	२।२१।१०।२१	५।२५।५०।१८
	३	गु	२।२४।२९।४२	६।१३।२७।६	३।२०।२४।५१	०।२२।९।१०	२।२८।४१।३५	५।१५।५०।३	१०।०।८।५२	२।२१।१३।५९	५।२५।५०।३६
	४	शु	२।२५।२६।५५	६।१३।४७।१४	३।२१।३६।३४	०।२२।१९।५	२।२९।५५।२६	५।१५।५२।५८	१०।०।५।४२	२।२१।१७।३७	५।२५।५०।५६
	५	श	२।२६।२४।९	६।१४।७।५३	३।२२।४५।२९	०।२२।२८।५४	३।१।९।१७	५।१५।५५।५८	१०।०।२।३१	२।२१।२१।१५	५।२५।५१।१७
	७	र	२।२७।२१।२२	६।१४।२९।५	३।२३।५१।३६	०।२२।३८।३६	३।२।२३।८	५।१५।५९।४	९।२९।५९।२०	२।२१।२४।५२	५।२५।५१।४०
	८	चं	२।२८।१८।३६	६।१४।५०।४८	३।२४।५४।५१	०।२२।४८।१२	३।३।३६।५९	५।१६।२।१५	९।२९।५६।९	२।२१।२८।२९	५।२५।५२।६
	९	मं	२।२९।१५।५०	६।१५।१३।३	३।२५।५५।२२	०।२२।५७।४२	३।४।५०।५०	५।१६।५।३१	९।२९।५२।५८	२।२१।३२।६	५।२५।५२।३४
	१०	बु	३।०।१३।५	६।१५।३५।४९	३।२६।५३।२	०।२३।७।५	३।६।४।४१	५।१६।८।५३	९।२९।४९।४७	२।२१।३५।४२	५।२५।५३।२
	११	गु	३।१।१०।२१	६।१५।५९।२	३।२७।४७।४३	०।२३।१६।२०	३।७।१८।३१	५।१६।१२।१८	९।२९।४६।३६	२।२१।३९।१६	५।२५।५३।३४
	१२	शु	३।२।७।३९	६।१६।२२।३७	३।२८।३८।४४	०।२३।२५।२७	३।८।३२।२२	५।१६।१५।४९	९।२९।४३।२६	२।२१।४२।४९	५।२५।५४।१२
	१३	श	३।३।४।५६	६।१६।४६।३४	३।२९।२६।५	०।२३।३४।२५	३।९।४६।१२	५।१६।१९।२४	९।२९।४०।१५	२।२१।४६।२२	५।२५।५४।४९
	१४	र	३।४।२।१४	६।१७।१०।५४	४।०।९।४७	०।२३।४३।१५	३।११।०।३	५।१६।२३।४	९।२९।३७।४	२।२१।४९।५५	५।२५।५५।२८
	३०	चं	३।४।५९।३२	६।१७।३५।३६	४।०।४९।४८	०।२३।५१।५७	३।१२।१३।५३	५।१६।२६।४९	९।२९।३३।५३	२।२१।५३।२७	५।२५।५६।८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६३१८ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावणशुक्लपक्षः ।	१	मं	३। ५।५६।५१	६।१८। ०।४१	४। १।२६।१०	०।२४। ०।११	३।१३।२७।४८	५।१६।३०।३९	९।२९।३०।४२	२।२१।५६।५९	५।२५।५६।५०
	१	बु	३। ६।५४।१०	६।१८।२६। ८	४। १।५८।५२	०।२४। ८।५७	३।१४।४१।३५	५।१६।३४।३४	९।२९।२७।३१	२।२२। ०।३०	५।२५।५७।३४
	२	गु	३। ७।५१।३०	६।१८।५१।५८	४। २।२७।५४	०।२४।१७।१३	३।१५।५५।२६	५।१६।३८।३५	९।२९।२४।२०	२।२२। ४। १	५।२५।५८।१९
	३	शु	३। ८।४८।५०	६।१९।१८।१०	४। २।५२।४६	०।२४।२५।२१	३।१७। ९।१८	५।१६।४२।४१	९।२९।२१।१०	२।२२। ७।३१	५।२५।५९। ६
	४	श	३। ९।४६।११	६।१९।४४।४५	४। ३।१३। ०	०।२४।३३।२२	३।१८।२३। ९	५।१६।४६।५१	९।२९।१७।५९	२।२२।११। १	५।२५।५९।५४
	५	र	३।१०।४३।३१	६।२०।११।४२	४। ३।२७।३६	०।२४।४१।१४	३।१९।३७। ०	५।१६।५१। ६	९।२९।१४।४८	२।२२।१४।३१	५।२६। ०।४१
	६	चं	३।११।४०।५२	६।२०।३९। २	४। ३।३९।३६	०।२४।४८।५९	३।२०।५०।५१	५।१६।५५।२६	९।२९।११।३७	२।२२।१८। ०	५।२६। १।३४
	७	मं	३।१२।३८।१३	६।२१। ६।४४	४। ३।४५।५८	०।२४।५६।३५	३।२२। ४।४४	५।१६।५९।५१	९।२९। ८।२६	२।२२।२१।२९	५।२६। २।२६
	८	बु	३।१३।३५।३५	६।२१।३४।४९	४। ३।४७।४४	०।२५। ४। २	३।२३।१८।३८	५।१७। ४।२१	९।२९। ५।१५	२।२२।२४।५७	५।२६। ३।२०
	९	गु	३।१४।३३।५७	६।२२। ३।१६	४। ३।४४।५२	०।२५।११।२१	३।२४।३२।३५	५।१७। ८।५६	९।२९। २। ५	२।२२।२८।२५	५।२६। ४।१६
	१०	शु	३।१५।३०।१९	६।२२।३२। ६	४। ३।३७।२३	०।२५।१८।३२	३।२५।४६।१७	५।१७।१३।३७	९।२८।५८।५४	२।२२।३१।५२	५।२६। ५।१३
	११	श	३।१६।२७।४५	६।२३। १। ५	४। ३।२३।३६	०।२५।२५।३९	३।२७। ०।३४	५।१७।१८।२१	९।२८।५५।४३	२।२२।३५।१८	५।२६। ६।१३
	१२	र	३।१७।२५।१४	६।२३।३०।२३	४। ३। ५।२४	०।२५।३२।३५	३।२८।१४।३१	५।१७।२३। ८	९।२८।५२।३२	२।२२।३८।४२	५।२६। ७।१६
	१३	चं	३।१८।२२।४३	६।२३।५९।५९	४। २।४२।४८	०।२५।३९।२१	३।२९।२८।२७	५।१७।२७।५९	९।२८।४९।२१	२।२२।४२। ४	५।२६। ८।२०
	१५	मं	३।१९।२०।१३	६।२४।२९।५३	४। २।१५।४७	०।२५।४५।५८	४। ०।४२।२१	५।१७।३२।५३	९।२८।४६।१०	२।२२।४५।२४	५:२६। ९।२६
भाद्रपदकृष्णपक्षः ।	१	बु	३।२०।१७।४३	६।२५। ०। ६	४। १।४४।२१	०।२५।५२।२६	४। १।५६।१९	५।१७।३७।५२	९।२८।४२।५९	२।२२।४८।४३	५।२६।१०।३३
	२	गु	३।२१।१५।१४	६।२५।३०।३७	४। १। ८।३०	०।२५।५८।४३	४। ३।१०।१५	५।१७।४२।५४	९।२८।३९।४८	२।२२।५२। ०	५।२६।११।४२
	३	शु	३।२२।१२।४६	६।२६। १।२६	४। ०।२८।१५	०।२६। ४।५०	४। ४।२४।११	५।१७।४८। ०	९।२८।३६।३७	२।२२।५५।१६	५।२६।१२।५३
	४	श	३।२३।१०।१८	६।२६।३२।३५	३।२९।४३।३४	०।२६।१०।४८	४। ५।३८। ६	५।१७।५३।१०	९।२८।३३।२६	२।२२।५८।३०	५।२६।१४। ६
	५	र	३।२४। ७।५२	६।२७। ४। २	३।२८।५४। ३	०।२६।१६।३७	४। ६।५२। २	५।१७।५८।२४	९।२८।३०।१६	२।२३। १।४३	५।२६।१५।२०
	६	चं	३।२५। ५।२७	६।२७।३५।४७	३।२८। ५।३०	०।२६।२२।१६	४। ८। ५।५८	५।१८। ३।४२	९।२८।२७। ५	२।२३। ४।५५	५।२६।१६।३६
	७	मं	३।२६। ३। १	६।२८। ७।५०	३।२७।१७।५५	०।२६।२७।४५	४। ९।१९।५४	५।१८। ९। ४	९।२८।२३।५४	२।२३। ८। ५	५।२६।१७।५४
	८	बु	३।२७। ०।४०	६।२८।४०।११	३।२६।३१।१६	०।२६।३३। ४	४।१०।३३।४९	५।१८।१४।२९	९।२८।२०।४३	२।२३।११।१२	५।२६।१९।१३
	९	गु	३।२७।५८।१८	६।२९।१२।५१	३।२५।४५।३५	०।२६।३८।१३	४।११।४७।४५	५।१८।१९।५८	९।२८।१७।३२	२।२३।१४।१८	५।२६।२०।३४
	१०	शु	३।२८।५५।५७	६।२९।४५।४९	३।२५। ०।५२	०।२६।४३।१४	४।१३। १।४०	५।१८।२५।३२	९।२८।१४।२१	२।२३।१७।२३	५।२६।२१।५६
	११	श	३।२९।५३।३७	७। ०।१९। ५	३।२४।१७। ७	०।२६।४८। ४	४।१४।१५।३६	५।१८।३१। ९	९।२८।११।१०	२।२३।२०।२६	५।२६।२३।२०
	१२	र	४। ०।५१।१९	७। ०।५२।४१	३।२३।३४।१९	०।२६।५२।४४	४।१५।२९।३१	५।१८।३६।५०	९।२८। ७।५९	२।२३।२३।२८	५।२६।२४।४७
	१३	चं	४। १।४९। ४	७। १।२६।१८	३।२२।५८।५९	०।२६।५७।१२	४।१६।४३।३०	५।१८।४२।३६	९।२८। ४।४८	२।२३।२६।३०	५।२६।२६।१४
	१४	मं	४। २।४६।५०	७। २। ०। ८	३।२२।१०।४७	०।२७। १।२९	४।१७।५७।३०	५।१८।४८।२६	९।२८। १।३८	२।२३।२९।३२	५।२६।२७।४२
	३०	बु	४। ३।४४।२८	७। २।३४।१२	३।२२। ९।४५	०।२७। ५।३५	४।१९।११।२८	५।१८।५४।१८	९।२७।५८।२७	२।२३।३२।३१	५।२६।२९।११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६३४८ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
भाद्रपदशुक्लपक्षः ।	१	गु	४। ४४२।२६	७। ३। ८।३१	३।२११५५।५२	०।२७। ९।२९	४।२०।२५।२६	५।१९। ०।१३	९।२७।५५।१६	२।२३।३५।२८	५।२६।३०।४१
	२	शु	४। ५।४०।१६	७। ३।४३। ३	३।२१।४९। ८	०।२७।१३।१२	४।२१।१९।२३	५।१९। ६।१०	९।२७।५२। ५	२।२३।३८।२३	५।२६।३२।१३
	३	श	४। ६।३८। ८	७। ४।१७।४८	३।२१।४९।२३	०।२७।१६।४३	४।२२।५३।१८	५।१९।११।१०	९।२७।४८।५४	२।२३।४१।१६	५।२६।३३।४७
	४	र	४। ७।३६। १	७। ४।५२।४७	३।२१।५७। ६	०।२७।२०। ३	४।२४। ७।१२	५।१९।१८।१३	९।२७।४५।४१	२।२३।४४। ७	५।२६।३५।२३
	५	चं	४। ८।३३।५४	७। ५।२८। १	३।२२।११।४९	०।२७।२३।१३	४।२५।२१। ७	५।१९।२४।१८	९।२७।४२।३३	२।२३।४६।५५	५।२६।३७। १
	६	मं	४। ९।३१।४९	७। ६। ३।२८	३।२२।३५।३१	०।२७।२६।११	४।२६।३५। ०	५।१९।३०।२६	९।२७।३९।२२	२।२३।४९।४१	५।२६।३८।४०
	७	बु	४।१०।२९।४६	७। ६।३९।०८	३।२३। ५।४८	०।२७।२८।५७	४।२७।४८।५३	५।१९।३६।३६	९।२७।३६।११	२।२३।५२।२६	५।२६।४०।२१
	८	गु	४।११।२७।४४	७। ७।१५। २	३।२३।४२।३९	०।२७।३१।३२	४।२९। २।४५	५।१९।४२।४९	९।२७।३३। ०	२।२३।५५। ८	५।२६।४२। ४
	९	शु	४।१२।२५।४३	७। ७।५१।११	३।२४।२६। ६	०।२७।३३।५६	५। ०।१६।३६	५।१९।४९। ५	९।२७।२९।४९	२।२३।५७।४८	५।२६।४३।४९
	१०	श	४।१३।२३।४४	७। ८।२७।३३	३।२५।१६। ७	०।२७।३६।०८	५। १।३०।२६	५।१९।५५।२३	९।२७।२६।३९	२।२४। ०।२६	५।२६।४५।३५
	११	र	४।१४।२१।४६	७। ९। ४।०८	३।२६।१२।४४	०।२७।३८। ९	५। २।४४।१६	५।२०। १।४४	९।२७।२३।२८	२।२४। ३। २	५।२६।४७।२३
	१२	चं	४।१५।१९।४९	७। ९।४०।५७	३।२७।१५।५५	०।२७।३९।५९	५। ३।५८। ५	५।२०। ८। ८	९।२७।२०।१७	२।२४। ५।३६	५।२६।४९।१३
	१३	मं	४।१६।१७।५३	७।१०।१८। ०	३।२८।२५।४१	०।२७।४१।२८	५। ५।११।५३	५।२०।१४।३५	९।२७।१७। ६	२।२४। ८। ८	५।२६।५१। ३
	१४	बु	४।१७।१६। १	७।१०।५४।४८	३।२९।४७।३३	०।२७।४३। ९	५। ६।२५।५०	५।२०।२१। ८	९।२७।१३।५५	२।२४।१०।४२	५।२६।५२।५२
	१५	गु	४।१८।१४।१२	७।११।३१।४७	४। १।१३।१६	०।२७।४४।२७	५। ७।३९।४७	५।२०।२७।४३	९।२७।१०।४४	२।२४।१३।१५	५।२६।५४।४२
आश्विनकृष्णपक्षः ।	१	शु	४।१९।१२।२४	७।१२। ८।५८	४। २।४२।४९	०।२७।४५।३३	५। ८।५३।४३	५।२०।३४।२०	९।२७। ७।३३	२।२४।१५।४४	५।२६।५६।३३
	१	श	४।२०।१०।३८	७।१२।४६।२१	४। ४।१६।१२	०।२७।४६।२६	५।१०। ७।३८	५।२०।४०।५८	९।२७। ४।२२	२।२४।१८। ९	५।२६।५८।२४
	४	र	४।२१। ८।५३	७।१३।२३।५६	४। ५।५३।२५	०।२७।४७। ७	५।११।२१।३२	५।२०।४७।३८	९।२७। १।११	२।२४।२०।३१	५।२७। ०।१६
	५	चं	४।२२। ७।१०	७।१४। १।४३	४। ७।३४।२८	०।२७।४७।३५	५।१२।३५।२७	५।२०।५४।२१	९।२६।५८। ०	२।२४।२२।५१	५।२७। २।१०
	६	मं	४।२३। ५।२९	७।१४।३९।४२	४। ९।१९।२१	०।२७।४७।५१	५।१३।४९।२१	५।२१। १। ६	९।२६।५४।५०	२।२४।२५। ८	५।२७। ४। ५
	७	बु	४।२४। ३।५०	७।१५।१७।५३	४।११। ८। ६	०।२७।४७।५६	५।१५। ३।१४	५।२१। ७।५२	९।२६।५१।३९	२।२४।२७।२२	५।२७। ६। ०
	८	गु	४।२५। २।१२	७।१५।५६।१६	४।१३।५९।१८	०।२७।४७।४७	५।१६।१७। ७	५।२१।१४।४१	९।२६।४८।२८	२।२४।२९।३३	५।२७। ७।५६
	९	शु	४।२६। ०।३५	७।१६।३४।५०	४।१४।४९।३७	०।२७।४७।२७	५।१७।३०।५९	५।२१।२१।३२	९।२६।४५।१७	२।२४।३१।४२	५।२७। ९।५४
	१०	श	४।२६।५९। ०	७।१७।१३।३६	४।१६।४१। ४	०।२७।४६।५५	५।१८।४४।५०	५।२१।२८।२४	९।२६।४२। ६	२।२४।३३।४८	५।२७।११।५१
	११	र	४।२७।५७।२८	७।१७।५२।३५	४।१८।३३।४०	०।२७।४६।१०	५।१९।५८।४०	५।२१।३५।१८	९।२६।३८।५५	२।२४।३५।५०	५।२७।१३।५२
	१२	चं	४।२८।५५।५७	७।१८।३१।४०	४।२०।२६।१३	०।२७।४५।१२	५।२१।१२।३०	५।२१।४२।१४	९।२६।३५।४५	२।२४।३७।४९	५।२७।१५।५३
	१३	मं	४।२९।५४।२७	७।१९।११। ८	४।२२।१९।१५	०।२७।४४। ३	५।२२।२६।१९	५।२१।४९।१२	९।२६।३२।३४	२।२४।३९।४६	५।२७।१७।५४
	१३	बु	५। ०।५२।५९	७।१९।५०।३६	४।२४।१२।४५	०।२७।४२।४१	५।२३।४०। ८	५।२१।५६।१२	९।२६।२९।२३	२।२४।४१।४०	५।२७।१९।५७
	१४	गु	५। १।५१।२४	७।२०।३०।२९	४।२६। ६।४३	०।२७।४१। ६	५।२४।५३।५६	५।२२। ३।१४	९।२६।२६।१२	२।२४।४३।३०	५।२७।२२। १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६३७८ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
आश्विनशुक्लपक्षः ।	१	श	५। ३।४८।५२	७।२१।४९।४६	४।२९।५१।३५	०।२७।३७।१७	५।२७।२१।३९	५।२२।१७।२५	९।२६।११।५१	२।२४।४७। ७	५।२७।२६।१३
	२	र	५। ४।४७।३४	७।२२।२९।३७	५। १।४३।०६	०।२७।३५। ५	५।२८।३५।२९	५।२२।२४।३२	९।२६।१६।४०	२।२४।४९। ५	५।२७।२८।२०
	३	चं	५। ५।४६।१८	७।२३। ९।३८	५। ३।३४। १	०।२७।३२।४४	५।२९।४९।१९	५।२२।३१।४०	९।२६।१३।२९	२।२४।५०।४९	५।२७।३०।२७
	४	मं	५। ६।४५। ४	७।२३।४९।४८	५। ५।२४।२०	०।२७।३०।११	६। १। ३। ८	५।२२।३८।४९	९।२६।१०।१८	२।२४।५२।३०	५।२७।३२।३५
	५	बु	५। ७।४३।५१	७।२४।३०। ६	५। ७।१४।०३	०।२७।२७।२७	६। २।१६।५७	५।२२।४५।५९	९।२६। ७। ७	२।२४।५४। ७	५।२७।३४।४३
	६	गु	५। ८।४२।४०	७।२५।१०।३४	५। ९। ३।१०	०।२७।२४।३२	६। ३।३०।४४	५।२२।५३।१०	९।२६। ३।५६	२।२४।५५।४१	५।२७।३६।५१
	७	शु	५। ९।४१।३२	७।२५।५१।११	५।१०।५१।४०	०।२७।२१।२५	६। ४।४४।३१	५।२३। ०।२२	९।२६। ०।४५	२।२४।५७।११	५।२७।३९। ०
	८	श	५।१०।४०।२६	७।२६।३२।५६	५।१२।३७।४७	०।२७।१८। ९	६। ५।५८।१८	५।२३। ७।३५	९।२५।५७।३४	२।२४।५८।३८	५।२७।४१।१०
	९	र	५।११।३९।२१	७।२७।१२।५१	५।१४।२३।११	०।२७।१४।३९	६। ७।१२। ४	५।२३।१४।४९	९।२५।५४।२४	२।२५। ०। १	५।२७।४३।२०
	११	चं	५।१२।३८।१८	७।२७।५३।५४	५।१६। ७।५५	०।२७।१०।५९	६। ८।२५।४९	५।२३।२२। ४	९।२५।५१।१३	२।२५। १।२०	५।२७।४५।३०
	१२	मं	५।१३।३७।१८	७।२८।३५। ६	५।१७।५१।५८	०।२७। ७।१०	६। ९।३९।३३	५।२३।२९।२०	९।२५।४८। २	२।२५। २।३७	५।२७।४७।४१
	१३	बु	५।१४।३६।२०	७।२९।१६।२७	५।१९।३५। ६	०।२ । १।३। ९	६।१०।५३।१७	५।२३।३६।३७	९।२५।४४।५१	२।२५। ३।५०	५।२७।४९।५२
	१४	गु	५।१५।३५।२२	७।२९।५७।५७	५।२१।१७।३३	०।२६।५८।५७	६।१२। ७। ०	५।२३।४३।५५	९।२५।४१।४०	२।२५। ४।५९	५।२७।५२। ४
	१५	शु	५।१६।३४।२७	८। ०।३९।३७	५।२२।५९।२०	०।२६।५४।३३	६।१३।२०।४२	५।२३।५१।१४	९।२५।३८।२९	२।२५। ६। ५	५।२७।५४।१६
कार्तिककृष्णपक्षः ।	१	श	५।१७।३३।३४	८। १।२१।२५	५।२४।४०।२६	०।२६।४९।५९	६।१४।३४।२३	५।२३।५८।३४	९।२५।३५।१८	२।२५। ७। ८	५।२७।५६।२८
	२	र	५।१८।३२।४५	८। २। ३।१५	५।२६।२०।४४	०।२६।४५। ८	६।१५।४८। ९	५।२४। ५।५६	९।२५।३२। ८	२।२५। ८।११	५।२७।५८।४१
	३	चं	५।१९।३१।५७	८। २।४५।१०	५।२८। ०।१७	०।२६।४०। ८	६।१७। १।५४	५।२४।१३।१८	९।२५।२८।५७	२।२५। ९।११	५।२८। ०।५५
	४	मं	५।२०।३१।११	८। ३।२७।११	५।२९।३९। ६	०।२६।३५। ०	६।१८।१५।३९	५।२४।२०।४०	९।२५।२५।४६	२।२५।१०। ७	५।२८। ३। ८
	५	बु	५।२१।३०।२७	८। ४। ९।१९	६। १।१७।१०	०।२६।२९।४२	६।१९।२९।२३	५।२४।२८। १	९।२५।२२।३५	२।२५।११। ०	५।२८। ५।२२
	६	गु	५।२२।२९।४५	८। ४।५१।३३	६। २।५४।३१	०।२६।२४।१६	६।२०।४३। ७	५।२४।३५।२३	९।२५।१९।२५	२।२५।११।५०	५।२८। ७।३५
	७	शु	५।२३।२९। ५	८। ५।३३।५४	६। ४।३१। ७	०।२६।१८।४१	६।२१।५६।५०	५।२४।४२।४४	९।२५।१६।१४	२।२५।१२।३७	५।२८। ९।४९
	८	श	५।२४।२८।२७	८। ६।१६।२१	६। ६। ६।५९	०।२६।१२।५८	६।२३।१०।३२	५।२४।५०। ५	९।२५।१३। ३	२।२५।१३।२१	५।२८।१२। ३
	९	र	५।२५।२७।५०	८। ६।५८।५५	६। ७।४२। ७	०।२६। ७। ५	६।२४।२४।१४	५।२४।५७।२५	९।२५। ९।५२	२।२५।१४। २	५।२८।१४।१७
	१०	चं	५।२६।२७।१५	८। ७।४१।३५	६। ९।१६।२८	०।२६। १। ५	६।२५।३७।५५	५।२५। ४।४६	९।२५। ६।४१	२।२५।१४।४०	५।२८।१६।३१
	११	मं	५।२७।२६।४३	८: ८।२४।२१	६।१०।५०। ६	०।२५।५४।५५	६।२६।५१।३६	५।२५।१२। ६	९।२५। ३।३०	२।२५।१५।१५	५।२८।१८।४५
	१२	बु	५।२८।२६।१२	८। ९। ७।१३	६।१२।२३। २	०।२५।४८।३७	६।२८। ५।१६	५।२५।१९।२६	९।२५। ०।१९	२।२५।१५।४७	५।२८।२०।५९
	१३	गु	५।२९।२५।४३	८। ९।५०।११	६।१३।५५।१६	०।२५।४२।१०	६।२९।१८।५५	५।२५।२६।४५	९।२४।५७। ८	२।२५।१६।१६	५।२८।२३।१४
	१४	शु	६। ०।२५।१६	८।१०।३३।१६	६।१५।२६।४९	०।२५।३५।३५	७। ०।३२।३४	५।२५।३४। ५	९।२४।५३।५७	२।२५।१६।४२	५।२८।२५।२८
	३०	श	६। १।२४।५१	८।११।१६।२७	६।१६।५७।३८	०।२५।२८।५१	७। १।४६।१२	५।२५।४१।२४	९।२४।५०।४७	२।२५।१७। ५	५।२८।२७।४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्ट सूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

चैत्रकी अहर्गणः ६४०७ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
कार्तिककृष्णपक्षः ।	१	र	६। २।२४।२८	८।११।५९।४४	६।१८।२७।४५	०।२५।२१।५९	७। २।५९।४९	५।२५।४८।४३	९।२४।४७।३६	२।२५।१७।२५	५।२८।२९।५८
	२	चं	६। ३।२४। ६	८।१२।४३। ८	६।१९।५७।११	०।२५।१४।५६	७। ४।१३।२६	५।२५।५६। २	९।२४।४४।२५	२।२५।१७।४२	५।२८।३२।१३
	३	मं	६। ४।२३।५०	८।१३।२६।३४	६।२१।२६।२९	०।२५। ७।४८	७। ५।२६।४८	५।२६। ३।२१	९।२४।४१।१४	२।२५।१८। ०	५।२८।३४।३०
	४	बु	६। ५।२३।३६	८।१४।१०। ३	६।२२।५४।३८	०।२५। ०।३६	७। ६।४०। ९	५।२६।१०।३९	९।२४।३८। ३	२।२५।१८।१४	५।२८।३६।४७
	५	गु	६। ६।२३।२३	८।१४।५३।३६	६।२४।२१।३७	०।२४।५३।२०	७। ७।५३।३०	५।२६।१७।५६	९।२४।३४।५२	२।२५।१८।२४	५।२८।३९।०२
	६	शु	६। ७।२३।१२	८।१५।३७।१२	६।२५।४७।२८	०।२४।४५।५९	७। ९। ६।५०	५।२६।२५।११	९।२४।३१।४१	२।२५।१८।३१	५।२८।४१।१७
	७	श	६। ८।२३। ३	८।१६।२०।५३	६।२७।१२। ९	०।२४।३८।३४	७।१०।२०।१०	५।२६।३२।२५	९।२४।२८।३०	२।२५।१८।३४	५।२८।४३।३१
	८	र	६। ९।२२।५६	८।१७। ४।३७	६।२८।३५।४२	०।२४।३१। ४	७।११।३३।२९	५।२६।३९।३८	९।२४।२५।१९	२।२५।१८।३४	५।२८।४५।४५
	९	चं	६।१०।२२।५०	८।१७।४८।२५	६।२९।५८। ५	०।२४।२३।२९	७।१२।४६।४८	५।२६।४६।५०	९।२४।२२। ९	२।२५।१८।३०	५।२८।४७।५८
	१०	मं	६।११।२२।४७	८।१८।३२।१७	७। १।१९।१९	०।२४।१५।५०	७।१४। ०। ७	५।२६।५४। ०	९।२४।१८।५८	२।२५।१८।२२	५।२८।५०।१०
	११	बु	६।१२।२२।४६	८।१९।१६।१३	७। २।४३।४१	०।२४। ८। ७	७।१५।१३।२५	५।२७। १। ९	९।२४।१५।४७	२।२५।१८।११	५।२८।५२।२२
	१२	गु	६।१३।२२।४६	८।२०। ०।१३	७। ४। ६।२६	०।२४। ०।१९	७।१६।२६।४२	५।२७। ८।१८	९।२४।१२।३६	२।२५।१७।५६	५।२८।५४।३३
	१३	शु	६।१४।२२।४८	८।२०।४४।१६	७। ५।२७।३३	०।२३।५२।२७	७।१७।३९।५९	५।२७।१५।२६	९।२४। ९।२५	२।२५।१७।३७	५।२८।५६।४३
	१५	श	६।१५।२२।५१	८।२१।२८।२३	७। ६।४७। २	०।२३।४४।३१	७।१८।५३।१६	५।२७।२२।३१	९।२४। ६।१४	२।२५।१७।१५	५।२८।५८।५३
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः ।	१	र	६।१६।२२।५६	८।२२।१२।३४	७। ८। ४।५३	०।२३।३६।३०	७।२०। ६।३२	५।२७।२९।३५	९।२४। ३। ३	२।२५।१६।४९	५।२९। १। २
	२	चं	६।१७।२३। ३	८।२२।५६।४९	७। ९।२१। ६	०।२३।२८।२५	७।२१।१९।४८	५।२७।३६।३९	९।२३।५९।५२	२।२५।१६।२०	५।२९। ३।११
	३	मं	६।१८।२३।१२	८।२३।४१। ८	७।१०।३५।४१	०।२३।२०।१५	७।२२।३३।०४	५।२७।४३।४१	९।२३।५६।४१	२।२५।१५।४७	५।२९। ५।१९
	४	बु	६।१९।२३।२३	८।२४।२५।३०	७।११।४८।४०	०।२३।१२। ०	७।२३।४६।१९	५।२७।५०।४३	९।२३।५३।३०	२।२५।१५।११	५।२९। ७।२६
	५	गु	६।२०।२३।३७	८।२५।१०। ०	७।१३। १। ०	०।२३। ३।४०	७।२४।५९।३३	५।२७।५७।४४	९।२३।५०।१९	२।२५।१४।२८	५।२९। ९।३४
	६	शु	६।२१।२३।५४	८।२५।५४।४०	७।१४।१०।३२	०।२२।५५।२२	७।२६।१२।४३	५।२८। ४।४४	९।२३।४७। ८	२।२५।१३।४२	५।२९।११।४२
	७	श	६।२२।२४।११	८।२६।३९।२२	७।१५।१७।१६	०।२२।४७। ६	७।२७।२५।५१	५।२८।११।४१	९।२३।४३।५८	२।२५।१२।५४	५।२९।१३।४९
	७	र	६।२३।२४।२९	८।२७।२४। ५	७।१६।२१।११	०।२२।३८।५३	७।२८।३८।५७	५।२८।१८।३५	९।२३।४०।४७	२।२५।१२। २	५।२९।१५।५५
	८	चं	६।२४।२४।४९	८।२८। ८।५२	७।१७।२२।१९	०।२२।३०।४२	७।२९।५२। ०	५।२८।२५।२७	९।२३।३७।३६	२।२५।११। ८	५।२९।१७।५९
	९	मं	६।२५।२५।१०	८।२८।५३।४४	७।१८।२०।३८	०।२२।२२।३४	८। १। ५। १	५।२८।३२।१६	९।२३।३४।२५	२।२५।१०।१२	५।२९।२०। ३
	१०	बु	६।२६।२५।३४	८।२९।३८।४०	७।१९।१६। ९	०।२२।१४।२८	८। २।१७।५९	५।२८।३९। ३	९।२३।३१।१४	२।२५। ९।१०	५।२९।२२। ५
	११	गु	६।२७।२६। ०	९। ०।२३।३८	७।२०। ८।५३	०।२२। ६।२५	८। ३।३०।५४	५।२८।४५।४७	९।२३।२८।०३	२।२५। ८।१०	५।२९।२४। ७
	१२	शु	६।२८।२६।२७	९। १। ८।४०	७।२०।५८।३८	०।२१।५८।२४	८। ४।४३।४७	५।२८।५२।२९	९।२३।२४।५२	२।२५। ७। ६	५।२९।२६। ८
	१३	श	६।२९।२६।५६	९। १।५३।४७	७।२१।४०।५९	०।२१।५०।२५	८। ५।५६।३७	५।२८।५९। ८	९।२३।२१।४१	२।२५। ५।५९	५।२९।२८। ७
	१४	र	७। ०।२७।२६	९। २।३८।५७	७।२२।१५।५६	०।२१।४२।२९	८। ७। ९।२५	५।२९। ५।४५	९।२३।१८।३०	२।२५। ४।४९	५।२९।३०। ५
	१५	श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८। ८।२२। ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।२९।३२।०३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६४३७ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः ।	१	मं	७। २।२८।३०	९। ४। ९।२८	७।२३। ३।४०	०।२१।२६।४४	८। ९।३४।५१	५।२९।१८।५१	९।२३।१२। ९	२।२५। २।२१	५।२९।३४। ०
	२	बु	७। ३।२९। ४	९। ४।५४।४९	७।२३।१६।२५	०।२१।१८।५५	८।१०।४७।३१	५।२९।२५।२०	९।२३। ८।५८	२।२५। १। ४	५।२९।३५।५५
	३	गु	७। ४।२९।४०	९। ५।४०।१५	७।२३।२१।४६	०।२१।११। ९	८।११। ०। ८	५।२९।३१।४६	९।२३। ५।४७	२।२४।५९।४३	५।२९।३७।४९
	४	शु	७। ५।३०।१८	९। ६।२५।४४	७।२३।१९।४४	०।२१। ३।२५	८।१३।१२। ३	५।२९।३८।१०	९।२३। २।३६	२।२४।५८।१९	५।२९।३९।४३
	५	श	७। ६।३०।५९	९। ७।११।१५	७।२३। १।५२	०।२०।५५।४५	८।१४।२५।२०	५।२९।४४।३२	९।२२।५९।२५	२।२४।५६।५३	५।२९।४१।३६
	६	र	७। ७।३१।४२	९। ७।५६।४३	७।२२।३४।५६	०।२ ।४८।१३	८।१५।३७।५४	५।२९।५०।५२	९।२२।५६।१४	२।२४।५५।२४	५।२९।४३।२८
	७	चं	७। ८।३२।२६	९। ८।४२।१५	७।२१।५८।५६	०।२०।४०।४९	८।१६।५०।२४	५।२९।५७। ८	९।२२।५३।०४	२।२४।५३।५२	५।२९।४५।१९
	९	मं	७। ९।३३।१०	९। ९।२७।४८	७।२१।१३।५२	०।२०।३३।३२	८।१८। २।५०	६। ०। ३।२१	९।२२।४९।५३	२।२४।५२।१७	५।२९।४७। ८
	१०	बु	७।१०।३३।५५	९।१०।१३।२२	७।२०।१९।४५	०।२०।२६।२२	८।१९।१५।१३	६। ०। ९।३१	९।२२।४६।४२	२।२४।५०।४०	५।२९।४८।५६
	११	गु	७।११।३४।४२	९।१०।५८।५७	७।१९।१६।३४	०।२०।१९।१९	८।२०।२७।३२	६। ०।१५।३७	९।२२।४३।३१	२।२४।४९। ०	५।२९।५०।४४
	१२	शु	७।१२।३५।२९	९।११।४४।३३	७।१८। ४।१९	०।२०।१२।२८	८।२१।३९।४७	६। ०।२१।४०	९।२२।४०।२०	२।२४।४७।१७	५।२९।५२।३०
	१३	श	७।१३।३६।१८	९।१२।३०।११	७।१६।४३। १	०।२०। ५।३५	८।२२।५१।५८	६। ०।२७।४०	९।२२।३७।१०	२।२४।४५।३२	५।२९।५४।१४
	१४	र	७।१४।३७। ८	९।१३।१५।५०	७।१५।१९। ०	०।१९।५८।५३	८।२४। ४। ६	६। ०।३३।३७	९।२२।३३।५९	२।२४।४३।४४	५।२९।५५।५८
	१५	चं	७।१५।३७।५८	९।१४। १।३०	७।१३।५९।५९	०।१९।५२।१८	८।२५।१६।१०	६। ०।३९।३१	९।२२।३०।४८	२।२४।४१।५२	५।२९।५७।४१
पौषकृष्णपक्षः ।	१	मं	७।१६।३८।५०	९।१४।४७।११	७।१२।४५।५८	०।१९।४५।५१	८।२६।२८।१०	६। ०।४५।२२	९।२२।२७।३७	२।२४।३९।५८	५।२९।५९।२२
	२	बु	७।१७।३९।४३	९।१५।३२।५४	७।११।३६।५८	०।१९।३९।३२	८।२७।४०। ६	६। ०।५१। ९	९।२२।२४।२६	२।२४।३८। ३	६। ०। १। २
	३	गु	७।१८।४०।३७	९।१६।१८।३८	७।१०।३२।५७	०।१९।३३।२०	८।२८।५१।५९	६। ०।५६।५३	९।२२।२१।१५	२।२४।३६। ५	६। ०। २।४१
	४	शु	७।१९।४१।३२	९।१७। ४।२२	७। ९।३३।५७	०।१९।२७।१४	९। ०। ३।४८	६। १। २।३५	९।२२।१८। ४	२।२४।३४। ४	६। ०। ४।१९
	५	श	७।२०।४२।२८	९।१७।५०। ८	७। ८।३९।५७	०।१९।२१।१६	९। १।१५।३३	६। १। ८।१३	९।२२।१४।५३	२।२४।३२। १	६। ०। ५।५५
	६	र	७।२१।४३।२५	९।१८।३५।५६	७। ७।५०।५६	०।१९।१५।२५	९। २।२७।१४	६। १।१३।४८	९।२२।११।४३	२।२४।२९।५६	६। ०। ७।३०
	७	चं	७।२२।४४।२४	९।१९।२१।५८	७। ७।२३।३७	०।१९। ९।४७	९। ३।३९। [illegible]	६। १।१९।२०	९।२२। ८।३२	२।२४।२७।५५	६। ०। ९। ३
	८	मं	७।२३।४५।२५	९।२०। ८। ३	७। ७। ६। ५	०।१९। ४।२०	९। ४।५०।४२	६। १।२४।४६	९।२२। ५।२१	२।२४।२५।५३	६। ०।१०।३३
	९	बु	७।२४।४६।२६	९।२०।५४। ८	७। ६।५८।१९	०।१८।५९। ४	९। ६। २।१६	६। १।३०। ८	९।२२। २।१०	२।२४।२३।४९	६। ०।१[illegible]। २
	१०	गु	७।२५।४७।२८	९।२१।४०।१४	७' ७। ०।१८	०।१८।५४। ०	९। ७।१३।४२	६। १।३५।२५	९।२१।५८।५९	२।२४।२[illegible]।४२	६। ०।१३।२९
	१०	शु	७।२६।४८।३०	९।२२।२६।२१	७। ७।१२। ४	०।१८।४९। ७	९। ८।२५। २	६। १।४०।३८	९।२१।५५।४८	२।२४।१९।३३	६। ०।१४।५५
	११	श	७।२७।४९।३३	९।२३।१२।२९	७। ७।३३।३७	०।१८।४४।२४	९। ९।३६।१६	६। १।४५।४६	९।२१।५२।३७	२।२४।१७।२३	६। ०।१६।१९
	१२	र	७।२८।५०।३७	९।२३।५८।३८	७। ८। ४।५६	०।१८।३९।५२	९।१०।४७।२३	६। १।५०।४९	९।२१।४९।२६	२।२४।१५।१०	६। ०।१७।४१
	१३	चं	७।२९।५१।४१	९।२४।४४।४९	७। ८।४६। १	०।१८।३५।३१	९।११।५८।२३	६। १।५५।४८	९।२१।४६।१५	२।२४।१२।५४	६। ०।१९। १
	१४	मं	८। ०।५२।४६	९।२५।३१। ०	७। ९।३३। ७	०।१८।३१।२२	९।१३। ९।१७	६। २। ०।४४	९।२१।४३। ४	२।२४।१०।३७	६। ०।२०।२०
	३०	बु	८। १।५३।५२	९।२६।१७।१२	७।१०।२४। २	०।१८।२७।२३	९।१४।२०। ४	६। २। ५।३५	९।२१।३९।५४	२।२४। ८।१८	६। ०।२१।३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमय दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६४६७ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
पौषशुक्लपक्षः ।	२	गु	८। २।५४।५८	९।२७। ३।२५	७।११।१८।४५	०।१८।२३।३५	९।१५।३०।४४	६। २।१०।१९	९।२१।३६।४३	२।२४। ५।५६	६। ०।२२।५३
	३	शु	८। ३।५६। ५	९।२७।४९।४०	७।१२।१७।१७	०।१८।१९।५८	९।१६।४१।१८	६। २।१४।५९	९।२१।३३।३२	२।२४। ३।३२	६। ०।२४। ७
	४	श	८। ४।५७।१२	९।२८।३५।५६	७।१३।१९।३८	०।१८।१६।३३	९।१७।५१।४५	६। २।१९।३५	९।२१।३०।२१	२।२४। १। ६	६। ०।२५।२०
	५	र	८। ५।५८।२०	९।२९।२२।१२	७।१४।२५।४८	०।१८।१३।१७	९।१९। २। ६	६। २।२४। ७	९।२१।२७।१०	२।२३।५८।३८	६। ०।२६।३१
	६	चं	८। ६।५९।२८	१०। ०। ८।३०	७।१५।३५।४६	०।१८।१०।१२	९।२०।११।२०	६। २।२८।३४	९।२१।२३।५९	२।२३।५६। ८	६। ०।२७।४०
	७	मं	८। ८। ०।३७	१०। ०।५४।५०	७।१६।४९।३४	०।१८। ७।१९	९।२१।२२।२६	६। २।३२।५६	९।२१।२०।४८	२।२३।५३।३५	६। ०।२८।४८
	८	बु	८। ९। १।४७	१०। १।४१। ४	७।१८। ४।२९	०।१८। ४।३७	९।२२।३२।४३	६। २।३७।१८	९।२१।१७।३८	२।२३।५१। ३	६। ०।२९।५३
	९	गु	८।१०। २।५७	१०। २।२७।१५	७।१९।२०।४२	०।१८। २। ८	९।२३।४२।५१	६। २।४१।३४	९।२१।१४।२७	२।२३।४८।३१	६। ०।३०।५६
	१०	शु	८।११। ४। ७	१०। ३।१३।२६	७।२०।३८।११	०।१७।५९।५१	९।२४।५२।४९	६। २।४५।४४	९।२१।११।१६	२।२३।४५।५९	६। ०।३१।५७
	११	श	८।१२। ५।१८	१०। ३।५९।३६	७।२१।५७। ७	०।१७।५७।४८	९।२६। २।३९	६। २।४९।४७	९।२१। ८। ५	२।२३।४३।२८	६। ०।३२।५६
	१२	र	८।१३। ६।२८	१०। ४।४५।४५	७।२३।१७।१८	०।१७।५५।५८	९।२७।१२।२५	६। २।५३।४४	९।२१। ४।५४	२।२३।४०।५६	६। ०।३३।५३
	१३	चं	८।१४। ७।३८	१०। ५।३१।५३	७।२४।३८।४८	०।१७।५४।२०	९।२८।२१।४१	६। २।५७।३६	९।२१। १।४४	२।२३।३८।२२	६। ०।३४।४८
	१४	मं	८।१५। ८।४८	१०। ६।१८। १	७।२६। १।३८	०।१७।५२।५५	९।२९।३०।५७	६। ३। १।२१	९।२०।५८।३३	२।२३।३५।४८	६। ०।३५।४१
	१५	बु	८।१६। ९।५८	१०। ७। ४। ८	७।२७।२५।४८	०।१७।५१।४३	१०। ०।४०। ५	६। ३। ५। २	९।२०।५५।२२	२।२३।३३।१४	६। ०।३६।३२
माघकृष्णपक्षः ।	१	गु	८।१७।११। ८	१०। ७।५०।१५	७।२८।५०।३१	०।१७।५०।४३	१०। १।४९। १	६। ३। ८।३९	९।२०।५२।११	२।२३।३०।४०	६। ०।३७।२१
	२	शु	८।१८।१२।१८	१०। ८।३६।२२	८। ०।१५।५४	०।१७।४९।५७	१०। २।५७।४६	६। ३।१२।१०	९।२०।४९। ०	२।२३।२८। ५	६। ०।३८। ९
	३	श	८।१९।१३।२८	१०। ९।२२।२५	८। १।४१।५७	०।१७।४९।२३	१०। ४। ६।२१	६। ३।१५।३५	९।२०।४५।५०	२।२३।२५।३०	६। ०।३८।५५
	४	र	८।२०।१४।३८	१०।१०। ८।२६	८। ३। ८।४२	०।१७।४९। २	१०। ५।१४।४६	६। ३।१८।५३	९।२०।४२।३९	२।२३।२२।५४	६। ०।३९।३८
	५	चं	८।२१।१५।४८	१०।११।५४।३०	८। ४।३६। ७	०।१७।४८।५३	१०। ६।२३। ०	६। ३।२२। ५	९।२०।३९।२८	२।२३।२०।१८	६। ०।४०।१९
	६	मं	८।२२।१६।५८	१०।११।४०।३४	८। ६। ४।१२	०।१७।४८।५७	१०। ७।३१। ४	६। ३।२५।१२	९।२०।३६।१७	२।२३।१७।४१	६। ०।४०।५९
	७	बु	८।२३।१८। ८	१०।१२।२६।३३	८। ७।३२।५७	०।१७।४९।१४	१०। ८।३८।५८	६। ३।२८।१३	९।२०।३३। ७	२।२३।१५। ३	६। ०।४१।३७
	८	गु	८।२४।१९।१८	१०।१३।१२।३२	८। ९। २।२४	०।१७।४९।४४	१०। ९।४६।४१	६। ३।३१। ८	९।२०।२९।५६	२।२३।१२।२५	६। ०।४२।१४
	९	शु	८।२५।२०।२८	१०।१३।५८।३७	८।१०।३२।१४	०।१७।५०।३४	१०।१०।५४।२२	६। ३।३४। ०	९।२०।२६।४५	२।२३। ९।४६	६। ०।४२।४८
	१०	श	८।२६।२१।३७	१०।१४।४४।४२	८।१२। २।३४	०।१७।५१।३४	१०।१२। १।४८	६। ३।३६।४७	९।२०।२३।३४	२।२३। ७। ६	६। ०।४३।१८
	११	र	८।२७।२२।४६	१०।१५।३०।४४	८।१३।३३।२४	०।१७।५२।४४	१०।१३। ९। ०	६। ३।३९।२७	९।२०।२०।२३	२।२३। ४।२८	६। ०।४३।४६
	१२	चं	८।२८।२३।५५	१०।१६।१६।४६	८।१५। ४।४४	०।१७।५४। ३	१०।१४।१५।५६	६। ३।४२। १	९।२०।१७।१२	२।२३। १।५१	६। ०।४४।१४
	१३	मं	८।२९।२५। ३	१०।१७। २।४७	८।१६।३६।३४	०।१७।५५।३३	१०।१५।२२।३७	६। ३।४४।२८	९।२०।१४। २	२।२२।५९।१५	६। ०।४४।३९
	१४	बु	९। ०।२६।१०	१०।१७।४८।४६	८।१८। ८।५४	०।१७।५७।१२	१०।१६।२९। ४	६। ३।४६।५०	९।२०।१०।५१	२।२२।५६।४०	६। ०।४५। २
	३०	शु	९। १।२५।१७	१०।१८।३४।४४	८।१९।४१।४८	०।१७।५९। २	१०।१७।३५।१६	६। ३।४९। ५	९।२०। ७।४०	२।२२।५४। ६	६। ०।४५।२३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

संवत् [illegible] ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६४९६ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इंद्र.
माघशुक्लपक्षः ।	१	शु	९। २।२८।२३	१०।१९।२०।४२	८।२१।१५। ४	०।१८। १। १	१०।१८।४१।१३	६। ३।५१।१४	९।२०। ४।२९	२।२२।५१।३२	६। ०।४५।४३
	२	श	९। ३।२९।२९	१०।२०। ६।३८	८।२२।४९। ९	०।१८। ३।११	१०।१९।४६।५५	६। ३।५३।१७	९।२०। १।१९	२।२२।४९। ०	६। ०।४६। ०
	३	र	९। ४।३०।३४	१०।२०।५२।३३	८।२४।२३।३८	०।१८। ५।३१	१०।२०।५२।२१	६। ३।५५।१४	९।१९।५८। ८	२।२२।४६।२९	६। ०।४६।१५
	४	चं	९। ५।३१।३८	१०।२१।३८।२६	८।२५।५८।३३	०।१८। ८। १	१०।२१।५७।३३	६। ३।५७। ५	९।१९।५४।५७	२।२२।४३।५९	६। ०।४६।२८
	५	मं	९। ६।३२।४२	१०।२२।२४।१८	८।२७।३३।५४	०।१८।१०।४१	१०।२३। २।३०	६। ३।५८।४९	९।१९।५१।४६	२।२२।४१।२९	६। ०।४६।४०
	७	बु	९। ७।३३।४५	१०।२३।१०। ९	८।२९। ९।४१	०।१८।१३।३२	१०।२४। ७।१२	६। ४। ०।२७	९।१९।४८।३५	२।२२।३८। ०	६। ०।४६।५०
	८	गु	९। ८।३४।४८	१०।२३।५५।५९	९। ०।४५।५४	०।१८।१६।३३	१०।२५।११।३९	६। ४। १।५९	९।१९।४५।२५	२।२२।३६।३३	६। ०।४६।५७
	९	शु	९। ९।३५।५१	१०।२४।४१।४८	९। २।२२।३३	०।१८।१९।४४	१०।२६।१५।५१	६। ४। ३।२५	९।१९।४२।१४	२।२२।३४। ७	६। ०।४७। २
	१०	श	९।१०।३६।५३	१०।२५।२७।३६	९। ३।५९।१८	०।१८।२३। ६	१०।२७।१९।४८	६। ४। ४।४४	९।१९।३९। ३	२।२२।३१।४१	६। ०।४७। ६
	११	र	९।११।३७।५२	१०।२६।१३।२५	९। ५।३८।३०	०।१८।२६।३२	१०।२८।२४। ०	६। ४। ५।५७	९।१९।३५।५३	२।२२।२९।११	६। ०।४७। ८
	१२	चं	९।१२।३८।४९	१०।२६।५९।१४	९। ७।१७।५३	०।१८।३०।३०	१०।२९।२७।१४	६। ४। ७। ३	९।१९।३२।४२	२।२२।२६।४४	६। ०।४७। ८
	१३	मं	९।१३।३९।४६	१०।२७।४५। १	९। ८।५७।४८	०।१८।३५।५७	११। ०।३०। २	६। ४। ८। ३	९।१९।२९।३१	२।२२।२४।१८	६। ०।४७। ५
	१४	बु	९।१४।४०।४२	१०।२८।३०।४७	९।१०।३८।१३	०।१८।४०।३३	११। १।३२।५२	६। ४। ८।५८	९।१९।२६।२१	२।२२।२१।५४	६। ०।४७। ०
	१५	गु	९।१५।४१।३७	१०।२९।१६।३१	९।१२।१९। ९	०।१८।४५।१९	११। २।३५। १	६। ४। ९।४६	९।१९।२३।१०	२।२२।१९।३२	६। ०।४६।५३
फाल्गुनकृष्णपक्षः ।	१	शु	९।१६।४२।३२	११। ०। २।१४	९।१४। ०।३७	०।१८।५०।१५	११। ३।३६।४२	६। ४।१०।२७	९।१९।१९।५९	२।२२।१७।१२	६। ०।४६।४४
	२	श	९।१७।४३।२६	११। ०।४७।५६	९।१५।४२।३५	०।१८।५५।२१	११। ४।३७।५७	६। ४।११। २	९।१९।१६।४८	२।२२।१४।५३	६। ०।४६।३३
	२	र	९।१८।४४।१९	११। १।३३।३६	९।१७।२५। ५	०।१९। ०।३६	११। ५।३८।४६	६। ४।११।३१	९।१९।१३।३८	२।२२।१२।३६	६। ०।४६।१९
	३	चं	९।१९।४५।११	११। २।१९।१५	९।१९। ८।१२	०।१९। ६। २	११। ६।३९। ८	६। ४।११।५३	९।१९।१०।२७	२।२२।१०।२१	६। ०।४६। ३
	४	मं	९।२०।४६। २	११। ३। ४।५२	९।२०।५२। १	०।१९।११।३७	११। ७।३९। २	६। ४।१२। ९	९।१९। ७।१६	२।२२। ८। ९	६। ०।४५।४५
	५	बु	९।२१।४६।५२	११। ३।५०।२८	९।२२।३६।३४	०।१९।१७।२२	११। ८।३८।३०	६। ४।१२।१९	९।१९। ४। ६	२।२२। ५।५८	६। ०।४५।२५
	६	गु	९।२२।४७।४२	११। ४।३६। ३	९।२४।२१।५०	०।१९।२३।१७	११। ९।३७।३०	६। ४।१२।२२	९।१९। ०।५५	२।२२। ३।४८	६। ०।४५। २
	७	शु	९।२३।४८।३०	११। ५।२१।३७	९।२६। ७। ४	०।१९।२९।२२	११।१०।३६। ५	६। ४।१२।१९	९।१८।५७।४४	२।२२। १।४०	६। ०।४४।३७
	८	श	९।२४।४९।१८	११। ६। ७। ९	९।२७।५३।३१	०।१९।३५।३७	११।११।३४।१२	६। ४।१२। ९	९।१८।५४।३४	२।२१।५९।३५	६। ०।४४। ९
	९	र	९।२५।५०। ५	११। ६।५२।४०	९।२९।४१।१०	०।१९।४२। २	११।१२।३२।५३	६। ४।११।५३	९।१८।५१।२३	२।२१।५७।३१	६। ०।४३।३९
	१०	चं	९।२६।५०।५२	११। ७।३८।१०	१०। १।३०। ४	०।१९।४८।३६	११।१३।२९। ६	६। ४।११।३१	९।१८।४८।१२	२।२१।५५।२९	६। ०।४३। ८
	११	मं	९।२७।५१।३०	११। ८।२३।३४	१०। ३।१८।५१	०।१९।५५।१५	११।१४।२५।४८	६। ४।११। ३	९।१८।४५। २	२।२१।५३।३०	६। ०।४२।३६
	१२	बु	९।२८।५२। ८	११। ९। ८।५२	१०। ५। ७।५२	०।२०। २। २	११।१५।२१।४५	६। ४।१०।२८	९।१८।४१।५१	२।२१।५१।३५	६। ०।४२। २
	१३	गु	९।२९।५२।४४	११। ९।५४। ९	१०। ६।५७। ९	०।२०। ८।५९	११।१६।१६।५८	६। ४। ९।४७	९।१८।३८।४०	२।२१।४९।४२	६। ०।४१।२६
	१४	शु	१०। ०।५३।१८	११।१०।३९।२६	१०। ८।४६।४१	०।२०।१६। ६	११।१७।११।२८	६। ४। ९। ०	९।१८।३५।३०	२।२१।४७।५२	६। ०।४०।४९
	३०	श	१०। १।५३।५१	११।११।२४।३९	१०।१०।३६।२८	०।२०।२३।२०	११।१८। ५।१३	६। ४। ८। ७	९।१८।३२।१९	२।२१।४६। ४	६। ०।४०।१०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतकी अहर्गणः ६५२५ मासारंभे

मास	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
फाल्गुनशुक्लपक्षः ।	२	र	२०। २।५४।२४	११।१२। ९।५०	१०।१२।२६।३०	०।२०।३०।४६	११।१८।५८।१५	६। ४। ७। ८	९।१८।२९। ९	२।२१।४४।१९	६। ०।३९।२९
	३	चं	१०। ३।५४।५५	११।१२।५४।५८	१०।१४।१६।४६	०।२०।३८।२१	११।१९।५०।३३	६। ४। ६। ३	९।१८।२५।५८	२।२१।४२।३६	६। ०।३८।४७
	४	मं	१०। ४।५५।२४	११।१३।४०। ५	१०।१६। ७।१९	०।२०।४६। ५	११।२०।४२। ७	६। ४। ४।५२	९।१८।२२।४७	२।२१।४०।५५	६। ०।३८। २
	५	बु	१०। ५।५५।५२	११।१४।२५। ९	१०।१७।५८।१३	०।२०।५३।५८	११।२१।३३।५७	६। ४। ३।३५	९।१८।१९।३७	२।२१।३९।१६	६। ०।३७।१७
	६	गु	१०। ६।५६।१९	११।१५।१०।११	१०।१९।४६।४९	०।२१। २। १	११।२२।२३। ३	६। ४। २।१२	९।१८।१६।२६	२।२१।३७।४१	६। ०।३६।२८
	७	शु	१०। ७।५६।४५	११।१५।५५।१०	१०।२१।३३। ९	०।२१।१०।१३	११।२३।१२।२५	६। ४। ०।४३	९।१८।१३।१५	२।२१।३६। ७	६। ०।३५।३८
	८	श	१०। ८।५७।१०	११।१६।४०। ८	१०।२३।१७।१३	०।२१।१८।३४	११।२४। १। २	६। ३।५९। ८	९।१८।१०। ५	२।२१।३४।३६	६। ०।३४।४७
	९	र	१०। ९।५७।३३	११।१७।२५। ४	१०।२४।५९। १	०।२१।२७। ५	११।२४।४८।५५	६। ३।५७।२६	९।१८। ६।५४	२।२१।३३। ७	६। ०।३३।५४
	१०	चं	१०।१०।५७।५५	११।१८। ९।५७	१०।२६।३८।३३	०।२१।३५।४४	११।२५।३६। ५	६। ३।५५।३८	९।१८। ३।४४	२।२१।३१।४१	६। ०।३३। ०
	११	मं	१०।११।५८।१६	११।१८।५४।४७	१०।२८।१५।४९	०।२१।४४।३२	११।२६।२२।३१	६। ३।५३।४४	९।१८। ०।३३	२।२१।३०।१७	६। ०।३२। ४
	१२	बु	१०।१२।५८।३५	११।१९।३९।३६	१०।२९।५०।४९	०।२१।५३।३१	११।२७। ८।१३	६। ३।५१।४३	९।१७।५७।२३	२।२१।२८।५५	६। ०।३१। ५
	१३	गु	१०।१३।५८।५३	११।२०।२४।२३	११। १।२१। ३	०।२२। २।३४	११।२७।५३।२०	६। ३।४९।३४	९।१७।५४।१२	२।२१।२७।३५	६। ०।३०। ५
	१४	शु	१०।१४।५९। ९	११।२१। ९। ९	११। २।४४।१३	०।२२।११।४५	११।२८।३७। २	६। ३।४७।२०	९।१७।५१। १	२।२१।२६।१८	६। ०।२९। ४
	१५	श	१०।१५।५९।२३	११।२१।५३।५२	११। ४। ०।१९	०।२२।२१।२४	११।२९।१९।२०	६। ३।४५। २	९।१७।४७।५१	२।२१।२५। ४	६। ०।२८। १
चैत्रकृष्णपक्षः ।	१	र	१०।१६।५९।३४	११।२२।३८।३२	११। ५। ९।२२	०।२२।३०।२७	०। ०। ०।११	६। ३।४२।३८	९।१७।४४।४०	२।२१।२३।५४	६। ०।२६।५७
	२	चं	१०।१७।५९।४३	११।२३।२३। ९	११। ६।११।२१	०।२२।३९।५९	०। ०।३९।३७	६। ३।४०।१०	९।१७।४१।३०	२।२१।२२।४७	६। ०।२५।५१
	३	मं	१०।१८।५९।५१	११।२४। ७।४३	११। ७। ६।१७	०।२२।४९।३७	०। १।१७।३८	६। ३।३७।३७	९।१७।३८।१९	२।२१।२१।४२	६। ०।२४।४४
	४	बु	१०।१९।५९।५७	११।२४।५२।१४	११। ७।५४। ९	०।२२।५९।२२	०। १।५४।१३	६। ३।३४।५९	९।१७।३५। ९	२।२१।२०।४०	६। ०।२३।३६
	५	गु	१०।२१। ०। १	११।२५।३६।४३	११। ८।३४।५९	०।२३। ९।१४	०। २।२९।२४	६। ३।३२।१७	९।१७।३१।५८	२।२१।१९।४१	६। ०।२२।२६
	५	शु	१०।२२। ०। ३	११।२६।२१। ९	११। ९। ६। ६	०।२३।१९।१४	०। ३। ३। ९	६। ३।२९।३०	९।१७।२८।४६	२।२१।१८।४५	६। ०।२१।१५
	६	श	१०।२३। ०। ३	११।२७। ५।३१	११। ९।२८।५५	०।२३।२९।२०	०। ३।३५।२९	६। ३।२६।३७	९।१७।२५।३६	२।२१।१७।५३	६। ०।२०। २
	७	र	१०।२४। ०। १	११।२७।४९।५१	११। ९।४३।२६	०।२३।३९।३३	०। ४। ६।२३	६। ३।२३।४०	९।१७।२२।२५	२।२१।१७। ४	६। ०।१८।४८
	९	चं	१०।२४।५९।५६	११।२८।३४। ८	११। ९।४९।४१	०।२३।४९।५३	०। ४।३५।५३	६। ३।२०।३८	९।१७।१९।१४	२।२१।१६।१७	६। ०।१७।३३
	१०	मं	१०।२५।५९।५०	११।२९।१८।२२	११। ९।४७।३८	०।२४। ०।२०	०। ५। ३।५७	६। ३।१७।३१	९।१७।१६। ४	२।२१।१५।३३	६। ०।१६।१६
	११	बु	१०।२६।५९।४२	०। ०। २।३३	११। ९।३७।१९	०।२४।१०।५४	०। ५।३०।३५	६। ३।१४।१९	९।१७।१२।५३	२।२१।१४।५१	६। ०।१४।५८
	१२	गु	१०।२७।५९।३२	०। ०।४६।४१	११। ९।१८।४२	०।२४।२१।३५	०। ५।५५।४९	६। ३।११। ३	९।१७। ९।४३	२।२१।१४।१२	६। ०।१३।३९
	१३	शु	१०।२८।५९।१९	०। १।३०।४७	११। ८।५१।४७	०।२४।३२।२४	०। ६।१९।३७	६। ३। ७।४१	९।१७। ६।३२	२।२१।१३।३७	६। ०।१२।१८
	१४	श	१०।२९।५९। ५	०। २।१४।५३	११। ८।१२।५७	०।२४।४३।१९	०। ६।४१।५६	६। ३। ४।१४	९।१७। ३।२२	२।२१।१३। ४	६। [illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रः स्पष्टः ।

मास.	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
चैत्रशुक्लपक्षः ।	१	बु	११।१४।५४।४१	११।१७।१२।११	११।१९।२८।१२	११।२१।४४।१३	११।२४। ०।१४	११।२६।१६।१५
	२	गु	११।२८।३२।१६	०। ०।४७।२६	०। ३। ०।५३	०। ५।१४।२०	०। ७।२७।४७	०। ९।४१।१३
	३	शु	०।११।५४।३९	०।१४। ७। ७	०।१६।१७।५९	०।१८।२८।५१	०।२०।३९।४३	०।२२।५०।३५
	४	श	०।२५। १।२६	०।२७।११।३७	०।२९।११।४७	१। १।२७।५७	१। ३।३६। ७	१। ५।४४।१८
	५	र	१। ७।५२।२८	१।१०। ०।३८	१।१२। ६।१३	१।१४।११।४८	१।१६।१७।२४	१।१८।२३। ०
	६	चं	१।२०।२८।३५	१।२२।३४।१०	१।२४।३८।२४	१।२६।४२।५१	१।२८।४६।१९	२। ०।४९।४६
	७	मं	२। २।५२।१३	२। ४।५६।४१	२। ६।५८।५२	२। ९। ०।३८	२।११। २।२४	२।१३। ४।१०
	८	बु	२।१५। ५।५६	२।१७। ७।४२	२।१९। ९।२८	२।२१।१०।३३	२।२३।११। ९	२।२५।११।४५
	९	गु	२।२७।११।२१	२।२९।११।५७	३। १।१३।३३	३। ३।१४। ९	३। ५।१४।१७	३। ७।१४।२२
	१०	शु	३। ९।१४।२८	३।११।१४।३३	३।१३।१४।३८	३।१५।१४।४४	३।१७।१४।५५	३।१९।१५।२२
	१०	श	३।२१।१५।४९	३।२३।१६।१६	३।२५।१६।४३	३।२७।१७।१०	३।२९।१७।३७	४। १।१८।४७
	११	र	४। ३।२०।१८	४। ५।२१।४९	४। ७।२३।२०	४। ९।२४।५१	४।११।२६।२२	४।१३।२८। ०
	१२	चं	४।१५।३१।१०	४।१७।३४।२०	४।१९।३७।३१	४।२१।४०।४१	४।२३।४३।५१	४।२५।४७। २
	१३	मं	४।२७।५१।२३	४।२९।५६।३६	५। २। १।५०	५। ४। ७। ३	५। ६।१२।१६	५। ८।१७।३०
	१४	बु	५।१०।२३।१२	५।१२।३०।५४	५।१४।३८।३५	५।१६।४६।१७	५।१८।५३।५८	५।२१। १।४०
	१५	गु	५।२३। ९।२१	५।२५।१९।२८	५।२७।२९।४८	५।२९।४०। ८	६। १।५०।२८	६। ४। ०।४७
वैशाखकृष्णपक्षः ।	१	शु	६। ६।११। ७	६। ८।२३।२९	६।१०।३६।२७	६।१२।४९।२५	६।१५। २।२२	६।१७।१५।२०
	२	श	६।१९।२८।१८	६।२१।४३।१७	६।२३।५८।५३	६।२६।१४।२८	६।२८।३०। ४	७। ०।४५।३९
	३	र	७। ३। १।१५	७। ५।१८।३९	७। ७।३६।२१	७। ९।५४। २	७।१२।११।४४	७।१४।२९।२५
	४	चं	७।१६।४७।१३	७।१९। ६।५७	७।२१।२६।४१	७।२३।४६।२६	७।२६। ६।१०	७।२८।२५।५४
	५	मं	८। ०।४६।४२	८। ३। ८। ८	८। ५।२९।३३	८। ७।५०।५९	८।१०।१२।२४	८।१२।३३।५०
	७	बु	८।१४।५५।२२	८।१७।१७।४३	८।१९।४०। ४	८।२२। २।२५	८।२४।२४।४६	८।२६।४७।१०
	८	गु	८।२९।१०।२२	९। १।३३।३४	९। ३।५६।४६	९। ६।१९।५७	९। ८।४३। ९	९।११। ६।२३
	९	शु	९।१३।२९।४०	९।१५।५२।५७	९।१८।१६।१४	९।२०।३९।३१	९।२३। २।४८	९।२५।२५।४३
	१०	श	९।२७।४८।३४	१०। ०।११।२६	१०। २।३४।१७	१०। ४।५७। ८	१०। ७।१९।४३	१०। ९।४१।३४
	११	र	१०।१२। ३।२४	१०।१४।२५।१५	१०।१६।४७। ६	१०।१९। ८।५६	१०।२१।२९।५३	१०।२३।५०।१९
	१२	चं	१०।२६।१०।४५	१०।२८।३१।११	११। ०।५१।३७	११। ३।१२। ३	११। ५।३०।३४	११। ७।४८।५८
	१३	मं	११।१०। ७।२३	११।१२।२५।४७	११।१४।४४।१२	११।१७। २।१९	११।१९।१८।५५	११।२१।३५।३१
	१४	बु	११।२३।५२। ७	११।२६। ८।४३	११।२८।२५।१९	०। ०।४१। ६	०। २।५५। ६	०। ५। ९। ६
	३०	गु	०। ७।२३। ७	०। ९।३७। ७	०।११।५१। ७	०।१४। ४।१४	०।१६।१५।३६	०।१८।२६।५८
वैशाखशुक्लपक्षः ।	१	शु	०।२०।३८।२१	०।२२।४९।४३	०।२५। १। ५	०।२७।११।४६	०।२९।२०।३१	१। १।२९।१७
	२	श	१। ३।३८। २	१। ५।४६।४७	१। ७।५५।३३	१।१०। ४।१२	१।१२।१०।१७	१।१४।१६।२२
	३	र	१।१६।२२।२७	१।१८।२८।३२	१।२०।३४।३७	१।२२।४०।४२	१।२४।४५।२०	१।२६।४९।१८
	४	चं	१।२८।५३।१६	२। ०।५७।१४	२। ३। १।१२	२। ५। ५।१०	२। ७। ८।४०	२। ९।१०।४१
	५	मं	२।११।१२।४२	२।१३।१४।४३	२।१५।१६।४४	२।१७।१८।४५	२।१९।२०।४६	२।२१।२१।५६
	६	बु	२।२३।२२।४३	२।२५।२३।३०	२।२७।२४।१७	२।२९।२५। ४	३। १।२५।५१	३। ३।२६।३७
	७	गु	३। ५।२६।५०	३। ७।२७। ३	३। ९।२७।१५	३।११।२७।२८	३।१३।२७।४१	३।१५।२७।५३
	८	शु	३।१७।२८। ८	३।१९।२८।२८	३।२१।२८।४८	३।२३।२९। ८	३।२५।२९।२८	३।२७।२९।४८
	९	श	३।२९।३०। ८	४। १।३१। ९	४। ३।३२।२५	४। ५।३३।४२	४। ७।३४।५८	४। ९।३६।१५
	१०	र	४।११।३७।३१	४।१३।३९। ०	४।१५।४१।३८	४।१७।४४।१६	४।१९।४६।५५	४।२१।४९।३३
	११	चं	४।२३।५२।११	४।२५।५४।४९	४।२७।५८।५३	५। ०। ३।४५	५। २। ८।३७	५। ४।१३।३०
	१२	मं	५। ६।१८।२२	५। ८।२३।१४	५।१०।२८।३६	५।१२।३५।४३	५।१४।४२।५०	५।१६।४९।५७
	१३	बु	५।१८।५७। ४	५।२१। ४।११	५।२३।११।१८	५।२५।२०।५२	५।२७।३०।३६	५।२९।४०।२०
	१४	गु	६। १।५०। ३	६। ३।५९।४७	६। ६। ९।३१	६। ८।२१।१४	६।१०।३३।३४	६।१२।४५।५५
	१५	श	६।१४।५८।१५	६।१७।१०।३६	६।१९।२२।५६	६।२१।३७।११	६।२३।५२।१०	६।२६। ७। ९

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
ज्येष्ठकृष्णपक्षः ।	१	श	६।२८।२२। ८	७। ०।३७। ७	७। २।५२। ६	७। ५। ८।५९	७। ७।२६।२२	७। ९।४३।४८
	२	र	७।१२। १। ७	७।१४।१८।३०	७।१६।३५।५२	७।१८।५५।१२	७।२१।१४।३४	७।२३।३३।५७
	३	चं	७।२५।५३।१९	७।२८।१२।४२	८। ०।३२।२६	८। २।५३।२९	८। ५।१४।३२	८। ७।३५।३५
	४	मं	८। ९।५६।३८	८।१२।१७।४१	८।१४।३९।२६	८।१७। १।४२	८।१९।२३।५८	८।२१।४६।१३
	५	बु	८।२४। ८।२९	८।२६।३०।४५	८।२८।५३।४६	९। ०।१६।५०	९। २।३९।५४	९। ५। २।५८
	६	गु	९। ७।२६। २	९।१०।४९।१२	९।१३।१२।२९	९।१५।३५।४६	९।१७।५९। ३	९।२०।२२।२०
	७	शु	९।२२।४५।३७	९।२५। ८।४०	९।२७।३१।३९	९।२९।५४।३८	१०। २।१७।३८	१०। ४।४०।३७
	८	श	१०। ७। ३।२६	१०। ९।२५।२९	१०।११।४७।३३	१०।१४। ९।३६	१०।१६।३१।३९	१०।१८।५३।४३
	९	र	१०।२१।१५। ४	१०।२३।३६।५०	१०।२५।५६।३६	१०।२८।१७।२१	११। ०।३८। ७	११। २।५८।५३
	११	चं	११। ५।१८। २	११। ७।३७। ०	११। ९।५५।५८	११।१२।१४।५७	११।१४।३३।५५	११।१६।५२।४
	१२	मं	११।१९। ९।४९	११।२१।२६।५०	११।२३।४३।५२	११।२६। ०।५३	११।२८।१७।५५	०। ०।३४।१८
	१३	बु	०। २।४८।५०	०। ५। ३।२२	०। ७।१७।५३	०। ९।३२।२५	०।११।४६।५७	०।१४। ०।४
	१४	गु	०।१६।१२।३७	०।१८।२४।३४	०।२०।३६।३०	०।२२।४८।२७	०।२५। ०।२३	०।२७।११।४
	३०	शु	०।२९।२०।५६	१। १।३०।१३	१। ३।३९।२९	१। ५।४८।४६	१। ७।५८। २	१।१०। ७।१
ज्येष्ठशुक्लपक्षः ।	१	श	१।१२।१३।५०	१।१४।२०।२९	१।१६।२७। ८	१।१८।३३।४७	१।२०।४०।२६	१।२२।४७।५
	२	र	१।२४।५२। ४	१।२६।५६।२९	१।२९। ०।५४	२। १। ५।१९	२। ३। ९।४४	२। ५।१४।१
	३	चं	२। ७।१७।५८	२। ९।२०।२५	२।११।२२।५२	२।१३।२५।१९	२।१५।२७।४६	२।१७।३०।१
	४	मं	२।१९।३२।४०	२।२१।३४। १	२।२३।३५। ५	२।२५।३६। ८	२।२७।३७।१२	२।२९।३८।१
	५	बु	३। १।३९।१९	३। ३।४०।१५	३। ५।४०।३५	३। ७।४०।५५	३। ९।४१।१४	३।११।४१।३
	५	गु	३।१३।४१।५४	३।१५।४२।१३	३।१७।४२।२७	३।१९।४२।३४	३।२१।४२।४१	३।२३।४२।४
	६	शु	३।२५।४२।५५	३।२७।४३। २	३।२९।४३। ९	४। १।४४। ०	४। ३।४४।५६	४। ५।४५।५
	७	श	४। ७।४६।४९	४। ९।४७।४५	४।११।४८।४१	४।१३।४९।५९	४।१५।५२।२२	४।१७।५४।४
	८	र	४।१९।५७। ८	४।२१।५९।३१	४।२४। १।५४	४।२६। ४।१७	४।२८। ८। ८	५। ०।१२।३
	९	चं	५। २।१६।५८	५। ४।२१।२३	५। ६।२५।४८	५। ८।३०।१३	५।१०।३५।१३	५।१२।४१।४
	१०	मं	५।१४।४८।१९	५।१६।५४।५२	५।१९। १।२५	५।२१। ७।५८	५।२३।१४।३१	५।२५।२३।३
	११	बु	५।२७।३२।४४	५।२९।४१।५४	६। १।५१। ५	६। ४। ०।१५	६। ६। ९।२५	६। ८।२०।४
	१२	गु	६।१०।३२।३८	६।१२।४४।३६	६।१४।५६।१४	६।१७। ८।३२	६।१९।२०।३०	६।२१।३३।३
	१३	शु	६।२३।४८। ०	६।२६। २।२३	६।२८।१६।४५	७। ०।३१। ८	७। २।४५।३१	७। ५। १
	१४	श	७। ७।१८।३६	७। ९।३५।२८	७।११।५२।२१	७।१४। ९।१३	७।१६।२६। ५	७।१८।४४।४
	१५	र	७।२१। ३।४८	७।२३।२२।४६	७।२५।४१।४५	७।२८। ०।४३	८। ०।१९।५६	८। २।४०।४
आषाढ़कृष्णपक्षः ।	१	चं	८। ५।०१।२८	८। ७।२२।१३	८। ९।४२।५९	८।१२। ३।४५	८।१४।२५। ४	८।१६।४७।
	२	मं	८।१९। ९। ०	८।२१।३०।५७	८।२३।५२।५५	८।२६।१४।५३	८।२८।३७।५४	९। १।०।
	४	बु	९। ३।२४।१८	९। ५।४७।२९	९। ८।१०।४१	९।१०।३३।५५	९।१२।५७।१२	९।१५।२०।
	५	गु	९।१७।४३।४६	९।२०। ७। ३	९।२२।३०।२०	९।२४।५३।३०	९।२७।१६।३७	९।२९।३९।
	६	शु	१०। २। २।५१	१०। ४।२५।५७	१०। ६।४९। १	१०। ९।११।२५	१०।११।३३।४८	१०।१३।५६।
	७	श	१०।१६।१८।३५	१०।१८।४०।५९	१०।२१। २।४८	१०।२३।२३।५६	१०।२५।४५। ४	१०।२८। ६।
	८	र	११। ०।२७।२०	११। २।४८।२८	११। ५। ८।२२	११। ७।२७।५४	११। ९।४७।२६	११।१२। ६।
	९	चं	११।१४।२६।३०	११।१६।४५।५७	११।१९। ३।२४	११।२१।२०।५२	११।२३।३८।१९	११।२५।५५।४
	१०	मं	११।२८।१३।१४	०। ०।३०।११	०। २।४९।१९	०। ५। ०।२७	०। ७।१५।३५	०। ९।३०।
	११	बु	०।११।४५।५१	०।१४। ०।१३	०।१६।१२।४९	०।१८।२५।२५	०।२०।३८। ०	०।२२।५०।
	१२	गु	०।२५। ३।१२	०।२७।१५। ४	०।२९।२४।५८	१। १।३४।५३	१। ३।४४।४७	१। ५।५४।४
	१३	शु	१। ८। ४।३६	१।१०।१४।१३	१।१२।२१।२८	१।१४।२८।४३	१।१६।३५।५८	१।१८।४३।१
	१४	श	१।२०।५०।२८	१।२२।५७।४३	१।२५। ३। ८	१।२७। ८। ८	१।२९।१३। ८	२। १।१८।
	३०	र	२। ३।२३। ८	२। ५।२८। ८	२। ७।३२।१२	२। ९।३५। २	२।११।३७।५२	२।१३।४०।४१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आषाढशुक्लपक्षः ।	१	चं	२।१५।४३।३१	२।१७।४६।२०	२।१९।४९।१०	२।२१।५०।३७	२।२३।५१।५७	२।२५।५३।१७
	२	मं	२।२७।५४।३७	२।२९।५५।५७	३। १।५७।१७	३। ३।५८।२०	३। ५।५८।४४	३। ७।५९। ७
	३	बु	३। ९।५९।३१	३।११।५९।५४	३।१४। ०।१८	३।१६। ०।४१	३।१८। ०।५६	३।२०। १। ९
	४	गु	३।२२। १।२२	३।२४। १।३४	३।२६। १।४७	३।२८। १।५९	४। ०। २।१३	४। २। ३। ०
	५	शु	४। ४। ३।४७	४। ६। ४।३४	४। ८। ५।२१	४।१०। ६। ८	४।१२। ६।५५	४।१४। ८।१२
	६	श	४।१६।१०।१५	४।१८।१२।१८	४।२०।१४।२०	४।२२।१६।२३	४।२४।१८।२६	४।२६।२०।२९
	७	र	४।२८।२४। ६	५। ०।२८। २	५। २।३१।५८	५। ४।३५।५४	५। ६।३९।५०	५। ८।४३।४६
	८	चं	५।१०।४८।३०	५।१२।५४।२९	५।१५। ०।२८	५।१७। ६।२७	५।१९।१२।२६	५।२१।१८।२५
	९	मं	५।२३।२४।३०	५।२५।३३।१३	५।२७।४१।५७	५।२९।५०।४०	६। १।५९।२३	६। ४। ८। ७
	१०	बु	६। ६।१६।५०	६। ८।२७।३८	६।१०।३८।५३	६।१२।५०। ८	६।१५। १।२४	६।१७।१२।३९
	११	गु	६।१९।२३।५५	६।२१।३७। ८	६।२३।५१। ६	६।२६। ५। ४	६।२८।१९। २	७। ०।३३। ०
	१२	शु	७। २।४६।५८	७। ५। २।४९	७। ७।१९।१८	७। ९।३५।४७	७।११।५२।१६	७।१४। ८।४५
	१३	श	७।१६।२५।१४	७।१८।४३।२५	७।२१। १।४९	७।२३।२०।१४	७।२५।३८।३८	७।२७।५७। ३
	१४	र	८। ०।१५।४२	८। २।३६।१३	८। ४।५६।४४	८। ७।१७।१६	८। ९।३७।४७	८।११।५८।१८
	१५	चं	८।१४।१९।१९	८।१६।४१। ७	८।१९। २।५५	८।२१।२४।४४	८।२३।४६।३२	८।२६। ८।२०
श्रावणकृष्णपक्षः ।	१	मं	८।२८।३१। १	९। ०।५३।५७	९। ३।१६।५४	९। ५।३९।५०	९। ८। २।४७	९।१०।२५।४८
	२	बु	९।१२।४९। ५	९।१५।१२।२२	९।१७।३५।३९	९।१९।५८।५६	९।२२।२२।१३	९।२४।४५।३०
	३	गु	९।२७। ८।४७	९।२९।३२। ४	१०। १।५५।२१	१०। ४।१८।३८	१०। ६।४१।५४	१०। ९। ४।३२
	४	शु	१०।११।२७।११	१०।१३।४९।४९	१०।१६।१२।२८	१०।१८।३५। ६	१०।२०।५७। ५	१०।२३।१८।३६
	५	श	१०।२५।४०। ७	१०।२८। १।३७	११। ०।२३। ८	११। २।४४।३९	११। ५। ४।५९	११। ७।२४।५८
	७	र	११। ९।४४।५७	११।१२। ४।५६	११।१४।२४।५५	११।१६।४४।५०	११।१९। २।४४	११।२१।२०।३७
	८	चं	११।२३।२८।३१	११।२५।५६।२४	११।२८।१४।१८	०। ०।३१।४१	०। २।४७।२८	०। ५। ३।१५
	९	मं	०। ७।१९। २	०। ९।३४।४९	०।११।५०।३६	०।१४। ५।३१	०।१६।१८।५०	०।१८।३२।१०
	१०	बु	०।२०।४५।२९	०।२२।५८।४८	०।२५।१२। ८	०।२७।२३।५९	०।२९।३४।३७	१। १।४५।१६
	११	गु	१। ३।५५।५४	१। ६। ६।३३	१। ८।१७।११	१।१०।२७।१७	१।१२।३५। ९	१।१४।४३। १
	१२	शु	१।१६।५०।५२	१।१८।५८।४४	१।२१। ६।३६	१।२३।१४।२८	१।२५।१९।५९	१।२७।२५।२५
	१३	श	१।२९।३०।५०	२। १।३६।१६	२। ३।४१।४१	२। ५।४७। ६	२। ७।५१।१७	२। ९।५४।३१
	१४	र	२।११।५७।४९	२।१४। १। ५	२।१६। ४।२१	२।१८। ७।३७	२।२०।१०।४५	२।२२।१२।३१
	३०	चं	२।२४।१४।१७	२।२६।१६। ३	२।२८।१७।४९	३। ०।१९।३५	३। २।२१।२१	३। ४।२२।२८
श्रावणशुक्लपक्षः ।	१	मं	३। ६।२२।५८	३। ८।२३।२८	३।१०।२३।५९	३।१२।२४।२९	३।१४।२४।५९	३।१६।२५।३०
	१	बु	३।१८।२५।४७	३।२०।२६। ०	३।२२।२६।१३	३।२४।२६।२५	३।२६।२६।३८	३।२८।२६।५१
	२	गु	४। ०।२७। ९	४। २।२७।४७	४। ४।२८।२५	४। ६।२९। ३	४। ८।२९।४१	४।१०।३०।१९
	३	शु	४।१२।३०।५७	४।१४।३२।१५	४।१६।३४। १	४।१८।३५।४७	४।२०।३७।३३	४।२२।३९।१९
	४	श	४।२४।४१। ५	४।२६।४३।५३	४।२८।४६।१७	५। ०।४९।४०	५। २।५३। ४	५। ४।५६।२७
	५	र	५। ६।५९।५१	५। ९। ३।१४	५।११। ७।४७	५।१३।१३।१९	५।१५।१८।५२	५।१७।२४।२४
	६	चं	५।१९।२९।५७	५।२१।३५।२९	५।२३।४१।२०	५।२५।४९।२२	५।२७।५७।२४	६। ०। ५।२६
	७	मं	६। २।१३।२८	६। ४।२१।३०	६। ६।२९।३२	६। ८।४०।१०	६।१०।५१। २	६।१३। १।५४
	८	बु	६।१५।१२।४५	६।१७।२३।३७	६।१९।३४।२९	६।२१।४७।१३	६।२४। ०।२४	६।२६।१३।३५
	९	गु	६।२८।२६।४६	७। ०।३९।५७	७। २।५३। ८	७। ५। ८।३७	७। ७।२४।४०	७। ९।४०।४१
	१०	शु	७।११।४६।४७	७।१४।१२।५०	७।१६।२८।५४	७।१८।४६।४२	७।२१। ४।४०	७।२३।२२।१८
	११	श	७।२५।४०।३७	७।२७।५८।१५	८। ०।१६।४९	८। २।३६।५८	८। ४।५७। ७	८। ७।१७।१५
	१२	र	८। ९।३७।२४	८।११।५७।३३	८।१४।१८।१७	८।१६।३९।५३	८।१९। १।२९	८।२१।२३। ४
	१३	चं	८।२३।४४।४०	८।२६। ६।१६	८।२८।२८।४५	९। ०।५१।११	९। ३।१४।१८	९। ५।३७। ४
	१५	मं	९। ७।५९।५०	९।१०।२२।४१	९।१२।४५।५५	९।१५। ९।१०	९।१७।३२।२४	९।१९।५५।१९

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपदकृष्णपक्षः।	१	बु	९।२२।१८।५३	९।२४।४२।१२	९।२७। ५।३४	९।२९।२८।५६	१०। १।५२।१९	१०। ४।१५।४१
	२	गु	१०। ६।३९। ३	१०। ९। १।५४	१०।११।२४।४५	१०।१३।४७।३६	१०।१६।१०।२८	१०।१८।३३।१९
	३	शु	१०।२०।५५।४६	१०।२३।१७।३४	१०।२५।३९।२२	१०।२८। १।११	११। ०।२२।५९	११। २।४४।४८
	४	श	११। ५।०५।३२	११। ७।२५।५६	११। ९।४६।२१	११।१२। ६।४५	११।१४।२७।१०	११।१६।४७।३३
	५	र	११।१९। ५।४३	११।२१।२४। ४	११।२३।४२।२४	११।२६। ०।४४	११।२८।१९। ५	०। ०।३७। ४
	६	चं	०। २।५३।३०	०। ५। ९।५७	०। ७।२६।२३	०। ९।४२।५०	०।११।५९।१६	०।१४।१४।३९
	७	मं	०।१६।२८।३०	०।१८।४२।२१	०।२०।५६।१३	०।२३।१०। ४	०।२५।२३।५५	०।२७।३६।३२
	८	बु	०।२९।४७।४७	१। १।५९। २	१। ४।१०।१८	१। ६।२१।३३	१। ८।३२।४८	१।१०।४३।१७
	९	गु	१।१२।५१।४९	१।१५। ०।२१	१।१७। ८।५३	१।१९।१७।२५	१।२१।२५।५७	१।२३।३४।१७
	१०	शु	१।२५।४०।१८	१।२७।४६।१९	१।२९।५२।२०	२। १।५८।२१	२। ४। ४।२२	२। ६।१०।२३
	११	श	२। ८।१४।४६	२।१०।१८।३८	२।१२।२२।३०	२।१४।२६।२३	२।१६।३०।१५	२।१८।३४। ७
	१२	र	२।२०।३७।२५	२।२२।३९।२६	२।२४।४१।२७	२।२६।४३।२८	२।२८।४५।२९	३। ०।४७।३०
	१३	चं	३। २।४९।३१	३। ४।५०।३७	३। ६।५१।२६	३। ८।५२।१५	३।१०।५३। ४	३।१२।५३।५३
	१४	मं	३।१४।५४।४२	३।१६।५५।२६	३।१८।५५।४२	३।२०।५५।५८	३।२२।५६।१५	३।२४।५६।३१
	३०	बु	३।२६।५६।४७	३।२८।५७। ४	४। ०।५७।२६	४। २।५७।५५	४। ४।५८।२४	४। ६।५८।५३
भाद्रपदशुक्लपक्षः।	१	गु	४। ८।५९।२२	४।१०।५९।५१	४।१३। ०।२०	४।१५। १।३६	४।१७। ३। २	४।१९। ४।२७
	२	शु	४।२१। ६। ३	४।२३। ७।२८	४।२५। ८।५४	४।२७।१०।३१	४।२९।१३।३०	५। १।१६।२९
	३	श	५। ३।१९।२८	५। ५।२२।२७	५। ७।२५।२६	५। ९।२८।२५	५।११।३३। २	५।१३।३८।१२
	४	र	५।१५।४३।२४	५।१७।४८।३१	५।१९।५३।४१	५।२१।५८।५१	५।२४। ४।४९	५।२६।११।१६
	५	चं	५।२८।११।४३	६। ०।२७।११	६। २।३४।३८	६। ४।४२। ५	६। ६।४९।४५	६। ८।५९।५०
	६	मं	६।११। ९।५५	६।१३।२०। ०	६।१५।३०। ५	६।१७।४०।१०	६।१९।५०।१५	६।२२। २।४७
	७	बु	६।२४।१५।३२	६।२६।२८।१७	६।२८।४१। १	७। ०।५३।४६	७। ३। ६।३१	७। ५।२१।३८
	८	गु	७। ७।३७। २	७। ९।५२।२६	७।१२। ७।५१	७।१४।२३।१५	७।१६।३८।३९	७।१८।५६।१४
	९	शु	७।२१।१३।५१	७।२३।३१।२८	७।२५।४९। ५	७।२८। ६।४२	८। ०।२४।४०	८। २।४४।१९
	१०	श	८। ५। ३।५९	८। ७।२३।३८	८। ९।४३।१७	८।१२। २।५७	८।१४।२३।२४	८।१६।४४।४९
	११	र	८।१९। ६।१५	८।२१।२७।४०	८।२३।४९। ६	८।२६।१०।३१	८।२८।३२।४८	९। ०।५५।१६
	१२	चं	९। ३।१७।४५	९। ५।४०।१३	९। ८। २।४२	९।१०।२५।१८	९।१२।४८।२७	९।१५।११।३७
	१३	मं	९।१७।३४।४६	९।१९।५७।५५	९।२२।२१। ५	९।२४।४४।३३	९।२७। ८। ७	९।२९।३१।४१
	१४	बु	१०। १।५५।१६	१०। ४।१८।५०	१०। ६।४२।२३	१०। ९। ५।२५	१०।११।२८।२७	१०।१३।५१।२८
	१५	गु	१०।१६।१४।३०	१०।१८।३७।३२	१०।२१। ०।११	१०।२३।२२।२२	१०।२५।४४।३३	१०।२८। ६।४४
आश्विनकृष्णपक्षः।	१	शु	११। ०।२८।५५	११। २।५१। ६	११। ५।१२।१२	११। ७।३३। ३	११। ९।५३।५४	११।१२।१४।४५
	३	श	११।१४।३५।३६	११।१६।५६।१२	११।१९।१५। ३	११।२१।३३।५४	११।२३।५२।४५	११।२६।११।३६
	४	र	११।२८।३०।२७	०। ०।४८।३८	०। ३। ५।३७	०। ५।२२।३६	०। ७।३९।३५	०। ९।५६।३४
	५	चं	०।१२।१३।३३	०।१४।२९।१७	०।१६।४३।४९	०।१८।५८।२०	०।२१।१२।५२	०।२३।२७।२४
	६	मं	०।२५।४१।५५	०।२७।५४।५९	१। ०। ६।५५	१। २।१८।५२	१। ४।३०।४८	१। ६।४२।४४
	७	बु	१। ८।५४।४१	१।११। ५।१५	१।१३।१४।२७	१।१५।२३।४०	१।१७।३२।५२	१।१९।४२। ५
	८	गु	१।२१।५१।१७	१।२३।५९।४०	१।२६। ६।१५	१।२८।१२।५०	२। ०।१९।२५	२। २।२६। ०
	९	शु	२। ४।३२।३५	२। ६।३९।१०	२। ८।४३।३३	२।१०।४७।५६	२।१२।५२।१९	२।१४।५६।४२
	१०	श	२।१७। १। ५	२।१९। ५।२८	२।२१। ८।४६	२।२३।११।११	२।२५।१३।३६	२।२७।१६। १
	११	र	२।२९।१८।२६	३। १।२०।५१	३। ३।२३।१४	३। ५।२४।२१	३। ७।२५।२८	३। ९।२६।३५
	१२	चं	३।११।२७।४२	३।१३।२८।४९	३।१५।२९।५६	३।१७।३०।४१	३।१९।३०।५४	३।२१।३१। ७
	१३	मं	३।२३।३१।१९	३।२५।३१।३२	३।२७।३१।४५	३।२९।३१।५७	४। १।३२।२३	४। ३।३२।५४
	१३	बु	४। ५।३३।२५	४। ७।३३।५५	४। ९।३४।२६	४।११।३४।५७	४।१३।३५।३३	४।१५।३६।४९
	१४	गु	४।१७।३७।५८	४।१९।३९।११	४।२१।४०।२४	४।२३।४१।३६	४।२५।४२।४९	४।२७।४४।४४
	३०	शु	४।२९।४७।१५	५। १।४९।४६	५। ३।५२।१६	५। ५।५४।४७	५। ७।५७।१८	५। ९।५९।४८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आश्विनशुक्लपक्षः ।	१	श	५।१२।४।३०	५।१४।९।१२	५।१६।१३।५५	५।१८।१८।३७	५।२०।२३।२०	५।२२।२८।२
	२	र	५।२४।३४।०	५।२६।४०।५१	५।२८।४७।४२	६।०।५४।३३	६।३।१।२४	६।५।८।१५
	३	चं	६।७।१५।५०	६।९।२५।१९	६।११।३४।४८	६।१३।४४।१७	६।१५।५३।४६	६।१८।३।१५
	४	मं	६।२०।१३।०	६।२२।२५।७	६।२४।३७।१५	६।२६।४९।२२	६।२९।१।२९	७।१।१३।३७
	५	बु	७।३।२५।५१	७।५।४०।४१	७।७।५५।३१	७।१०।१०।२०	७।१२।२५।१०	७।१४।४०।०
	६	गु	७।१६।५५।५	७।१९।११।११	७।२१।२९।१७	७।२३।४६।२४	७।२६।३।३०	७।२८।२०।३६
	७	शु	८।०।३८।६	८।२।५७।१६	८।५।१६।२६	८।७।३५।३७	८।९।५४।४७	८।१२।१३।५७
	८	श	८।१४।३४।१२	८।१६।५५।५	८।१९।१५।५८	८।२१।३६।५१	८।२३।५७।४४	८।२६।१८।३७
	९	र	८।२८।४०।४३	९।१।३।१	९।३।२५।२०	९।५।४७।३८	९।८।९।५७	९।१०।३२।२६
	११	चं	९।१२।५५।३३	९।१५।१८।४०	९।१७।४१।४६	९।२०।४।५३	९।२२।२८।०	९।२४।५१।२२
	१२	मं	९।२७।१४।५२	९।२९।३८।२२	१०।२।१।५१	१०।४।२५।२१	१०।६।४८।५१	१०।९।११।५३
	१३	बु	१०।११।३४।५७	१०।१३।५८।२	१०।१६।२१।६	१०।१८।४४।१०	१०।२१।६।५७	१०।२३।२९।२१
	१४	गु	१०।२५।५१।४९	१०।२८।१४।१५	११।०।३६।४१	११।२।५९।७	११।५।२०।२६	११।७।४१।३४
	१५	शु	११।१०।२।४२	११।१२।२३।५०	११।१४।४४।५८	११।१७।५।४८	११।१९।२५।१५	११।२१।४४।४२
कार्तिककृष्णपक्षः ।	१	श	११।२४।४।९	११।२६।२३।३६	११।२८।४३।३	०।१।१।३८	०।३।१९।५	०।५।३६।३२
	२	र	०।७।५४।०	०।१०।११।२७	०।१२।२८।५४	०।१४।४४।५३	०।१६।५९।५९	०।१९।१५।४
	३	चं	०।२१।३०।१०	०।२३।४५।१६	०।२६।०।२१	०।२८।१३।३७	१।०।२६।४	१।२।३८।३१
	४	मं	१।४।५०।५८	१।७।३।२५	१।९।१५।५२	१।११।२६।४६	१।१३।३६।३६	१।१५।४६।२६
	५	बु	१।१७।५६।१६	१।२०।६।६	१।२२।१५।५६	१।२४।२४।२८	१।२६।३१।४२	१।२८।३८।५५
	६	गु	२।०।४६।९	२।२।५३।२२	२।५।०।३६	२।७।७।१८	२।९।१२।२०	२।११।१७।२२
	७	शु	२।१३।२२।२३	२।१५।२७।२५	२।१७।३२।२७	२।१९।३७।२८	२।२१।४०।४०	२।२३।४३।२६
	८	श	२।२५।४६।१२	२।२७।४८।५७	२।२९।५१।४३	३।१।५४।२९	३।३।५६।४९	३।५।५८।१३
	९	र	३।७।५९।३६	३।१०।१।०	३।१२।२।२४	३।१४।३।४७	३।१६।५।११	३।१८।५।५३
	१०	चं	३।२०।६।१७	३।२२।६।४१	३।२४।७।५	३।२६।७।२९	३।२८।७।५३	४।०।८।१३
	११	मं	४।२।८।२९	४।४।८।४५	४।६।९।२	४।८।९।१८	४।१०।९।३४	४।१२।९।५१
	१२	बु	४।१४।१०।२३	४।१६।११।१७	४।१८।१२।१२	४।२०।१३।६	४।२२।१४।१	४।२४।१४।५५
	१३	गु	४।२६।१५।५०	४।२८।१७।४७	५।०।२०।१	५।२।२२।१५	५।४।२४।२८	५।६।२६।४२
	१४	शु	५।८।२८।५६	५।१०।३१।३८	५।१२।३५।४०	५।१४।३९।४२	५।१६।४३।४३	५।१८।४७।४५
	३०	श	५।२०।५१।४७	५।२२।५५।४८	५।२५।१।३६	५।२७।७।४९	५।२९।१४।२	६।१।२०।१५
कार्तिकशुक्लपक्षः ।	१	र	६।३।२६।२८	६।५।३३।४१	६।७।४०।८	६।९।४९।०	६।११।५७।५१	६।१४।६।४३
	२	चं	६।१६।१५।३४	६।१८।२४।२६	६।२०।३३।५८	६।२२।४५।२८	६।२४।५६।५९	६।२७।८।२९
	३	मं	६।२९।२०।०	७।१।३१।३०	७।३।४३।२८	७।५।५७।३५	७।८।११।४२	७।१०।२५।४९
	४	बु	७।१२।३९।५६	७।१४।५४।३	७।१७।८।४२	७।१९।२५।२२	७।२१।४२।३	७।२३।५८।४३
	५	गु	७।२६।१५।२४	७।२८।३३।४	८।०।४९।२४	८।३।७।५६	८।५।२६।२८	८।७।४५।०
	६	शु	८।१०।३।३२	८।१२।२२।४	८।१४।४१।४७	८।१७।२।२३	८।१९।२२।५८	८।२१।४३।३४
	७	श	८।२४।४।१०	८।२६।२४।४५	८।२८।४६।३५	९।१।८।३३	९।३।३०।३१	९।५।५२।२९
	८	र	९।८।१४।२७	९।१०।३६।४२	९।१२।५९।४१	९।१५।२२।४०	९।१७।४५।३९	९।२०।८।३८
	९	चं	९।२२।३१।३७	९।२४।५४।५५	९।२७।१८।२२	९।२९।४१।५०	१०।२।५।१७	१०।४।२८।४५
	१०	मं	१०।६।५२।१०	१०।९।१५।२४	१०।११।३८।३९	१०।१४।१।५३	१०।१६।२५।८	१०।१८।४८।२९
	११	बु	१०।२१।११।१९	१०।२३।३३।५८	१०।२५।५६।३६	१०।२८।१९।१५	११।०।४१।५४	११।३।४।२२
	१२	गु	११।५।२६।१५	११।७।४७।५१	११।१०।९।२७	११।१२।३१।२	११।१४।५२।३८	११।१७।१३।४९
	१३	शु	११।१९।३३।४५	११।२१।५३।४२	११।२४।१३।३८	११।२६।३३।३५	११।२८।५३।३१	०।१।१३।२०
	१५	श	०।३।३०।६	०।५।४७।५३	०।८।५।३९	०।१०।२३।२६	०।१२।४१।१२	०।१४।५७।३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टाऽर्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः ।								
	१	र	०।१७।१३।२९	०।१९।२९।१४	०।२१।४५।०२	०।२४। ०।५१	०।२६।१६।३९	०।२८।२९।५४
	२	चं	१। ०।४३। ७	१। २।५६।२१	१। ५। ९।३४	१। ७।२२।४७	१। ९।३६। १	१।११।४७।४२
	३	मं	१।१३।५८।१४	१।१६। ८।४७	१।१८।१९।१९	१।२०।२९।५१	१।२२।४०।२४	१।२४।४९। ६
	४	बु	१।२६।२७। ०	१।२९। ४।५५	२। १।१२।४९	२। ३।२०।४४	२। ५।२८।३८	२। ७।३५।२५
	५	गु	२। ९।४०।५१	२।११।४६।१७	२।१३।५१।४३	२।१५।५७। ९	२।१८। २।३५	२।२०। ७।४८
	६	शु	२।२२।११। ४	२।२४।१४।२०	२।२६।१७।३६	२।२८।२०।५२	३। ०।२४। ८	३। २।२७।२४
	७	श	३। ४।२९।४७	३। ६।३१।२९	३। ८।३३।११	३।१०।३४।५४	३।१२।३६।३६	३।१६।३८।१८
	७	र	३।१६।४०। ०	३।१८।४०।३६	३।२०।४१।१२	३।२२।४१।४९	३।२४।४२।२५	३।२६।४३। १
	८	चं	३।२८।४३।३८	४। ०।४४।११	४। २।४४।२९	४। ४।४४।४७	४। ६।४५। ५	४। ८।४५।२३
	९	मं	४।१०।४५।४१	४।१२।४५।५९	४।१४।४६।२७	४।१६।४७। ५	४।१८।४७।४३	४।२०।४८।२१
	१०	बु	४।२२।४८।५९	४।२४।४९।३७	४।२६।५०।२२	४।२८।५१।१५	५। ०।५४। ८	५। २।५६। १
	११	गु	५। ४।५७।५५	५। ६।५९।४८	५। ९। १।४२	५।११। ४।२७	५।१३। ८। ०	५।१५।११।३३
	१२	शु	५।१७।१५। ६	५।१९।१८।३९	५।२१।२३।१२	५।२३।२५।५२	५।२५।३१।३१	५।२७।३७।११
	१३	श	५।२९।४३।५०	६। १।४८।२९	६। ३।५४। ९	६। ५।५९।४८	६। ८। ७। ९	६।१०।१५।११
	१४	र	६।१२।२३।२९	६।१४।३१।४०	६।१६।३९।५०	६।१८।४८। ०	६।२०।५७।२४	६।२३। ८।२२
	३०	चं	६।२४।१९।२०	६।२७।३०।१८	६।२९।४१।१६	७। १।५२।१४	७। ४। ४। २	७। ६।१७।२१
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः ।								
	१	मं	७। ८।३०।५६	७।१०।४४।२२	७।१२।५७।४९	७।१५।११।१६	७।१७।२५।३६	७।१९।४१।४४
	२	बु	७।२१।५७।५२	७।२४।१४। ०	७।२६।३०। ८	७।२८।४६।१६	८। १। ३।१५	८। ३।२१।१६
	३	गु	८। ५।३९।१६	८। ७।५७।१७	८।१०।१५।१८	८।१२।३३।१८	८।१४।५२।४५	८।१७।१२।५६
	४	शु	८।१९।३३। ७	८।२१।५३।१८	८।२४।१३।२९	८।२६।३३।४०	८।२८।५५।१८	९। १।१६।५९
	५	श	९। ३।३८।४०	९। ६। ०।२०	९। ८।२२। १	९।१०।४४। १	९।१३। ६।४७	९।१५।२९।३३
	६	र	९।१७।५२।२०	९।२०।१५। ६	९।२२।३७।५२	९।२५। १। १	९।२७।२४।१८	९।२९।४७।३५
	७	चं	१०। २।१०।५२	१०। ४।३४। ९	१०। ६।५७।२७	१०। ९।२०।५२	१०।११।४४।१६	१०।१४। ७।४१
	९	मं	१०।१६।३१। ६	१०।१८।५४।३०	१०।२१।१७।३८	१०।२३।४०।३२	१०।२६। ३।२६	१०।२८।२६।२०
	१०	बु	११। ०।४९।१४	११। ३।१२। ८	११। ५।३४। ०	११। ७।५५।४८	११।१०।१७।३६	११।१२।३९।२४
	११	गु	११।१५। १।१३	११।१७।२२।३६	११।१९।४३। २	११।२२। ३।२८	११।२४।२३।५४	११।२६।४४।२०
	१२	शु	११।२९। ४।४६	०। १।२३।५४	०। ३।४२।११	०। ६।००।२८	०। ८।१८।४६	०।१०।३७। ३
	१३	श	०।१२।५५।२०	०।१५।१२। ३	०।१७।२८।२५	०।१९।४४।४७	०।२२। १। ८	०।२४।१७।३०
	१४	र	०।२६।३३।५२	०।२८।४७।५०	१। १। १।३९	१। ३।१५।२८	१। ५।२९।१७	१। ७।४३। ६
	१५	चं	१। ९।५६।५५	१।१२। ८।२३	१।१४।१९।३६	१।१६।३०।४९	१।१८।४२। २	१।२०।५३।१५
पौषकृष्णपक्षः ।								
	१	मं	१।२३। ४।२८	१।२५।१३।१८	१।२७।२१।४९	१।२९।३०।२०	२। १।३८।५१	२। ३।४७।२२
	२	बु	२। ५।५५।५३	२। ८। २।४२	२।१०। ८।३९	२।१२।१४।३६	२।१४।२०।३३	२।१६।२६।३०
	३	गु	२।१८।३२।२७	२।२०।३७।४६	२।२२।४१।३६	२।२४।४५।२७	२।२६।४९।१७	२।२८।५३। ८
	४	शु	३। ०।५६।५८	३। ३। ०।४९	३। ५। ३। ६	३। ७। ५। ७	३। ९। ७। ८	३।११। ९। ९
	५	श	३।१३।११।१०	३।१५।१३।११	३।१७।१४।५०	३।१९।१५।३७	३।२१।१६।२४	३।२३।१७।११
	६	र	३।२५।१७।५८	३।२७।१८।४५	३।२९।१९।३२	४। १।१९।५९	४। ३।२०।१५	४। ५।२०।३१
	७	चं	४। ७।२०।४७	४। ९।२१। ३	४।११।२१।१९	४।१३।२१।३६	४।१५।२२। ८	४।१७।२२।४१
	८	मं	४।१९।२३।१३	४।२१।२३।४६	४।२३।२४।१८	४।२५।२४।५१	४।२७।२५।४६	४।२९।२७।१५
	९	बु	५। १।२८।४५	५। ३।३०।१४	५। ५।३१।४३	५। ७।३३।१३	५। ९।३४।४२	५।११।३७।२९
	१०	गु	५।१३।४०।२७	५।१५।४३।३९	५।१७।४६।३१	५।१९।४९।३४	५।२१।५२।३५	५।२३।५६।१९
	१०	शु	५।२६। १।३३	५।२८। ६।४७	६। ०।१२। ०	६। २।१७।१४	६। ४।२२।२७	६। ६।२७।४१
	११	श	६। ८।३४।५९	६।१०।४२।३०	६।१२।५०। २	६।१४।५७।३३	६।१७। ५। ५	६।१९।१२।३६
	१२	र	६।२१।२१।४५	६।२३।३१।५२	६।२५।४१।५९	६।२७।५२। ६	७। ०। २।१३	७। २।१२।२०
	१३	चं	७। ४।२३।४४	७। ६।३६।३१	७। ८।४९।१८	७।११। २। ५	७।१३।१४।५२	७।१५।२७।३९
	१४	मं	७।१७।४१।३५	७।१९।५६।५७	७।२२।१२।१९	७।२४।२७।४०	७।२६।४३। २	७।२८।५८।२४
	३०	बु	८। १।१४।५९	८। ३।३२।३५	८। ५।५०।१२	८। ८। ७।४८	८।१०।२५।२५	८।१२।४३। १

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टाऽर्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषुदैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

पौषशुक्लपक्षः ।

मासः / ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
२	गु	८।१५। १।५५	८।१७।२१।३२	८।१९।४१। ९	८।२२। ०।४६	८।२४।२०।२३	८।२६।४०। ०
३	शु	८।२९। १।२१	९। १।२२।४२	९। ३।४४। २	९। ६। ५।२३	९। ८।२६।४४	९।१०।४८।२६
४	श	९।१३।१०।५२	९।१३।३३।१८	९।१७।५५।४४	९।२०।१८।१०	९।२२।४०।३६	९।२५। ३।३१
५	र	९।२७।२६।३८	९।२९।४९।४५	१०। २।१२।५१	१०। ४।३५।५८	१०। ६।५९। ७	१०। ९।२२।२९
६	चं	१०।११।४५।५१	१०।१४। ९।१३	१०।१६।३२।३५	१०।१८।५५।५७	१०।२१।१९। ६	१०।२३।४२। २
७	मं	१०।२६। ४।५८	१०।२८।२७।५५	११। ०।५०।५१	११। ३।१३।४७	११। ५।३५।५६	११। ७।५८। २
८	बु	११।१०।२०। ८	११।१२।४२।१३	११।१५। ४।१९	११।१७।२५।५८	११।१९।४६।४१	११।२२। ७।२५
९	गु	०। ८।२५। ४	११।२६।४८।५१	११।२९। ९।३५	०। १।२९। ०	०। ३।४७।४१	०। ६। ६।२३
१०	शु	०।२२। ९।५९	०।१०।४३।४५	०।१३। २।२७	०।१५।१९।३०	०।१७।३६।२०	०।१९।५३।१०
११	श	०।२२। ९।५९	०।२४।२६।४९	०।२६।४३।३९	०।२८।५८। २	१। १।१२।३०	१। ३।२६।५७
१२	र	१। ५।४१।२४	१। ७।५५।५२	१।१०।१०। ६	१।१२।२१।५२	१।१४।३३।३७	१।१६।४५।२३
१३	चं	१।१८।५७। ८	१।२१। ८।५४	१।२३।२०।३९	१।२५।२९।४३	१।२७।३८।४७	१।२९।४७।५१
१४	मं	२। १।५६।५५	२। ३। ५।५९	२। ६।१५। ३	२। ८।२२। ४	२।१०।२८।३१	२।१२।३४।५८
१५	बु	२।१४।४१।२५	२।१६।४७।५२	२।१८।५४।१९	२।२०।५९।३९	२।२३। ३।५४	२।२५। ८।१०

माघकृष्णपक्षः ।

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	गु	२।२७।१२।२५	२।२९।१६।४०	३। १।२०।५६	३। ३।२५। ६	३। ५।२७।२४	३। ७।२९।४१
२	शु	३। ९।३१।५९	३।११।३४।१६	३।१३।३६।३४	३।१५।३८।५१	३।१७।४०।३१	३।१९।४१।३३
३	श	३।२१।४२।३५	३।२३।४३।३६	३।२५।४४।३८	३।२७।४५।४०	३।२९।४६।४१	४। १।४७। १
४	र	४। ३।४७।१५	४। ५।४७।३०	४। ७।४७।४४	४। ९।४७।५८	४।११।४८।१३	४।१३।४८।२९
५	चं	४।१५।४८।४९	४।१७।४९। ९	४।१९।४९।२८	४।२१।४९।४८	४।२३।५०। ८	४।२५।५०।२७
६	मं	४।२७।५१।१८	४।२९।५२।२९	५। १।५३।४०	५। ३।५४।५१	५। ५।५६। २	५। ७।५७।१३
७	बु	५। ९।५८।२४	५।१२। ०।५३	५।१४। ३।२४	५।१६। ५।५५	५।१८। ८।२९	५।२०।१०।५६
८	गु	५।२२।१३।२७	५।२४।१६।५६	५।२६।२१।३६	५।२८।२६।१६	६। ०।३०।५७	६। २।३५।३७
९	शु	६। ४।४०।१८	६। ६।४५। ४	६। ८।५१।५३	६।१०।५८।४२	६।१३। ५।३१	६।१५।१२।२०
१०	श	६।१७।१९। ९	६।१९।२५।५८	६।२१।३४।४८	६।२३।४४।२१	६।२५।५३।५४	६।२८। ३।२८
११	र	७। ०।१३। १	७। २।२२।३४	७। ४।३३।३२	७। ६।४५।३१	७। ८।५७।४६	७।११। ९।५४
१२	चं	७।१३।२२। १	७।१५।३४। ८	७।१७।४७।३६	७।२०। २।२१	७।२२।१७। ६	७।२४।३१।५२
१३	मं	७।२६।४६।३७	७।२९। १।२२	८। १।१७।३०	८। ३।३४।४१	८। ५।५१।५२	८। ८। ९। ३
१४	बु	८।१०।२६।१४	८।१२।४३।२५	८।१५। २। ०	८।१७।२१। ५	८।१९।४०।१०	८।२१।५९।१५
३०	गु	८।२४।१८।२०	८।२६।३७।२५	८।२८।५६।२३	९। १।१९।२१	९। ३।४०।१९	९। ६। १।१७

माघशुक्लपक्षः ।

ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
१	शु	९। ८।२२।१७	९।१०।४३।३५	९।१३। ५।४३	९।१५।२७।११	९।१७।४९।५९	९।२०।१२। ७
२	श	९।२२।३४।१५	९।२४।५७। ३	९।२७।२०। ७	९।२९।४३।११	१०। २। ६।१६	१०। ४।२९।२०
३	र	१०। ६।५२।२४	१०। ९।१५।४४	१०।११।३९। ४	१०।१४। २।२३	१०।१६।२५।४३	१०।१८।४९। २
४	च	१०।२१।१२।१५	१०।२३।३५।१९	१०।२५।५८।२४	१०।२८।२१।२८	११। ०।४४।३२	११। ३। ७।३७
५	मं	११। ५।२९।५६	११। ७।५२।१२	११।१०।१४।२८	११।१२।३६।४३	११।१४।५८।५९	११।१७।२०।५४
७	बु	११।१९।४१।५५	११।२२। २।५६	११।२४।२३।५७	११।२६।४४।५८	११।२९। ५।५९	०। १।२५।५४
८	गु	०। ३।४५।११	०। ६। ४।२९	०। ८।२३।४६	०।१०।४३। ४	०।१३। २।२१	०।१५।१९।५२
९	शु	०।१७।३७। ७	०।१९।५४।२३	०।२२।११।३८	०।२४।२८।५४	०।२६।४६। ४	०।२९। १। १
१०	श	१। १।१५।५८	१। ३।३०।५४	१। ५।४५।५१	१। ८। ०।४८	१।१०।१५।२६	१।१२।२७।४१
११	र	१।१४।३९।५७	१।१६।५२।१२	१।१९। ४।२८	१।२१।१६।४३	१।२३।२८।५२	१।२५।३८।३१
१२	चं	१।२७।४८।१०	१।२९।५७।४९	२। २। ६।२८	२। ४।१७। ७	२। ६।२६।४६	२। ८।३३।५६
१३	मं	२।१०।४०।५९	२।१२।४८।१२	२।१४।५५। ५	२।१७। २। ८	२।१९। ९।११	२।२१।१४।५१
१४	बु	२।२३।१९।३५	२।२५।२४।१९	२।२७।२९। ४	२।२९।३३।४८	३। १।३८।३२	३। ३।४२।५५
१५	गु	३। ५।४५।३८	३। ७।४८।२२	३। ९।५१। ५	३।११।५३।४९	३।१३।५६।३२	३।१५।५९।१६

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००९ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकस्चन्द्रः स्पष्टः।

मास.	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
फाल्गुनकृष्णपक्षः।	१	शु	३।१८। १। २	३।२०। २।१७	३।२२। ३।३२	३।२४। ४।४६	३।२६। ६। १	३।२८। ७।१६
	२	श	४। ०। ८।२६	४। २। ८।५१	४। ४। ९।१६	४। ६। ९।४२	४। ८।१०। ७	४।१०।१०।३२
	२	र	४।१२।१०।५८	४।१४।११।१५	४।१६।११।२२	४।१८।११।२९	४।२०।११।३७	४।२२।११।४४
	३	चं	४।२४।११।५१	४।२६।११।५९	४।२८।१२।४२	५। ०।१३।३४	५। २।१४।३७	५। ४।१५।२९
	४	मं	५। ६।१६।२२	५। ८।१७।१४	५।१०।१८।१९	५।१२।२०।२७	५।१४।२२।३६	५।१६।२४।४४
	५	बु	५।१८।२६।५२	५।२०।२९। १	५।२२।३१। ९	५।२४।३४।२६	५।२६।३८।३०	५।२८।४२।३४
	६	गु	६। ०।४६।३७	६। २।५०।४१	६। ४।५४।४५	६। ६।५९। ९	६। ९। ५।२६	६।११।११।४३
	७	शु	६।१३।१८। ०	६।१५।२४।१७	६।१७।३०।३४	६।१९।३६।५१	६।२१।४५।१२	६।२३।५४। १
	८	श	६।२६। ३।५१	६।२८।११।४०	७। ०।२०।३०	७। २।२९।१९	७। ४।३९।४८	७। ६।५१।२१
	९	र	७। ९। २।५३	७।११।१४।२६	७।१३।२५।५९	७।१५।३७।३१	७।१७।५०।२७	७।२०। ४।३८
	१०	चं	७।२२।१८।४९	७।२४।३३। १	७।२६।४७।१२	७।२९। १।२३	८। १।१६।५८	८। ३।३३।३६
	११	मं	८। ५।५०।१४	८। ८। ६।५३	८।१०।२३।३१	८।१२।४०। ९	८।१४।५८। ६	८।१७।१६।३५
	१२	बु	८।१९।३५। ४	८।२१।५३।३४	८।२४।१२। ३	८।२६।३०।३२	८।२८।५१। २	९। १।११।४०
	१३	गु	९। ३।३२।१८	९। ५।५२।५७	९। ८।१३।३५	९।१०।३४।३०	९।१२।५६।१८	९।१५।१८।[illegible]
	१४	शु	९।१७।३९।५५	९।२०। १।४३	९।२२।२३।३१	९।२४।४५।५९	९।२७। ८।५३	९।२९।३१।४७
	३०	श	१०। १।५४।४१	१०। ४।१७।३५	१०। ६।४०।२९	१०। ९। ३।४८	१०।११।२७। ८	१०।१३।५०।२७
फाल्गुनशुक्लपक्षः।	२	र	१०।१६।१३।४७	१०।१८।३७। ६	१०।२१। ०।२०	१०।२३।२३।२४	१०।२५।४६।२८	१०।२८। ९।३३
	३	चं	११। ०।३२।३७	११। २।५५।४१	११। ५।१८।११	११। ७।४०।३५	११।१०। २।५८	११।१२।२५।२२
	४	मं	११।१४।४७।४५	११।१७। ९।५६	११।१९।३१।१९	११।२१।५२।४२	११।२४।१४। ५	११।२६।३५।२८
	५	बु	११।२८।५६।५१	०। १।१७।१८	०। ३।३७। ०	०। ५।५६।४२	०। ८।१६।२३	०।१०।३६। ५
	६	गु	०।१२।५५।४७	०।१५।१३।४२	०।१७।३१।१४	०।१९।४८।४६	०।२२। ६।१९	०।२४।२३।५१
	७	शु	०।२६।४१।२१	०।२८।५६।५४	१। १।१२।२७	१। ३।२८। १	१। ५।४३।३४	१। ७।५९। ७
	८	श	१।१०।१४।२४	१।१२।२७।१५	१।१४।४०। ६	१।१६।५२।५७	१।१९। ५।४८	१।२१।१८।३९
	९	र	१।२३।३१।१७	१।२५।४१।३०	१।२७।५१।४३	२। ०। १।५७	२। २।१२।१०	२। ४।२२।२३
	१०	चं	२। ६।३२।३७	२। ८।४०।२०	२।१०।४७।५३	२।१२।५५।२७	२।१५। १। ०	२।१७।१०।३[illegible]
	११	मं	२।१९।१८।१७	२।२१।२४। ५	२।२३।२९।१७	२।२५।३४।२९	२।२७।३९।४०	२।२९।४४।५[illegible]
	१२	बु	३। १।५०। ४	३। ३।५४।५३	३। ५।५७।५६	३। ८। ०।५९	३।१०। ४। १	३।१२। ७।[illegible]
	१३	गु	३।१४।१०। ७	३।१६।१३। ९	३।१८।१४।४३	३।२०।१६। ८	३।२२।१७।३४	३।२४।१८।५[illegible]
	१४	शु	३।२६।२०।२५	३।२८।२१।५०	४। ०।२३। ६	४। २।२३।२९	४। ४।२३।५२	४। ६।२४।[illegible]
	१५	श	४। ८।२४।३९	४।१०।२५। २	४।१२।२५।२६	४।१४।२५।४२	४।१६।२५।५३	४।१८।२६।[illegible]
चैत्रकृष्णपक्षः।	१	र	४।२०।२६।१५	४।२२।२६।२६	४।२४।२६।३७	४।२६।२६।४८	४।२८।२७।२२	५। ०।२८।[illegible]
	२	चं	५। २।२८।३८	५। ४।२९।१६	५। ६।२९।५४	५। ८।३०।३२	५।१०।३१।२९	५।१२।३३।३०
	३	मं	५।१४।३५।१२	५।१६।३७। ३	५।१८।३८।५५	५।२०।४०।४६	५।२२।४२।३८	५।२४।४५।४[illegible]
	४	बु	५।२६।४९।१६	५।२८।५२।५१	६। ०।५६।२६	६। ३। ०। १	६। ५। ३।३६	६। ७। ७।४[illegible]
	५	गु	६। ९।१३।२५	६।११।१९।१०	६।१३।२४।५५	६।१५।३०।४०	६।१७।३६।२५	६।१९।४२।१०
	५	शु	६।२१।५०। ८	६।२३।५८।२६	६।२६। ६।४५	६।२८।१५। ३	७। ०।२३।२२	७। २।३१।४०
	६	श	७। ४।४१।४१	७। ६।५२।४३	७। ९। ३।४६	७।११।१४।४८	७।१३।२५।५१	७।१५।३६।५३
	७	र	७।१७।४९।१४	७।२०। २।४७	७।२२।१६।२०	७।२४।२९।५४	७।२६।४३।२७	७।२८।५७। ०
	९	चं	८। १।११।५७	८। ३।२८। ७	८। ५।४४।१७	८। ८। ०।२८	८।१०।१६।३८	८।१२।३२।४८
	१०	मं	८।१४।५०।१०	८।१७। ८।११	८।१९।२६।१२	८।२१।४४।१२	८।२४। २।१३	८।२६।२०।१४
	११	बु	८।२८।४०। ८	९। १। ०।२२	९। ३।२०।३५	९। ५।४०।४९	९। ८। १। २	९।१०।२१।१६
	१२	गु	९।१२।४३।१०	९।१५। ४।५१	९।१७।२६।३१	९।१९।४८।१२	९।२२। ९।५३	९।२४।३१। ३
	१३	शु	९।२६।५४।४४	९।२९।१७।२५	१०। १।४०। ७	१०। ४। २।४८	१०। ६।२५।२९	१०। ८।४८।१०
	१४	श	१०।११।११।५०	१०।१३।३५। २	१०।१५।५८।१४	१०।१८।२१।२६	१०।२०।४४।३८	१०।२३। ०।४१
	३०	र	१०।२५।३१।५०	१०।२७।५४।५७	११। ०।१७। ४	११। २।४०।११	११। ५। ३। २	११। ७।२५।४७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रणम्य भारतीं देवीं पादाब्जं श्रीगुरोरपि ।
वक्ष्येऽहं सुमुहूर्तादीन् लोकानां हितवाञ्छया ॥

सं० २००६ मध्ये विवाहादिमुहूर्ताः ।

अथ समयशुद्धिः

गुर्वस्तः—चै. शु. ११ रविवार से वै. शु. १० रविवार तक (सौर मान से चै. प्र. २५ वै प्र. २२ तक) गुरु का अस्त रहेगा ।

शुक्रास्तः—ज्ये. कृ. १३ बुधवारसे श्रा. शु. १० भृगुवार तक (सौरमान से ज्ये. प्र. ८ से श्रा. प्र. १७ तक) पूर्व में शुक्र का अस्त रहेगा । ग्रहलाघवकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं वह स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं । सूक्ष्म-स्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्य्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं सो हमने वही स्पष्ट करके लिखे हैं आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं ।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भांति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है ।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाहमुहूर्तानि
सर्वदेशों के लिये—

वै. प्र. २५ बुधे चि. (गुरुबाल्यत्वदोषः घ. ४२ या) ।।।ऽस्वा.।ऽ।।। ल. ९

मार्ग. प्र. १४ शु. अश्वि. ऽमू.ऽ।।ऽ श ।ऽ।।। ल. ऽन्यगो.५सिंहे रेखा ५ नृप पं. घ. ४१ उ.

मार्ग. प्र. १७ चं. रो. ।।।ऽ मू. ।।ऽ।। ल. ५।६

मार्ग. प्र. २५ मं. उफा. ।।।।ऽ चौ. ऽऽ।। ल ६ गुरोरष्टमस्थदोषः ।

मार्ग. प्र. २६ बु. उफा. ।।।।ऽ चौ. घ. २८ या. ऽऽ।। ल. ऽन्यगो. ५ सिंहस्योत्तरार्द्धे नक्षत्रान्त दो. ।

मा. प्र. ७ चं. उभा. ।।।।ऽ चौ. ऽ।। ल. ९शु. ३ स्थित पू.

मा. प्र. ८ मं. उभा. ।।।।ऽ चौ. घ. ३१ या. ।।। ल.ऽन्य गो. अष्टमे शुक्रभौमौ क्षयतिथिदोषश्च,

मा. प्र. ८ मं. रे. ऽमं. ।।।।ऽऽ।। ल. ९ शु. तृतीयस्थ पू.

मा. प्र. ९ ब. रे. ऽमं. ।।।ऽ रो. घ. ९९उ. ऽऽ।। ल.ऽन्यगो.

मा. प्र. १० गु. ऽश्वि. ।।।ऽ शऽरो. ।ऽ।। ल. ऽन्यगो.

मा. प्र. २४ गु. स्वा. (भद्रा ५२।१४ या.) ।ऽ।।।।।।। ल९

मा. प्र. २५ शु. स्वा. ।ऽ।।ऽचौ ।।।। ल. ऽन्यगो.

मा. प्र. २६ श. ऽनु. ऽबु. ।।ऽवृ ।।।ऽ।। ल. ९ पादवेधाद्वेधाभावः ।

मा. प्र. २७ र ऽनु. ऽबु. ।।ऽ वृ. ।ऽ रो. ।ऽ।। ल. ऽन्यगो. (पादवेधाद्वेधाभावः)

मा. प्र. २८ चं. मू. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. ८ शनिपूज्य

फा. प्र. ७ बु. ऽश्वि. ऽमं. ।।।ऽ श ऽ चौ. ।।।। ल. ऽन्यगो९

फा. प्र. २४ श. ऽनु (भ० ३१।३१ या) गु. `. ऽवं ऽ।ऽ बु ।।।।। ल. ९ (पादतो वेधाभावः)

देशाचार से केवल पंजाव देशके लिए :—

श्रा. प्र. २५ श. रे. ।।।।ऽ श. ।।ऽ।। ल. ३ शुक्रः पू.

श्रा. प्र. २६ र. रे. ।।।।ऽ श. ऽचौ. ।ऽ।ऽ ल. गो.

श्रा. प्र. २९ बु. रो. ऽरा. ।।।।।।ऽ।। ल. ३ शु. पू.

भा. प्र. ७ शु. उफा. ।।।।ऽ चौ. घ. ४८ उ. ऽ।।। ल. ऽन्यगो. वा ३

भा. प्र. ९ श. चि. भद्रा ४८।४१ या. ।।।।ऽरो. घ. ५३ उ. ।ऽ।। ल. ६ घ. ४८।४१ उ.

भा. प्र. १० चं. चि. ।।।।।ऽ रो. ।ऽ।। ल.ऽन्यगो.

भा. प्र. १० चं. स्वा. ।।।।।ऽ रो. ।।।। ल. ३

भा. प्र. ११ मं. स्वा. ।।।।।।।।। ल. ऽन्यगो.

भा. प्र. १७ चं. श्र. ।।।।।ऽ चौ. ।।।। ल. ऽन्यगो.

आश्वि. प्र. ९ बु. ऽनु. ।।।। ऽवृ. ऽ रो. घ. ४४ उ. ।।।। ल. ऽन्यगो. सिंहे तृतीयस्थशुक्र दो ।

आश्वि. प्र. १२ श. उ. षा. ।।।।ऽ अग्नि ऽ।।। ल. ५ शुक्रपूज्यः

आश्वि. प्र. १३ र. उ. षा ।।।।ऽ अग्नि ऽ।।। ल. गो.

आश्वि. प्र. २३ बु. मू. ऽवं ऽ।।।ऽ।।। ल. ५ अ. प्र. दा.

का. प्र. ८ गु. मू. ।।।।।ऽ चौ. ।।।। ल. ऽन्यगो. (सिंहे रेखासप्त एकार्गलोपग्रही)

का. प्र. १० श. उ. षा भद्रा ३६।१४ उ. ऽश ।।।।ऽ रो. ऽऽ।। ल. ऽन्यगो.

का. प्र. ११ र. श्र. ऽमं. ऽ।।।।ऽऽ।। ल. ऽन्यगो.

का. प्र. १५ गु. उ. भा.ऽमू. ।।।।ऽ नृ. ऽ।।। ल. ऽन्यगो.

का. प्र. १६ शु. रे. ।ऽ।।।।।।। ल. ऽन्यगो. श्रा. दानात्

का. प्र. १६ शु. ऽश्वि. ।।।।ऽ श. ।ऽऽ।। ल. ५ श्रा. दा.

का. प्र. १९ चं. रो. परिघार्द्धं ५१।२१ उ.ऽरा.।।।ऽरो।।।।ल.५

का. प्र. २६ चं. मं. ।।।।ऽश. ऽचौ. ऽऽ।। ल. ऽन्यगो.

अशुद्ध (सदोष) विवाहमुहूर्ताः

वै. प्र. २६ गु. स्वा. व्यतिपातदोषः ।

वै. प्र. २८ श. ऽनु. परिघार्द्धम् घ.५०या. पश्चाल्लग्नाभावः

व. प्र. ३० चं. मू. मृत्युपंचकम् ।

ज्ये. प्र. १ बु. उ. षा. क्रान्तिसाम्यम् ।

ज्ये. प्र. २ गु. श्र. क्रान्तिसाम्यं मृत्युपंचकं च ।

ज्ये. प्र. ३ शु. घ. राहुयुतिः ।

ज्ये. प्र. ५ र. उ. भा. भद्रा ५७।१४ या. शुक्रवृद्धत्वदोषः घ. ४०।१२ उ. पूर्व भद्राच ।

ज्य. प्र. ६ चं. उ.भा. शुक्रवृद्धत्वदोषः ।

श्रा. प्र. २० चं. उ. षा. शुक्रबाल्यत्वं घ. ५० या. भद्रा ५५।४ उ. मध्ये लग्नाभावः ।

श्रा. प्र. २१ मं. श्र. मृत्युपंचकम् ।

श्रा. प्र. २२ बु. ध. राहुयुति केतोर्वेधः ।

श्रा. प्र. २४ शु. उ.भा. शनिवेधः ।

श्रा. प्र. २५ श. उभा. शनिवेधः ।

श्रा. प्र. २६ र. अश्वि. ऽचं. ऽ।।।ऽ चौ. ऽ।। ऽ रेखाल्पत्वम् ५

श्रा. प्र. २७ चं. अश्वि. भद्रादोषः ।

श्रा. प्र. ३० गु. रो. मृत्युपंचकम् भद्रा ४३।३५ उ.

श्रा. प्र. ३० गु. मृ. मृत्युपंचकम् भद्रा च ।

भा. प्र. ८ श. उ.फा. नक्षत्रान्तः ।

भा. प्र. ८ श. ह. शनियुतिः ।

भा. प्र. ९ र. ह. लग्नाभावः शनियुतिश्च भद्रा ।

भा. प्र. १२ बु. अनु. वैधृति. भद्रा ४७।३० उ. मृत्युपंचकम्

भा. प्र. १३ गु. अनु. वैधृतिदोषः ।

भा. प्र. १४ शु. मू. ऽमं. ।।।।।ऽ।ऽ

भा. प्र. १५ श मू. ऽधं. ।।।ऽ नृ. ऽऽ।ऽ

भा. प्र. १६ र. उ. षा. ।।।।।ऽ।।। लग्नाभावः ।

भा. प्र. १८ मं. ध. राहुयुति केतोर्वेधः

आ. प्र. ६ र. चि. शुक्रयुतिः ।

आ. प्र. ७ चं. स्वा. वैधृतिदोषः

आश्वि. प्र. ११ शु. मूला भ. ४० या. मृत्यु ४६ उ.

आ. प्र. १२ र. श्र. लग्नाभावः ।

आ. प्र. १४ चं. श्र. भद्रादोषः

आ. प्र. १४ चं. ध. भद्रा ५०।५१ या. राहुयुति केतुवेधः

आ. प्र. १५ मं. ध. राहोर्युतिः

आ. प्र. १७ गु. उ. भा. क्रान्तिसाम्यम् शनि, रवि, वेधश्च

आ. प्र. १८ शु. रे. क्रान्तिसाम्यम् ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आ. प्र. १९ श. अश्वि. ।।।ऽ बु. श. ऽ रो. ऽ।। ल०
आ. प्र. २२ मं. रो. व्यतिपातः ३५।४१ उ. ऽ रा. ।।।ऽ
अग्नि ।ऽ।।
आ. प्र. २८ चं. म. ।।।ऽ रा. ऽ रो. ऽऽ।। लग्नाभावः ।
आ. प्र. २९ मं. म. ।।।ऽ रा. ।ऽऽ।। लग्नाऽभावः ।
का. प्र. १ गु. उ. फा. कृष्णानंगचतुर्दिनम् ।
का. प्र. ६ सं. अनु. शुक्रयुतिः ।
का. प्र. १२ चं. ध. मृत्युपंचकम् कान्तिसाम्यम् ३१।१६
उप. राहुयुति के. वेधः
का. प्र. १४ बु. उ. भा. अनु.।।।।ऽ।।ऽ लग्नाऽभावः
का. प्र. १५ गु. ` . ।ऽ।।।ऽनृ. ।।।। लग्नाभावः ।
का. प्र. १७ श. अश्वि. ।।।ऽ श ऽ चो ऽऽ।। लग्नाभावः ।
का. प्र. २० मं. रो. भद्रादोषः ।
का. प्र. २० मं. मृ. भद्रा ५० या. पश्चाल्लग्नाऽभावः ।
का. प्र. २१ बु. मृ. मृत्युपंचकम् ।
का. प्र. २८ बु. उ. फा. वैधृति ५०।३६ या पश्चाल्लग्ना-
भावः ।
का. प्र. २९ गु. ह. ।।।।।।।।ऽ दग्धादोषः ।
का. प्र. ३० शु. ह. मृत्युपंचकम् कृष्णानंग चतुर्दिनं च ।
का. प्र. ३० शु. चि. ,, ,, शनियुतिश्च ।
मार्ग. प्र. ५ बु. मू. ।।ऽ शु. ।।।ऽ।।। शुक्रयुतिः ।
मार्ग. प्र. ६ गु. मू. ।।।।ऽ नृ. ऽ।।। लग्नाऽभावः ।
मार्ग. प्र. ७ शु. उ. षा. ऽ श. ऽऽ भौमयुतिः ।
मार्ग. प्र. ८ श. उ. षा. नक्षत्रगण्डान्तः ।
मार्ग. प्र. ८ श. श्र. राहोर्युतिः ।
मार्ग. प्र. ९ र. ध. केतोर्वेधः ।
मार्ग. प्र. १२ बु. उ. भा. मृत्युपंचकम् ४३या. पश्चाल्लग्नाभावः
मार्ग. प्र. १३ गु. रे. व्यतिपातः २७।५१ उ. भ ३८ या.
भद्राव्यतिपातः ।
मार्ग. प्र. १८ सं. मृ. शुक्रवेधः ।
मार्ग. प्र. २३ र. म. वैधृति दोषः राहु वेधश्च ।
मार्ग. प्र. २४ चं० म. राहुवेधः ।
मार्ग. प्र. २६ बु. ह. लग्नाभावः ।
मार्ग. प्र. २७ गु. ह. भद्रा ३१।३७ उ. ।।।।।।ऽ।ऽ
मार्ग. प्र. २७ गु. चि. शनियुतिः ।
मार्ग. प्र. २८ शु. चि. शनियुतिः ।
मार्ग. प्र- २८ शु. स्वा. लग्नाऽभावः
मार्ग. प्र. २९ श. स्वा. मृत्युपंचकम् ।

अत्र वक्ष्यिक्मृतिकृष्णिदोषस्तेषामन्यतमं सुधीभिः ।

भुजंग कान्तिसाम्येऽपि वाणवेध तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहान्तं कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

कात्यायनेन मुनिना तु विवाहताराः
अश्वावती शबलकर्णधनिष्ठकाख्याः ।
उक्तास्तदार्षमतमान्यतयाऽभ्युपेयं,
सर्वैर्बुधैर्भरतभूमिभवैरशङ्कम् ॥

गत सं० २००७ वि० से मैं वेद के कल्प भाग अर्थात् पारस्कर गृह्यसूत्र की चतुर्थी कण्डिका के प्रथम काण्डोक्त-सप्तमसूत्र "त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु के प्रमाणानुसार आश्वि० चि० श्र० ध० इस नक्षत्र चतुष्टयी के साहे भी शोधकर लिख रहा हूं । जिसे देखकर अमृतसर में गत सं० २००७ द्वि० आषाढ़ शु, ३ को सायंकाल के ६ बजे श्री गङ्गाराम जी के शिवालयमें वयोवृद्ध श्री पं० वैकुण्ठ नाथजी जेतलीके सभापतित्व में सुयोग्य विद्वानों की एक विराट सभा हुई थी, जिसमें महर्षि श्री पूज्य चिट्ट बल्लूजी के वंशधर सुयोग्य पं० गिरिधारीलालजी सूर्यपंचाङ्ग कर्ता आदि भी पधारे थे परस्परवाद विवाद के अनन्तर सिद्धान्ततः निर्णय हुआ था कि श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग में जो महर्षि कात्यायन के मत से पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त अन्य श्रवणादि ४ नक्षत्रों में विवाह लगाये हैं वह भी सर्वथा पुनीत और शास्त्र सम्मत हैं । जो श्रद्धालु सज्जन वैदिक आर्ष ग्रंथों में श्रद्धा रखते हों, वे निःसंकोच इन नक्षत्रों में विवाह कर सकते हैं ।

इस सभा के अनन्तर सं० २००७ मार्गशीर्ष प्र० १८ को श्री पं० ज्ञानचंद्र जी ज्यो० लाहौरवालों ने सेठ मदन लाल द्वारकादासादिकी सहायता से हिंदूसभा कालेज अमृत-सर में फिर इन पारस्करगृह्यसूत्रोक्त नक्षत्रों में विवाह निर्णयार्थ सभा बुलाई। जिसमें सबसे पहले श्रीमान् पं० ज्ञानचन्द्रजी ज्यो० जी ने तथा श्री पं० गुरुमुखराय जी वैद्यराज ने श्रवणादि नक्षत्रों के समर्थन में विद्वत्तापूर्ण भाषण दिये। तदनु श्री पं० लालचन्द्र जी के सुपुत्र पं० ज्ञानचन्द्र जी जेतलीने उपर्युक्त नक्षत्रों के समर्थन में बड़ी ही गवेषणापूर्ण प्रभावोत्पादक व्यवस्था सुनाई ॥

तदनन्तर मैंने भी यथामति कहा कि महर्षि कात्यायन त्रिकाल दर्शी थे। उन्होंने हमारे अर्थात् यजुर्वेदियों के लिए यह श्रवणादि नक्षत्रचतुष्टयी भी विवाहार्थ शुभ कही हैं अन्य साम तथा ऋग्वेदियों के लिए नहीं। इसीलिये "सत्कृत्यमुक्तावलि" ग्रन्थ में लिखा है—चित्राश्रवण धनिष्ठाश्विनी नक्षत्र यजुर्वेदि विवाहः ।

अर्थात्—चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी नक्षत्र में यजुर्वेदियों का विवाह होता है इत्यादि। तत्पश्चात् विपक्ष के कई एक माननीय विद्वानों व सहयोगियों ने भी इस नक्षत्र चतुष्टयी में वृथा ही दोष दिखलाते हुए परतः प्रमाणअर्थात् निबंधोक्त प्रमाणों से खण्डन करना चाहा था, परन्तु वे तत्त्वतः खण्डन न कर सके। क्योंकि कहा है—

वेदाः प्रमाणं प्रथमं सूत्रमेव ततः परम् ।
स्मृतयश्च पुराणानि भारते मुनिपुङ्गवाः
अन्यान्यपि मुनिश्रेष्ठा शास्त्राणि सुबहूनि च
सर्वं वेदाविरोधेन प्रमाणं नान्यवर्त्मना (सूतसंहिता)

सुयोग्य वैदिक विद्वानों को सम्यकतया ज्ञात है कि जो दोष इन नक्षत्रों में निबन्धकारों ने लिखे हैं वे साम व ऋग्वेदियों के लिए हैं, हम यजुर्वेदियों पर वह दोष लागू नहीं हो सकते। अन्यथा सूत्र व्यर्थ हो जाता है। जो कि स्वतः प्रमाण होने के कारण असंभव है। श्रुतिस्मृति विरोधे श्रुतिरेव बलीयसी, स्मृतिपुराणयोर्विरोधे स्मृतिरेव बलवती ।

प्राचीन काल में तो यजुर्वेदियों के इन नक्षत्रों में विवाह सदैव होते थे, परन्च कुछ काल पश्चात् विद्वानों का वैदिक ग्रन्थों की ओर जैसा ध्यान होना चाहिए था, वैसा न होनेके कारण ही इन नक्षत्रों में विवाह न करने की भूल हुई है। इन नक्षत्रों की तरह अपने वेद की शाखा सूत्र के अनुसार कोई वार एक को शुभ है तो दूसरे वेद शाखादि के अनुसार कर्म करनेवालों को अशुभ फल देने वाला होता है। जैसे—मंगलकर यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत संस्कार में ज्योतिः प्रकाशानुसार अशुभ है (मरणं च भौमे) और उधर वही सामवेदियों के लिए शुभफलप्रद है यदि हम सामवेदियों को (मरणं च भौमे) का प्रमाण देकर भौमवार उनके लिए अशुभ सिद्ध करना चाहें, तो वह अपने सामवेद की मर्यादानुकूल "सामवेदानां कुंजवारेप्युपन-यनमिति स्मार्तभट्टाचार्येणोक्तम्" कहकर हमारे प्रमाण को नहीं मानेंगे।

माननीय विचारशील विद्वज्जनोंको चाहिए कि अपने वेद की शाखा सूत्र के अनुसार स्वकर्तव्यकर्मानुष्ठान करने में शंकाशील न हों क्योंकि वेद के विधि भाग में भगवान् कात्यायन कभी अशुद्ध सदोष नहीं लिख सकते थे (श्रुतिर्यत्रप्रमाणं स्याद्युक्तिका तत्र नारद)। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इन सूत्रोक्त नक्षत्रों के अनुसार पंजाब व यू०पी०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

के कई पंचाङ्ग कर्ता विवाह मुहूर्त लिखने को उद्यत हुए हैं। जिनके शुभ नाम आगामी पंचाङ्ग में लिखे जावेंगे। पूर्वी पंजाब में बहुत जगह इन नक्षत्रों में साहे होचुके हैं। उदाहरणार्थ श्री पं० यमुनादत्तजी विद्यासागर महोदय ने अमृतसर कटरा सुफेद कूचा टैंनी में लाला विशनदास क्षत्रिय के यहां गत सं० २००७ के आश्विन प्र० ७ को धनिष्ठा नक्षत्र में विवाह करवाकर पारस्करगृह्यसूत्र पर अटूट श्रद्धा प्रकट की है तदर्थ धन्यवाद।

विद्वज्जनो! कुतर्क से आर्षमत का खण्डन नहीं हो सकता। कहा है:—

या वेदवाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः। सर्वास्ता निष्फला प्रेत्य तमो निष्ठा हि ताः स्मृताः। उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानि चित्। तान्यर्वाक्कालिकतया निष्फलान्यनृतानि च ॥ मनुः ॥ (पञ्चाङ्ग कर्ता)

नोट—१ यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुंच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकालतक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ॥

२ विवाहादि मुहूर्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांशों पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और यही जम्बू पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्तचिन्तामणि, मूहूर्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये 'प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा ॥

३ यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५—७'दिन के भीतर विवाह मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयां पेड़े माष हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये।

उपनयनमुहूर्त

चै० शु० २ गुरु रे० अश्वि०
चै० शु० ५ रवि रो० (९।५७ उ०)
ज्ये० कृ० २ रवि अनु०
फा० कृ० २ रवि पू० फा० (५।४८ उ०)
फा० शु० २ रवि शत
फा० शु० ५ बुध रे०। अश्वि चै० कृ० ५ गुरु स्वा० अत्यावश्ये

नोट—आत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है।

द्विरागमनमुहूर्त

मार्ग० शु० ३ गुरु० मूला०। मार्ग० शु० ६ रवि० श्र०
मार्ग० शु० १० बुध० उ० भा०। मार्ग० शु० १५ चन्द्र० रो०
पौष० कृ० १० गुरु० हस्त। फा० शु० ३ चन्द्र उ० भा०
फा० शु० ५ बुध रे० अश्वि०

सूचना—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर आवे तो उसमें कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे ऐसे समय पतिगृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है।

जैन पर्व निर्णयः श्री वीर सं० २४७८—७९ आत्म सं० ५६—५७ शाका सं० १८७४ वि० सं० २००९ ई० सं० १९५२-५३

नाम पर्व	तिथि			वार	सं० प्रविष्टे			अं० तारीख		सन
श्रीबुद्धि विजय (बूटेराये) जी कास्वर्ग	चैत्र	सुदी	१	बधवार	चैत्र	दिन	१४	२६	मार्च	१९५२
श्रीमद्विजयानन्द (आत्मराम) जन्मदिन		,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली शुरु	,,	,,	८	,,	,,	,,	२१	२	एप्रैल	१९५२
श्रीवधमान (महावीर) जयन्ती		,,	१३	मं०	,,	,,	२७	८	,,	१९५२
श्रीसिद्धचक्र ओली संपूर्ण सिद्धाचल मेला		,,	१५	गु०	,,	,,	२९	१०	,,	१९५२
श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ०	वै०	,,	१३	रवि	वै०	,,	१५	२७	,,	,,
श्रीविजयानन्द (आत्माराम) स्वर्गदिन- (अत्मसंवत् ५७ शुरु)	ज्ये०	,,	८	रवि	ज्ये०	,,	१९	१	जून	,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	आ०	,,	७	रवि	आ०	,,	१६	२९	,,	,,
चौमासी चौदस १४	आ०	,,	१४	रवि	आ०	,,	२३	६	जु०	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	आ०	,,	१५	चं०	आ०	,,	२४	७	जु०	,,
श्रीनेमीनाथ जी का जन्म	श्रा०	,,	५	रवि	श्रा०	,,	१२	२७	जु०	,,
श्रीपर्यूषण पर्व अठाई शुरु	भाद्र०	बदी	१२	रवि	भा०	,,	२	१७	अ०	,,
श्रीकल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण	,,	,,	१४	मं०	भा०	,,	४	१९	अ०	,,
श्रीकल्पसूत्र वांचना प्रारंभ	,,	,,	३०	बु०	भा०	,,	५	२०	अ०	,,
श्रीवीरजन्म उत्सव	,,	शु०	१	गु०	भा०	,,	६	२१	अ०	,,
श्रीसंवत्सरीपर्व	,,	,,	४	रवि	भा०	,,	९	२४	अ०	,,
विजयहीर सुरी स्वर्गदिन	,,	,,	११	रवि	भा०	,,	१६	३१	अ०	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली शुरू	आश्विन	,,	६	गुरु	आश्विन	,,	१०	२५	सि०	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली संपूर्ण	,,	,,	१५	शु०	,,	,,	१८	३	अक्टू०	,,
श्रीवर्धमान (निर्वाण) दीपावली	कार्तिक	बदी	३०	श०	कार्तिक	,,	२	१८	,,	,,
श्रीगौतमस्वामीकेवल ज्ञान वी०२४७९	,,	शुदी	१	रवि	,,	,,	३	१९	,,	,,
भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्म	,,	,,	२	चं०	,,	,,	४	२०	,,	,,
ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	,,	,,	५	गुरु	,,	,,	७	२३	,,	,,
चौमासी अठाई शुरु	,,	,,	६	शु०	,,	,,	८	२४	,,	,,
चौमासी चौदस १४	,,	,,	१३-१४	शु०	,,	,,	१५	३१	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण (सिद्धाचल-हस्तिनापुर मेला) कार्तिकी पूनम	,,	,,	१५	श०	,,	,,	१६	१	नवं०	,,
मौन एकादशी	मार्ग	,,	११	गुरु	मार्ग	,,	१३	२७	,,	,,
पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्म	पौष	बदी	१०	शु०	मा०	,,	२८	१२	दि०	,,
ऋषभदेव मोक्षमेक थयोदशी	माघ	,,	१३	मं०	माघ	,,	१	१३	जन०	१९५३
चौमासी अठाई शुरु	फा०	शु०	७	शु०	फा०	,,	९	२०	फर०	,,
चौमासी चौदस १४	,,	,,	१४	शु०	,,	,,	१६	२७	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,,	,,	१५	श०	,,	,,	१७	२८	,,	,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा	चैत्र	बदी	८	रवि	फा०	,,	२५	८	मार्च	,,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहणनिर्णयः—

ज्यौतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विषभक्षणम् ।
शैवे षट्पदी दीक्षा कौलिके ग्रहनिग्रहौ ॥

सं. २००९ वि. में इस भूमण्डलपर ३ ग्रहण होंगे जिनमें १ सूर्यका और २ चन्द्रमा के हैं। जिनका संक्षेप विवरण निम्नलिखित है—(१) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण यह ग्रहण श्रावण शुदी पूर्णमासी मंगलवार मुताबिक ५ अगस्त १९५२ ई० को होगा। जो भारत में सर्वत्र दिखाई देगा, नीचे भारत में रेलवे टाइम के अनुसार स्पर्श मध्य मोक्ष का चक्र लिखा जाता है। इस ग्रहण का सूतक (वेध) मध्याह्नोत्तर ३ बजकर २ मिण्टपर लगेगा।

ग्रहण का स्पर्शादिकाल

रात्रौ	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्व
घं०	१२	१	२	२
रेलवे मि०	२	१८	३४	३२

ग्रहण मध्यकाले ग्रासस्वरूपम्

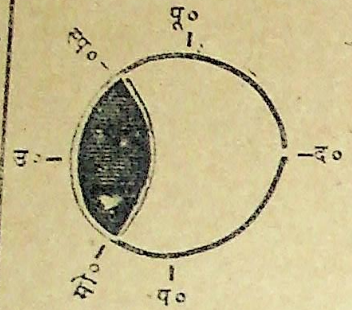

ग्रहणफल—यह ग्रहण श्रवण नक्षत्रवालों को विशेष अशुभ है। तिलपात्र दान करे मिथुन कर्क तुला मकर कुम्भ राशिवालों को पीड़ा भय चिन्ता शोकादि अशुभ फल कारक है। अतः ग्रहण न देखे। मेष, वृष, कन्या, धनुः राशि वालोंको मध्यम, और सिंह वृश्चिक मीन राशिवालोंको शुभफलप्रद है। उज्जैन व गांधारदेश के निवासियों को भयरोग और कथा वाचक व कर्म काण्ड कराने वालों को कष्ट हो।

(२) सूर्यग्रहण—भाद्रपदकृष्ण अमावस्या बुधवार ता० २० अगस्त १९५२ ई० होगा जो भारत में कहीं भी नहीं दिखाई देगा अमेरिका के दक्षिण भाग में, तथा पश्चिम अफ्रीका में दीखेगा पैसफिक महासागर में यही ग्रहण कंकणाकृति दीखेगा। भारत में इसका पर्व नहीं है।

(३) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण—माघशुक्ल पूर्णमासी गुरुवार की मध्यरात्री के अनन्तर शुक्रवार की प्रभात के पहलाँ (प्रचलित रेलवे मान से ३० जनवरी) १९५३ को होगा। इसका भारत में रेलवे घड़ी से स्पर्शादि काल का चक्र नीचे लिखा है। इस ग्रहण का सूतक मध्याह्नोत्तर ६ बजकर २४ मिण्ट पर लगेगा।

ग्रहण का स्पर्शादिकाल

रात्रौ	स्पर्श	संमी	मध्य	उन्मी	मोक्ष	पर्व
घं०	३	४	५	६	७	३
रेलवे मि०	२४	३५	१९	३	१३	४९

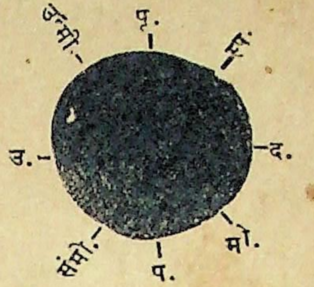

ग्रहणफल—यह ग्रहण पुष्य और आश्लेषा नक्षत्रवालों को महापीड़ा भय शोक-प्रद है शान्त्यर्थ तिलपात्र और स्वर्ण गौ आदि दान करें। मेष कर्क सिंह धनु राशिवालों को भी अशुभ चिंता भयप्रद है ग्रहण न देखें मिथुन वृश्चिक मकर मीन राशि वालों को मध्यम वृषभ कन्या कुंभ राशिवालों को शुभदायक है। सिंधवासी और प्रधान राज्याधिकारियों को कष्ट प्रद है यह ग्रहण ग्रस्तास्त होने के कारण तपस्वी साधु संत विरक्त मनुष्य फा० कृ० १ भृगुवार ता० ३० जनवरी को सायंकाल में शुद्ध चन्द्र बिम्बके दर्शन करके भोजन करें परन्तु पुत्रवान गृहस्थ मनुष्य को यहां उपवास की आज्ञा नहीं है ऐसा तिथितत्व में लिखा है। ऐसे ही ग्रहण सूतक में भी बाल वृद्ध रोगियों को भोजनादिका निषेध नहीं है। यहां तांत्रिक लोग गुरुपुष्य योग में ग्रहण होने से जंत्र मंत्रादिका जप करके परम लाभ उठा सकते हैं। दृश्य ग्रहणे कृत्यम्—ग्रहण के आरंभ होते ही स्नान करके जप पाठ करना चाहिए। मध्यकाल में हवन पश्चात् दान और बिम्ब शुद्ध हो जाने पर पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिए। ग्रहण में जपदान और हवन करने का फल शास्त्रकारों ने अनन्त फलदायक कहा है। ग्रहण में नींद लेना खाना पीना आदि से रोग की उत्पत्ति होती है। पेशाब करने से दरिद्री होता है और मलत्याग से कीट योनि मिलती है। विषय सेवन से शूकर योनि मिलती है।

भूलसुधार

प्रेस कापी करनेवाले के दृष्टि दोष से आश्विन शुक्ल द्वितीया रविवार को चन्द्रदर्शन लिखा गया है, वास्तव में यह चन्द्र दर्शन तो पहले दिन शनिवार को ही सूक्ष्म रूपेण हो जायगा, एतदर्थ मुहर्रम की १ तारीख भी रविवार द्वितीया को होगी, कृपया शोधकर पढ़ें (भ्रान्तिर्मनुष्यधर्मः)

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३४ पृष्ठ का शेष)

शेयर बाजार—अप्रेल अक्टूबर में मन्दे और १२ मई से २४ तक तेजी में रहेंगे। जूट के भाव में ६ जुलाई से २१ जुलाई तक मन्दा रहेगा। १० जुलाई के बाद जल्दी ही सूत और रेशमी वस्त्रों का स्टाक करने वाले आगे नवम्बर के करीब बेचने से जबरदस्त लाभ में रहेंगे। श्रावण में तूवर राई जस्ता संग्रह से ४ मास बाद लाभ होवे। मार्गशीर्ष शुक्ल ६ से अन्न की कमी बहुत कष्ट प्रद होगी। अन्न संग्रह करने वालों पर सरकार की ओर से सख्ती का वर्ताव होगा। ज्येष्ठशुक्ल पूर्णमासी के आस-पास जिन वस्तुओं का भाव देशकाल की परिस्थिति को देखते हुए नीचा जँचे, उन वस्तुओं के संग्रह से भविष्य में उत्तम लाभ होगा। वैशाख में अन्न तूडी (घास) संग्रह से ७ मास के अनन्तर उत्तम लाभ होवे। इस वर्ष व्यापारेश बुधराजा हुए हैं सो व्यापारियों को गिरी हालत से उठायेंगे। माल मँगाने और भेजने में सुविधा दिलवायेंगे।

भयरोगोपद्रव—इस वर्ष धोखे फरेब लूट खसूट की वारदातें ज्यादह होंगी। प्रजा में आतङ्क खलबली भी प्रायः रहेगी। रूस अफ्रीका, काबुल और भारत में बहुत जगह टिड्डीदल चूहे ओले बिजली आदिका भय होगा। वै० शु० ३ से ज्ये० कृ० ५ तक राजा प्रजा में कहीं विरोध विग्रह हो। आश्विन में कन्या राशि पर सूर्य शनि की युति होगी जो किसी बड़े महानुभाव की जिन्दगी को खतरा देती है। देश का वातावरण चिन्ता ग्रस्त शान्ति भंग का खतरा धनाढ्यों को भय हानि हो। कई प्रदेशों में मार्गशीर्ष के बाद रक्त विस्फोटकादि रोग एवं महामारी से अनेक जानें अकाल काल ग्रास बनेंगी। श्रावण तक घोड़ों को रोगभय विशेष हो। घोड़ियों और गर्भिणियों के गर्भ नष्ट मारवाड़ की सीमा में प्रजा को भय हो।

युद्धभय—इस वर्ष में सैनिक हलचल प्रायः रहेगी। बाल्कन राज्य, मिसर व तिब्बत तथा लाल चीन में शत्रुसंताप युद्ध भय होगा। समुद्र में जहाज नाश हों। यूरोप के पश्चिम दक्षिण प्रदेशों में उपद्रव हो। वैशाख (अप्रेल) में पोलेण्ड की सरहदों पर, संघर्ष का भय, श्रावण में चन्द्रग्रहण है इसके फल से चीनवासियों व यवनों को युद्ध से हानि हो। (सपुलिन्दचीनयवनान् हन्यात्) आश्विन शुक्ल में परस्पर राष्ट्रों में विरोध बढ़े। कार्त्तिक, मार्गशीर्ष (अक्टूबर, नवंबर १९५२) में ग्रह गति भी भय प्रद युद्ध की ओर भ्रमण करेगी। वैसे तो आषाढ़ तक भी युद्ध का वातावरण होकर कहीं फौजी भिडन्त के योग हैं।

महोदयो, ये भविष्य को देख सकने वाली दृष्टि तो इस कलियुग में कठिन ही है फिर भी ज्यौतिषशास्त्र दृष्ट्या और श्री प्रभु कृपावशात् जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं-समर्थ श्रीप्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य लिख सकते हैं। तत्त्वज्ञ्यात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मिकदाचन।

दोहा—अन होनी प्रभु कर सके होन हार मिट जाय।
ऐसे दीना नाथ से काहू की न बसाय॥

शुभंभवतु:—

बघाटनरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभः

वैयाकरण सिद्धान्त-कौमुदी

श्रीमद्वासुदेवदीक्षित प्रणीत बालमनोरमा तथा श्री ज्ञानेन्द्र सरस्वती विरचित तत्त्वबोधिनी दो सरल तथा सुविस्तृत प्राचीन संस्कृत व्याख्याओं सहित। व्याकरण के दिग्गज विद्वान् महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी तथा महामहोपाध्याय पं० श्रीपरमेश्वरानंद शर्मा द्वारा संशोधित। सिद्धान्तकौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थको समझने के लिये यह दोनों व्याख्या नितान्त आवश्यक हैं। इन दोनों टीकाओं के सहारे छात्र इस दुरूह ग्रन्थ को अनायास ही स्वयं लगा सकते हैं इसलिये सब छात्रवर्ग से हमारा सप्रेम अनुरोध है कि अगर परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं तो उपरोक्त बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनी दोनों टीकाओं वाले संस्करण को उपयोग में लावें ताकि अनायास ही उत्तीर्ण हो जावे। प्रथम खण्ड (कारकान्त भाग पर्यन्त) ६२० पृष्ठों का मूल्य केवल ४) कमीशन काटकर छात्रों को ३॥) रु०। द्वितीय खण्ड (समास प्रभृति तद्धित प्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य भी केवल ४) छात्रों को कमीशन काटकर ३॥) रु०)। दोनों खण्डों में पूर्वार्द्ध समाप्त है। उत्तरार्द्ध का तृतीय खण्ड (भ्वादि प्रभृति लकारार्थ प्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य ४) कमीशन काट कर ३॥) रु०। उत्तरार्द्ध का चौथा अन्तिम खण्ड ४) कमीशन काटकर ३॥)

संपूर्ण सिद्धान्तकौमुदी बालमनोरमा तथा तत्त्वबोधिनी २ टीका सहित चार भागों में १६) कमीशन काटकर १४) तथा पक्की कपड़े की दो जिल्दों में संपूर्ण १८) कमीशन काटकर १५।।।) रु०।

पाणिनीय

सिद्धान्तकौमुदी

म० म० पं० मथुराप्रसाद दीक्षित जी ने प्रचलित वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी से कलेवर में तिहाई करदी है। पाणिनी के कोई सूत्र कम नहीं किये गये हैं किन्तु अनावश्यक वृत्ति जहां पर सूत्र से सूत्रार्थ निकल आता है वहां वृत्ति नहीं दी। पंक्ति, प्रत्युदाहरण सर्वथा निकाल दिये हैं। मूल्यसंपूर्ण ३) जिल्द सहित ३॥)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भारत विख्यात वैद्य रत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूप विलास कम्पनी कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियां

वीर्य संजीवन सत

(रजिस्टर्ड) मनुष्य के शरीर में ताकत ही एक अमूल्य रत्न है जिस मनुष्य के शरीर में ताकत नहीं है उस से कोई काम नहीं हो सकता है और जिन्दगी भर पछताना पड़ता है इस लिये ताकत पैदा करने की तदबीर करना चाहिये वीर्य संजीवन सत के खाने से ताकत की कमी, सिर घूमना, कमर रीढ़ में दर्द, थोड़ा चलने में थकावट, कोई काम करने में दिल न लगना, आंखों के सामने पीली २ चिनगारी सी उड़ती नज़र आना, चेहरे पर खुश्की व जर्दी, बदन में फुर्ती न रहना, बीसों प्रकार के प्रमेह, दुर्बलता, निर्बलता, स्मरणशक्ति का कम हो जाना, आदि रोगों को दूर करने में हमारे वीर्य संजीवन सत ने नाम पाया है और देश विदेश के लाखों रोगी इसे सेवन कर लाभ उठा चुके हैं और उत्तमोत्तम होने के प्रमाण पत्र दिये हैं। एकबार अवश्य परीक्षा कीजिये इस से आपको हाथों हाथ फल मिलेगा और इसके गुण देखकर आप मुग्ध होजायेंगे और नष्ट हुआ स्वास्थ्य, खोया हुआ बल, गया हुआ सौन्दर्य तथा लावण्य फिर से वापिस पायगे। कीमत एक डिब्बा ३।-) तीन रुपया पांच आना, डाक खर्च अलग।

लक्ष्मण धारा

(रजिस्टर्ड) इसके सेवन से पेट दर्द, जी मिचलाना, कफ खांसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैज़ा, प्लेग, अतीसार, मोच चोट, सूजन, दस्त बदहज़मी, आदि कहां तक लिखें किसी में खाने से किसी में लगाने से तत्काल लाभ पहुंचता है। कीमत बड़ी शीशी २॥) दो रुपया आठ आना छोटी शीशी ॥।) बारह आना, डाक खर्च अलग।

बालको

(रजिस्टर्ड) खांसी, दस्त, खाना हज़म न होना, दुबलापन, सर्दी रहना, सूखा वायु, ज्वर आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्नचित्त सुख की नींद सोते हैं दुबले पतले कमजोर बच्चों को ताकतवर बनाने की मीठा दवा है, कीमत फी शीशी १) डाक खर्च अलग।

रूप विलास

(रजिस्टर्ड) इसके लगाने से मुहांसा झांई, चेचक के काले २ दाग, फुन्सी, खुश्की, बद रौनकी झुर्रियां वगैरा दूर होकर मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी घटा दमकने लगती है यह स्त्री पुरुष दोनों का दिल मस्त करनेवाली खुशबूदार दवा है कीमत फी डिब्बा २) दो रुपया, डाक खर्च अलग।

नारी संजीवन

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, महीना ठीक समय पर न होना, या कष्ट से होना, जिस से कमर रीढ, सिर पेट, नलों, दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलीन, भूख न लगना शरीर का पीलापन, बन्ध्यापन, हिस्टीरिया आदि रोग दूर होकर संतान दीर्घ जीवी पैदा होती है। मूल्य एक शीशी ३=)। डाक खर्च अलग।

फकीरी सुर्मा

(रजिस्टर्ड) इसके लगाने से जाला, माड़ा, धुंधी, रोहे, नजला, कीचड़ निकलना, नाखुना, परवाल, मोतिया बिन्दु, चश्मा लगना, नजर कमजोरी आदि बीमारियों पर इस सुर्मा से बढ़कर अन्य कोई सुर्मा नहीं है, यह सुर्मा १००) तोला भी बेचा जावे तो गुणों के आगे मूल्य कुछ नहीं है। कीमत फी शीशी ॥।) बारह आना, डाक खर्च अलग।

गर्भदाता रसायन

अगर विवाह हुये कई वर्ष होगये हैं अथवा किसी कारणवश संतान नहीं होती है ऐसी हालत में गर्भदाता रसायन अपना अद्भुत चमत्कार दिखाती है जो स्त्रियां संतान न होने से निराश हो चुकी थीं वे अब कई बच्चों की मां हैं यदि आपके संतान नहीं होती है, अथवा खण्डित हो जाती है, तो हमारे गर्भदाता का प्रयोग कराकर संतान सुख अवश्य देखें। कीमत एक शीशी ४।=) चार रुपया छे आना। डाक खर्च अलग।

रजस्वलीना

रुके हुए मासिक को बिना कष्ट व दर्द के जारी कर देता है, गंदे खून के रुकने से अनेक बीमारियां हो जाती हैं। जब तक मासिक धर्म जारी न होगा तब तक गर्भ हरगिज़ न रहेगा इस से बगैर तकलीफ के रज जारी हो जाता है और गर्भ धारण योग्य हो जाती है। गर्भवती स्त्रियां इसे सेवन न करें। कीमत एक शीशी ५॥) पांच रुपया आठ आना, डाक खर्च अलग।

सुलेमानी साल्ट

मंदाग्नि, बदहजमी पेट का दर्द, अफरा पेचिस भूख की कमी, हैजा, प्लेग, वायु-गोला, तिल्ली, वायु का साफ न होना आदि बीमारियां दूर होकर भोजन को शीघ्र पचाकर भूख को बढ़ाता है मूल्य १) एक रुपया फी शीशी। डाक खर्च अलग।

मंगाने का पता—रूपविलास कम्पनी नम्बर ६५ धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शक्तिहीन पुरुषों के लिये

इमाटोन टॉनिक (IMATONE TONIC) मनुष्य के सारे शरीर की ताकतों को शर्तिया दुबारा जवान बनाने में वर्तमान काल की जबरदस्त ताकत देने वाला आश्चर्यजनक आविष्कार है। नया खून पैदा करके वजन को पाँच से दस पौण्ड तक बढ़ाता है वीर्य अधिक पैदा करके चेहरे पर रौनक और तेज लाता है। प्रमेह, स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, कमजोरी. सुस्ती, कमर दर्द, खांसी, नजला, जुकाम, दमा बारबार पेशाब आना, पेशाब में शक्कर आना दिमागी कमजोरी, सिर चकराना, कब्ज बदहजमी तथा मेदों के सब रोगों का दूर करके जबरदस्त मर्दाना ताकत बढ़ाती है। इमाटोन टॉनिक की केवल एक ही शीशी के इस्तेमाल से मनुष्य दस से पन्द्रह साल कम आयु का दिखाई देने लगता है। इसकी अद्भुत तबदीलियों और लाभ से इसका प्रयोग करने वाला चकित रह जाता है। कीमत पूरा कोर्स ५) रु० आधा ३) रु० डाक खर्च ॥।) दूसरा आविष्कार इमाटोन तिला है जो इन्द्री पर लगाते ही बिजली की सी ताकत और फौलाद जैसी शक्ति पैदा करता है क्योंकि लगाते ही फौरन मसानों में मिल जाता है इसका एक कतरा मुर्दा गोश्त के टुकड़ों पर डाले जिससे वह शीघ्र ही हरकत करने लगेगा इससे आप खुद अनुमान लगा सकते हैं कि नामर्दी के गम दूसरे मायूस रोगियों के लिये ये तिला कितना लाभदायक साबित हो सकता है। बचपन की गलतियों से इन्द्री की सब खराबियों को दूर करके जबरदस्त ताकत भरता है कीमत बड़ी शीशी ५) रु० आधा ३) रु० डाक खर्च ॥।) यह औषधियाँ गरमी, सर्दी, तथा बरसात हर मौसम में एक जैसी लाभदायक हैं। दोनों दवाइयों का इकट्ठा आर्डर आने पर डाक खर्च माफ।

मासिक धर्म रुकावट

कीमती दवाइयों की जमा वर्तमान काल की साइंस की आश्चर्य जनक ईजाद मैन्सोलीन (Mensoline) यह दवा २ घण्टों के अन्दर ही हर प्रकार के बन्द मासिक को खोलकर साफ कर देती है। मूल्य ५), डाक खर्च ॥।)।

मैन्सोलीन स्पेशल— जो कि बच्चादानी को शीघ्र ही आसानी से बिल्कुल साफ कर देती है। मूल्य प्रति शीशी १०) खबरदार गर्भवती स्त्री इस्तेमाल न करें।

एजेण्ट्स:— एंग्लो अमेरिकन मेडिकल स्टोर्स, (M. A. J.)
पुलबनगाश, दिल्ली।

एक गोली का चमत्कार

बुरी संगति या जवानी की गलतियों के कारण प्रमेह, स्वप्नदोष जैसे दुष्ट रोगों से मनुष्य कमजोर हो जाय तो उसको वक्त पर शर्मिन्दगी उठानी पड़ता है। इसको शीघ्र पतन का रोग कहते हैं। जैसे शक्तिहीन पुरुष के लिये चार साल के रिसर्च के बाद तैयार की हुई विटाफोर्स (Vita Force) आश्चर्यजनक आविष्कार है। वक्त के पहले एक गोली खा लेने से केवल १५ मिनट के अन्दर कमजोर से कमजोर पुरुष में भी जबर्दस्त ताकत आ जाती है क्योंकि यह गोली हलक से उतरते ही खून में हल हो जाती है। जिससे सारा शरीर जोश से बेकरार हो जाता है और फिर...मरदाना ताकत देर तक कायम रहती है। मूल्य प्रति शीशी ५) छोटी शीशी ३) डाक खर्च ॥।)।

स्त्री के गुप्त भेद

जो होशियार से होशियार पति को भी मालूम नहीं, इस पुस्तक में पढ़िये। आपने अनेकों कोकशास्त्र पढ़े होंगे, लेकिन इसके पढ़नेसे आपको यौवन का पूरा आनन्द प्राप्त होगा! सुहागरात, ८४ आसनों के चित्र, स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध पर यूरोप, एशिया और भारत के बड़े बड़े पुरुषों के अनुभव, प्राचीन काल के कई भेद। पूरा तारीफ सभ्यता के विरुद्ध है। कीमत केवल २॥) डाक खर्च अलग।

खुफिया तस्वीर कार्ड

सुन्दर लड़कियों की फोटो, प्रायवेट नजारे यह फोटो आपने नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा। कीमत बड़ा ऐलबम ४) रु० छोटा २॥) डाक खर्च अलग।

अमेरिकन ट्रेडिङ्ग कारपोरेशन (M. A. J.) पुलबंगश, दिल्ली।

सफेद बालों की वैज्ञानिक चिकित्सा

कीमती जड़ी बूटियों से तैय्यार की हुई "वीनोल पिल्ज्" (Venol Pills) मैडिकल साइंस का एक आश्चर्यजनक आविष्कार है जब कि प्रतिदिन रात को सोते समय एक गोली दूध या पानी के साथ खा लेने से सफेद बाल सदा के लिये जड़ से काले हो कवल एक गोली के प्रयोग से ही आप इसका चमत्कार देख सकते हैं। 'वीनोल" गिरते बालों को बचाता है और मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाकर स्मरणशक्ति में वृद्धि करता है। कीमत पूरा कोर्स १०) रु० लाभ न हो तो खाली शीशी वापिस आने पर पूरी कीमत वापिस करने की गारन्टी है नमूना ३) रु०।

एजेन्टस् एंग्लो अमेरिकन मेडिकल स्टोर्स (M. A. J.) पुलबंगश देहली—६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत विख्यात वैद्य रत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूप विलास कम्पनी कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियां

वीर्य संजीवन सत

(रजिस्टर्ड) मनुष्य के शरीर में ताकत ही एक अमूल्य रत्न है जिस मनुष्य के शरीर में ताकत नहीं है उस से कोई काम नहीं हो सकता है और जिन्दगी भर पछताना पड़ता है इस लिये ताकत पैदा करने की तदबीर करना चाहिये वीर्य संजीवन सत के खाने से ताकत की कमी, सिर घूमना, कमर रोढ़ में दर्द, थोड़ा चलने में थकावट, कोई काम करने में दिल न लगना, आंखों के सामने पीली २ चिनगारी सी उड़ती नजर आना, चेहरे पर खुश्की व जर्दी, बदन में फुर्ती न रहना, बीसों प्रकार के प्रमेह, दुर्बलता, निर्बलता, स्मरणशक्ति का कम हो जाना, आदि रोगों को दूर करने में हमारे वीर्य संजीवन सत ने नाम पाया है और देश विदेश के लाखों रोगी इसे सेवन कर लाभ उठा चुके हैं और उत्तमोत्तम होने के प्रमाण पत्र दिये हैं। एकबार अवश्य परीक्षा कीजिये इस से आपको हाथों हाथ फल मिलेगा और इसके गुण देखकर आप मुग्ध होजायेंगे और नष्ट हुआ स्वास्थ्य, खोया हुआ बल, गया हुआ सौन्दर्य तथा लावण्य फिर से वापिस पायगे। कीमत एक डिब्बा ३।-) तीन रुपया पांच आना, डाक खर्च अलग।

लक्ष्मण धारा

(रजिस्टर्ड) इसके सेवन से पेट दर्द, जी मिचलाना, कफ खांसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैज़ा, प्लेग, अतीसार, मोच चोट, सूजन, दस्त बदहज़मी, आदि कहां तक लिखें किसी में खाने से किसी में लगाने से तत्काल लाभ पहुंचता है। कीमत बड़ी शीशी २॥) दो रुपया आठ आना छोटी शीशी ।॥) बारह आना, डाक खर्च अलग।

बालको

(रजिस्टर्ड) खांसी, दस्त, खाना हज़म न होना, दुबलापन, सर्दी रहना, सूखा वायु, ज्वर आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्नचित्त सुख की नींद सोते हैं दुबले पतले कमजोर बच्चों को ताक़तवर बनाने की मीठी दवा है, कीमत फी शीशी १) डाक खर्च अलग।

रूप विलास

(रजिस्टर्ड) इसके लगाने से मुहांसा झांई, चेचक के काले २ दाग, फुन्सी, खुश्की, बद रौनकी झुर्रियां वगैरा दूर होकर मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी घटा दमकने लगती है यह स्त्री पुरुष दोनों का दिल मस्त करनेवाली खुशबूदार दवा है कीमत फी डिब्बा २) दो रुपया, डाक खर्च अलग।

नारी संजीवन

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, महीना ठीक समय पर न होना, या कष्ट से होना, जिस से कमर रीढ़, सिर पेट, नलों, दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलीन, भूख न लगना शरीर का पीलापन, बन्ध्यापन, हिस्टीरिया आदि रोग दूर होकर संतान दीर्घ जीवी पैदा होती है। मूल्य एक शीशी ३=)। डाक खर्च अलग।

फकीरी सुर्मा

(रजिस्टर्ड) इसके लगाने से जाला, माड़ा, धुंधी, रोहे, नजला, कीचड़ निकलना, नाखुना, परवाल, मोतिया बिन्दु, चश्मा लगना, नजर कमजोरी आदि बीमारियों पर इस सुर्मा से बढ़कर अन्य कोई सुर्मा नहीं है, यह सुर्मा १००) तोला भी बेचा जावे तो गुणों के आगे मूल्य कुछ नहीं है। कीमत फी शीशी ।॥) बारह आना, डाक खर्च अलग।

गर्भदाता रसायन

अगर विवाह हुये कई वर्ष होगये हैं अथवा किसी कारणवश संतान नहीं होती है ऐसी हालत में गर्भदाता रसायन अपना अद्भुत चमत्कार दिखाती है जो स्त्रियां संतान न होने से निराश हो चुकी थीं वे अब कई बच्चों की मां हैं यदि आपके संतान नहीं होती है, अथवा खण्डित हो जाती है, तो हमारे गर्भदाता का प्रयोग कराकर संतान सुख अवश्य देखें। कीमत एक शीशी ४।=) चार रुपया छे आना। डाक खर्च अलग।

रजस्वलीना

रुके हुए मासिक को बिना कष्ट व दर्द के जारी कर देता है, गंदे खून के रुकने से अनेक बीमारियां हो जाती हैं। जब तक मासिक धर्म जारी न होगा तब तक गर्भ हरगिज़ न रहेगा इस से बगैर तकलीफ के रज जारी हो जाता है और गर्भ धारण योग्य हो जाती है। गर्भवती स्त्रियां इसे सेवन न करें। कीमत एक शीशी ५॥) पांच रुपया आठ आना, डाक खर्च अलग।

सुलेमानी साल्ट

मंदाग्नि, बदहजमी पेट का दर्द, अफरा पेचिस भूख की कमी, हैजा, प्लेग, वायु-गोला, तिल्ली, वायु का साफ न होना आदि बीमारियां दूर होकर भोजन को शीघ्र पचा कर भूख को बढ़ाता है मूल्य १) एक रुपया फी शीशी। डाक खर्च अलग।

मंगाने का पता—रूपविलास कम्पनी नम्बर ६५ धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शक्तिहीन पुरुषों के लिये

इमाटोन टौनिक (IMATONE TONIC) मनुष्य के सारे शरीर की ताकतों को शर्तिया दुबारा जवान बनाने में वर्तमान काल की जबरदस्त ताकत बने वाला आश्चर्यजनक आविष्कार है। नया खून पैदा करके वजन को पाँच से दस पोण्ड तक बढ़ाता है वीर्य अधिक पैदा करके चेहरे पर रौनक और तेज लाता है। प्रमेह, स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, कमजोरी. सुस्ती, कमर दर्द, खाँसी, नजला, जुकाम, दमा बारबार पेशाब आना, पेशाब में शक्कर आना दिमागी कमजोरी, सिर चकराना, कब्ज बदहजमी तथा मेदों के सब रोगों का दूर करके जबरदस्त मर्दाना ताकत बढ़ाती है। इमाटोन टौनिक की केवल एक ही शीशी के इस्तेमाल से मनुष्य दस से पन्द्रह साल कम आयु का दिखाई देने लगता है। इसकी अद्भुत तबदीलियों और लाभ से इसका प्रयोग करने वाला चकित रह जाता है। कीमत पूरा कोर्स ५) रु० आधा ३) रु० डाक खर्च ।।।)। दूसरा आविष्कार इमाटोन तिला है जो इन्द्री पर लगाते ही बिजली की सी ताकत और फौलाद जैसी शक्ति पैदा करता है क्योंकि लगाते ही फौरन मसामों में मिल जाता है इसका एक कतरा मुर्दा गोश्त के टुकड़ों पर डाले जिससे वह शीघ्र ही हरकत करने लगेगा इससे आप खुद अनुमान लगा सकते हैं कि नामर्दी के मद गुजरे मायूस रोगियों के लिये ये तिला कितना लाभदायक साबित हो सकता है। बचपन की गलतियों से इन्द्री की सब खराबियों को दूर करके जबरदस्त ताकत भरता है कीमत बड़ी शीशी ५) रु० आधा ३) रु० डाक खर्च ।।।) यह औषधियाँ गरमी, सर्दी, तथा बरसात हर मौसम में एक जैसी लाभदायक हैं। दोनों दवाइयों का इकट्ठा आर्डर आने पर डाक खर्च माफ।

मासिक धर्म रुकावट

कीमती दवाइयों की जमा वर्तमान काल की साइन्स की आश्चर्य जनक ईजाद मैन्सोलीन (Mensoline) यह दवा २ घण्टों के अन्दर ही हर प्रकार के बन्द मासिक को खोलकर साफ कर देती है। मूल्य ५), डाक खर्च ।।।)।

मैन्सोलीन स्पेशल– जो कि बच्चादानी को शीघ्र ही आसानी से बिलकुल साफ कर देती है। मूल्य प्रति शीशी १०) खबरदार गर्भवती स्त्री इस्तेमाल न करें।

एजेण्ट्स:– एंग्लो अमेरिकन मेडिकल स्टोर्स, (M. A. J.)

पुलबनगाश, दिल्ली।

एक गोली का चमत्कार

बुरी संगति या जवानी की गलतियों के कारण प्रमेह, स्वप्नदोष जैसे दुष्ट रोगों से मनुष्य कमजोर हो जाय तो उसको वक्त पर शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। इसको शीघ्र पतन का रोग कहते हैं। जैसे शक्तिहीन पुरुष के लिये सात साल के रिसर्च के बाद तैयार की हुई विटाफोर्स (Vita Force) आश्चर्यजनक आविष्कार है। वक्त के पहले एक गोली खा लेने से केवल १५ मिनट के अन्दर कमजोर से कमजोर पुरुष में भी जबर्दस्त ताकत आ जाती है क्योंकि यह गोली हलक से उतरते ही खून में हल हो जाती है। जिससे सारा शरीर जोश से बेकरार हो जाता है और फिर...मरदाना ताकत देर तक कायम रहती है। मूल्य प्रति शीशी ५) छोटी शीशी ३) डाक खर्च ।।।)।

स्त्री के गुप्त भेद

जो होशियार से होशियार पति को भी मालूम नहीं, इस पुस्तक में पढ़िये। आपने अनेकों कोकशास्त्र पढ़े होंगे, लेकिन इसके पढ़नेसे आपको यौवन का पूरा आनन्द प्राप्त होगा! सुहागरात, ८४ आसनों के चित्र, स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध पर यूरोप, एशिया और भारत के बड़े बड़े पुरुषों के अनुभव, प्राचीन काल के कई भेद। पूरी तारीफ सभ्यता के विरुद्ध है। कीमत केवल २।।) डाक खर्च अलग।

खुफिया तस्वीर कार्ड

सुन्दर लड़कियों की फोटो, प्रायवेट नजारे यह फोटो आपने नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा। कीमत बड़ा ऐलबम ४) रु० छोटा २।।) डाक खर्च अलग।

अमेरिकन ट्रेडिङ्ग कारपोरेशन (M. A. J.) पुलबंगश, दिल्ली।

सफेद बालों की वैज्ञानिक चिकित्सा

कीमती जड़ी बूटियों से तैय्यार की हुई "वीनोल पिल्ज्" (Venol Pills) मेडिकल साइंस का एक आश्चर्यजनक आविष्कार है जब कि प्रतिदिन रात का सोते समय एक गोली दूध या पानी के साथ खा लेने से सफेद बाल सदा के लिये जड़ से काले हो केवल एक गोली के प्रयोग से ही आप इसका चमत्कार देख सकते हैं। 'वीनोल" गिरते बालों को बचाता है और मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाकर स्मरणशक्ति में वृद्धि करता है। कीमत पूरा कोर्स १०) रु० लाभ न हो तो खाली शीशी वापिस आने पर पूरी कीमत वापिस करने की गारन्टी है नमूना ३) रु०।

एजेन्टस् एंग्लो अमेरिकन मेडिकल स्टोर्स (M. A. J.) पुलबंगश देहली–६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर तथा सफाई से बना है। इससे आप बड़ी सरलता से हर प्रकार का फोटो ले सकते हैं, इसका उपयोग अति सरल है। काम ठीक ठीक करता है। यह वह मनोहर कीमती कैमरा है जिससे दुकानदार तथा मनोरञ्जन के लिये काम करनेवाले दोनों प्रकार के लोग लाभ उठा सकते हैं। इसे खरीद कर शौक पूरा करें तथा धन कमायें। मूल्य बाबस कैमरा फिल्म कार्ड कैमिकल तथा सरल तरकीब के साथ नं० ५०१ मूल्य ४॥।=) बेस्ट क्वालिटी ५४० मूल्य ६॥।) डाक खर्च अतिरिक्त स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० मूल्य ९॥) पैकिंग और डाक खर्च एक रुपया चार आने।

नोट—एक साथ छः कैमरे खरीदने वाले को दो आने रुपया कमीशन भी दी जाती है स्टाक थोड़ा है अभी आर्डर देवें नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापस।

मिलने का पता:—वेस्ट ऐन्ड टरेडर्ज (M. A. J.) नं० १५१९ देहली

अचूक चान्स

(नौकरी चाहने वालों के लिए) हम हर शहर और हर कसबे में अपनी कम्पनी की ब्रान्चें खोलने वाले हैं। जिनके लिये मैनेजर एकौंटेन्ट क्लर्क तथा टाईपिस्ट इत्यादि की अवश्यकता है। चार आने के टिकट के साथ अपनी दरख्वास्त भेजें। योग्यता और अनुभव के साथ लिखें कि किस स्थान पर काम करना चाहते हैं। वेतन ठीक तथा मँहगी अलाउन्स भी दिया जाता है।

मेकसो लेवार्ट-टरीग लिमिटेड (M. A. J.) देहली

असली ऊनी कम्बल केवल पाँच रुपये में

हमने अपनी नई स्कीम को प्रसिद्ध करने के लिये इटली के बने हुवे शुद्ध ऊनी कम्बल बिलकुल नया पूरा साईज और बढ़िया क्वालिटी केवल पाँच रुपये में देने का निश्चय किया है। नोट:—दो से अधिक कम्बल किसी को नहीं मिलेंगे जल्दी पत्र लिखें।

फ्रैन्च सप्लाई कारपोरेशन पोस्ट बक्स नं० १५१८ (M. A. J.) देहली

वह हुस्न जिसे देखकर शरमा गईं परियाँ (बिलकुल मुफ्त)

१७ साल से २५ साल तक की परियों को मात करनें वाली लड़कियों की फोटो कैमरा की प्राइवेट् हालत और प्राकृतिक सुन्दरता के साथ जिसकी तारीफ की सभ्यता आज्ञा नहीं देती। यदि आपने यह फोटो अभीतक नहीं देखी तो जीवन के असली आनन्द से वंचित रहे हैं। बार बार यह समय नहीं मिलेगा। मुफ्त लेने के लिये आजही लिखें।

[illegible] टरेडज लि० (M. A. J.) देहली

१९५२ में आपके भाग्य में क्या है

बिना दाम के बताया जायगा।

केवल दो मास के लिए यह सुविधा प्राप्त है ताकि आप को यह अनुभव हो सके कि ज्योतिष विद्या में हम कितने निपुण हैं। इसके साथ ही दिल की सब इच्छाएं पूरा करने वाला तावीज भी बिना मूल्य दिया जाता है। आज ही दो आने का टिकट और पता का लिफाफा भेजें और साथ ही अपने पसन्द के फूल का नाम लिखें।

पता:—श्री कालीमहा आश्रम ११९९ (M.A.J.) देहली

सोना मुफ्त

हमने अमेरिकन गोल्ड सोना को प्रसिद्ध करने के लिए एक सैम्पुल बाक्स तय्यार किया है। जिस में चार नग चूड़ी डाईमंड कट न्यू फैशन, एक सुन्दर न्यू डिजाईन लाकट चैन माला के साथ, एक जोड़ी बढ़िया सुन्दर बुन्दे तथा दो अंगूठी बम्बई फैशन की है। इस सैम्पुल बाक्स के साथ चार तोला अमेरिकन न्यू गोल्ड बिलकुल बिना दाम के दिया जाता है। आज ही सैम्पुल बाक्स तथा मुफ्त सोना के लिए लिखें यह समय फिर हाथ नहीं आएगा अपना नाम व पता साफ साफ लिखें। डाक और पैकिंग के लिए ॥।=) आने के टिकट या मनीआर्डर साथ भेजें। नहीं तो माल न भेजा जाएगा।

फ्रैन्च गोल्ड सप्लाई कम्पनी लिमिटेड देहली 40 (M.A.J.)

वैद्य हकीम डाक्टर

बनकर हजारों रुपये और पुण्य कमाएं। आप घर बैठे होम्युओपॉथिक, बायोकेमिक, आयुर्वेदिक और यूनानी पुस्तकें पढ़कर तथा बड़ी सरलता पूर्वक डाक द्वारा परीक्षा देकर बहुमूल्य डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट प्राप्त कर हजारों रुपये मासिक कमा सकते हैं। प्रासपेक्टस मुफ्त मंगाएं।

इण्डियन नेशनल मेडिकल कालेज 30A (M.A.J.) देहली

केवल पांच रुपये में

असली अमेरिकन फाउण्टेनपेन बहुत बढ़िया क्वालिटी और इसके साथ ही यदि आप सुन्दर ठीक समय देने वाली असली विलायती घड़ी मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही पत्र लिखें। डाक और पैकिङ्ग १ –) अलग।

जी० एन्० स्टोर्ज बोन १५१ देहली,

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनना चाहते हैं

तो आज ही दो आने का टिकट भेजकर प्रासपेक्टस मुफ्त मंगावें।

[illegible] फिल्म कम्पनी (M. A. J) देहली,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्यारी बहिनों

मैं न तो कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आपकी ही तरह एक गृहस्थ स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिकधर्म खुलकर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक आने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पति देव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराई परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्माजी ने मेरा मुख देख कर कहा बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद होगया है मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पति देव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिससे केवल १५ दिन के सेवन करने से मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश होगया। ईश्वर की कृपा से मैं अब कई बच्चों की माँ हूं। मैंने इस नुस्ले से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बांट रही हूँ इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्यों कि ईश्वर ने मुझे बहुत दे रक्खा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी. पी. पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिनकी दवा तैयार करने पर २॥=) असल लागत होती है और महसूल डाक अलग है।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवा का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहिन मुझे और रोग की दवा के लिये न लिखें।

बीबी चरण पियारी (MAH-52) संतनगर, जालन्धर सीटि,

१०००)रु० नगद इनाम ?

जो चाहोगे वही मिलेगा

—:o:—

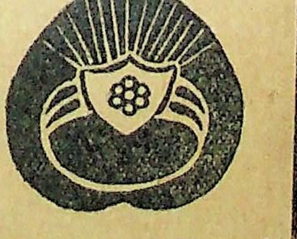

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तांत्रिक अंगूठी को धारण करने से चाहे जैसा कठिन कार्य क्यों न हो उसमें आपको तुरन्त सफलता प्राप्त होगी। जिस किसी को आप याद करेंगे वह कैसा ही कठोर क्यो न हों तुरन्त आपके पास हाजिर होगा कठोरता तथा शत्रुता को छोड़कर आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई, दोस्ती होगी, नौकरी मिलेगी, बांझ स्त्रीके संतान होगी, मुर्दा रूहों से बातचीत होगी, जमीन में दबी दौलत सुपने में दिखाई देगी, लाटरी, सट्टा, जुआ मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे व्यापार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शांत हो बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुखशांति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तांत्रिक अंगूठी १-१५-०, स्पेशल ३-०-०, स्पेशल पावर फुल ३-१५-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका बिजलीके करंट की तरह फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अगूठी ग्रहण तथा शुभ मूहुर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है लेकिन इस तांत्रिक अंगुठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापिस की गारंटी है। मिथ्या साबित करने वालों को १०००) नगद इनाम। एक बार जरूर अजमाइश करें।

प्रोफेसर बंगाल मेसमेरिजम हाउस (MAH-52) जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संसार के सब कोकशास्त्रों से अच्छा हर प्रकार से खरीदने योग्य सुन्दर और दुर्लभ रंगीन तसवीरों और फोटो ब्लाकों से भूषित दुनियाँ भर में यह किसी के पास नहीं है।

खुफिया सचित्र

कोकशास्त्र

श्री कोका पण्डितजी महाराज रियासत काश्मीर के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री असली कोकशास्त्र का पूरा वा शुद्ध निचोड़ !

पाठकों आपने विज्ञापन पढ़कर कई कोकशास्त्र मंगवाये होंगे अथवा धन नाश किया होगा पर असली गुप्त चिन्ह किसी में न मिले होंगे बस यदि अब असली गुप्त चिन्ह के चित्रों वाला ऐच्छिक कोकशास्त्र चाहते हैं, तो केवल हमारा ही असली गुप्त काश्मीरी कोकशास्त्र है। आप वी० पी० द्वारा शीघ्र मंगवायें। इस कोकशास्त्र में ८४ गुप्त असली चित्र हैं। अर्धरात्रि को एकान्त में देखने योग्य कोकशास्त्र प्रेमी मनुष्यों की मन इच्छाएं इस पुस्तक में लिखी हैं। इसकी पूरी व्याख्या सभ्यता के विरुद्ध है इसमें आपको कष्ट भेद की बातें और सेवन किये हुए नुसखे मिलेंगे जो सैकड़ों खर्च करने पर नहीं मिल सकते। लिखाई छपाई सुन्दर। मूल्य सजिल्द तीन रंग प्रथम पृष्ठ वाली १।।।) महसूल डाक खर्च अलग।

गुप्त चित्र कार्ड—दो प्रेमियों का मिलन, सुन्दरता और यौवन के मनमोहक दृश्य जिनकी प्रेमियों को आवश्यकता थी, देने का प्रबन्ध किया गया है, आज ही मंगवाएं। हमारे फोटो साफ साफ और बड़े हैं, जिसमें गुप्त दृश्य साफ-साफ दिखाई देते हैं। हम दावे से कहते हैं कि यह गुप्त चित्र कार्ड हमारे अतिरिक्त और किसी जगह नहीं मिल सकते, इसको देखकर आप प्रेम से बार-बार देखेंगे। रियायती मूल्य पूरा सैट ५० कार्ड ३) रु० नमूना २० कार्ड १।।।) महसूल डाक खर्च अलग।

फ्रेंच फोटो सप्लाई कम्पनी (M. A. 52) जालन्धर शहर।

French Photo Supply Co. (M. A. 52) ...

१०,००० रुपये की घड़ियां

मुफ्त मुफ्त

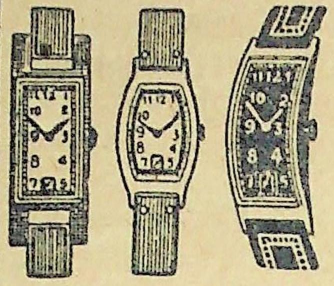

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामीजी की ओर से लाजवाब तोहफा है, यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता, उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठंडक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी १।।।) रु०, तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ४।।) रु० इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जोकि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीददार को डाक खर्च माफ और चार न्यू घड़ियाँ व चार अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ्त दी जाती है।

अमृत फार्मेसी (A. M. 52) जालन्धर शहर

Amrit Pharmacy (A. M. 52)

JULLUNDUR City.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(इन्जिनियर बनो) # कालयुग नहीं ! कलयुग (मशीनरी युग) है । (मिस्त्री बनो)

आज का युग वास्तव में मशीनरी युग है । जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जिस में मशीनरी का प्रयोग न हुआ हो । वे दिन गये जब कि लोग दस कक्षायें पढ़ने के बाद कोई छोटी-मोटी नौकरी करके अपने परिवार का पेट पाल सकते थे । मंहगाई के कारण इस काल में नौकरी केवल एक प्रश्नवाचक चिन्ह ? बनकर रह गई है । हर एक नौकर तंगदस्ती की शिकायत करता है, उसकी छोटी सी आमदनी उसके निज और उसके बच्चों के लिये पर्याप्त नहीं है, परन्तु इसके मुकाबले में किसी भी हुनरका जानने वाला कारीगर इतना कमा लेता है जितना कि उसकी आवश्यकता के लिये काफी है और कुछ बचा भी लेता है । इसलिये आज—

कला-कौशल व्यापार और टैक्निकल काम ही

सफलता की एक ऐसी सीढ़ी है जिसके द्वारा आप थोड़े से दिनों में धनवान बन सकते हैं । नौकरी में तो उन्नति के सब द्वार बन्द हैं । परन्तु एक कारीगर या व्यापारी थोड़ी सी पूंजी से और थोड़े समय में अपनी निजूरी जवाहरात से भर सकता है और नौकरी की अपेक्षा बहुत खुशहाली से दिन बिता सकता है और अपने बालबच्चों का भला कर सकता है ।

हिन्दुस्तान की उन्नति—व्याख्यानों और बातों से नहीं होगी नये-नये कलाकौशल, व्यापारिक, टैक्निकल स्कूल, कालिजों और व्यापारिक किताबों फैक्ट्रियों और शिक्षा से ही हिन्दुस्तान की गिनती उन्नत देशों में होगी ।

इलैक्ट्रिक गाइड ले०—नरेन्द्रनाथ B. Sc.

(प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारों द्वारा स्वीकृत इलैक्ट्रिकल सुपरवाइजर सिलेबस के अनुसार) इस पुस्तक में इलैक्ट्रिक सुपरवाइजर की परीक्षा व लाइसेंस, डिग्री प्राप्त करने के नियम, परीक्षा-प्रणाली, इंडियन इलैक्ट्रिसिटी रूल्स १६३७, इलैक्ट्रिक मोटर्ज, मीटर्ज, मैगनीटस, सरकिट्स, ए० सी० व डी० सी० मशीनें, बैटरीज, स्विचबोर्ड, तथा आरमेचर वाइंडिंग का पूरा-पूरा वर्णन तथा ट्रांसफार्मर, इत्यादि के बारे में सब प्रकार के नियम और पिछले कई सुपरवाइजरी परीक्षाओं के प्रश्न उत्तर सहित दिये गये हैं । पृष्ठ संख्या कुल—४६६ चित्र संख्या कुल—१५८ सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ६) रु: ८० डाक व्यय अलग ।

जंत्री पैमायश चोब

इस पुस्तक में गोल लकड़ी की पैमायश गज और फुटों में दी गई है । लकड़ी के काम से सम्बन्ध रखने वाले सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी है, मूल्य [illegible] ६) रु० ८० डाक खर्च अलग ।

खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड

जिसमें खराद के पुर्जों के नाम व काम चित्रों सहित व चूड़ियां काटने का हिसाब व पैमायश के सही तरीके, पीतल व दूसरी धातुओं की ढलाई में मिलने वाली चीजें, और मिलिंग मशीन का काम तथा बहुत से लाभकारी तरीके बतलाए गये हैं । जो अप्रेन्टिसों, इन्जिनियरों, खरादियों फिटरों के लिए लाभदायक है । पुस्तक को एक बार पढ़ कर हर एक व्यक्ति खराद का काम करना शुरू कर सकता है । पृष्ठ संख्या २५० चित्र सं० ७० है । सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ३) तीन रु० डाक व्यय अलग ।

आरमेचर वाइन्डिंग लेखक—नरेन्द्रनाथ B. Sc

इस पुस्तक में हर प्रकार के पंखों-मोटरों और जैनरेटरों की मरम्मत और उनके आरमेचर नये सिरे से दोबारा लपेटने के तरीके लिखे हैं । मूल्य केवल ६) रु: ८० डाक व्यय अलग ।

आयल इंजन गाइड लेखक—नरेन्द्रनाथ B. Sc

इस पुस्तक में गैस व आयल से चलने वाले हर किस्म के अपटूडेट इंजनों का, केरोसिन अथवा पैट्रोल पर चलने वाले हर प्रकार के कम्बसचन इंजनों के काम करने के तरीके, उनके सारे कल-पुर्जों का विस्तार के साथ वर्णन चित्रों द्वारा किया गया है । इसके अतिरिक्त पुर्जों और इंजनों में होने वाली खराबियों को जानना और ठीक करना और हर प्रकार की फिटिंग का वर्णन बहुत से चित्रों द्वारा तथा विस्तार पूर्वक लिखा गया है । इंजन की हार्सपावर निकालने का तरीका भी बताया गया है । यह पुस्तक हर एक इंजन ड्राइवर, मकेनिक और इंजीनियर के लिए एक सी लाभदायक और सहायक सिद्ध हुई है । पुस्तक ऐसी सरल भाषा में लिखी गई है कि थोड़े पढ़े लिखे लोग भी पूरा लाभ उठा सकते हैं । पृष्ठ संख्या ४१२ चित्र संख्या ६३ सजिल्द पुस्तक का रियायती मूल्य ६) छः रुपया डाक खर्च अलग ।

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली नं० ६ ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये और हर आर्डर पर नये वर्ष की श्री बापू राष्ट्रीय जन्त्री मुफ्त लीजिये।

वर्कशाप तथा खराद ज्ञान (सचित्र)

खराद मशीन, बर्मा मशीन, रन्दा मशीन और मिलिंग मशीन का प्रयोग तथा इसमें प्रयोग में लाये जाने वाले सभी टूलों की बनावट के विषय में पूर्ण प्रकाश डालने के अतिरिक्त सभी धातुओं का पूर्ण ज्ञान, टांका बनाना और टांका लगाने की रीति, खराद पर गरारियों से हर प्रकार की चूड़ी काटने का हिसाब और टेबिल, इन सब बातों का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है जोकि प्रत्येक दिन वर्कशापों में प्रयोग में लाई जाती हैं। पृष्ठ संख्या ४५६ मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय अलग।

रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक)

लेखक—नरेन्द्रनाथ B.Sc.

इस पुस्तक में रेडियो की पूर्ण मरम्मत तथा इसके साथ ट्रांसमीटर सिगनल ट्रेसर, डिमान्स्ट्रेटर, ओसीलेटर और अन्य आम प्रयोग में आने वाले रेडियो के टैस्टर्ड सरकट इस ढंग से ब्लाकों द्वारा सुन्दर छापे गए हैं कि प्रत्येक इच्छुक घर बैठे इस पुस्तक की सहायता से अपने तथा दूसरों के रेडियो मरम्मत तथा नए बना कर रुपया पैदा कर सकता है। *City & gilds London* द्वारा स्वीकृत सर्विसिंग कोर्स के सिलेबस के आधार पर लिखी गई है। इसलिए परीक्षा देने वालों के लिये एक उपयोगी पुस्तक है। प्रत्येक वर्कशाप मकैनिक तथा जिनके पास रेडियो है इस पुस्तक का होना अति आवश्यक है।

मूल्य केवल ६) छः रुपया डाक खर्च अलग।

सरकट डायग्राम्ज़ आफ रेडियो

ले०—वेदप्रकाश

पढ़ने की आवश्यकता नहीं केवल देखने की है। भारतवर्ष में अब भी ऐसे मनुष्य हैं जिन्हें पढ़ने से घृणा है चित्र देखने में दिलचस्पी है। उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। रेडियो की कहानी उनके चित्रों की जबानी सुनिए। इसमें चित्रों द्वारा दिखाया गया है कि रेडियो स्टेशन से किस प्रकार आवाज बनती है और हमारा रेडियो कैसे उनको पकड़ता है। रेडियो का क्रिस्टल सेट बिना बिजली के कैसे चलता है, हवा की लहरों की उसमें दशा तथा बनाने का पूर्ण ढंग, एक वाल्व के रेडियो से पांचवाल्वज के रेडियो बिजली व बैटरी से चलने वाले, उनकी रजिस्टैंस या कन्डैंसरों की कीमतें, वाल्वडाटा रेडियो चिन्ह; बैट्री के लिए पावर पेक, सिगनल ट्रेसर, टैस्टिंग बोड, बरगलर आलार्म इत्यादि के सरकटों ने इसे और भी रुचिकर बना दिया है। मूल्य केवल ३।) डाक खर्च अलग।

बिन बिजली का रेडियो

ले०—मि० वेद प्रकाश

देश का भविष्य उसके नन्हें नन्हें बच्चों पर निर्भर है। अत: आरम्भ से ही उन्हें यह पुस्तक पढ़ाइये। इसे पढ़ कर वे बहुत ही कम दामों में घर बैठे अपने छोटे २ क्रिस्टल सैट बना सकते हैं। और बड़े आदमी इनको बनाकर अपना निर्वाह कर सकते हैं। क्रिस्टलसैटों को खरीदने के लिए अब आप कहीं न जाएं। परन्तु इस पुस्तक को पढ़ कर घर बैठे ही सैट बिना बिजली के रेडियो तैयार करें। मूल्य १।) सवा रुपया डाकखर्च अलग।

इलैक्ट्रिकल इन्जीनयरिंग बुक

(ले०—नरेन्द्रनाथ B.Sc.)

बिजली के काम की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है। हर प्रकार की हाउसवाईरिंग, अंडरग्राउंड, ओवरहेड वायरिंग मोटर कार, पावर, फिलोरीसैंट ट्यूब वाईरिंग और इलैक्ट्रिक मोटरजमीटरज, मेगनिटस सरकिटस ए-सी व डी-सी मशीनें-आरमेचर वाइन्डिंग आदि २ का पूरा बयान लिखा गया है। पृष्ठ संख्या लगभग ८०० से भी ऊपर चित्र संख्या ३०० से भी ऊपर है। इस पर भी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १०) दस रुपया डाक व्यय अलग

स्टीम बायलर और इंजन (३ भाग सम्पूर्ण)

(लेखक—एच० सी० कपूर मिकैनिकल इन्जीनियर)

लंकाशायर बायलर, कारनिस बायलर, लोकोमोटिव और वाटर ट्यूब बायलर, बबकाक्स विलकाक्स और वर्टीकल बायलर, हारीजन्टल, सिंगल सिलेण्डर कम्पाउण्ड, कण्डैन्सर तथा नान कण्डैंसर, कलिट कम्पाउण्ड व पोरटबल एवं प्रत्येक पुर्जे का नाम तथा काम, सैट करने के तरीके, नये और पुराने इंजनों की सैटिंग, इनके अतिरिक्त हर प्रकार के प्रयोग में आने वाले मीटरों का वर्णन, सिलैंडर में स्टीम की तकसीम पिस्टन पर स्टीम की तकसीम, हर प्रकार के स्लाइड वाल्वों के सेट करने की विधि, हार्स पावर जानने की विधि, इम्तहानी सवाल-जवाब, कोयला जलाने आदि का हिसाब, सैकड़ों बातें चित्रों सहित क्रियात्मक रूप में अनुभव के आधार पर समझाई गई हैं। पुस्तक की छपाई तथा कागज बढ़िया है। जिल्द बन्धी पुस्तक का मूल्य १०) दस रु० डाक व्यय अलग।

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें [illegible] मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, देहली नं० ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मोटर मकैनिक टीचर

लेखक—कृष्णानन्द शर्मा *M. M. (M. E. S.)*

टैक्निकल स्कूलों तथा वर्कशापों से स्वीकृत

दूसरा संशोधित परिवर्धित संस्करण

इस पुस्तक में वर्तमान समय की फोर्ड, शेवरलेट आदि सभी नई-पुरानी मोटर कारों के इंजनों, बिजली तथा वायरिंग, हर एक पुर्जे के नाम काम तथा उनकी मरम्मत करना, एक सौ चित्रों से भरपूर यह पुस्तक इतने सरल ढंग से लिखी गई है कि कठिन से कठिन बात भी बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है। इससे नए काम सीखने वाले तथा पुराने दोनों प्रकार के कारीगर लाभ उठा सकेंगे, और सभी वर्कशापों में काम सीखने वाले ड्राईवर, तथा उम्मीदवार या किसी इंजन के इंजीनियर, मोटर मालिक, मिकैनिक का काम सीखने के उम्मीदवारों को पूरी जानकारी के लिये पर्याप्त है। पृष्ठ संख्या ३३६ मूल्य केवल ६) रुपया छः रु०

ढलाई के काम की हिन्दी में सर्वप्रथम पुस्तक

फाउँड्री प्रैक्टिस (सचित्र)

लेखक—जयनारायण शर्मा

इसमें धातों की किस्में, उनकी मिलावटें, मिट्टी तैयार करना और फर्मे घास, फरनेस तथा क्यूपोला और ढलाई के काम का पूर्ण वर्णन प्रैक्टिकल-रूप में किया गया है। साथ ही इन्जीनियरिंग काम के नुसखे और लोहे के नाप, तोल और साइज ७० टेबलों में दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या ४०८ चित्र संख्या १५० । इस पर भी बहुरंगे कवर वाली सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ६) छः रुपया डाक व्यय अलग।

वायरलैस रेडियो गाइड

(लेखक: नरेन्द्रनाथ B. Sc.)

हिन्दी भाषा में रेडियो की पुस्तकें मारकीट में पहले ही कम हैं जो है! उनमें भी चित्रों व गणित भाग की कमी है। अत: यह पुस्तक भारत में प्रथम है! जोकि १८० चित्रों तथा पूर्ण गणित भाग सहित प्रकाशित हुई है। आप इसे पढ़ कर सिटी एण्ड गिल्डज् की परिक्षा पास कर सकते हैं। इस पुस्तक में रेडियो रिसीवर के प्रारम्भिक नियम को जानने, नये रेडियो बनाने, लाउड-स्पीकर व एम्पलीफायर इक्वीमैंट के नियम और काम पूरे तरीके से बताये गये हैं। हर प्रकार के रिसीवर जैसे लोकल, आल इण्डिया, आल वर्ल्ड रिसीवरों के कई एक पूरे-पूरे नक्शे दिये गये हैं। ट्रान्समिशन का भी सिद्धान्त बयान किया गया है। हर एक बात बड़ी सुगमता से समझी जा सकती है। जिसके घर में रेडियो है उसके लिये इस पुस्तक का रखना बहुत ही जरूरी है। परीक्षाएं बड़ी सुगमता से दे सकते हैं। इन परीक्षाओं को देकर आप अच्छी २ नौकरियों पर लग सकते हैं। पृष्ठ संख्या ३८२, चित्र संख्या १६८ उस पर भी सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६) छः रुपया डाक खर्च अलग।

व्यापार दस्तकारी (कला व्यापार दर्पण)

(लेखक—शिवानन्द शर्मा भास्कर)

किसी एक कार्य को हाथ में लेकर आप माला-माल हो जायेंगे। तेल-साबुन, छपाई, रंगाई, बुनाई-दवा, चित्र आदि सब कुछ बनाने की विधि दी गई है। अमेरिका आदि देश धनवान हैं मगर भारत में लाखों मनुष्य बेकारी के कारण रात को भूखे सो रहते हैं। लाखों को पेटभर खाना भी नहीं मिलता इसका एकमात्र कारण अपने समय को नष्ट करना है। अगर भारत-वासी भी इसी व्यापारिक तरीकों को अपनायें तो हमें आशा है कि हम भी निरन्तर धनवान बनते चले जावें, मूल्य केवल २।।) ढाई रु० डाक व्यय अलग।

इलैक्ट्रिक वायरिंग

(प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों द्वारा स्वीकृत, इलैक्ट्रिक वायरमैन सिलेबस के अनुसार)

(लेखक—श्री नरेन्द्रनाथ B. Sc.)

इंजीनियरों, इलैक्ट्रीशियनों, विद्यार्थियों और उन मनुष्यों के लिए जो कि बिजली के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों इलैक्ट्रिक वायरिंग नाम की पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। जिसमें वायरिंग के विषय में जगह २ चित्र, नक्शे तथा टेबुल और फोटो ब्लाकों द्वारा पूरी २ जानकारी कराई गई है, जिसे वायरमैन के सिलेबस के आधार पर तैयार किया गया है, जिसमें हाउस वायरिंग, ओवर हेड वायरिंग, पावर वाइरिंग, अण्डर ग्राउंड वायरिंग, डाइरेक्ट करेंट मोटर वायरिंग, आल्टरनेटिंग करेंट मोटर वायरिंग, और मोटर कार वायरिंग, फिलोरीसैंट ट्यूब वायरिंग, रेफरीजेरेटर वायरिंग आदि का समस्त वर्णन किया गया है। इसपर भी सजिल्द तथा सफेद और मोटे चिकने कागज पर सुन्दर छपाई वाली २०० पेजों और १५४ चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपया डाक व्यय अलग।

टैक्निकल डिक्शनरी

लेखक—ए० बी० माथुर

इस पुस्तक में रेडियो की टैक्निकल टर्म्स के अतिरिक्त टेलीफोन, टेलीग्राफी, इलैक्ट्रिसिटी और टेलीविजन के नियमों की परिभाषाओं को भली भाँति हिन्दी में सरल भाषा में उचित रूप से वर्णन किया गया है।

इसकी सहायता से शीघ्र ही परिचित होकर विज्ञान में अधिक जानकारी और उन्नति प्राप्त की जा सकती है। मूल्य केवल ४) चार रु० डाक व्यय अलग।

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार देहली ६ ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इलैक्ट्रो प्लैटिंग

लेखक—[illegible]

(बिजली द्वारा मुलम्मा)

भारतवर्ष में मशीनरी बनने का काम प्रत्येक शहर में चालू होने के कारण इलैक्ट्रोप्लैटिंग का काम भी बहुत बढ़ गया है. हमारी इस पुस्तक में इस काम के विषय में सभी बातों पर पूरी २ जानकारी कराई गई है, यानी कैसा मकान होना चाहिए क्या २ सामान और मसाला लगता है, अलग अलग धातों पर मुलम्मा कैसे किया जाता है सोलूशन किस प्रकार बनाये जाते हैं, प्लैटिंग के काम में क्या २ अहतयात रखनी पड़ती है आदि। हर एक नियम और उसूल को समझने के लिये हर नये पुराने कारीगर के पास इसका होना जरूरी है मूल्य ४॥) डाक व्यय अलग

मोटरकार वायरिंग

लेखक—नरेन्द्रनाथ B. Sc.

इस पुस्तक में मोटर कारों, लारियों और ट्रकों में बिजली के प्रयोग का पूरा २ वर्णन कार डायनिमो-सेल्फ स्टार्टर, बैट्री ऑटो-मैटिक कट आउट, लाईटिंग और बिजली के नवीन यन्त्रों का पूरा २ बयान है। इसके पढ़ने से कोई भी विद्यार्थी या साधारण मोटर मैकेनिक बिजली के विषय में पूरा २ ज्ञान प्राप्त करके मोटर कार वायरिंग का सम्पूर्ण कारीगर बन सकता है। बहुत सरल हिन्दुस्तानी भाषा में लिखी गई है। पुस्तक सचित्र तथा २५० के लगभग पृष्ठ वाली बढ़िया कागज पर छपी हुई सजिल्द का मूल्य ४॥) साढ़े चार रुपये। डाक व्यय अलग।

आयल व गैस इंजन

लेखक—नरेन्द्रनाथ B. Sc.

इस पुस्तक में मैले तेल और पैट्रोल से चलने वाले हर किस्म के इंजनों अथवा कैरोसिन आयल इन्जन, पैट्रोल इंजन, डीजल आयल (रि स्टार्ट) क्रूड आयल इन्जन, डाग कोल्ड स्टार्ट क्रूड आयल इंजन और हलैक स्टोन, बरनार्ड, हारीजिन्टैल और वरटीकल कम्बसचन आदि इंजनों के काम के तरीके. उनके सारे कल-पुर्जों का विस्तार के साथ वर्णन, चित्रों द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त पुर्जों और इंजनों में होने वाली खराबियों को जानना और ठीक करना और हर प्रकार की फिटिंग का वर्णन बहुत से चित्रों द्वारा विस्तार पूर्वक लिखा गया है। सिंगल सिलैंडर से छः सिलैंडर तक के टाईमिंग बांधने, आटा चक्की के विषय में प्रश्न उत्तर दिए गए हैं। यह पुस्तक हर एक इंजन ड्राइवर, मिकैनिक और इंजीनियर के लिए एक सी लाभदायक और सहायक सिद्ध हुई है। पुस्तक ऐसी सरल भाषा में लिखी गई है कि थोड़े पढ़े लिखे भी पूरा लाभ उठा सकते हैं। पृष्ठ संख्या ५४४ चित्र संख्या १३२। पक्की जिल्द बंधी पुस्तक का मूल्य १०) दस रुपया डाकखर्च अलग।

मोटर ड्राइविंग

लेखक—कृष्णानन्द शर्मा M. M. (M. E. S.)

इस पुस्तक की मदद से कठिन से कठिन बात भी आसानी से समझ में आ जाती है। जैसे कि गाड़ी और ड्राइवर. इन्जन कन्ट्रोल, इन्जन स्टार्ट करने की विधि गीयरचेन्जिग, ब्रेकों का प्रयोग, इन्जन के मुख्य २ पुर्जे, पावरयूनिट, कूलिंग, इग्नेशन, लुब्रीकेशन, इलैक्ट्रिकल, टायमिंग बांधना, इंजन में होने वाली खराबियां और उनको ठीक करना, एमरजंसी रिपेयर मोटर रेस आदि। मूल्य ४॥) साढ़े चार रुपया डाक व्यय पृथक।

क्रूड आयल इंजन

ले०—नरेन्द्रनाथ तथा लोकनाथ एण्ड [illegible] मिकैनिकल सुपरवाइजर।

इस पुस्तक में हर प्रकार के थोड़ी कीमत के तेलों से चलने वाले हैवी आयल इंजनों, डीजल, ब्लैक स्टोन, क्रोसले आदि का वर्णन जैसे हवाई जहाजों में, रेलों में, समुद्री जहाजों में प्रयुक्त होते हैं, चित्रों सहित सरल भाषा में कोष सहित विस्तारपूर्वक लिखा गया है। इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि इसमें आटा चक्की के बारे में भी पूरी जानकारी प्रश्न उत्तर के रूप में कराई गई है। इंजन के पुरजों का सैट करना, आयल पम्प, वेपोराईजर, गवर्नर और टाईमिंग के हालात, फाउन्डेशन बनाने और फिटिंग की सब बातें बन्द इंजन को चलाना तथा टाइमिंग बांधना, पैदा होने वाली खराबियों का जानना और ठीक करना, हार्स पावर निकालना तथा अन्त में बीसियों ऐसी २ आवश्यक बातें लिखी गई हैं कि जिनका जानना बहुत ही आवश्यक है। चित्र सं० ४५ पृष्ठ सं० २५६ होते हुए भी सजिल्द और रंगीन टाइटल वाली किताब की कीमत ४।।) साढ़े चार रुपया। डाक व्यय अलग।

सत्यव्यापार लक्ष्मी भण्डार

(लेखक -- राजेशगुप्त)

यह ३५२ पृष्ठ का सजिल्द ग्रन्थ, योरोप, अमेरिका, जापान आदि देशों के ५००० से भी ज्यादा व्यापारिक फारमूलों का निचोड़ है—आप अवकाश और छुट्टी के समय में कोई एक काम शुरू कर दें। केवल १घन्टा रोजाना काम करने से आप १००, २०० रु० माहवार आसानी से पैदा कर सकेंगे. अब तक इस पुस्तक की सहायता से सैकड़ों बेरोजगार आदमी मजे से जिन्दगी गुजार रहे हैं। मू० ४॥)

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार देहली ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मोटर इन्स्ट्रक्टर

(ले० कृष्णानन्द शर्मा)

इस पुस्तक में मोटरड्राइविंग के अतिरिक्त मोटर मकैनिक के काम का पूरा २ विवरण चित्र सहित दिया गया है। हिन्दी भाषा में ऐसी उपयोगी पुस्तक आज तक नहीं छपी। मूल्य केवल १०) दस रु० डाक व्यय अलग।

साबुन शिक्षा (साबुन उद्योग)

[लेखक—मथुराप्रसाद अंग्रवाल]

इस पुस्तक में हर प्रकार के देशी तथा अंग्रेज़ी साबुन बनाने के अति सुगम और नवीन २ योग लिखे गये हैं जिनसे आप घण्टों में हर प्रकार का अति उत्तम चिकना, सस्ता और चमकदार साबुन बना सकते हैं जैसे सनलाइट, खुशबूदार फूल साबुन, ठण्डा साबुन सनलाइट जैसा, टर्किश बाथ सोप, नीमसोप इत्यादि। आज ही कार्ड लिखकर पुस्तक मंगवालें। वरना पुस्तक समाप्त होने पर दूसरा संस्करण देरसे मिलेगा, यदि पुस्तक का मूल्य सौ रु० भी रखा जाता तो भी कम था परन्तु हमने बहुत ही कम अर्थात् १।) सवा रुपया रखा है जो एक योग का भी नहीं। डाक व्यय पृथक

वर्कशाप गाइड अथवा फिटर ट्रेनिंग

इस पुस्तक में इंजिनियरिंग वर्कशाप कारखानों में होने वाले सारे काम अर्थात् खराद, मिलिंग वाइ-रिंग, गैस वैल्डिंग टांका लगाना, ढलाई, धातुओं की किस्में, ताकत, पैमाइश, फिटिंग के काम सब चित्र (ब्लाक) से समझाए गए हैं। यह पुस्तक कारीगरों की जान और बेहुनरों की दस्तकारी है। जिसकी कि आजकल के समय में बड़ी आवश्यकता थी, छप कर तैयार हो गई है। पृष्ठ संख्या १६६ चित्र संख्या १४२ मूल्य केवल ३) तीन रु० डाक व्यय अलग।

ट्रैक्टर गाइड

(खेती के लिये ज़मीन तैयार करने की नवीन विधि) (सचित्र)

उपरोक्त टैक्नोलोजी इस पुस्तक में हर प्रकार के घटिया और बढ़िया तेलों से चलने वाले और हर एक नये मोडल के ट्रैक्टरों को स्टार्ट करना तथा उन के इंजनों से अन्य दूसरे काम लेना, उसके कलपुर्जों से वाकिफ होना पैदा होने वाले नुकसों को पहचानना तथा उनको ठीक करना सारी बातें विस्तार पूर्वक चित्रों सहित समझाई गई हैं जिस बन्जर तथा ऊंची नीची ज़मीन को हमने बेकार समझकर छोड़ रखा था उस ज़मीन से ट्रैक्टरों द्वारा हर वर्ष लाखों का अनाज पैदा होने लगा। मूल्य केवल १०) दस रुपया डाक व्यय अलग।

गैस वेल्डिंग (ले०—जयनारायण शर्मा)

इस गैसवेल्डिंग की अद्वितीय पुस्तक में औक्सीजन ऐसेटिलीन गैस के लोप्रेशर वेल्डिंग और हाई प्रेशर वेल्डिंग का पूरा २ प्रैक्टीकल विवरण दिया गया है। गैस पैदा करने वाले जेनरेटर और उसके लिये ब्लोपाइप, वेल्डिंग रौड तथा आग का खुलासा हाल दिया गया है। ऐसीटिलीन के हाई प्रेशर-सिलिंडर और औक्सीजन सिलिंडर के साथ वेल्डिंग का काम हिदायतों सहित समझाया गया है। वेल्डिंग रौड और ब्लोपाइप के सही २ तरीके बताये गये हैं। लोहे, कास्ट आयरन, ऐलमूनियम, तांबे और पीतल के वेल्डिंग के तरीके अलग २ वर्णन किये गये हैं। साथ २ वेल्डिंग से कटिंग चित्रों और आवश्यक सूचियों द्वारा पुस्तक बहुत उपयोगी प्रकार की लिखी गई है जो हर एक वेल्डर के पास होने से वेल्डिंग का काम सही २ विधि से कर सकता है। लोहे के काटने का भी तरीका बताया गया है। मूल्य ४।) साढ़े चार रु० डाक व्यय अलग।

घड़ी साज़ी (लेखक—...)

इस पुस्तक में सर्व प्रकार के क्लाकों, टाइमपीसों और घड़ियों को खोलने सफाई करने और मरम्मत करने की विधि चित्रों सहित दी गई है। इसके अतिरिक्त सर्व प्रकार के औज़ारों, पुर्ज़ों के नाम तथा काम में आने वाले औजारों के पहचानने तथा प्रयोग करने के ढंग चित्रों सहित बताये गये हैं। बिगड़ी हुई घड़ियों के गुप्त भेद और उसके कारणों के जानने की विधि भी इस ढंग से समझाई गई है कि पढ़ने वाला काफ़ी लाभ उठा सकता है और थोड़े दिनों की मेहनत से दस बीस रुपया रोज़ का कारीगर बन सकता है मूल्य ४।) साढ़े चार रु० डाकव्यय अलग

अन्य टैक्निकल पुस्तकें

टांका लगाना	४)
मकैनिक गाइड	४)
मोटर साइकिल गाइड	४।)
बैटरी और डाइसैल बनाना	४)
छोटे डाइनुमा इलैक्ट्रिक मोटर बनाना	४)
फोटोग्राफी शिक्षा	६)
बच्चों का टेलीफोन	।॥)
बच्चों का रेडियो	१।)
रेडियो गाइड	३।)
लोकल रेडियो सैट	१।)
आकाशवाणी (रेडियो का सम्पूर्ण ज्ञान)	१।)
बच्चों का लाउडस्पीकर बनाना	१।)
बच्चों का विज्ञान (तलस्थान)	१।)
हारमोनियम	॥।)

(डाक महसूल पृथक)

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० से मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, देहली नं० ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बड़ा सूची-पत्र मुफ्त मंगाइये और हर आर्डर पर नये वर्ष की भी आप राष्ट्रीय जन्त्री मुफ्त लीजिये !

(इतने मोटे अक्षरों में)

विद्वान् लेखक पं० जयगोपाल जी के

(दो सुनहरे ग्रन्थ)

(१) बड़ा महाभारत भाषा (सचित्र)

तृतीय संस्करण ।

विद्वान् लेखक की अनुपम चमत्कारिक रचना है जो अल्पकाल में ही हजारों की संख्या से अधिक बिक चुकी है। अब नया संस्करण निराली सज-धज और अपूर्व चमक-दमक से छपा है। जिसको पढ़कर आर्यावर्त्त की उन्नति व भाग्य वृद्धि एवं अवनति, पदच्युत तथा आपस के लड़ाई झगड़ों का कारण दृष्टिगोचर होता है। लेखन-शैली ऐसी मनोहर एवं प्रभावोत्पादक है कि एक बार आरम्भ करके पुस्तक हाथ से छोड़ना असम्भव-सा है। लिखाई छपाई कागज अति उत्तम और बढ़िया है। पृष्ठ संख्या ६०८ मूल्य १२) बारह रुपया डाक खर्च सहित।

महर्षि वाल्मीकि की अमर रचना का हिन्दी अनुवाद

(२) वाल्मीकि रामायण (भाषा)

चौथा शुद्ध एवं सचित्र संस्करण

इस ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम की शिक्षाप्रद सम्पूर्ण कथा बहुत सुन्दर छपाई में है। इस पुस्तक की भाषा बहुत ही मधुर और सरल है, जिसको स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभी सुगमता से पढ़ कर और समझ कर पूरा आनन्द उठा सकते हैं। यह ग्रन्थ हर घर का दीप, अर्थात अन्धेरे में प्रकाश है। पुस्तक में बीसियों सुन्दर चित्र दिये गये हैं। कागज चिकना, मोटा और सफेद है। पृष्ठ संख्या ६१६ है। आवरण चित्र अति सुन्दर है। जिस पर भी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १२) बारह रुपया डाक खर्च सहित।

व्यापार चमत्कार (तेजी मन्दी सट्टा)

(तैयार माल और वायदा (सट्टा) का भविष्य फल)

धन खोकर जीवन से निराश हुए लोगों के लिए हमने उपरोक्त पुस्तक तैयार की है। ज्योतिष शास्त्र के गहरे विचार से हमने व्यापारियों के लाभार्थ बहुत सी गुप्त बातें प्रकट करदी हैं।

इसके अतिरिक्त घुड़दौड़ में हारजीत तथा अन्य अनेक लाभ की बातें इसमें लिखी गई हैं। पुस्तक को सरल ढंग से लिखा गया है कठिन सवालों को उदाहरण देकर समझा दिया गया है। यह हमारे अनुकूल हैं या प्रतिकूल यह जान कर व्यापार करने वाले लोग ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ग्रह तिथि नक्षत्र आदि का पूरा २ विचार इसमें मिलेगा। साथ साथ पुस्तक में रुई सूत वस्त्र शेयर ऊन सोना चाँदी तांबा लोहा आदि धातु तथा गुड़ खाँड खसखस इलायची कालीमिर्च मसाला मूंगफली करयाना जवाहरात घृत तिल तैल सरसों बाजरा अलसी गेहूं चावल रुई बिनौला लकड़ी रंग आदि हरएक वस्तु की तेजी मन्दी के बहुत से अचूक सुनहरी चांसों के योग आसान हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते थे। वह सब तेजी मन्दी के गुप्त भेद लिख दिये हैं। यदि आप धन कमाकर लखाधीश बनना चाहें तो इसे मंगाकर देखने में देरी न करें, व्यापारियों की यह जान है। व्यापार में हानि उठाये हुए व्यापारी भी यदि इस पुस्तक को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे। इस पुस्तक की भविष्य वाणियां बिलकुल सच्ची होती हैं। इस पुस्तक की मदद से निर्धन मनुष्य भी **लक्षाधीश बन सकता है** और सर्वसुख ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत कर सकता है। मूल्य केवल ५) पांच रुपया डाक व्यय सहित।

अन्य पुस्तक

वीर वृषभ (राष्ट्रीय उपन्यास)	५)	मेवाड़ गौरव गाथा	२॥)
वीर पंचरत्न	३॥)	लवलैटरज्	१।)
बाल रोग चिकित्सा	॥)	मूचाल उपन्यास	३॥)
चौराहा (उपन्यास)	३॥)	जैबोध (R. S. S.)	२।)
शंखनाद (कविता)	२।)	बड़ा भक्ति सागर	३)
रामायण राधेश्याम	४॥)	उल्लू तन्त्र	५)
रंग रंगीले भजन	३)	भजन कीर्तन संग्रह	३)
मारवाड़ी गीत संग्रह	४)	फिल्मी गायन	।॥)
सिनेमा संगीत	१॥)	शीघ्र बोध	१।)
हमारी मातायें	३)	भारत की वीरांगनायें	३)
हरयाणा पच्चीसा	२॥)	बैताल पच्चीसी	१।)
ब्रह्मचर्य साधन	१)	मुकलावा बहार बड़ा	४॥)
बृहद् पाकविज्ञान	३)	बृहद् बूटी प्रचार	२॥)
लाठी शिक्षा	१)	महाराणा प्रताप	२।)
बाल रामायण	१॥)	दयानन्द (सचित्र)	२॥)
भजन पुष्पांजलि	१।)	फिल्म संगीत बहार	१॥=)
चित्रपट के सितारे	१)	अकबर बीरबल	२॥)
चार महापुरुष	३)	रहदास रामायण	२॥)
कबीर दोहावली	॥)	विदुरनीति (सम्पूर्ण)	१॥)
चाणक्यनीति	।॥=)	कोकशास्त्र (सचित्र)	२॥)
पहली सुहाग रात	१।)	सचित्र प्रेमसागर	४॥)
तोता मैना	२॥)	पूरनमल बालकराम	४॥)
गोपीचन्द बालकराम	३॥)	महाज्ञान भक्ति प्रकाश	२॥)
भक्त वाणी	२॥)	गीतांजलि (टैगोर)	१॥)
विश्वासघात (कहानी संग्रह)	२)	पथरीगढ़ की लड़ाई	१॥)
हातिमताई	३)	बड़ा आल्हा खण्ड	१२)

हर प्रकार की हैण्डिनल्ल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० से मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार देहली ६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

... राष्ट्रीय जन्त्री मुफ्त लीजिये ।

जादू तन्त्र-मन्त्र की असली पुराने छापे की पुस्तकें

श्री शंकर महादेव के कहे हुए यंत्र मंत्र तंत्र का अपूर्व ग्रन्थ

असली इन्द्रजाल (लेखक—शोभनलाल जी)

अगर आज तक आपको असली इन्द्रजाल की पुस्तक नहीं मिली तो आप हमारे यहां से असली और पुराने छापे की पुस्तक मंगायें जिसमें भैरों, काली, दुर्गादेवी और हनुमान सब के यंत्र मन्त्र जो क्षणमात्र में ही सिद्धि प्रदान करने वाले हैं, दर्ज हैं। इसके अलावा वशीकरण विद्या मन्त्र-तंत्रों की सिद्धि कर चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर उससे मन चाहा काम लो और रसायनी साधन, गूढ़ विद्या इत्यादि बातों का सविस्तार वर्णन है। यंत्र मंत्र तन्त्रों को सिद्ध करने की पूर्ण क्रिया लिखी गई है। सिद्धि का होना कार्यकर्ता पर निर्भर है। (यह हस्तलिखित पुस्तक से छापी है) मूल्य केवल २॥) ढाई रुपया, डाक व्यय ।=) अलग। कुल २5

दक्षिण का जादू चीन जापान का सच्चा जादू

(लेखक—आर० के० शर्मा)

इस पुस्तक में हाथ का जादू आँखों का जादू के अलावा मैस्मरेजम विद्या, ताश के खेल, हाथ की सफाई के एक से एक अजीब और अनोखा खेल आदि बातों का वर्णन किया गया है। खेल दिखाने वाला मनुष्य अगर होशियार हो तो बहुत जल्दी हर एक खेल सीख सकता है। इसके अलावा बहुत से वशीकरण के मन्त्र और हाथ की सफाई पानी का रेता बनाना, जादू का चाकू, कपड़े की कतरें खाकर फिर निकाल देना बहुतेरे खेल लिखे गये हैं।

मूल्य केवल १।) डेढ़ रुपया, डाक व्यय अलग।

सचित्र करामात

इस पुस्तक में योग विद्या के समस्त अंग मैस्मरेजम हिप्नाटिज़म द्वारा दूसरे मनुष्य का रहस्य जानना, दूर देश की बातों को एक ही स्थान पर बैठे हुये क्षण भर में जान लेना, पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन देखना। पशु पक्षियों की बोली पहचानना, अन्तर्धान होना, चाहे जितना हल्का भारी होना, बिना औषधि पान किये कठिन रोग की चिकित्सा करना, भूत-प्रेत इत्यादि को बुलाना, मृतक आत्माओं से बातचीत करना, यंत्र, मंत्र तन्त्र वशीकरण इत्यादि का सरलता पूर्वक वर्णन किया गया है। मूल्य केवल १।) डेढ़रुपया

चीन बंगाल का जादू—

इस पुस्तक में चीन बंगाल देश के जादू तथा जादू के उतार चढ़ाव की पूर्ण क्रिया लिखी गई है। साथ साथ भूत-प्रेत आत्माओं से बातचीत तथा उनसे काम लेने का ढंग और भूतों की मदद से दुश्मन को डरवाना तथा बीमार करना और जमीन का गढ़ा धन पूछना आदि आदि बहुत-सी बातें लिखी गई हैं। मूल्य केवल १॥) डाक व्यय अलग।

वशीकरण मन्त्र मूल्य केवल १॥)

इस पुस्तक की मदद से चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर मन चाहा काम ले सकते हो। आकर्षण सुरमा बनाने की क्रिया, राज दरबार में विजय पाना, लड़ाई में शत्रु को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्र को मन्त्र द्वारा दूर देश से बुलाना, बातचीत करना आदि बातों का वर्णन किया गया है

चौदह विद्या चौंसठ कला

इस पुस्तक में चौदह विद्याओं का वर्णन है जिससे सदैव काम पड़ता रहता है। यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(१) योग विद्या—योग क्रिया पातञ्जलि रचित सूत्रों का हिन्दी अनुवाद योग का फल इत्यादि बातों का वर्णन (२) ज्योतिष विद्या—ज्योतिष सम्बन्धी बातों का ज्ञान पा सकता है। (३) वैद्य विद्या-नाड़ी परीक्षा रोग निदान और उनकी औषधियों का वर्णन है। (४) राजनीति—प्राचीन राज प्रबन्ध सम्बन्धी नियम और उनकी संचय क्रिया का वर्णन है (५)रसायन विद्या—कीमिया बनाना, स्याही पारा आदि धातुको भस्म करना इत्यादि बातें हैं। (६) शिल्प विद्या-साबुन खुशबूदार तेल आदि बनाने की सरल रीति लिखी है (७) मन्त्र विद्या-रावणकृत उड्डीश तंत्र के सारानुसार वशीकरण आदि मन्त्रों को सिद्ध करना (८) तंत्रविद्या-महर्षि दत्तात्रेय के रचित तंत्रों द्वारा वशीकरण मारण, स्तम्भन करने की क्रियाओं का वर्णन है। (९) यंत्र विद्या-मैस्मरेजम के खेल, मृतक आत्माओं के करिश्मे तथा यांत्रिक क्रियायें लिखी हैं। (१०) शकुन विद्या—शकुन द्वारा शुभाशुभ कर्मों का फल देखना। (११) कृषि विद्या—सम्बन्धी बातों का वर्णन है (१२) वस्तु विद्या—मकान बनाना और उसका शुभाशुभ फल देखना इत्यादि बातों का वर्णन है। (१३) कोक विद्या—स्त्री पुरुष के जाति भेद और लक्षणों का वर्णन है। (१४)संगीत विद्या-इसमें स्वरों का वर्णन है। अन्त में नटों की चौंसठ कलाओं का पूरा वर्णन है। मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय अलग।

हर प्रकार की टैक्निकल पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० से मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार देहली ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये और हर आॅर्डर पर श्री बापू राष्ट्रीय जन्त्री मुफ्त लीजिये।)

ताश के जादू अथवा खेल

सम्पादक—श्री शिवानन्द शर्मा 'चौबानी'

आजकल बाजारों में जादूगर लोग बच्चों को ताश के विषय में नये नये खेल दिखा कर बहुत सारे पैसे ठग लेते हैं, भोले-भाले और ताश के अद्भुत खेल सीखने वाले उनके धोखे में न फंसें वह हमारी पुस्तक ताश के जादू मंगा कर हर प्रकार के खेल सीख सकते हैं। पुस्तक में हर खेल को समझाने के लिये लगभग २०० चित्र दिए गए हैं। हम विश्वास दिलाते हैं कि अब तक इतनी अच्छी पुस्तक आपने नहीं देखी होगी। मूल्य केवल १) एक रुपया डाक व्यय अलग।

दुर्गा सप्तशति भाषा टीका सहित

टीकाकार तथा सम्पादक-सन्तराम 'सन्त'

पूजा-विधि, प्रयोग-विधि, देवी कवच, ब्रह्मोक्त देवी कवच, अर्गला, कीलक, नर्वाणविधि, रात्रिसूक्त सप्त-श्लोकन्यास, दुर्गा पाठ, उत्तरन्यास, देवी, सूक्त, नर्वाण-आध्यात्मिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य, क्षमापन, नवचण्डी शत सहस्र चण्डी प्रयोग, आदि सहित, दुर्गा पाठ सम्बन्धी समस्त चमत्कार पूर्ण विषय हैं दुर्गा उपासकों के लिये कल्पद्रुम ही है इसके पाठ से सब कामना निस्सन्देह पूर्ण होती हैं। यदि कलियुग में चण्डी का चमत्कार प्रत्यक्ष आश्चर्यजनक चमत्कार देखना हो तो आज ही सजिल्द पुस्तक के लिए आॅर्डर भेजिये। मूल्य २।।) डाक खर्च ।।=) अलग।

साथ २ पुस्तक में कवच विधि तथा पूजा वेदी में देवस्थान के चित्र आदि भी दिये गये हैं।

ज्योतिष-विज्ञान

यह अमूल्य ग्रन्थ ज्योतिष विद्या के माननीय पं० विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य से अतुल धन व्यय कर बड़े परिश्रम से तैयार कराया है।

इस पुस्तक द्वारा जन्म-जन्मांतर का हाल कहना, जन्म-कुण्डली जानना और उनका फल कहना, मौत जिंदगी बताना, गुप्त प्रश्नों अथवा मूक प्रश्नों का ठीक २ उत्तर देना, वर्षफल बनाना, भाव की तेजी मंदी तथा भविष्य फल कहना, सब प्रकार के मुहूर्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, सूर्य चन्द्रमा आदि समस्त ग्रहों का स्पष्ट करना, हस्तरेखा ज्ञान, गणित और फलित आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया है। विद्वानों के तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है जिसको पढ़कर थोड़ा हिंदी पढ़ा मनुष्य भी ज्योतिष का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६) रुपया

दर्जी मास्टर (दोस्त दर्जियां)

(लेखक—मास्टर बद्रीप्रसाद)

जिसको पढ़ कर थोड़ी पढ़ी लिखी कम समझ स्त्रियां व पुरुष भी घर ही में हर प्रकार का कपड़ा काटना और सीना सीख जाते हैं तथा जिससे एक साधारण मनुष्य भी पूरा टेलरमास्टर बन सकता है। यदि आप चाहते हैं कि अपने तथा बच्चों के कपड़े घर ही में उम्दा सिल जाएं तो एक पुस्तक मंगा कर रक्खें, स्त्रियों को दहेज में देने के लिए अमूल्य वस्तु है। मूल्य केवल २।) ढाई रुपया, डाक व्यय पृथक।

हस्त सामुद्रिक शास्त्र

लेखक—श्री पं० बालभट्ट जी मालवीय

इस पुस्तक में हस्त रेखा के सभी अङ्गों का सांगोपाङ्ग वर्णन १०० सुन्दर चित्रों में किया गया है। रेखाओं की सत्यता के प्रमाण में भारत के प्रमुख व्यक्तियों के हाथों के चित्र भी दिए गए हैं तथा दिखाया गया है कि उनके जीवन की रहस्यमयी घटनाओं का उनके हाथ की रेखाओं से कितना गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य जीवन में रेखाओं द्वारा निश्चित की गई दुर्घटनाओं की ओर से असावधान रह कर हम लोग अपनी अवनति का स्वयं कारण बन जाते हैं। इसी पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है इसमें नाखूनों द्वारा भयंकर रोगों का निश्चय करा देनेसे पुस्तक की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई है। सजिल्द मूल्य केवल २)

बड़ा हिन्दी इंग्लिश टीचर

(लेखक—एम. सी. गुप्ता बी. ए.)

(केवल एक महीने में अंग्रेजी सिखाने वाला)

आजकल के नये युग में शहर, स्टेशन, अदालत, पोस्टआफिस, तारघर, थियेटर सभा—सोसाइटी कहीं भी जाइये, यदि आप अंग्रेजी नहीं जानते तो मूर्ख के समान हैं। इस संसार की गति का आपको पता नहीं लग सकता। आप सफलता-पूर्वक कोई काम नहीं कर सकते। इस पुस्तक से आप स्वयं हिन्दी के सहारे अंग्रेजी सीख सकते हैं। वर्ण-परिचय से लेकर चिट्ठी तार लिख पढ़ लेने तक की योग्यता इससे ही हो जाती है। मूल्य १।।) डेढ़ रुपया डाक व्यय अलग।

हर प्रकार की वैज्ञानिक पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली नं० ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अगर आपका चेहरा ज़र्द है, बदन कमज़ोर है, शरीर में खून नहीं रहा !

अगर आपका सर चकराता है, स्मरण शक्ति कमज़ोर है, कोई बात याद नहीं रहती !

अगर मर्दाना कमज़ोरी और गुप्त रोगों ने सारी मशीनरी को ढीला कर दिया है !

अगर आप गुप्त रोगों जर्यान, स्वप्नदोष और शीघ्रपातसे दुखी हैं !

तो

मर्दाना शक्ति बढ़ाने की मशहूर दवा रेडियम टानिक पिल्ज़ (सोने और फौलाद से तैयार की हुई) सेवन करें ! रेडियम टानिक पिल्ज़ शरीर में नया खून और वीर्य बहुत अधिक मात्रा में पैदा करके ज़बरदस्त मर्दाना शक्ति बढ़ाती है और तमाम गुप्त रोगों जर्यान स्वप्नदोष, शीघ्रपात और मर्दाना कमज़ोरी को हमेशा के लिए दूर करके शरीर में इतनी ज़बरदस्त शक्ति पैदा कर देती है कि रोकना कठिन हो जाता है। रेडियम टानिक पिल्ज़ की पहली ही खुराक से मालूम हो जाता है कि दवाई ने असर दिखाया है। अगर थोड़े दिनों तक परहेज़ के साथ यह मशहूर दवा सेवन कर ली जावे तो आयु भर के लिए मर्दाना कमज़ोरीसे छुटकारा हो जाता है और मर्दाना शक्ति में आश्चर्य-जनक वृद्धि हो जाती है। रेडियम टानिक पिल्ज़ पानी की तरह पतले वीर्य को गाढ़ा करके स्वस्थ सन्तान पैदा करने की ताकत पैदा करती है, इसके प्रयोग से लाखों गये गुज़रे कमज़ोर और बूढ़े पुरुष भी सन्तान पैदा कर चुके हैं। रेडियम टानिक पिल्ज़ की तारीफ दुनियां के प्रसिद्ध डाक्टर और वैज्ञानिक करते हैं और इसे दुनियां के कोने २ में लाखों मनुष्य प्रतिदिन सेवन करते हैं। मूल्य पूरी खुराक ६)।

॥ मालिश के लिये तिला ॥

नसों की दुर्बलता, नपुंसकता, कमज़ोरी दूर करने के लिए रेडियम-मसाज प्रसिद्ध तिला दुनियां के तमाम तिलाओं से बढ़कर माना गया है। यदि बचपन की बुरी आदतों के कारण आपने अपने हाथों से अपनी ताकत और जवानी को बर्बाद कर लिया है तो रेडियम टानिक पिल्ज़ के साथ रेडियम मसाज नामी मशहूर तिला प्रयोग करें। पान और कपड़ा इत्यादि कुछ भी बाँधने की जरूरतनहीं। केवल रात को सोते समय चन्द बूंदें लगाई जाती हैं। मूल्य प्रति शीशी केवल ३)।

दुनियां के मशहूरडाक्टर रेडियम टानिक पिल्ज़ और रेडियम-मसाज के प्रयोग की सिफ़ारिश करते हैं

स्वस्थ नवयुवक इन दवाइयों के सेवन करने से अपनी शक्ति कई गुना अधिक बढ़ा सकते हैं।

यह दवाएं गर्मी और सर्दी हर मौसम में लाभदायक हैं।

हिन्दुस्तान में मिलने का पता:—रेडियम कैमिकल वर्क्स, लि० पोसटबकस नं० १३४२ दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये और हर आर्डर पर श्री बापू राष्ट्रीय जन्त्री मुफ्त लीजिये।)

ताश के जादू अथवा खेल

सम्पादक—श्री शिवानन्द शर्मा 'कौशली'

आजकल बाजारों में जादूगर लोग बच्चों को ताश के विषय में नये नये खेल दिखा कर बहुत सारे पैसे ठग लेते हैं, भोले-भाले और ताश के अद्भुत खेल सीखने वाले उनके धोखे में न फंसें वह हमारी पुस्तक ताश के जादू मंगा कर हर प्रकार के खेल सीख सकते हैं। पुस्तक में हर खेल को समझाने के लिये लगभग २०० चित्र दिए गए हैं। हम विश्वास दिलाते हैं कि अब तक इतनी अच्छी पुस्तक आपने नहीं देखी होगी। मूल्य केवल १) एक रुपया डाक व्यय अलग।

दुर्गा सप्तशति भाषा टीका सहित

टीकाकार तथा सम्पादक-सन्तराम "सन्त"

पूजा-विधि, प्रयोग-विधि, देवी कवच, ब्रह्मोक्त देवी कवच, अर्गला, कीलक, नर्वाणविधि, रात्रिसूक्त सप्त-श्लोकीन्यास, दुर्गा पाठ, उत्तरन्यास, देवी सूक्त, नर्वाण-आध्यात्मिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य, क्षमापन, सप्तचण्डी शत सहस्र चण्डी प्रयोग, आदि सहित, दुर्गा पाठ सम्बन्धी समस्त चमत्कार पूर्ण विषय हैं दुर्गा उपासकों के लिये कल्पद्रुम ही है इसके पाठ से सब कामना निस्सन्देह पूर्ण होती हैं। यदि कलियुग में चण्डी का तत्काल प्रत्यक्ष आश्चर्यजनक चमत्कार देखना हो तो आज ही सजिल्द पुस्तक के लिए आर्डर भेजिये। मूल्य २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

साथ २ पुस्तक में क्रमवार विधि तथा पूजा वेदी के देवताओं के चित्र आदि भी दिये गये हैं।

ज्योतिष-विज्ञान

यह अमूल्य ग्रन्थ ज्योतिष विद्या के माननीय पं० विद्वानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य से बहुत धन व्यय कर बड़े परिश्रम से तैयार कराया है।

इस पुस्तक द्वारा जन्म-जन्मांतर का हाल कहना, जन्म-कुण्डली जानना और उनका फल कहना, मौत जिंदगी बताना, गुप्त प्रश्नों अथवा मूक प्रश्नों का ठीक २ उत्तर देना, वर्षफल बनाना, भाव की तेजी मंदी तथा भविष्य फल कहना, सब प्रकार के मुहूर्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, सूर्य चन्द्रमा आदि समस्त ग्रहों का स्पष्ट करना, हस्तरेखा ज्ञान, गणित और फलित आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया है। विद्वानों के तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है जिसको पढ़कर थोड़ा हिंदी पढ़ा मनुष्य भी ज्योतिष का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६) रुपया

दर्जी मास्टर (दोस्त दर्जियां)

(लेखक—मास्टर बद्रीप्रसाद)

जिसको पढ़ कर थोड़ी पढ़ी लिखी कम समझ स्त्रियां व पुरुष भी घर ही में हर प्रकार का कपड़ा काटना और सीना सीख जाते हैं तथा जिससे एक साधारण मनुष्य भी पूरा टेलरमास्टर बन सकता है। यदि आप चाहते हैं कि अपने तथा बच्चों के कपड़े घर ही में उम्दा सिल जाएं तो एक पुस्तक मंगा कर रखें, स्त्रियों को दहेज में देने के लिए अमूल्य वस्तु है। मूल्य केवल २॥) ढाई रुपया, डाक व्यय पृथक।

हस्त सामुद्रिक शास्त्र

लेखक—श्री पं० बालभट्ट जी [illegible]

इस पुस्तक में हस्त रेखा के सभी अङ्गों का सांगोपाङ्ग वर्णन १०० सुन्दर चित्रों में किया गया है। रेखाओं की सत्यता के प्रमाण में भारत के प्रमुख व्यक्तियों के हाथों के चित्र भी दिए गए हैं तथा दिखाया गया है कि उनके जीवन की रहस्यमयी घटनाओं का उनके हाथ की रेखाओं से कितना गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य जीवन में रेखाओं द्वारा निश्चित की गई दुर्घटनाओं की ओर से असावधान रह कर हम लोग अपनी अवनति का स्वयं कारण बन जाते हैं। इसी पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है इसमें नाखूनों द्वारा सर्व-कर रोगों का निश्चय करा देनेसे पुस्तक की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई है। सजिल्द मूल्य केवल २)

बड़ा हिन्दी इंग्लिश टीचर

(लेखक—एम. सी. गुप्ता बी. ए.)

(केवल एक महीने में अंग्रेजी सिखाने वाला)

आजकल के नये युग में शहर, स्टेशन, अदालत, पोस्टआफिस, तारघर, थियेटर सभा—सोसाइटी कहीं भी जाइये, यदि आप अंग्रेजी नहीं जानते तो मूर्ख के समान हैं। इस संसार की गति का आपको पता नहीं लग सकता। आप सफलता-पूर्वक कोई काम नहीं कर सकते। इस पुस्तक से आप स्वयं हिन्दी के सहारे अंग्रेजी सीख सकते हैं। वर्ण-परिचय से लेकर चिट्ठी तार लिख पढ़ लेने तक की योग्यता इससे ही हो जाती है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया डाक व्यय अलग।

हर प्रकार की [illegible] पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली नं० ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगर आपका चेहरा ज़र्द है, बदन कमज़ोर है, शरीर में खून नहीं रहा !

अगर आपका सर चकराता है, स्मरण शक्ति कमज़ोर है, कोई बात याद नहीं रहती !

अगर मर्दाना कमज़ोरी और गुप्त रोगों ने सारी मशीनरी को ढीला कर दिया है !

अगर आप गुप्त रोगों जर्यान, स्वप्नदोष और शीघ्रपातसे दुखी हैं !

तो

मर्दाना शक्ति बढ़ाने की मशहूर दवा रेडियम टानिक पिल्ज़ (सोने और फौलाद से तैयार की हुई) सेवन करें ! रेडियम टानिक पिल्ज़ शरीर में नया खून और वीर्य बहुत अधिक मात्रा में पैदा करके ज़बरदस्त मर्दाना शक्ति बढ़ाती है और तमाम गुप्त रोगों जर्यान स्वप्नदोष, शीघ्रपात और मर्दाना कमज़ोरी को हमेशा के लिए दूर करके शरीर में इतनी ज़बरदस्त शक्ति पैदा कर देती है कि रोकना कठिन हो जाता है। रेडियम टानिक पिल्ज़ की पहली ही खुराक से मालूम हो जाता है कि दवाई ने असर दिखाया है। अगर थोड़े दिनों तक परहेज़ के साथ यह मशहूर दवा सेवन कर ली जावे तो आयु भर के लिए मर्दाना कमज़ोरीसे छुटकारा हो जाता है और मर्दाना शक्ति में आश्चर्य-जनक वृद्धि हो जाती है। रेडियम टानिक पिल्ज़ पानी की तरह पतले वीर्य को गाढ़ा करके स्वस्थ सन्तान पैदा करने की ताक़त पैदा करती है, इसके प्रयोग से लाखों गये गुज़रे कमज़ोर और बूढ़े पुरुष भी सन्तान पैदा कर चुके हैं। रेडियम टानिक पिल्ज़ की तारीफ दुनियां के प्रसिद्ध डाक्टर और वैज्ञानिक करते हैं और इसे दुनियां के कोने २ में लाखों मनुष्य प्रतिदिन सेवन करते हैं। मूल्य पूरी खुराक ६)।

॥ मालिश के लिये तिला ॥

नसों की दुर्बलता, नपुंसकता, कमज़ोरी दूर करने के लिए रेडियम-मसाज प्रसिद्ध तिला दुनियां के तमाम तिलाओं से बढ़कर माना गया है। यदि बचपन की बुरी आदतों के कारण आपने अपने हाथों से अपनी ताक़त और जवानी को वर्बाद कर लिया है तो रेडियम टानिक पिल्ज़ के साथ रेडियम मसाज नामी मशहूर तिला प्रयोग करें। पान और कपड़ा इत्यादि कुछ भी बाँधने की ज़रूरत नहीं। केवल रात को सोते समय चन्द बूंदें लगाई जाती हैं। मूल्य प्रति शीशी केवल ३)।

दुनियां के मशहूर डाक्टर रेडियम टानिक पिल्ज़ और रेडियम-मसाज के प्रयोग की सिफ़ारिश करते हैं

स्वस्थ नवयुवक इन दवाइयों के सेवन करने से अपनी शक्ति कई गुना अधिक बढ़ा सकते हैं।

यह दवाएं गर्मी और सर्दी हर मौसम में लाभदायक हैं।

हिन्दुस्तान में मिलने का पताः—रेडियम कैमिकल वर्क्स, लि० पोसटबकस नं० १३४२ दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००रु० नकद इनाम जो चाहोगे वही मिलेगा।

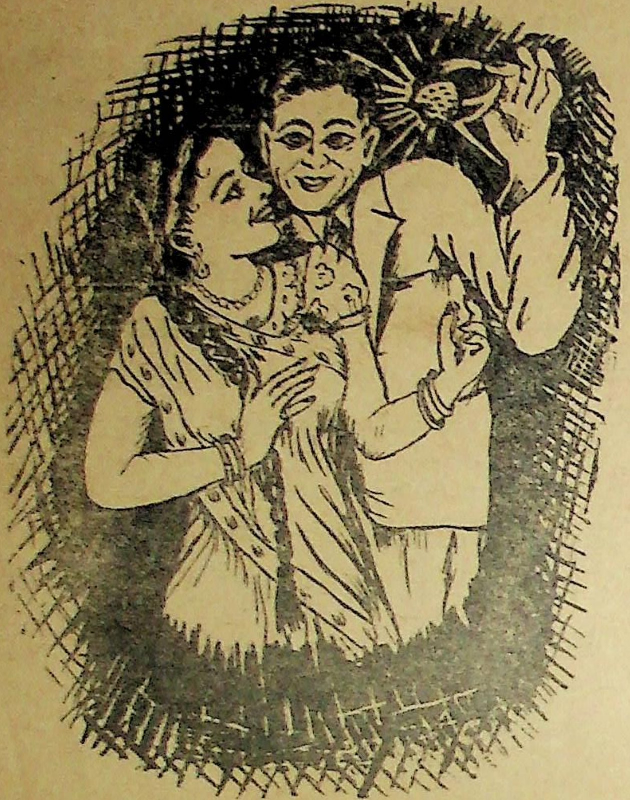

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तांत्रिक अँगूठी को धारण करने से चाहे जैसा कठिन कार्य क्यों न हो उसमें आपको तुरन्त सफलता प्राप्त होगी। जिस किसी को आप याद करेंगे वह कैसा ही कठोर क्यों न हो तुरन्त आपके चरणों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ कर आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई, शादी होगी, नौकरी मिलेगी, बाँझ स्त्री के सन्तान होगी, मुर्दा रूहों से बातचीत होगी, जमीन में दबी दौलत स्वप्न में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्यापार मैं लाभ होगा, दुष्टग्रह शान्त होंगे, बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तांत्रिक अँगूठी १-१५-०, स्पेशल एक रुपया पद्रह आना स्पेशल ३-०-० तीन रुपया पावरफुल ३-१५-० (तीन रुपये पन्द्रह आने) जिसका बिजली के करेंट की तरह फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अँगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम में उदय हो सकता है लेकिन तांत्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगुनी कीमत वापिस की गारंटी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। एक बार जरूर आजमाइश करें।

प्रो० बंगाल मैस्मरेजम हाउस (G. D. 52.) जालधर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लेखक भारत विख्यात 'रूप विलास कम्पनी,' कानपुर के मालिक श्री वैद्यरत्न सत्यदेव जी

इन पुस्तकों के आगे हीरे जवाहरात भी कुछ मूल्य नहीं रखते । श्रीवैद्य जी ने अपने ३० साल के सारे अनुभव इसमें दिल खोलकर रख दिये जो कि लोग हजारों खुशामद करने पर मरते समय तक नहीं बताते हैं ।

सत्य लक्ष्मी भण्डार

यह पुस्तक पुरुषों के लिये जैसी उपयोगीहै उसीप्रकार स्त्रियों को भी । स्त्रियाँ इससे नाना प्रकारकी सामग्रियाँ तैयार कर गृह कार्य में दक्ष हो जाती हैं और वह अपनी गृहतथा सखी सहेलियों में आदरणीय गिनी जाने लगती हैं। इसके अलावा इसमें सिर से लेकर पैर तक के प्रत्येक रोग की आजमूदा स्वदेशी व पेटेन्ट औषधियों के परीक्षित प्रयोग लिखे गये हैं । जिनके जरिये आसानी से हरेक चीज़ तैयार कर बेकारी का मुँह न देखें थोड़ेही दिनोंमें मालामाल बन जावेंगे । यह प्रयोग बाजारों में धड़ाधड़ बिकने वाले हैं । जैसे भाँति २ के चूर्ण चटनी नमक सुलेमानी अमृतार्णव पीयूषसिंधु केशरंजन तेल, हिमकल्याण तेल, भूतनाथ तेल बालामृत हर तरह के रंग तथा तरह २ के साबुन वारनिश, पान का मसाला, शर्बत, कुलफी की बर्फ हर तरह के खाने पीने के सामान और हर प्रकार की बीमारियों के सच्चेनुस्खे पुरुषों के गुप्त रोगों की दवाइयाँ,च्यवनप्राश,द्राक्षासव,पौष्टिक दवाइयाँ दाद का मरहम,सालसा सुर्मा आदि कहां तक लिखें गृह में रोजाना काम आने वाले सैकड़ों नुस्खे जिसको थोड़े से पैसे में बनाकर अपनी गाढ़ी कमाई का रुपया हकीम डाक्टरों से बचाइये और प्रत्येक रोग का इलाज, अपना और अपने इष्ट मित्रों पास पड़ोसियों का कौड़ियों में कर यश प्राप्त कीजिये मैंने जनता के हित के लिए दिल खोलकर नुस्खे दिये हैं प्रत्येक अमीर गरीब सबको एक २ पुस्तक रखनी चाहिये । आशा है कि इस स्वर्ण अवसर से अवश्य लाभ उठावेंगे । पृष्ट सख्या २५० मूल्य २≤)मय डाक खर्च ।

चिकित्सा अरुणोदय

इस पुस्तक में आयुर्वैदिक की तमाम पुस्तकोंका सार लेकर जिस्म के हर एक हिस्से का वर्णन ऐसी खूबी से कर दिया है कि सिर के बाल से लेकर पैर के नाखून तक का खुलासा कर के हाल दिया है वा हर एक मर्ज की पेटेन्ट दवाइयां दे दी हैं जिससे मामूली पढ़ा हुआ आदमी वैद्यक का अच्छा ज्ञान हासिल कर सकता है इसके अलावा हमारे शरीर में क्या है भोजन कैसे और कहां पचता है हर एक बातें चित्रों सहित भली प्रकार समझाई गई हैं । शरीर सदैव निरोग रखने के लिये आसन भी सब चित्रों के लाभ सहित दिखलाये गये हैं । साथ ही उन नियमों को भी बतलाया गया है जिन पर चलने से शरीर नीरोग रह सकता है । इस एक पुस्तक के सुनने पढ़ने मात्र से स्त्री पुरुष के शरीर की बनावट एवं वैद्यक शास्त्र का बहुत कुछ अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है । इस पुस्तक में वैद्यराज सत्यदेव जी के लाखों शास्त्र के अनुसार बनाने की सरल दवाइयां तरकीबों सहित लिखी गई हैं । इस पुस्तक से आप थोड़े ही दिनों में वैद्यक का ज्ञान प्राप्त कर इसके द्वारा बड़े से बड़ा नाम मात्र लागत से व्यापारिक और परोपकारिक औषधालय खोल कर अपूर्व यशकीर्ति प्राप्त कर सुगमता के साथ लाखों रुपया कमा सकते हैं । इस पुस्तक में वैद्यक का ज्ञान प्राप्त कर अपने बाल बच्चों एवं कुटुम्ब परिवार का जीवन स्वास्थ्य युक्त दीर्घजीवी बनावें । मूल्य प्रति पुस्तक जिसमें ४८० सफे हैं सजिल्द ३≡) तीन रुपया तीन आना डाक खर्च अलग ।

१०००) माहवार कमाइये

इस दौलत की खान नामक पुस्तक में २६२ हुनर ऐसे छपे हैं जिनसे लोग लखपती हो गये जो बेकार थे कोई रोजगार न आता था वह भी हजारों रुपया माहवार कमाने लगे हैं किसी उस्ताद की जरूरत नहीं हर तरह के तेल साबुन बाल उड़ाने का साबुन अर्क बाल काले करने का खिजाब हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू आदि का मसाला स्याही रंगसाजी, रोगों की पेटेंट औषधियां, कुलफी का बरफ बनाना करामाती भूतों की अंगूठी बाल उम्र भर न जमने की दवा, नकली सोना, काले का गोरा बनाने वाली दवा, आदि हुनर छपे हैं जिन्हें लोग खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते । कीमत फी पुस्तक २≡) मय डाक खर्च ।

दीनजन चिकित्सा

यह पुस्तक श्री सत्यदेव जी ने रात दिन एक करके लिखी है इस पुस्तक के अन्दर फकीरी १०६६ नुस्खे हैं हर मरज के ८-८ या १०-१० असाध्य नुस्खे दिये हैं जो मामूली पैसों में तैयार हो जाते हैं । इस पुस्तक को मंगाने के बाद आपको इलाजुलगुर्बा, अमृतसागर, सारंगधर, भावप्रकाश पुस्तक के खरीदने की जरूरत नहीं । पुस्तक में यूनानी, आयुर्वैदिक दोनों ही इलाज दिये हैं पुस्तक क्या अनमोल वैद्यक का शास्त्र है सुन्दर भाषा में लिखी है जिसे मामूली हिन्दी पढ़ा आदमी समझ सके । मू०कुल४)डाक खर्च ॥|-)

ग र्ग ए ण्ड कं प नी थो क कु त ब खा ना नं० १९. ला हौ री गे ट दे ह ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००रु० नकद इनाम जो चाहोगे वही मिलेगा।

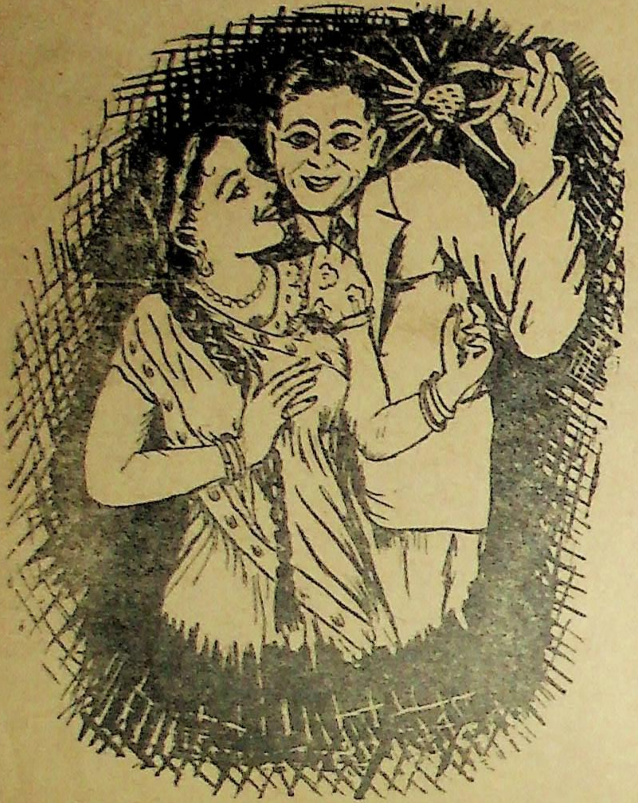

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तांत्रिक अँगूठी को धारण करने से चाहे जैसा कठिन कार्य क्यों न हो उसमें आपको तुरन्त सफलता प्राप्त होगी। जिस किसी को आप याद करेंगे वह कैसा ही कठोर क्यों न हो तुरन्त आपके चरणों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ कर आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई, शादी होगी, नौकरी मिलेगी, बाँझ स्त्री के सन्तान होगी, मुर्दा रूहों से बातचीत होगी, जमीन में दबी दौलत स्वप्न में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्यापार मैं लाभ होगा, दुष्टग्रह शान्त होंगे, बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तांत्रिक अँगूठी १-१५-०, स्पेशल एक रुपया पद्रह आना स्पेशल ३-०-०तीन रुपया पावरफुल ३-१५-० (तीन रुपये पन्द्रह आने) जिसका बिजली के करंट की तरह फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अँगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम में उदय हो सकता है लेकिन तांत्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगुनी कीमत वापिस की गारंटी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। एक बार जरूर आजमाइश करें।

प्रो० बंगाल मैस्मरेजम हाउस (G. D. 52.) जालधर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लेखक भारत विख्यात 'रूप विलास कम्पनी,' कानपुर के मालिक श्री वैद्यरत्न सत्यदेव जी

इन पुस्तकों के आगे हीरे जवाहरात भी कुछ मूल्य नहीं रखते। श्रीवैद्य जी ने अपने ३० साल के सारे अनुभव इसमें दिल खोलकर रख दिये जो कि लोग हजारों खुशामद करने पर मरते समय तक नहीं बताते हैं।

सत्य लक्ष्मी भण्डार

यह पुस्तक पुरुषों के लिये जैसी उपयोगीहै उसीप्रकार स्त्रियों को भी। स्त्रियाँ इससे नाना प्रकारकी सामग्रियाँ तैयार कर गृह कार्य में दक्ष हो जाती हैं और वह अपनी गृहतथा सखी सहेलियों में आदरणीय गिनी जाने लगती हैं। इसके अलावा इसमें सिर से लेकर पैर तक के प्रत्येक रोग की आजमूदा स्वदेशी व पेटेन्ट औषधियों के परीक्षित प्रयोग लिखे गये हैं। जिनके जरिये आसानी से हरेक चीज़ तैयार कर बेकारी का मुँह न देखें थोड़ेही दिनोंमें मालामाल बन जावेंगे। यह प्रयोग बाजारों में धड़ाधड़ बिकने वाले हैं। जैसे भाँति २ के चूर्ण चटनी नमक सुलेमानी अमृतार्णव पीयूषसिंधु केशरंजन तेल, हिमकल्याण तेल, भूतनाथ तेल बालामृत हर तरह के रंग तथा तरह २ के साबुन वारनिश, पान का मसाला, शर्बत, कुलफी की बर्फ हर तरह के खाने पीने के सामान और हर प्रकार की बीमारियों के सच्चेनुस्खे पुरुषों के गुप्त रोगों की दवाइयाँ, च्यवनप्राश, द्राक्षासव, पौष्टिक दवाइयाँ दाद का मरहम, सालसा सुर्मा आदि कहां तक लिखें गृह में रोजाना काम आने वाले सैंकड़ों नुस्खे जिसको थोड़े से पैसे में बनाकर अपनी गाढ़ी कमाई का रुपया हकीम डाक्टरों से बचाइये और प्रत्येक रोग का इलाज, अपना और अपने इष्ट मित्रों पास पड़ोसियों का कौड़ियों में कर यश प्राप्त कीजिये मैंने जनता के हित के लिए दिल खोलकर नुस्खे दिये हैं प्रत्येक अमीर गरीब सबको एक २ पुस्तक रखनी चाहिये। आशा है कि इस स्वर्ण अवसर से अवश्य लाभ उठावेंगे। पृष्ट संख्या २५० मूल्य २।=)मय डाक खर्च।

चिकित्सा अरुणोदय

इस पुस्तक में आयुर्वेदिक की तमाम पुस्तकोंका सार लेकर जिस्म के हर एक हिस्से का वर्णन ऐसी खूबी से कर दिया है कि सिर के बाल से लेकर पैर के नाखून तक का खुलासा कर के हाल दिया है वा हर एक मर्ज की पेटेन्ट दवाइयां दे दी हैं जिससे मामूली पढ़ा हुआ आदमी वैद्यक का अच्छा ज्ञान हासिल कर सकता है इसके अलावा हमारे शरीर में क्या है भोजन कैसे और कहां पचता है हर एक बातें चित्रों सहित भली प्रकार समझाई गई हैं। शरीर सदैव निरोग रखने के लिये आसन भी सब चित्रों के लाभ सहित दिखलाये गये हैं। साथ ही उन नियमों को भी बतलाया गया है जिन पर चलने से शरीर नीरोग रह सकता है। इस एक पुस्तक के सुनने पढ़ने मात्र से स्त्री पुरुष के शरीर की बनावट एवं वैद्यक शास्त्र का बहुत कुछ अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस पुस्तक में वैद्यराज सत्यदेव जी के लाखों शास्त्र के अनुसार बनाने की सरल दवाइयां तरकीबों सहित लिखी गई हैं। इस पुस्तक से आप थोड़े ही दिनों में वैद्यक का ज्ञान प्राप्त कर इसके द्वारा बड़े से बड़ा नाम मात्र लागत से व्यापारिक और परोपकारिक औषधालय खोल कर अपूर्व यशकीर्ति प्राप्त कर सुगमता के साथ लाखों रुपया कमा सकते हैं। इस पुस्तक में वैद्यक का ज्ञान प्राप्त कर अपने बाल बच्चों एवं कुटुम्ब परिवार का जीवन स्वास्थ्य युक्त दीर्घजीवी बनावें। मूल्य प्रति पुस्तक जिसमें ४८० सफे हैं सजिल्द ३=) तीन रुपया तीन आना डाक खर्च अलग।

१०००) माहवार कमाइये

इस दौलत की खान नामक पुस्तक में २६२ हुनर ऐसे छपे हैं जिनसे लोग लखपती हो गये जो बेकार थे कोई रोजगार न आता था वह भी हजारों रुपया माहवार कमाने लगे हैं किसी उस्ताद की जरूरत नहीं हर तरह के तेल साबुन बाल उड़ाने का साबुन अर्क बाल काले करने का खिजाब हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू आदि का मसाला स्याही रंगसाजी, रोगों की पेटेंट औषधियां, कुलफी का बरफ बनाना करामाती भूतों की अंगूठी बाल उम्र भर न जमने की दवा, नकली सोना, काले का गोरा बनाने वाली दवा, आदि हुनर छपे हैं जिन्हें लोग खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते। कीमत फी पुस्तक २=) मय डाक खर्च।

दीनजन चिकित्सा

यह पुस्तक श्री सत्यदेव जी ने रात दिन एक करके लिखी है इस पुस्तक के अन्दर फकीरी १०६६ नुस्खे हैं हर मरज के ८-८ या १०-१० असाध्य नुस्खे दिये हैं जो मामूली पैसों में तैयार हो जाते हैं। इस पुस्तक को मंगाने के बाद आपको इलजुलगुर्बा, अमृतसागर, सारंगधर, भावप्रकाश पुस्तक के खरीदने की जरूरत नहीं। पुस्तक में यूनानी, आयुर्वेदिक दोनों ही इलाज दिये हैं पुस्तक क्या अनमोल वैद्यक का शास्त्र है सुन्दर भाषा में लिखी है जिसे मामूली हिन्दी पढ़ा आदमी समझ सके। मू० कुल ४) डाक खर्च ॥।-)

गर्ग एण्ड कंपनी थोक कुतबखाना नं० १६. लाहौरी गेट देहली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००) नकद इनाम

महाविकराल भैरव यंत्र

जो हर तरफ से निराश हो चुके हों वह एक बार हमारा 'महाविकराल भैरव यन्त्र मंगा कर अपने दिल की मुराद पूरी करें। इस यन्त्र को अपने पास रखकर आप अपने दिल में जिस किसी का नाम लेंगे, वह कैसा ही घंमडी व सख्त कलाम क्यों न हो, आप से मिलने के लिए बेताब हो जावेगा और फिर जीवन भर आपकी जुदाई पसन्द न करेगा। इसके अलावा हाकिम को अपना बनाना खोई हुई चीज़ तलाश करना, किसी के दिल का भेद मालूम करना मुर्दा रूह से बातचीत करना परीक्षा में पास होना, ऋण और रोग से मुक्ति, कारोबार मेंउन्नति, सन्तान प्राप्ति, मुकदमा, कुश्ती, लाटरी आदि में जीत, बिछड़े हुए जनों से मुलाकात स्त्री पुरुष जिसे चाहे उसे वश में कर सकते हैं, और जो काम अपने दिल में सोचें हों वह पूर्ण होंगे। मूल्य प्रति यन्त्र २॥) दो रुपया आठ आना, तीन एक साथ मंगाने पर ६॥।) डाक खर्च ॥।=) अविश्वासी पुरुष हीरे को पत्थर समझ कर फेंक देते हैं, सन्तान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले स्त्री पुरुष दोनों को दो यन्त्र धारण करना आवश्यक है अतएव वह लोग दो यन्त्र मंगावे, पता साफ हिन्दी व अंग्रेजी में लिखा करें।

नोट—पूजा पाठ इत्यादि का बन्धन नहीं, यदि काम पूरा न हो तो दाम 'वापिस' झूठा साबित करने वालों को १००० रुपया नकद इनाम दिया जायेगा।

पता—प्रकाश ज्योति योगाश्रम पोस्ट बो. १३६६ देहली नं० ६

मासिक धारा

यदि किसी बहिन के पचास वर्ष की कम उमर में या किसी रोग से मासिक धर्म रुक गया हो या बिलकुल होता ही न हो वो मेरे पास आए। मैं बगैर किसी कष्ट के मासिक धर्म चालू कर दूंगी। यदि मेरे पास न आ सकें तो दवा 'मासिक धारा' मंगा कर सेवन करें। यह दवा केसर, कस्तूरी, अम्बर और इसी किस्म की बहुत सी अनमोल चीजों से तयार की जाती है। यह दवा इस कदर तेज है कि अन्दर जाते ही बच्चेदानी का मुंह खोल देती है। मासिक धर्म चाहे कितनी भी देर से रुका हुआ क्यों न हो फौरन चालू हो जाता है। यही कारण है कि इसको बड़े बड़े डाक्टर, हकीम वैद्य हम से बार बार मांगते हैं और अपने रोगियों से इसकी मुंह मांगी रकमें वसूल करते हैं। हर डाक में इसकी सफलता के प्रशंसा पत्र देखते हुए यदि मैं इसकी कीमत एक सौ रुपया प्रति शीशी रक्खूं तो भी कम है। लेकिन मैंने अपनी बहिनों की भलाई के लिए इसकी कीमत केवल दस रुपये अलावा महसूल डाक रखी है।

गर्भ रोक

यदि कोई स्त्री बीमारी या कमजोरी के कारण बच्चे पैदा होने के समय की तकलीफ को सहन न कर सके वो इस दवा का सेवन करें। इसकी एक खुराक से दो साल के लिए और तीन खुराक से हमेशा के लिए गर्भ का रहना बन्द हो जाता है। कीमत एक खुराक ५) रु० और तीन खुराक १०) रु० डाक खर्च अलग।

रतनबाई जैन, सदर थाना रोड, नं० २५ देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विश्व व्यापार भंडार

प्यारे सज्जनों ! आज कल बेरोजगारी के समय में हमारे यहाँ का यह अनमोल रत्न बहुत लाभदायक साबित हुआ है इस पुस्तक द्वारा हिन्दी पढ़ा हुआ कोई भी मनुष्य २००) माहवार वेतन आसानी से कमा सकता है, इसके अन्दर सामान बनाने के वह २ आसान तरीके दिये हैं जिनकी प्रति दिन आवश्यकता रहती है मसलन प्रत्येक किस्म का अर्क, अगरबत्ती, धूपबत्ती, हर किस्म के सुगन्धित तेल देशी व विलायती सैन्ट, कांच, पत्थर, रबड़ वगैरह के जोड़ने की लेही, हर किस्म के देशी व विलायती शर्बत हर किस्म की वार्निस, पेटेन्ट औषधियाँ, हर प्रकार के साबुन, लाल, नीली, काली स्याही, रंग की मिलावट कर हर किस्म के रँग बनाना चमड़े के सूटकेस, जूतों वगैरह की पालिश तथा स्प्रिट व अर्क बनाना, हर किस्म के सोने व चांदी के मुलम्मे का बयान, नकली जवाहरात, लाल, बिल्लौर नीलम वगैरह बनाना, चांदी, पीतल, कांच वगैरह को साफ करने की वार्निस बनाना, मोम के फूल, मोमजामा, बरतनों पर नाम लिखना, शीशे पर बेल बूटे काढ़ना, चाय की टिकिया बनाना दूध का पाउडर बनाना, केशर, हींग, कस्तूरी, कपूर भीमसेनी, पिपरमेंट नकली बनाना, हुलास, दांत का मंजन आंख का सुरमा, हर किस्म का जहर उतारने की हुक्मी दवा आदि ऐसे २६० तरीके बेरोजगारी को दूर करने के इस पुस्तक में दिये गये हैं जिससे हर भाई फायदा उठा सकते हैं। रोजगार मन्द भाइयों के भी बड़ी जरूरत की पुस्तक है ताकि वह इस पुस्तक की बदौलत अपने व्यौपार में चार चांद लगालें। मूल्य केवल १।।ﾍ)मय डाक खर्च।

रतिरहस्य (ले० वैद्यरत्न सत्य देव)

आज कल बाजार में इस किस्म की बहुत सी पुस्तकें हैं जनता धोखे में आकर इनको खरीद कर अपना पैसा खराब कर रही हैं। हमने इन बातों से बचने के लिये काश्मीर के पं० कोका के उसूलों को मानते हुये अनमोल ग्रन्थ रति रहस्य छाप कर प्रकाशित किया है। इसको हर एक आदमी को पढ़ना जरूरी है बड़ों का कहना है—पिंगल बिन छन्द रचे गीता बिन ज्ञान, रति रहस्यबिन रति करे वे नर पशु समान इसके अन्दर पद्मिनी, चित्रनी, संखिनी, हस्तिनी चारों प्रकार की स्त्रियों का वर्णभेद है और ८४ आसनों का वर्णन है। पति पत्नी के झगड़े घर क्लेश दूर करके स्त्री को वश में करने के सरल तरीके दिये गये हैं। इसके अलावा गर्भधारण करने की शास्त्रोक्त विधि गर्भ रक्षा के लिये उपाय गर्भ न रहने की तरकीबें। इसके अलावा स्त्री प्रेम करती है कि नहीं इसकी पहचान स्त्रियों के चुम्बन आलिंगन के तरीके सभी स्त्रियों को वश में करने के सरल उपाय दिये हैं पुस्तक क्या है ज़िन्दगी का साथी है इसमें समय पर काम आने वाले दिलचस्प नुस्खे भी दिये हैं बांझ स्त्री का इलाज अपनी स्त्री तथा अपने आप को आयु भर सुन्दर तथा तन्दुरुस्त और जवान बनाये रखना पुत्र पुत्री पैदा करने का प्रयत्न बांझ स्त्रियों का वर्णन नपुंसक भेद नामर्दी का इलाज स्तम्भन वटी बनाने की विधि धातु पुष्ट करने के नुस्खे आदि विधियों का वर्णन है जो बातें बहुत सा रुपया खर्च करने पर भी नहीं मिल सकती हैं यह सब रति रहस्य में प्राप्त हो सकती हैं। ४ रंगीन चित्र हैं। जल्दी मगालें। वरना पछताना पड़ेगा किताब की पृष्ठ संख्या ४३८ पेज की होतेहुए भी मूल्य ३।।ﾍ) मय डाक खर्च।

सचित्र चौदह विद्या—चौसठ कला

(१) वैद्य विद्या—सब प्रकार के रोगों के लक्षण व औषधि (२)कोक विद्या-स्त्री पुरुषों के समस्त गुप्त-विषयों का वर्णन (३) शकुन विद्या--पक्षियों की बोली शकुन विचार (४)योग विद्या-मृतक आत्माओं से बात चीत करना (५) यंत्र विद्या बाल रक्षा स्तम्भन वशीकरण आदि यंत्र। (६) मंत्र विद्या मोहन, उच्चाटन रोग हरण लक्ष्यों की विधि (७) तंत्र विद्या इन्द्र जाल की माया जादू के अद्भुत खेल (८) ज्योतिष विद्या-मनुष्यों का कर्म फल भविष्य जानने की विधि (९) शिल्प विद्या, हींग, इत्र, नमक सुलेमानी, बाल उड़ाने का साबुन केश भूषण तेल, तांबूल विहारी अर्क कपूर, खिजाब, मोहर स्याही आदि अनेक चीजें बनाने की विधि (१०) राजनीति विद्या-न्याय पूर्ण राज्य करने के नियमों का वर्णन तथा मालगुजारी, कोर्टफीस आदि के नियम।

(११) वस्तु विद्या-गृहनिर्माण सम्बन्धी ज्ञान। (१२) संगीत विद्या-भजन दादरा, कव्वाली, आदि बनाना (१३) रसायनिक विद्या-नकली सोना, चाँदी आदि बनाना और लोहा, ताँबा आदि धातुओं के फूकने की विधि। (१४) कृषि विद्या खेती करने के सम्पूर्ण नियम। अन्त में नट विद्या सम्बन्धी समस्त बातें देकर ६४ कलाओं का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है २०० से ऊपर पृष्ठ दाम केवल२ﾍ)

हिन्दी-उर्दू का मास्टर

यह किताब क्या है ? उर्दू हिन्दी का भण्डार है, अगर आप बगैर मास्टर के उर्दू हिन्दी पढ़ना चाहते हैं तो इस किताब की बदौलत हिन्दी जानने वाला उर्दू और उर्दू जानने वाला हिन्दी थोड़े दिनों में ही सीख सकता है। किताब बहुत लाजवाब है। आज ही मंगाकर हिन्दी से उर्दू और उर्दू से हिन्दी पढ़ें। पृष्ठ १२८ मूल्य १।।ﾍ)

पता—ग र्ग ए ण्ड कों० थो क पु स्त का ल य नं० १९, खा री बा व ली देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्यारी बहिनो !

न तो मैं कोई नर्स हूँ न कोई डाक्टर हूँ, और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष-बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन कमज़ोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैंकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफ़ेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्ख़ा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा है अब मैं कई बच्चों की मां हूँ। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बांट रही हूं इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रक्खा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिए पन्द्रह दिन की दवाइ तैयार करने पर २॥=) दो रुपया चौदह आने असल लागत होती है, महसूल डाक अलग है।

जरूरी सूचना:—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्ख़ा मालूम है। इसलिये कोई बहिन मुझे और रोग की दवाइ के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० १६ बुढ़लाडा, जिला हिसार (पूर्वी पंजाब)

—: अपूर्व शक्ति पैदा करने वाली :—

चन्द्रोदय मकरध्वज वटी

यह औषधि बल और वीर्य का राजा है इसमें चन्द्रोदय कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, सोना चांदी, मोती आदि संयुक्त हैं। चन्द्रोदय 'नाम रख लेना सहज है परन्तु असली चन्द्रोदय तैयार करना सब का काम नहीं, वीर्य सम्बन्धी कोई भी खराबी हो दूर होकर संतान उत्पत्ति के योग्य होता है। हर प्रकार की शारीरिक व मानसिक व धातु की निर्बलता दूर होती है बूढ़ा जवान होता है मकरध्वज सब रोगों को दूर करता है। उचित अनुसार विधि से प्रत्येक रोग पर बर्ता जा सकता है। राजे महाराजे सदैव इसे सेवन करते थे। इसी कारण प्रकृति विरुद्ध बहुत सी रानियां रखने पर भी दुर्बल न होते थे। मरते के मुख में डाल दें एक बार तो अवश्य ईश्वर की कृपा से उठ खड़ा होगा। हम इसके द्वारा अनेकों निःसन्तानों के घर बसा चुके हैं। हर वर्ष ४० दिन खा लो तो बस क्या कहना है उनकी आयु बहुत ही बढ़ेगी। यह दवा स्त्री पुरुष दोनों के लिये उपकारी है।

आपका शरीर कैसा ही शुष्क हो गया हो शक्ति भले ही नष्ट हो गई हो, यौवनावस्था की तेजी जाती रही हो। शरीर का रुधिर घूमना बन्द होगया हो, चेहरे की सुर्खी उड़कर मुंह का रंग फीका पड़ गया हो गाल पिचक गये हों, छाती की अस्थियां निकल गई हो, सांसारिक सुख की प्राप्ति न होती हो ऐसी दशा में चन्द्रोदय मकरध्वज वटी का केवल ४० दिन विधि पूर्वक सेवन कर लेना अति आवश्यक है। यह अनुपम दवा आपके शरीर की समस्त अस्थियों को चिकना सर्वाङ्ग मजबूत पुष्ट और सुन्दर गुलाबी मुखमण्डल, पैरों को सशक्ति, नेत्रों को उत्साही और आनन्दी बनाकर सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करेगी तथा स्वप्न दोष, मूत्रकृच्छ्र बहुमूत्र, धातु का पानी के समान पतला होना अनेक प्रकार के प्रमेह, मूत्र के साथ खार गिरना, पाखाना के समय वीर्य का निकलना, पेशाब के साथ जलन व सुर्ख पेशाब होना, हमेशा स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, नपुन्सकता, सुस्ती, अशक्ति आदि रोगों को सिर्फ ४० दिन में समूल नष्ट करके शरीर में नया खून, नई ताकत, नया जोश और उत्साह पैदा करेगी। खोये हुए जीवन का दुबारा आनन्द मिलेगा। ४० गोली वाली डिब्बी का ४) तीन डिब्बी का ११) डाक खर्च अलग।

श्री गंगा जनहितकारी औषधालय नं० २ गढ़मुक्तेश्वर बृजघाट (उत्तरप्रदेश)

❀ असली प्राचीन पुस्तक ❀

शंकर महादेव के कहे हुये जन्त्र मन्त्र, तन्त्रों का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कोक शास्त्र

प्यारे नाजरीन आजकल बाजार में बहुत तरह के कोक-शास्त्र चल रहे हैं, गरीब जनता धोके में आकर इनको खरीद कर, अपना पैसा खराब कर रही है हमने इस बातको मद्दे नजर रखते हुए कोक शास्त्र काश्मीर के दीवान पं० काका के उसूलों को मानते हुए वत्सल मुनि के काम सूत्र का निचोड़ करके यह अनमोल ग्रन्थ छापकर प्रकाशित किया है बड़ों का कहना है—

पिंगल बिन छन्द रचे अरु गीता बिन ज्ञान।
कोक-शास्त्र बिन रती करे वो नर पशु समान॥

यह एक बड़ा जबरदस्त ग्रन्थ है जिसको हर एक आदमी को पढ़ना जरूरी है इसके अन्दर पद्मनी, चित्रनी, शंखनी, हस्तनी चारों प्रकार की स्त्रियों का वर्णन गर्भ में पुत्र पुत्री की पहिचान, बाँझ स्त्री का इलाज, अपने आप को आयु भर सुन्दर तन्दुरस्त और जवान बनाये रखना, पुत्र पुत्री पैदा करने का यत्न, बाँझ स्त्रियोंका वर्णन, नपुंसक भेद, स्त्री पुरुष वशीकरण मंत्र, नामर्दी का इलाज स्तम्भन वटी बनाने की तरकीब इत्यादि अनेक विधानों का वर्णन है जो बातें बहुत रुपया खर्च करने पर भी नहीं मिल सकती हैं वह इस पुस्तक द्वारा सहज में प्राप्त हो सकतीहैं। सुन्दर जिल्ददार पुस्तक की कीमत २=) मय डाक खर्च। नोट—ब्रह्मचारी विद्यार्थी यह पुस्तक न मंगावें।

नोटः—पत्र भेजकर बड़ा सूची पत्र मुफ्त मगायें जो चिट्ठी आते ही भेज दिया जाता है। इस सूची पत्र से आप बहुत लाभ उठा सकते हैं।

...की पुस्तक २।=) में

सम्वत् २००७ की खुशी में अनमोल सैट पाठकों की सैंट पुस्तकों के प्रेमियों को सम्वत् २००७ की खुशी में हमने ५॥।) की कीमत का एक अनमोल सैट २।=) में देने का निश्चय किया है। इस सैट को मंगाकर प्रेमी पाठक अपनी जरूरत की तमाम पुस्तक इस सेट में पा जावेंगे पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं।

नाम पुस्तक

- मृत्यु परीक्षा के लक्षण—मरने से पहले मालूम ॥।)
- सच्चा जादूगर—हर तरह के जादू के खेल ॥)
- बिना औषधि रोग शांति का उपाय ॥)
- भूत-विद्या प्रेत को वश में करने के तरीके ॥)
- वशी करण मंत्र—स्त्री, पुरुष, हाकिम हुक्मान को वश में करने के तरीके ॥)
- शर्बतों का रोजगार-हर प्रकार के शर्बत बनाना ॥)
- गुप्त विद्या-मृतक आत्माओं से बातचीत करना ॥)
- घर का हकीम—हर तरह का फकीरी इलाज ॥।)
- मनोकामना सिद्धि-मुकद्दमा, शादी, यात्रा, बीमारी, सफल ब्योपार, नौकरी इम्तहान आदि ।)
- तेलों का रोजगार-हर प्रकार के तेल बनाने के तरीके १)
- उर्दू हिन्दी का पाठ-बिना उस्ताद के लिखना पढ़ना ।)

यह तमाम १२ पुस्तकों का सैट जिसकी कीमत ५॥।) होती है कुल २।=) डाक खर्च ॥=) में आज ही मंगाइये पुस्तक खत्म होने पर आपको पछताना पड़ेगा।

मोटर गाइड, मोटर के हर पुर्जे का ज्ञान कराकर मोटर ड्राइवरी सिखाने वाली अनूठी पुस्तक। कीमत कुल ३॥-) मय डाक खर्च।

सावरी तंत्र (सेवड़े का जादू)

१—वशीकरण विद्या-यंत्र, मंत्र, तंत्रों को सिद्ध कर चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर उससे मन चाहा काम लेना। २—आकर्षण विद्या मंत्र बल द्वारा जिस प्रकार रावण ने अहिरावण को पाताल अमरीका से क्षण मात्र में लंका बुला लिया था उसी प्रकार आप भी दूर देश में बैठे हुये अपने चाहे जिस मित्र को पास बुला सकते हो। ३—अष्ट सिद्धि हवा में उड़ना, अंगद के समान बलवान होना, हाथियों का बल प्राप्त करना, अन्त र्धान हो जाना, फिर प्रगट होना इत्यादि क्रियायें लिखी हैं। ४—काया-कल्प वही प्राचीन विद्या जो ढाका, बंगाल कामरू में प्रचलित है जिससे मनुष्य की शक्ति और अक्ल ही दूसरी हो जाती है। तोता, मैना, बकरा, बन्दर बनना तो बात ही क्या। ५—यक्षणी साधन-महा-माया अरुद्धित यानि यक्षणियों को सिद्ध कर उनसे मनमाना काम लेना ६-भूत विद्या-प्रेत, डंकिनी शंखिनी इत्यादि का मंत्र बल द्वारा सिद्ध कर उनसे मनमाना काम लेना। ७—ओझा विद्या-झाड़ फूंक द्वारा इलाज करना इत्यादि बातों का सविस्तार वर्णन है। यंत्र मंत्र तंत्रों को सिद्ध करनेकी पूर्ण क्रिया लिखी गई है। जिन यंत्र मंत्र तंत्रों को कलियुग में श्री शंकर महा देव ने कील दिया था उनको यदि विधिवत क्रियानुसार सिद्ध किया जाय तो अब भी अपना पूरा असर दिखाते हैं सिद्ध कार्यकर्त्ता पर निर्भर है। २॥=) में मय डाक खर्च।

बिजली मास्टर बिजली का फिटिंग करना, खराब फिटिंग को ठीक करना, बिजली के हर काम को सिखाने वाली अजीब पुस्तक, कीमत कुल २॥-) मय डाक खर्च।

गर्ग एण्ड कों० थोक कुतब खाना नं० १८ लाहौरी गेट देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

१५०० रुपया नकद इनाम !

जो चाहोगे वही मिलेगा

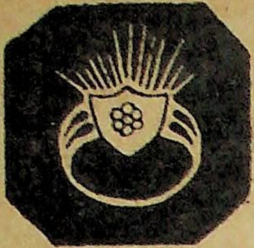

अब आप किसी तरह से निराश न हों। इस तान्त्रिक अंगूठी को पहिनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगे वह देखते ही देखते फौरन बश में हो जायगा, चाहे वह कितना ही पत्थर दिल क्यों न हो, सात समुद्र फाँद, सात ताले तोड़ आपके कदमों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, बाँझ स्त्री के सन्तान होगी, मुर्दा रूहों से बातचीत होगी जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्यापार में लाभ होगा, दुष्ग्रह शान्त होंगे, बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तांत्रिक अंगूठी १-१२-० स्पेशल पावर फुल ३-१२-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका बिजली का करेण्ट की तरह फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अंगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम में उदय हो सकता है लेकिन इस तांत्रिक अंगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत। वापसी की गारंटी है मिथ्या साबित करने वालों को १०००) नगद इनाम। एक बार आजमाइश करें।

सिद्ध आश्रम नं० १ गढ़मुक्तेश्वर, बृजघाट

श्री गंगा सत शिलाजीत

यदि आप युवा अवस्था में कुकर्मों में फंसकर अपने वीर्य को खो चुके हैं और उपस्थेन्द्रिय में निर्बलता और सुस्ती आगई है कमर में दर्द, सिर में चक्कर, परिश्रम से घबराना, मुख पीला और बेरोनक रहना, जीवन से घृणा समय पर लज्जित होना, आदि कारणों से जीवन को बवाल समझते हैं तो इस सत को सेवन कीजिए जिसके सेवन से प्रमेह, स्वप्नदोष आदि रोग दूर होकर शरीर में चुस्ती और होशियारी पैदा होती है। इस सत की प्रशंसा से पुस्तकें भरी पड़ी हैं। मूल्य चार तोले ४) डाक व्यय ।|=)

बिजली का ताबीज

यह ताबीज साइन्स का अजीब चमत्कार है इस ताबीज के पहराने से बच्चों के दांत आसानी से निकल आते हैं और वह दसियों रोगों से बचे रहते हैं बच्चों के हरे पीले दस्त का आंखों के दुखे रहना पसली का चलना ज्यादा रोना रात को सोते २ चौंक उठना सूखे का रोग होना जिसे मसाना कहते हैं और भी हर प्रकार के रोगों में यह ताबीज फायदा पहुंचाता है और बच्चों को हृष्ट पुष्ट बनाए रक्खे हुए दीर्घ जीवन देता है ताबीज के साथ बच्चों के लिए ४ फकीरी दवा भी भेजी जाती हैं जो वक्त वक्त पर अमृत का काम देती है मू० एक ताबीज २||=) खर्च ।|=) तीन ताबीज एक साथ मंगाने वाले सज्जनों को ४।) में मय डाक खर्च के भेजे जाते हैं।

श्री गंगा नारी जीवन

स्त्रियों का प्रदर रोग ही उनकी जिन्दगी का शत्रु हुआ करता है। यह भयंकर रोग उनके सौन्दर्य व स्वास्थ्य को बिगाड़ कर १६-१६ वर्ष की नवयुवतियों को वृद्धा के समान बना देता है। ऐसी अवस्था में वह युवती न तो अपने पति के स्नेहपात्र ही बन पाती है और न गृह-लक्ष्मी ही। बेचारी भार स्वरूप अपनी जिन्दगी के दिन काटती हुई घुल-घुल कर मर जाती हैं। हमने यह दवा ऐसी ही दुखी बहिनों के लिये ईजाद की है। इस गुप्त बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्रियों के गुह्यांग से श्वेत रंग का बदबूदार पानी निकला करता है जिसके कारण—पेट, पीठ व कमर में दर्द, कमर की रीढ़ में दर्द, तमाम शरीर में जलन, मुख पर पीलापन, सर में दर्द, उठते-बैठते हड्डियों का चटकना व चक्कर का आना, कमजोरी मालूम होना, भूख का न लगना, बदन दुबला कमजोर हो जाना, मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना, यदि होता भी हो तो कम-ज्यादा होना, सन्तान का न होना, हिस्टीरियाँ अर्थात् रोग दूर करके नये खून का संचार होकर चेहरे पर अजीब रौनक आ जाती है। स्त्रियों को अन्दरूनी बीमारियों के लिये 'गंगानारी जीवन' एक ही दिव्य औषधि है। इस दवा के सेवन करने से स्त्रियाँ भयानक रोगों से छुटकारा पा जाती हैं। कीमत एक शीशी ३||≡) दो शीशी मय डाकखर्च ६।-) छः रुपया पाँच आना।

श्री गंगा जनहितकारी औषधालय नं० १ गढ़मुक्तेश्वर बृजघाट (उत्तर प्रदेश)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

...के प्रसिद्ध कारखानों की बनाई हुई ३६ घण्टे ... न बिगड़ने वाली हैं। यदि आपको हर तरह से उत्तम घड़ी की जरूरत है तो नीचे दी गई घड़ियों में से जिस नम्बर और दाम की चाहिये मंगावें। हमारी भेजी घड़ी को देख व बरत कर आप अति प्रसन्न होंगे और देखनेवाले मित्र भी आपको मंगाकर देनेके लिये कहेंगे। हरएक घड़ी के साथ गारंटी का सार्टीफिकेट भेजा जावेगा और उत्तम प्लास्टकका फीता भी मुफ्त दिया जावेगा। डाकमहसूल आदि ग्राहकके जिम्मे होगा।
[इनाम]—एक साथ कोई सी ३ घड़ियों के खरीदार को डाक खर्च माफ। कोई सी ६ लेने पर सातवीं घड़ी आधी कीमत पर और एक साथ १२ बारह घड़ियां मंगाने वालों की तेहरवीं घड़ी मुफ्त इनाम में भेजेंगे।

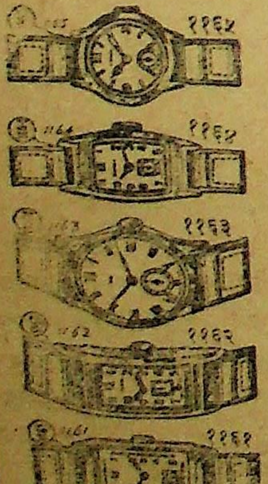

(१) घड़ी नं० ११६३ या ११६४ सफेद केस की बढ़िया 19) रेडियम 20)
(२) ,, ,, ,, ,, ,, सैकिंड वाली 20) ,, 21
(३) ,, ,, ,, ,, चार पांच जीवल वाली 20) ,, 3)
(४) ,, ,, ,, ,, सुनेहरी केस सुन्दर 20) ,, 21
(५) ,, ,, ,, ,, ,, सैकिंड वाली 21) ,, 22
(६) ,, ,, ,, ,, सफेद केस बढ़िया २०) ,, २१)
(७) ,, ,, ,, ,, १५ जीवलदार बढ़िया २०) ,, २२)
,, ,, ,, ,, १५ जूल रोल्ड गोल्ड २५) ,, ३०)
(८) घड़ी नं० ११६१, ११६२ या ११६४ सफेद बढ़िया २५-३० ३८) ४२)
(९) ,, ,, ,, ४ या ५ जीवल वाली ३०)-३५) ३२)-४०)
(१०) ,, ,, ,, ,, ७ जीवल ३७)-४०) ४०)-४५)
(११) ,, ,, ,, ,, १५ जीवल ४२) ,, ४६)
(१२) ,, ,, ,, ,, सुनेहरी २ जूल २८)-३३) ३०)-३५)
(१३) ,, ,, ,, ४ या ५ जीवल ३१-३६ ३५)-३८)
(१४) ,, ,, ,, ,, ७ जीवल सुनेहरी ३८) ,, ४०)
(१५) ,, ,, ,, ,, १५ जूल सफेद ४२) ,, ४४)
(१६) ,, ,, ,, रोल्ड गोल्ड १५ जूल ६०,-७०) ६५)
(१७) ,, ,, ,, बहुत बढ़िया ,, २५) ६२) ७५)
(१८) वाटर प्रूफ सैंटर सैकिंड गोल घड़ी जीवलदार २५) ६०) ६५)
(१९) वाटर प्रूफ सैंटर सैकिंड गोल घड़ी ७ जीवल रोल्ड गोल्ड ६२) ७२)
(२०) ,, ,, ,, ,, १५ जीवल ६५) ७५)
(२१) ,, ,, ,, ,, रोल्ड गोल्ड १५ जीवल ,, ७२) ८२)
(२२) सैंटर सैकिंड गोल कलाई की घड़ी -१७) । ५ जीवल २२) ३५)
(२३) लाल जीवल की ४०) ४४)। सैंटर सैकिंड १५ जूल ५५)-६०)।

(२४) पाकेट वाच रास्कोप लीवर मशीन १२) १४) बढ़िया जूल दार २५) ३५) (२५) टाईम पीस अलारम वाला १८) २०) २२) (२६) दीवार पर लगाने का घण्टा क्लाक ७०) बढ़िया ८०) कृपया अपना नाम व पूरा पता साफ ठीक लिखा करें।

कशीदा काढ़ने की असली मशीन

यह मशीन सूती, रेशमी वा गरम कपड़ों पर भांति-भांति के फल-फूल, बेल-बूटे, जंगली सीन, पहाड़ी नजारे, मोर, तोते, गाय, भैंस - मखमल, शनील, कालीन आदि का काम करने के लिये घर का नजारा है। दाम मय बढ़िया अमरीकन कैंची, व फालतू चार सूइयां, रंग बिरंगे रेशमी धागे और कपड़ा कसने का फ्रेम नं० १ की ४॥), नं० २ की ४॥), नं० ३ की ५) रुपये। छपे हुए नमूने प्रति सैट ॥) आने, फालतू रेशमी व ऊनी गुच्छियां की गुच्छी ४ आने, डाक खर्च ॥=) आने अलग।

बहुत आसान सचित्र, विधि साथ में मुफ्त मिलेगी। मंगाने का पता :—

घड़ियाँ—(३०) तक की हर घड़ी की गारन्टी ५ साल और इस से बढ़िया घड़ियों की गारन्टी १२ साल है

...भाषा में इससे पूर्व प्रकाशित हुआ है।

हमारा सबसे अच्छा २००—सातरंगे चित्रों तथा ८ रंग बिरंगे फोटो ब्लाक तथा ३ रंगी फोटो तसवीर टाईटिल वाला, (जो लाहौर, कानपुर, कलकत्ता, पूना, बम्बई आदि प्रान्तों के प्रतिष्ठित चित्रकारों के बने हुए हैं) विलायती ग्लेज्ड कागज पर मोटे अक्षरों में अति उत्तम छपा हुआ, सुप्रसिद्ध, अद्वितीय सब से बड़ा।

असली प्राचीन / २०८ चित्रों वाला

चक्रवर्ती कोकशास्त्र

रंगीन सम्पूर्ण / तेरहवां एडीशन

श्रीमान् पंडित कोकाजी महामंत्री महाराजा काश्मीर की हस्त लिखित पुस्तक का अनुवाद; पंजाब के सुप्रसिद्ध अनुवादक पं० साधूराम जी अवस्थी के कठिन परिश्रम का फोटो। जिसमें कोक शास्त्र के असली भावों को प्रकट करके पं० जी ने जनता को अति लाभ पहुँचाया है। इसमें शक नहीं कि इससे पहिले लोगों ने कोकशास्त्र जैसे अति आवश्यक ग्रन्थ में बहुत सी इधर उधर की बातें जोड़ कर जनता को खूब लूटा है। परन्तु पं० जी के इस असली अनुवाद को पढ़कर कोई भी सज्जन इस नूतन तथा अमूल्य व अद्वितीय पुस्तक की प्रशंसा किये बिना नहीं रहेगा। पुस्तक तेरहवीं बार छपकर हाथोंहाथ बिक रही है, यदि आपने इससे प्रथम किसी कोकशास्त्र को देखा भी है, तो आप इसको भी अवश्य ही मंगवा कर पढ़ें। यदि हमारे लिखने के विरुद्ध प्रतीत हो तो तत्काल कीमत लौटा देंगे। इससे बढ़कर इसके उत्तम होने का क्या प्रमाण हो सकता है।

बस शीघ्र मंगवालें नहीं तो १४ वें एडीशन की राह देखनी होगी। इसके मनोहर चित्र देखने वालों का मन अपनी ओर आकर्षित करते हैं, इसके निम्नांकित विषय भी आनन्ददायक हैं।

पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी। शशक, वृषभ, मृग, अश्व।

इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहिचान, उनका वर्णन, स्त्री पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु भर स्वस्थ, सुन्दर, सौन्दर्य की देवी और अपनी आज्ञा मानने वाली बनाये रखना, मन चाही सुन्दर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री पुरुषों के जोड़ों का मिलाना, संतान न उत्पन्न होती हो तो जरूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट पुष्ट सुन्दर और स्वस्थ रहना, कुमारी-भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति परदा, स्त्री-पुरुष का परस्पर सम्बन्ध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, स्तम्भन बटी बनाने की तरकीब आदि अनेक विधान बांझ स्त्री का इलाज, गर्भपरीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भवृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृङ्गार, उनके सम्बंध में समस्त यौवन वर्द्धक बढ़िया स्पैशल मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र सम्बंधी रोग और इनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, स्त्री पुरुष का इलाज, वशीकरण, तंत्र मंत्र, स्त्री-पुरुषों की २०८ तसवीरें तथा उनके दिलचस्प हालात हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की वह गुप्त बातें आदि ऐसी दर्ज हैं, जो कि यहाँ लिखना उचित नहीं, पाठक समझ लें। यदि आप युवावस्था चाहते हैं तो शीघ्र मंगावें। यह वह कोकशास्त्र है जिसकी हर समय हर मनुष्य को जरूरत है।

इसमें विशेषतया ठीक जन्म समय का पता लगजाने का एक पूर्ण चक्र भी दिया गया है जिससे बालक के उत्पन्न होने का समय मालूम हो सकता है और पुरुष उत्पत्ति का पूर्ण चित्र भी दिया गया है जिसको देखकर कोई स्त्री गर्भ दशा में दुःख को प्राप्त न होगी। दाम सुनहरी जिल्द वाला दो रुपये आठ आने २॥), रेशमी जिल्द तीन रुपये ३) डाक खर्च ॥=) अलग। यह पुस्तक उर्दू में भी अलग छपी है, दाम यही हैं। चाहे हिन्दी की पुस्तक मंगावें चाहे उर्दू की। मंगाने का पता :—

हस्त सामुद्रिक शास्त्र हिन्दी में सजिल्द २॥) जटाधारी सन्यासियों की गुप्त बूटियां "बूटी प्रचार वैद्यक सजिल्द सचित्र २॥) दर्जी की उत्तम पुस्तक १॥)

ये सब चीजें मंगाने का पताः—परमा नन्द आहूजा ऐन्ड सन्स, वाच मर्चैंट्स, (वी०पी०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १२७६, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बिगड़ी तकदीर बना लो

अब कोई मनुष्य अभागा और किस्मत का मारा नहीं रह सकता। आप जो चाहेंगे हो जायगा। जो मांगेंगे मिल जायगा।

कई हजार साल का जमाना गुजर गया जब महात्माओं के सिरताज श्री शिवजी महाराज ने ऐसी अंगूठी बनाई थी। उन्होंने वह पार्वतीजी को दी और पार्वती जी ने राजा इन्द्र को दी। आंख झपकने में जितनी देर लगती है उतनी देर में अपनी बिगड़ी हुई तकदीर को बनालो।

(१) अगर आप बेकारी के सताये हुए और मुसीबतों में कैद हैं रोजगार के लिए हाथ पांव मारते हैं मगर पैसा हाथ नहीं आता। (२) अगर आपका कोई काम बनकर बिगड़ जाता है। (३) अगर आप किसी खूब सूरत युवती से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं परन्तु उससे शादी नहीं होती। (४) अगरआपको औलाद की चिन्ता है। नन्हें से बच्चेको गोद में प्यार करना चाहते हैं। मगर नर औलाद पैदा ही नहीं होती या पैदा होकर मर जाती है। (५) अगर आप किसी दुश्मन के हाथों परेशान हैं और चाहते हैं कि वह आपके आधीन होजाय। (६) अगर आप किसी मुकदमें में फंस गये हैं रुपया पानी की तरह बह रहा है मगर इज्जत किसी तरह बचती नजर न आती हो। (७)अगर आपकी औरत के साथ अनबन होगई हो और प्यार व मुहब्बत का नाम नहीं रहा (८) अगर आपको व्यापार में नुकसान हो रहा है। (६) अगर आपको परीक्षा में पास होने की चिन्ता है और डर है कि कहीं फेल न होजांय। (१०) अगर आप किसी पेचदार भारी बीमारी में फस गये हैं हकीमों डाक्टरों की दवा खाते खाते तंग आगये हैं पर बीमारी वैसी की वैसी है। (११) अगर आप किसी ऊंची नौकरी के लिये सर तोड़ कोशिश कर रहे हों। (१२)अगर आप किसी केप्रेस में व्याकुल होगये हों परन्तु का हृदय ऐसा पत्थर है कि आपको, आंख उठा कर भी नहीं देखता। (१३) अगर आप के दिल में कोई ऐसी इच्छा है जो हजार बार कोशिश करने पर भी पूरी नहीं होती तो घबराने और निराश होने की जरूरत नहीं। आज ही हमसे महान तेजस्वी योगीराज की कृपासे प्राप्त बिजली जैसी ताकत वाली मशहूर आलम गरदिश तोड़ अंगुरतरी मंगालें और सिर्फ उंगली में पहन कर अपने मन की इच्छायें पूरी करें। किसी प्रकार का जाप करने की या श्मशान भूमि या नदी आदि पर जाने की जरूरत नहीं। कोई मुश्किल काम करने की जरूरत नहीं इसे पहनने वाले की बदकिस्मती खुशकिस्मती में बदल जाती है और हर एक मनोरथ स्वयं ही पूरे होते चले जाते हैं। बुरे दिन इस प्रकार भाग जाते हैं जैसे गधे के सिर से सींग। दौलत और इज्जत बढ़ जाती है। दुश्मन और हासिद दब जाते हैं। कामयाबी और जीत आठों पहर खिदमत में हाजिर रहें अगर आप हथेली पर सरसों जमाना और उसके जिंदा कमालात को अपनी आंखों से देखना चाहते हैं तो देर न कीजिये। आज ही आर्डर भेजिये क्योंकि इस बार ये अंगूठियाँ थोड़ी संख्या में तय्यार हुई हैं और दाम इतना कम रक्खा है जैसे आटे में नमक अर्थात् कीमत मात्र केवल एक रुपया बारह आने १।।।) प्रति अंगूठी है जो इसकी लागत के बराबर है। तीन अंगूठियों की कीमत ४।) डाक खर्च १ से तीन अंगूठियाँ एक साथ मगाने पर केवल १४ आने लगते हैं। अगर गलत निकले या फायदा न हो तो कीमत वापिस। सिर्फ इतना लिखना होगा कि "मैं परमात्मा को साक्षी जानकर लिखता हूं कि मुझे फायदा नहीं हुआ इसलिए अपनी अंगूठी वापिस कर लीजिये"। इससे अधिक और क्या यकीन दिलाया जाये। अगर अब भी कोई सज्जन इससे लाभ न उठायें तो उसके नसीब।

स्पैशल पावरफुल अंगूठी जिसका बिजली की तरह तत्काल असर होता है। कीमत २।।।) तीन एक साथ लेने पर ७।।) डाक खर्च १ से तीन तक १) अलग।

मंगाने का पता :— **श्री परम आनन्द सिद्ध आश्रम**

(बी०एम०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १२०६, देहली।

इस जमाने के फैशनेबिल स्त्री-पुरुष जो अपने बालों को घूँघरवाले लहरियेदार और खूबसूरत बनाने के लिए इच्छुक हैं उनके लिये कई साल की कठिन कोशिश के बाद हम एक अमेरीकन डाक्टर से लाजवाब नुस्खा प्राप्त करने में सफल हो गये हैं। इस हेयर-क्रीम की खूबी यह है कि तीन दिन में सिर के बाल पेचदार हो जाते हैं और सात दिन के अन्दर-अन्दर स्थायी रूप से सिर के बालों को घूँघर वाले लहरियेदार और खूबसूरत बना देती है और फिर बाल जड़ से घूँघरवाले पैदा होने लगते हैं और नहाने के बाद भी वर्षों ऐसे ही बने रहते हैं। प्रायः फिल्म ऐक्टर और ऐक्टर्स और कालिज के विद्यार्थी इसके शौकीन हैं। इतनी बहुमूल्य भेंट होने पर भी कीमत एक शीशी तीन रुपया ३) डाक खर्च १) अलग।

तीन शीशियां एक साथ मँगाने पर डाक खर्च माफ।

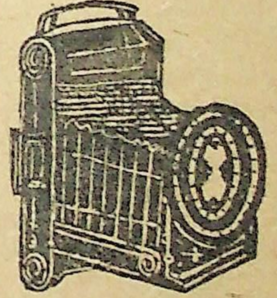

फोटो कैमरा—यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ है बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के बहुत सुन्दर और शानदार मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इनका प्रयोग सरल है और सब जनता, विद्यार्थियों, शौकिया काम लेने वालों, व्यवसायियों के लिए अमूल्य उपहार है। तमाम फ़िल्म, कार्ड, केमिकल, सरल प्रयोग विधि सहित मूल्य १२) डी लक्स ऐक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी कीमत १५) पैकिंग व डाकव्यय १।।) अलग।

पोर्टेबल कैमरा १६) बढ़िया स्पेशल २०) डाक खर्च १।।) अलग। पसन्द न आवे तो कीमत वापिस होगी।

जवांमर्दी का आला, असली, बिल्कुल नया, और बढ़िया।

दुनिया भर की सब दवायें इस आले के सामने बेकार हैं। इस से अवश्य लाभ उठाइये। हर एक पुरुष बिना किसी दवा खाने के थोड़े ही दिनों में जवांमर्द बन जाता है, इस आला के बनाने वाले का दावा है कि पुरुष कैसा ही कमजोर क्यों न हो पहले ही दिन इसके सेवन से चन्द सैकिंड में असली ताकत महसूस करने लगता है और थोड़े दिनों में मरीज अपने आपको काबिल-ए-फकरपुरामर्द समझने लगता है। और ताकत का कभी न खत्म होने वाला खजाना हाथ आ जाता है। बिलायत में इससे लाखों लोग जो बचपन की गलतियों से कमजोर हो चुके थे औलाद पैदा कर चुके हैं। यही वजह है कि यह आला प्रति दिन लाखों की संख्या में बिक जाता है, और इसे कमजोरी का सब से बेहतर इलाज माना गया है। दाम मामूली कमजोरी को दूर करने वाला १६) बढ़िया २१) स्पेशल २४) डाक खर्च २।।) अलग। मंगाने का पता—

दि नेशनल चेम्बर आफ साइन्स(बी०एम०बी०)पो०बक्स नं०१३०४,देहली

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अधिक या कम आना, ठीक समय पर न होना, पेट; ... भूख न लगना, पाचनशक्ति की कमी, सिर में चक्कर आना, खून का कम होजाना, बन्ध्यापन, हिस्टीरिया, श्वेतप्रदर आदि समस्त रोगों को जड़ से दूर करके स्त्रियों को गर्भ धारण करने योग्य बनाती है। मुख पर लाली और सुन्दरता बढ़ जाती है। सब से बढ़िया दवा है। कीमत १शीशी दो रुपये चार आने २।) डाकखर्च १) अलग।

बीस वर्ष के तजुर्बे का निचोड़। तमाम शारीरिक कमज़ोरियों की एक मात्र दिव्य, रामबाण औषधि

असली संजीवनी बूटी का रस जिसकी प्रशंसा सारा जगत कर रहा है

"असली संजीवनी बूटी का रस"। वह दिव्य और अमर औषधि है जिसने रामायण काल में लक्ष्मण जी महाराज को लंका के युद्ध के समय दोबारा जीवन दान दिया था। यह वह संजीवनी बूटी का रस है जिसकी तीन बूंद रोज सेवन करने से पन्द्रह दिन के अन्दर तमाम रग, पट्ठों में आश्चर्यजनक शक्ति पैदा होकर शरीर फुर्तीला, और स्वस्थ हो जाता है। चेहरा गुलाब की तरह चमकने लगता है। और गये गुजरे पुरुषों की सारी उमंगें पूरी होकर जीवन का सच्चा आनन्द भोगते हैं। उदर के सारे रोग दूर होकर भारी से भारी भोजन हजम हो जाता है। भूख इतनी बढ़ जाती है कि दूध घी आदि चिकनाई वाली चीजें जितनी खायें, शरीर में पचकर बदन हृष्ट पुष्ट हो जाता है और मनुष्य को कोई रोग नहीं सताता। इसमें ऐसे जौहर मिलाये गये हैं कि नपुंसक भी पुरुषत्व की पूरी शक्ति पाकर औलाद पैदा करने के योग्य हो जाते हैं और बूढ़े भी जवानी का आनन्द प्राप्त करते हैं। इसका प्रभाव दिल, दिमाग और शरीर के उन अंगों पर बहुत शीघ्रता से पड़ता है जिनका सम्बन्ध मनुष्य के स्वास्थ्य और नसल की मजबूती से है।

जो सज्जन हमारे असली संजीवनी बूटी रस को एक बार सेवन करलें, उन्हें फिर कुश्तों और किसी दूसरी दवाइयों के सेवन की आयु भर आवश्यकता नहीं रहती।

नशा पीने वालों के लिये भी यह "असली संजीवनी बूटी रस" एक अक्सीर है क्योंकि इसके सेवन से नशे वाली वस्तुएं छूट जाती हैं। शरीर स्वस्थ होकर शारीरिक इच्छायें तेजी के साथ पैदा होती हैं और बेमुराद लोग भी मुराद पाकर पुरुषत्व का आनन्द भोगते हैं। जो लोग बचपन की कुचेष्टाओं या दूसरी बुरी आदतों के कारण आतशक, सुजाक, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, जिरयान आदि दुखदायक रोगों से ग्रसित होकर बेकार हो चुके हों। या स्वप्न में अपवित्र हो जाते हैं। तो उनके लिये यह "असली संजीवनी बूटी रस" विशेषकर लाभप्रद सिद्ध हुआ है। यदि आप समय पर की से शर्मिन्दा होने से छुटकारा पाना चाहते हैं और शरीर को ज्यादे तौर पर मजबूत बनाना चाहते हैं तो इस संजीवनी बूटी रस का सेवन अवश्य करें। यदि स्त्रियां भी इसे इस्तेमाल करें तो सारे गुप्त रोगों से बची रहेंगी। मासिक धर्म ठीक समय पर होगा और कोई कष्ट न होगा। हृष्ट पुष्ट बच्चे पैदा होंगे।

बच्चों को इसकी एक शीशी पिला दी जाय तो वे जीवन भर बीमार न होंगे और हर तरह से तगड़े रहेंगे। क्योंकि हम इस दिव्य और अमर औषधि से हर गरीब और अमीर को लाभ पहुँचाना चाहते हैं इसलिये इसका मूल्य पाँच रुपये की जगह रियायती केवल दो रुपये चार आने २।) प्रति शीशी रखा है। एक साथ तीन शीशी मंगवाने पर पाँच रुपये बारह आने ५॥।) और छः शीशियां मंगवाने पर दश रुपये १०) डाक खर्च एक से तीन शीशी तक ॥।≈) और छः शीशी पर १।) अलग। मंगाने का पता-

यह गोलियां इस प्रकार शीघ्र प्रभाव दिखाती हैं कि इनका प्रभाव पहली ही मात्रा में हो जाता है ... जादू भरा प्रभाव देखें, इससे बढ़िया गोलियाँ दुनिया भर में किसी के पास नहीं हैं। शीघ्र हमसे मंगावें। मूल्य एक दर्जन गोली १॥) डाक व्यय ॥।≈) अलग।

मालिश के लिए तिला स्पेशल

कमजोरी, नसों की दुर्बलता दूर करने के लिए यह प्रसिद्ध तिला दुनियां के तमाम तिलाओं से बढ़कर माना गया है। कमजोरी दूर होकर बल इतना बढ़ जाता है कि मनुष्य दंग रह जाता है। मूल्य प्रति शीशी केवल २॥) डाक खर्च ॥।≈) पावरफुल स्पैशल मसाज ३) तीन रुपये।

प्रमेह की अद्वितीय गोलियाँ

पेशाब से पहले या पीछे शक्कर गिरना, पेशाब करते समय डोरा सा आना, इसको प्रमेह कहते हैं। यह खून का जौहर है, शरीर का राजा है उसके नष्ट होने से शरीर निर्बल हो जाता है और दिल, मस्तिष्क, शरीर दुर्बल होकर अच्छे खासे मरद भी खोखले बन जाते हैं। कार्य में दिल नहीं लगता। जरा सा परिश्रम करनेसे सांस फूलने लगता है सिरमें दर्द रहता है। सैंकड़ों बिमारियां लग जाती हैं। हमारी गोलियां इन समस्त रोगों को दूर करके शरीर को बलवान और शक्तिशाली बना देती हैं। मू० एक शीशी २॥) तीन शीशी ६) डाक व्यय ॥।≈) २।)

सन्तान होने की दवा

जिस स्त्री को सन्तान न होती हो उसे केवल पांच रात तक हमारी मशहूर दवाई "सन्तान दाता" खिलाओ। इन पांच रातों में स्त्री का शरीर ठीक हालत में आ जाता है इस औषधि के कारण आज हजारों बहिनों की गोदमें बच्चे खेल रहे हैं। एक शीशी काफी है जिसका मूल्य ३) तीन रुपया है। डाक खर्च १) अलग

श्वेत कुष्ट की दवा—लोग कहते हैं कि इसको अच्छा करने की कोई दवा नहीं। यह ख्याल गलत है। इस रोगसे सफेद दाग व चकते शरीर में पड़ जाते हैं, देखने में शरीर बहुत बुरा मालूम होता है। इस दवा से पुराने से पुराना श्वेत कुष्ट हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है और सफेद चकत्तों को कुदरती चमड़े के रङ्ग में मिलाता है। कीमत २॥) डाक खर्च १) अलग।

मुख सुन्दर करने की औषधि

अगर आप अपने चेहरे या जिस्म का रंग काले से गोरा तबदील करना चाहते हैं या अपने चेहरे पर से बदनुमा दाग कील छाइयां दूर करने की ख्वाहिश हो तो हमारा तैयार किया हुआ 'लण्डन ब्यूटी लोशन' इस्तेमाल करें। जिससे आपके जिस्म या चेहरे का रंग शर्तिया काले से गोरा हो जायेगा, कीमत फी शीशी केवल एक रुपया पन्द्रह आने १॥।≈) रु०। डाक खर्च १ या ३ शीशी तक १) अलग। तीन शीशी की कीमत ५) पांच रु०। यदि फायदा न हो तो कीमत वापिस होगी।

ये सब चीजें मंगाने का पता—वैद्यराज परमानन्द आहूजा ऐण्ड संस, (वी०पी०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १७७६, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जो मांगोगे मिल जायगा ।

❁ असली सिद्ध वशीकरण कवच ❁

जिस किसी को आप चाहते हैं चाहे वह पत्थर हृदय वाले क्यों न हों, इस शक्तिशाली कवच द्वारा आप के पास आ जावेंगे। इसको केवल अपने पास रखने से कठिन से कठिन कार्य भी शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं। और कोई असन्तुष्ट व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) और हाकिम वश में तथा मेहरबान होकर आपका कहा मानेंगे। मूल्य एक रुपया पन्द्रह आने १।।।=) रु० । एक साथ तीन कवच मंगाने से ५) रु० चांदी वाला २।।) रु० । रोल्ड गोल्ड सोने के पानी वाला ६।।) रु० । डाक खर्च एक से तीन तक १) अलग

❁ असली महा लक्ष्मी यन्त्र ❁

यह यन्त्र दुष्ट ग्रहों की शान्ति और उनके दुष्ट प्रभाव को नष्ट करता है। शत्रु का नाश, ऋण और रोग से मुक्ति, कारोबार में उन्नति, धनधान्य, स्त्री और सन्तान प्राप्ति, मुकद्दमा, कुश्ती, लाटरी, घुड़दौड़ में जीत । परीक्षा और नौकरी में सफलता होगी। जो सोचोगे सो पूरा होगा। सन्तान के लिये दो यन्त्र मंगायें, स्त्री और पुरुष के लिये पृथक पृथक । मूल्य प्रति यन्त्र एक रुपया पन्द्रह आने १।।।=) रु० । तीन एक साथ मंगाने से ५) रु० । चांदी वाला २।।) रु० । रोल्ड गोल्ड सोने के पानी वाला ६।।) रु० । चार कामों के लिये स्पेशल प्रभावशाली नं० ४ वाला यन्त्र मंगावें मूल्य ५।) रु० । पांच कामों से अधिक काम पूरे करने के लिए स्पेशल प्रभावशाली नं० ५ वाला मूल्य ७।।) रु० वाला यन्त्र मंगावें । महसूल डाक एक से तीन यन्त्र तक १) अलग । अविश्वासी पुरुष समय पर हीरे को पत्थर समझकर खो देता है। केवल विश्वासी पुरुष ही शीघ्र मंगाकर लाभ उठावें। आपका काम पूरा न हो तो दाम वापिस

❁ किस्मत का मोती ❁

रात को सोते वक्त अपने सिरहाने के नीचे इसे रखलें। स्वप्न में बता देगा कि इस काम में कैसे कामयाबी हासिल होगी। इसका तरीका क्या है। किसी के दिल का हाल जानना हो तो सोते वक्त उनके सीने पर रख दो। वह अपने दिल का हाल बता देगा। इससे बिलकुल सच्चा जवाब मिल जाता है। इस पर सूर्य देवता की पूजा करने वाले महापुरुष ने तपस्या का प्रभाव डाला है। कभी नाकामी नहीं होती। कीमत सिर्फ एक रुपया पन्द्रह आने १।।।=) डाकखर्च एक से तीन तक मंगाने से ।।।=) अलग।

❁ दौलत की कुंजी ❁

इस यन्त्र को रुपया पैसा में रख देने से कुछ ही दिनों में इतनी तरक्की होती है कि ईश्वर की शान दिखाई देती है। और हैरानी होती है कि इतनी दौलत कहां से आ रही है। गरीबी अमीरी में बदल जाती है। यदि इसे अपनी जेब में रखकर अफसरों के सामने जावें तो फौरन मेहरबान होकर तरक्की दे देता है। नौकरी मिल जाती है। कीमत फी जन्तर एक रुपया पन्द्रह आने १।।।=) तीन एक साथ लेने से ५) डाकखर्च एक से तीन तक मंगाने से ।।।=) अलग। मंगाने का पता :—

वशीकरण तिलक

नया आविष्कार । इस सिद्ध तिलक को मस्तक पर लगाइये वह चाहे कैसा भी कठोर क्यों न हो। आप से स्वयं ही आकर मिलेगा और प्रेम पूर्वक बातें करेगा, चाहे स्त्री हो या पुरुष आपके वशी भूत हो जायगा। कीमत २) डाक खर्च ।।।=) अलग।

६५०० रुपये नकद इनाम

आप बारह घण्टे में फिर जवान बन सकते हैं।

ऐटम पर्लेज विटामिन टानिक के प्रयोग से हर स्त्री और पुरुष अपनी असली आयु से १५-२० वर्ष कम के दिखाई देने लगते हैं। यह स्नायु की कमजोरी, खून की खराबी शारीरिक तथा मानसिक थकावट में बहुत लाभदायक है। इसके प्रयोग से भूख बढ़ती है और एक हफ्ते में ५ और १० पौंड के बीच वजन बढ़ जाता है। गालों पर सुर्खी आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। चेहरे पर वही जवानी वाली चमक आ जाती है। इसके प्रयोग से आंखों की दृष्टि बढ़ती है, गालों पर चमक आती है ओंठ सुर्ख हो जाते हैं। यह ऐटम पर्लेज सफेद बालों को सदा के लिये काला बनाती है और दांतों को मजबूत करती है।

लाहौर में एक अस्सी वर्ष के बूढ़े ने इसका प्रयोग किया और ३० वर्ष का युवक दिखाई देने लगा।

ऐटम पर्लेज के प्रयोग से ८० और ६० वर्ष की आयु में सिनेमा के अभिनेता व अभिनेत्रियां युवा और स्वस्थ दिखाई देने लगती हैं। यदि स्त्रियां इसका सेवन करें तो वे जीवन पर्यन्त अपना यौवन और चेहरे की रौनक सुरक्षित रख सकती हैं। पुरुष इसके सेवन से समय के पूर्व बूढ़े नहीं होते। बाल चमकीले और काले रहते हैं। चेहरे की रौनक बनी रहती है और स्वास्थ्य कभी खराब नहीं होता।

ऐटम पर्लेज का एक बार शीशे के बर्तन में बहुत देर तक रखा गया और वह शीशे का बर्तन इतना मजबूत हो गया कि कई चोटों से भी न टूट सका।

ऐटम पर्लेज को मंगाकर फौरन इस्तेमाल करना आरम्भ करें। सेवन से पूर्व अपना वजन करलें और अपना चेहरा शीशे में देख लें। फिर एक हफ्ते के बाद शीशा देखें और नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। फिर आप भी इसके जादू के प्रभाव की प्रशंसा करने लगेंगे।

ऐटम पर्लेज को लोकप्रिय बनाने के लिये इसका रियायती मूल्य थोड़े समय के लिये ५) पांच रुपये रखा गया है। डाक खर्च चौदह आने अलग। कुछ समय के बाद इसकी असली कीमत १०) कर दी जायेगी। आज ही इसे मंगालें, वर्ना माल खतम होने पर पछताना पड़ेगा।

आत्म रक्षा के लिये अमेरिकन माडल पिस्तौल

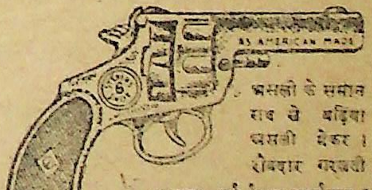

असली के समान साथ ये बढ़िया असली देकर । रोबदार नकली आवाज—नई ईजाद जर्मनी ६ फायर वाला। इसको रखने के लिए लायसैंस की जरूरत नहीं। शीघ्र मंगा कर लाभ उठावें।

इस पिस्तौल के गुण वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है। अगर फिरभी आपको बतलाए देते हैं कि इसमें खूबी यह है कि इसमें असली पिस्तौलकी तरह कारतूस रखनेकी चरखी घूमती है और कारतूस चलानेकी आवाज इसजोर से आती है कि चलाने वाला खुद भी हैरान रहकर रह जाता है छूटते ही गजबका धुआं और आग निकलती है। अपनी जान व माल की रक्षा के लिए इससे बढ़कर और कोई चीज नहीं। इसमें आधा इंच मोटाई के कारतूस चलते हैं। वजन लगभग १५ औंस। लम्बाई ७ इंच। चोर, जंगली जानवर इसकी आवाज सुनकर व शक्ल देखकर ही भाग जाते हैं। कीमत नं० १२२२ पिस्तौल मय २० कारतूस शार्ट ४।।) नं० १२२४ बढ़िया क्वालिटी असली फौलाद का बना हुआ मय ५० कारतूस शार्ट कीमत ८।।।=) १३२५ स्पेशल दर्जा खास मय ५२ कारतूस शार्ट ६।।) नोट-पिस्तौल के लिए तेल की शीशी ।।) आने। पिस्तौल के लिए पेटी व खोल ३।।) फालतू शार्ट कारतूस, फी सैंकड़ा २।) महसूल डाक व पैकिंग १।) अलग। तीन पिस्तौल एक साथ मंगाने से डाक खर्च माफ।

ऐसे बढ़िया पिस्तौल केवल हमारे से ही मिलते हैं अवश्य मंगाइये।

ये सब चीजें मंगाने का पता:—दि नैशनल चैम्बर आफ साइन्स (बी०ऐम०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १३०४, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्व प्रकार के स्त्री रोगों की एक मात्र दिव्य ... अधिक या कम आना, ठीक समय पर न होना, पेट; नलों पीठ कमर में दर्द होना, भूख न लगना, पाचनशक्ति की कमी, सिर में चक्कर आना, खून का कम होजाना, बन्ध्यापन, हिष्टीरिया, श्वेतप्रदर आदि समस्त रोगों को जड़ से दूर करके स्त्रियों को गर्भ धारण करने योग्य बनाती है। मुख पर लाली और सुन्दरता बढ़ जाती है। सब से बढ़िया दवा है। कीमत १ शीशी दो रुपये चार आने २।) डाकखर्च १) अलग।

बीस वर्ष के तजुर्बे का निचोड़। तमाम शारीरिक कमजोरियों की एक मात्र दिव्य, रामबाण औषधि

असली संजीवनी बूटी का रस जिसकी प्रशंसा सारा जगत कर रहा है

"असली संजीवनी बूटी का रस"। यह दिव्य और अमर औषधि है जिसने रामायण काल में लक्ष्मण जी महाराज को लंका के युद्ध के समय दोबारा जीवन दान दिया था। यह वह संजीवनी बूटी का रस है जिसकी तीन बूंद रोज सेवन करने से पन्द्रह दिन के अन्दर तमाम रग, पट्ठों में आश्चर्यजनक शक्ति पैदा होकर शरीर फुर्तीला, और स्वस्थ हो जाता है। चेहरा गुलाब की तरह चमकने लगता है। और गये गुजरे पुरुषों की सारी उमंगें पूरी होकर जीवन का सदा आनन्द भोगते हैं। उदर के सारे रोग दूर होकर भारी से भारी भोजन हजम हो जाता है। भूख इतनी बढ़ जाती है कि दूध घी आदि चिकनाई वाली चीजें जितनी खायें, शरीर में पचकर बदन हृष्ट पुष्ट हो जाता है और मनुष्य को कोई रोग नहीं सताता। इसमें ऐसे जौहर मिलाये गये हैं कि नपुंसक भी पुरुषत्व की पूरी शक्ति पाकर औलाद पैदा करने के योग्य हो जाते हैं और बूढ़े भी जवानी का आनन्द प्राप्त करते हैं। इसका प्रभाव दिल, दिमाग और शरीर के उन अंगों पर बहुत शीघ्रता से पड़ता है जिनका सम्बन्ध मनुष्य के स्वास्थ्य और नसल की मजबूती से है।

जो सज्जन हमारे असली संजीवनी बूटी रस को एक बार सेवन करलें, उन्हें फिर कुश्तों और किसी दूसरी दवाइयों के सेवन की आयु भर आवश्यकता नहीं रहती।

नशा पीने वालों के लिये भी यह "असली संजीवनी बूटी रस" एक अकसीर है क्योंकि इसके सेवन से नशे वाली वस्तुएं छूट जाती हैं। शरीर स्वस्थ होकर शारीरिक इच्छायें तेजी के साथ पैदा होती हैं और बेमुराद लोग भी मुराद पाकर पुरुषत्व का आनन्द भोगते हैं। जो लोग बचपन की कुचेष्टाओं या दूसरी बुरी आदतों के कारण प्रमेह, सुजाक, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, जिरियान आदि दुखदायक रोगों से ग्रसित होकर बेकार हो चुके हों। या स्वप्न में अपवित्र हो जाते हैं। तो उनके लिये यह "असली संजीवनी बूटी रस" विशेषकर लाभप्रद सिद्ध हुआ है। यदि आप समय पर ही से शर्मिन्दा होने से छुटकारा पाना चाहते हैं और शरीर को स्थाई तौर पर मजबूत बनाना चाहते हैं तो इस संजीवनी बूटी रस का सेवन अवश्य करें। यदि स्त्रियाँ भी इसे इस्तेमाल करें तो सारे गुप्त रोगों से बची रहेंगी। मासिक धर्म ठीक समय पर होगा और कोई कष्ट न होगा। हृष्ट पुष्ट बच्चे पैदा होंगे।

बच्चों को इसकी एक शीशी पिला दी जाय तो वे जीवन भर बीमार न होंगे और हर तरह से स्वस्थ रहेंगे। क्योंकि हम इस दिव्य और अमर औषधि से हर गरीब और अमीर को लाभ पहुँचाना चाहते हैं इसलिये इसका मूल्य पाँच रुपये की जगह रियायती केवल दो रुपये चार आने २।) प्रति शीशी रखा है। एक साथ तीन शीशी मंगवाने पर पाँच रुपये बारह आने ५॥।) और छः शीशियां मंगवाने पर दस रुपये १०) डाक खर्च एक से तीन शीशी तक ॥।≈) और छः शीशी पर १।) अलग। मंगाने का पता-

असली स्तम्भनवटी स्पेशल

यह गोलियां इस प्रकार शीघ्र प्रभाव दिखाती हैं कि इनका प्रभाव पहली ही मात्रा में हो जाता है। एक गोली सेवन करें और इसका जादू भरा प्रभाव देखें, इससे बढ़िया गोलियां दुनिया भर में किसी के पास नहीं हैं। शीघ्र हमसे मंगावें। मूल्य एक दर्जन गोली १।।) डाक व्यय ।।।≈) अलग।

मालिश के लिए तिला स्पेशल

कमजोरी, नसों की दुर्बलता दूर करने के लिए यह प्रसिद्ध तिला दुनियां के तमाम तिलाओं से बढ़कर माना गया है। कमजोरी दूर होकर बल इतना बढ़ जाता है कि मनुष्य दंग रह जाता है। मूल्य प्रति शीशी केवल २।।) डाक खर्च ।।।≈) पावरफुल स्पेशल मसाज ३) तीन रुपये /

प्रमेह की अद्वितीय गोलियाँ

पेशाब से पहले या पीछे शक्कर गिरना, पेशाब करते समय डोरा सा आना, इसको प्रमेह कहते हैं। यह खून का जौहर है, शरीर का राजा है उसके नष्ट होने से शरीर निर्बल हो जाता है और दिल, मस्तिष्क, शरीर दुर्बल होकर अच्छे खासे मरद भी खोखले बन जाते हैं। कार्य में दिल नहीं लगता। जरा सा परिश्रम करनेसे सांस फूलने लगता है सिरमें दर्द रहता है। सैंकड़ों बिमारियां लग जाती हैं। हमारी गोलियां इन समस्त रोगों को दूर करके शरीर को बलवान और शक्तिशाली बना देती हैं। मू० एक शीशी २।।) तीन शीशी ६) डाक व्यय ।।।≈) २।)

सन्तान होने की दवा

जिस स्त्री को सन्तान न होती हो उसे केवल पांच रात तक हमारी मशहूर दवाई "सन्तान दाता" खिलाओ। इन पांच रातों में स्त्री का शरीर ठीक हालत में आ जाता है इस औषधि के कारण आज हजारों बहिनों की गोदमें बच्चे खेल रहे हैं। एक शीशी काफी है जिसका मूल्य ३) तीन रुपया है। डाक खर्च १) अलग

श्वेत कुष्ट की दवा—लोग कहते हैं कि इसको अच्छा करने की कोई दवा नहीं। यह ख्याल गलत है। इस रोगसे सफेद दाग व चकते शरीर में पड़ जाते हैं, देखने में शरीर बहुत बुरा मालूम होता है। इस दवा से पुराने से पुराना श्वेत कुष्ट हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है और सफेद चकत्तों को कुदरती चमड़े के रङ्ग में मिलाता है। कीमत २।।) डाक खर्च १) अलग।

मुख सुन्दर करने की औषधि

अगर आप अपने चेहरे या जिस्म का रंग काले से गोरा तबदील करना चाहते हैं या अपने चेहरे पर से बदनुमा दाग कील छाईयां दूर करने की ख्वाहिश हो तो हमारा तैयार किया हुआ 'लण्डन ब्यूटी लोशन' इस्तैमाल करें। जिससे आपके जिस्म या चेहरे का रंग शर्तिया काले से गोरा हो जायेगा, कीमत फी शीशी केवल एक रुपया पन्द्रह आने १।।।≈) रु०। डाक खर्च १ या ३ शीशी तक १) अलग। तीन शीशी की कीमत ५) पांच रु०। यदि फायदा न हो तो कीमत वापिस होगी।

ये सब चीजें मंगाने का पता—वैद्यराज परमानन्द आहूजा ऐण्ड संस, (वी०ऐम०वी०) पोस्ट बक्स नम्बर १७७६, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...पुराना मिश्र का जादू सोचन, रमान, सम्मूल

(मिश्र देश के जादू विद्या की हस्तलिखित पुस्तक का अनुवाद) हिन्दी भाषा में [१] वशीकरण [२] सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और अन्य सब चीजों के वशीकरण, बड़े-बड़े मुकदमे जीतना व चोरी पकड़ना, हर तरह के साधन, रोगों पर दम करना, चाहे कोई रोग हो और औषधी से लाभ न होता हो। घर बैठे दूसरे देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिसको चाहें वश में कर लेना, नजर से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर देशों की वस्तुयें मंगवा लेना, देव, परी, जिन्नों और शत्रुओं को अधिकार में रखकर इच्छानुसार काम लेना आदि ऐसे गुप्त भेद दर्ज हैं जिनको साधु महात्मा ऋषि मुनि भी नहीं पा सके। इससे बढ़कर आपको और कोई पुस्तक नहीं मिल सकती। यदि पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापिस कर दो। कीमत सजिल्द दो रुपये आठ आने २।।) डाकखर्च ।।=) कुल ३=) बढ़िया जिल्द वाला ३) डाकखर्च ।।=)

१०००) रु० माहवार शर्तिया कमालो। (अर्थात् खजाना रोजगार) हिन्दी भाषा

इस पुस्तक में ५२८ हुनर छपे हैं। चाहे कोई सा एक हुनर अपने मतलब का चुन लें और उससे १०००) माहवार कमावें। किसी उस्ताद की जरूरत नहीं। गिल्टसाजी, फोटोग्राफी, घड़ीसाजी, दंदानसाजी, रबड़ की मुहरें, आतिशबाजी, साबुन, बाल काले करने के अंग्रेजी खिजाब, बाल उमर भर न उगने की दवा बनाना, मोमबत्ती, गंधक के गिलास, शीशा जोड़ना, इत्र तेल, फुलेल, अंग्रेजी खाने, बिस्कुट, मिठाई, अचार, मुरब्बे, चटनियां सब रोगों के इलाज और १०८ बीमारियों की एक ही दवा अमृत का नुस्खा, आदि ५२८ हुनर छपे हैं। शीघ्र मंगा लें। रियायती मूल्य एक रुपया आठ आने १।।) डाक खर्च ।।=) अलग।

हिन्दी में यक्षिणी भैरव साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र मंत्र तंत्र आदि विषय हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। जिनसे विद्वान् तथा अल्प पठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। योग विद्या वर्णन, यक्षिणी तथा शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य्य, चन्द्र, भैरव, महावीर, आदि देवताओं को सिद्ध प्राप्त करके अपनी आशाएँ पूर्ण होती हैं। कीमत दो रुपये आठ आने २।।) डाकखर्च ।।=) अलग।

गर्भ न रहेगा

वे कमजोर और बीमार औरतें जो आगे सन्तान पैदा करना नहीं चाहती हैं 'बर्थकण्ट्रोल दवा' मंगाकर सेवन करें। इस दवा से सन्तान होना बन्द हो जायगा। दाम २।।) डाक खर्च १) अलग। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती। मासिक धर्म ठीक तरह चालू रहता है।

यह पुस्तक योरुप और हिन्दुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास फुलझड़ी, रुपया, ताश के खेल, भूत प्रेत जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना हाथ पर आग रखें तो हाथ न जले, मनुष्य को कत्ल करके जिंदा कर देना, आम का वृक्ष, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी जुआर, चने भून देना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, कागज की कढ़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्खे जिनसे लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सकें और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य सजिल्द एक रुपया आठ आने १।।) डाक खर्च ।।=) अलग।

खाने से सफेद बाल काला

यह दवा बहुत कीमती चीजों से दिमाग की ताकत बहाल करने के लिये तय्यार की है। इस के थोड़े दिन सेवन करने से तमाम बाल सदा के लिये जड़ से काले हो जाते हैं। दिल दिमाग हर समय ताजा रह कर शरीर में बिजली जैसी ताकत फुर्ती पैदा होती है अर्थात् मुर्दा जिस्म में जवानी की नई लहरें ठाठें मारती हैं। कीमत २।।) डाकखर्च १) अलग।

जादू की गोली—यह एक सन्यासी जी का तोहफा है। स्त्री या पुरुष इस गोली को मुंह में रखें। कमाल की चीज है, सब इसके फायदे को जानते हैं। एक गोली बहुत काफी होती है। कीमत १।।) डाक खर्च १) अलग।

असली करामाती रूमाल

यह एक सन्यासी का दिया हुआ चमत्कारी रूमाल है। इसे केवल अपनी जेब में रक्खें। ईश्वर की कृपा से आपके दिल की मुराद शीघ्र ही पूरी होगी। जिससे आपको मुहब्बत हो या जिससे शादी की इच्छा हो वह घर बैठे रिझावे आपसे मिलने के लिए तड़पने लगेगा। मन चाही सुन्दर स्त्री मिलेगी। राजसभा में मान, मुकदमें में जीत, चोरी का पता, परीक्षा में पास होना। दौलत से मालामाल हो जायेंगे। लाटरी में नफा होगा। दुश्मन आधीन होंगे। नौकरी जल्दी मिलेगी। अर्थात् दुनिया के सब मुश्किल से मुश्किल काम अवश्य पूरे होंगे। आजमायश करने पर इसके जौहर खुलेंगे। मूल्य प्रति रूमाल एक रुपया पन्द्रह आने १।।।=) तीन रूमाल पांच रुपये ५) रु०। डाकखर्च एक या तीन रूमाल पर ।।।=) अलग।

हम डंके की चोट ऐलान करते हैं कि इसे कोई झूठा साबित नहीं कर सकता। अगर काम पूरा न हो तो दाम वापिस मंगालें।

मुहब्बत का सुरमा

इस जादू मुहब्बत के सुरमे को आंखों में डालकर सामने चले जाएं कैसा ही बेदरद क्यों न दिल क्यों हो उसका दिल मोम हो जायगा और मुहब्बत करने लगेगा। गलत निकले तो दाम वापिस। रियायती कीमत सवा दो रुपये २।) डाकखर्च ।।।=) अलग।

ये सब चीजें मंगाने का पता:—श्री परम आनन्द औषधालय व पुस्तक भण्डार (पी०एम०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १२६४, देहली।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

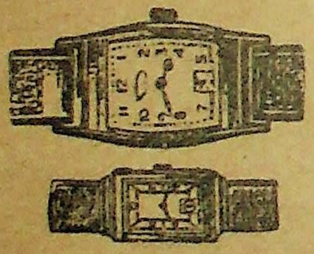

हमारी प्रसिद्ध दवाई "असली जौहर हुस्न" के लगाने से हर जगह के बाल बग़ैर किसी तकलीफ के हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं और फिर जीवन भर दोबारा उस जगह बाल कभी पैदा नहीं होते। जगह रेशम की तरह मुलायम, नरम और साफ हो जाती है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ दो रुपये आठ आने २॥) डाकखर्च १) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ६॥) छः रुपये आठ आने। इस दवाई को मशहूर करने के लिए हर शीशी के साथ दो फेन्सी ब्यूट रिस्टवाच और दो अंगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। जल्दी करें और फायदा हासिल करें। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छै घड़ियां और छै अंगूठियां सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम दी जाती हैं।

असली बाल काला तेल नं० १

हमारे प्रसिद्ध "बाल काला तेल" के इस्तेमाल से सफेद बाल हमेशा के लिये जड़ से काले हो जाते हैं और फिर जिन्दगी भर काले ही पैदा होते हैं। यह बेनजीर सन्यासी तोहफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है। बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है। गञ्जापन दूर करता है। आंखों और दिमाग को ताकत देता है। याददाश्त को बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ २॥) दो रुपये आठ आने, डाकखर्च १) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत छः रुपये आठ आने ६॥), इस दवाई को मशहूर करने के लिए हरएक शीशी के साथ दो फैन्सी ब्यूट रिस्टवाच और दो अंगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छै घड़ियां और छै अंगूठियां सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम। जल्दी करिये, वरना ऐसा मौका बार बार हाथ न आवेगा। मंगाने का पता:—

... का शुभ अवसर प्राप्त कर सकता है। और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर के तमाम दुष्ट ग्रह शान्त हो कर हर प्रकार से घर में धन की वर्षा होती है, जिससे पुश्त दर पुश्त के लिये गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत चार रुपये आठ आने ४॥) रु०। चांदी का छः रुपये बारह आने ६॥।) रु०। रोल्ड गोल्ड सोने वाला सात रुपया पन्द्रह आने ७॥।≈) रु०। स्पेशल ताकत वाला प्रभावशाली कवच सात रुपये चार आने ७।), डाकखर्च १ से ३ कवच तक ॥।≈) अलग।

प्रेमी आपका सेवक

यह एक अनोखा आविष्कार है जो आज तक न देखा न सुना। यह एक प्रकार का इत्र व तेल है जिसको अगर कोई स्त्री सूंघ ले तो वश हो जाय। किसी को अपना बनाना हो तो इसे लगाकर उसके पास से गुजर जाओ वह तुम्हारा हो जायगा, तुम्हारी तलाश में दिन रात एक कर देगा। यह सुगन्धी ही ऐसी है कि प्रेमी सूंघते ही उतावला हो जाता है और मिलने के लिये दिन रात एक कर देता है। कीमत प्रति शीशी दो रुपया २) डाकखर्च ॥।≈) अलग।

असली शाही फौलादी तिला और गोलियाँ

सत्य बात तो यह है कि इस पुस्तक में तिला की पूरी-पूरी तारीफ लिखना ठीक नहीं। परन्तु यह निवेदन कर देना जरूरी है कि निर्बल टेढ़ी, टूटी मुरदार रगों पर शाही फौलादी तिला की दो चार दिन मालिश करने से लोहे के मानिंद शक्तिशाली, पुष्ट, तेज और सख्त होंगी "शाही फौलादी तिला" और "शाही फौलादी मस्ताना गोलियों" के सेवन से निर्बलता दूर होगी। यदि बुढ़ापे तक झुकाव कमजोरी या कमर में थकावट आ जावे तो हमारा जिम्मा। निर्बल पुरुष इन दोनों दवाओं का सेवन करके जवानी का लुत्फ उठावें। मूल्य तिला दो रुपये आठ आने २॥) रु०। शाही फौलादी गोलियां दो रुपये २) डाक खर्च ॥।≈) अलग।

त्रिकाल दर्शी असली करामाती दर्पण

किसी भी उमर का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है। चोरी गई वस्तु व गुम शुदा की तलाश, बिमारी के दूर होने या न होने का हाल, आने वाले व गुजरे हुए हालात, दुःखों से बचने का उपाय, गड़े धन का पता, किसी मुश्किल काम का हल होना, या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्ग वासी माता पिता मित्रों, शहीदों से मुलाकात, जिसे कभी न देखा हो उसे भी आप इसमें भले ही देख लेंगे। कीमत मय सेवन विधी २।) डाक पैकिंग खर्च ॥।≈) अलग। यदि गलत साबित हो तो कीमत वापिस। स्पैशल ताकत वाला बढ़िया प्रभावशाली दर्पण ३॥) डाक खर्च ॥।≈) अलग।

मासिक धर्म एक दिन में जारी

"आनन्द मैन्सोल"—मासिक धर्म चाहे कितने दिनों से और चाहे किसी कारण से बन्द क्यों न हो इस दवा से एक दिन के अन्दर-अन्दर जारी हो जाता है। मूल्य केवल तीन रुपये ३) डाक खर्च ॥।≈) अलग। "आनन्द मैन्सोल स्पैशल"—जो कि मासिक धर्म को फौरन जारी करके बड़ी आसानी से बिलकुल साफ कर देती है। कीमत छः रुपये ६) डाक खर्च ॥।≈) अलग। याद रखें कि इसे गर्भवती स्त्री सेवन न करें। मंगाने का पता:—

... का सुरमा

इसे आंखों में डाल कर किसी के सामने चले जावें वह कैसा ही पत्थर दिल क्यों न हो तुरन्त ही मोम हो जायगा और चाहने लगेगा। झूठ निकले तो कीमत वापिस। कीमत २) रुपया स्पैशल ताकत वाला ३)। डाक खर्च १) अलग।

जादू का सन्यासी चूर्ण

पान या मिठाई में थोड़ा सा मिला कर जिसे खिला दोगे वह आपका बे दाम गुलाम और मस्त हो जायगा सदा आप की हर बात मानेगा। सब पर एक जैसा असर करता है। कीमत २) स्पैशल ताकत वाला ३) डाक खर्च १) अलग।

ममीरे का असली सुरमा

बहुत उत्तम है। सब छोटे बड़े रात्रि को १-१ सलाई लगा कर सोवें तो आंखों का कोई रोग कभी न होगा। प्रति दिन लगाने से जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नाखुना, कम दिखाई देना, पानी बहना आदि विकार दूर होते हैं। एक शीशी १।) तीन शीशी ३) डाक खर्च १ से ३ शीशी तक १) अलग।

बढ़िया शुद्ध शिलाजीत—ताकत व खून बढ़ाने की मशहूर दवाई कीमत ३ तोला २॥) डाक खर्च १) अलग।

ये सब चीजें मंगाने का पता:—दि इन्डो ब्रिटिश नावल्टी स्टोर (बी०ऐम०बी०) पोस्ट बक्स नम्बर १३१३, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मुँह मांगी मुराद पूरी होगी
जो चाहोगे वही मिलेगा

अब आप किसी तरहसे निराश न हों। इस "असली तान्त्रिक अंगूठी" को पहिनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगे वह देखते ही देखते फौरन वश में हो जायगा, चाहे वह कितना ही पत्थर दिल क्यों न हो, वह सात समुद्र फाँद, सात ताले तोड़ आपके कदमों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, बाँझ स्त्री के सन्तान होगी, मुर्दा रूहों से बात चीत होगी, जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्यापार में लाभ होगा, दुष्टग्रह शान्त होंगे, बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

असली तांत्रिक अंगूठी ०-१२-० स्पेशल २-०-० पावर फुल स्पेशल ताकत वाली २-१५-० जिसका बिजली के करेण्ट की तरह फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अंगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व को बजाय पश्चिम में उदय हो सकता है लेकिन इस असली तांत्रिक अंगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर कीमत वापिस देनेकी गारंटी है। कई लोग इनाम का लालच दे कर नकली अंगूठी बेचते हैं उनसे बचिये। असली माल सिर्फ हम से मिलेगा। डाक खर्च १ से ६ अंगूठी पर १) अलग। मंगाने का पताः—श्री कैलाश महा शक्ति भवन (बी० एम० बी०) पोस्टबक्स नम्बर १३०८, देहली,

मासिक प्रवाह धारा

यदि किसी बहिन के पचास वर्ष से कम उमर में किसी भी कारण से या किसी रोग से मासिक धर्म रुक गये हों या बिल्कुल होते ही न हों, तो घबरावें नहीं। यह दवा बगर किसी कष्ट के मासिक धर्म चालू कर देगी। यह दवा केसर, कस्तूरी, अम्बर और इसी किस्म की बहुत सी अनमोल चीजों से तैयार की जाती है। यह दवा इस कदर तेज है कि अन्दर जाते ही बच्चेदानी का मुंह खोल देती है। मासिक धर्म चाहे कितनी भी देर से रुका हुआ क्यों न हो फौरन चालू हो जाता है। यदि हम इसकी कीमत एक सौ रुपया प्रति शीशी रखें तो भी कम है। लेकिन बहिनों की भलाई के लिये इसकी कीमत केवल आठ रुपये ८) महसूल डाक १) अलग लगता है।

गर्भ की रोक थाम

यदि कोई स्त्री बीमारी, गरीबी या कमजोरी के कारण बच्चा पैदा होने के समय की तकलीफ को सहन न कर सके तो वह इस दवा का सेवन करें। इससे गर्भ का होना बन्द हो जाता है और संसारिक सुख में कोई बाधा नहीं पड़ती। गारण्टी वाली दवा है। कीमत ३) डाक खर्च १) अलग।

स्वस्थ गर्भ दाता रसायन

चाहे संसार के सारे ऐश आपके घरमें मौजूद हों किन्तु सन्तान नहीं, तो गृह शमशान सा प्रतीत होता है। स्वस्थ गर्भदातारसायनने सन्तान हीन गृहस्थोंको सन्तान का सुख दिखाया। अगर विवाह को हुए कई वर्ष हो गये हैं अथवा किसी अज्ञात कारणवश स्त्री गर्भवती नहीं होती है तो ऐसी अवस्था में आज तक जो स्त्रियाँ सन्तान न होने से निराश हो चुकी थीं वह आज हमारी विचित्र औषधिसे गर्भवती होकर नौ मासके बाद जीते जागते सुन्दर स्वस्थ बच्चे की माँ बन गई हैं। जिनके प्रशंसापत्र हमारे कार्यालय में मौजूद हैं। यदि आपके सन्तान नहीं होती है, अथवा खण्डित हो जाती है तो हमारे स्वस्थगर्भदाता रसायन का अवश्य प्रयोग करके सन्तान सुख देखें। कीमत एक शीशी ४) तीन शीशी का दस रुपये डाक खर्च १ से ३ शीशा तक १) पृथक।

तिलस्मी अँगूठी—इस के देखने से मृतक आत्माओं के दर्शन व प्रवासी मित्रों से मुलाकात, चोरी का पता, मुकद्दमा इमतहान की सफलता का हाल, रोगी का परिणाम, आदि जो चाहें मालूम करलें। कीमत १।।=) डाकखर्च १ से ३ तक १) अलग।

बिजली का चश्मा—बिलकुल नई ईजाद है। न लैम्प की जरूरत न लालटैन की। चाहे कितना ही अन्धेरा हो आंखों पर लगा लें और जो काम करना हो मजे से करें। किसी प्रकार का डर नहीं। बच्चे बूढ़े—स्त्री पुरुष सब इस्तेमाल कर सकते हैं कीमत ५) डाक खर्च १) अलग। मंगाने का पताः—

दि नेशनल चैम्बर आफ साइन्स, (बी. एम. बी.) पोस्ट बक्स नम्बर १३०४, देहली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुफ्त

हमने अपने कारखाना के वार्षिक उत्सव पर १००० जादू की अंगूठियां मुफ्त देने का फैसला किया है यह अंगूठियां एक महात्मा जी ने बड़ी कोशिश और मेहनत से ग्रहण के समय पर तैयार की है इस जादू की अंगूठी को पहनने से चाहे कैसा ही कठिन से कठिन कार्य क्यों न हों शीघ्र ही सफल हो जावेगा जिस किसी को आप याद करेंगे चाहे कितना ही कठोर हृदय क्यों न हो आप के वश में हो जावेगा कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ कर सदा आप की आज्ञा का पालन करेगा। मनमानी सगाई तथा शादी होगी। नौकरी मिलेगी बांझ स्त्री के संतान होगी। मुर्दा रूहों से बात चीत होगी पृथ्वी में दबा हुआ धन सपने में दिखाई देगा; व्यापार परीक्षा, लाटोरी, सट्टा जुआ तथा मुकदमा में सफलता होगी। दुर्भाग्य और दुखों से मुक्ति होगी। धन, सम्पत्ति तथा मान की प्राप्ति होगी और जीवन सदा सुख और शान्ति से व्यतीत होगा। आज ही मुफ्त मंगाइये।

बंगाल मैजिक हाउस (M. B. 152) सीतलामन्दिर अमृतसर

मुफ्त !! मुफ्त ! मुफ्त !!!

असली कामशास्त्र

यह वह पुस्तक है जिसकी आपको जरूरत है इस में स्त्री पुरुषों के २२५ रंगीन फोटो हैं। मुफ्त प्रति के लिये लिख। केवल विज्ञापन व्यय के लिये ।।) नियत है। शीघ्र मंगवा लें वरन यह अवसर बार बार हाथ न आयेगा।

आनन्द बुकडिपो (M. B. 152) दुर्गयाना अमृतसर

मुफ्त

यदि आप हमको भिन्न भिन्न देहातों के ५ पढ़े लिखे आदमियों के नाम तथा पूरे पते भेज दें तो हम आप को एक अति सुन्दर कैलेण्डर और जन्त्री बाबत साल १९५२ बिलकुल मुफ्त भेज देंगे जल्दी करें वरन फिर यह समय हाथ न आयेगा।

नोट:—(१) किसी देहात का एक से ज्यादा पता न होना चाहिये (२) हमारे यहां तमाम पतों की पूरी पड़ताल होती है यदि पते गलत होंगे तो इनाम न मिलेगा।

माडर्न ज्युलर्ज (M. B. 152) समीप गोल बाग अमृतसर

१०००० घड़ियां मुफ्त इनाम

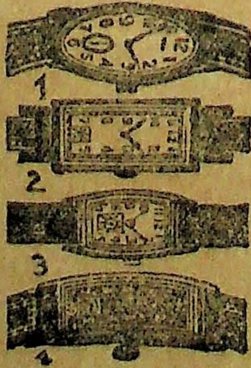

हमारे बाल काला तेल नं० ५०१ (रजिस्टर्ड) के सेवन से हर प्रकार के बाल काले हो जाते हैं और सदा काले ही पैदा होते रहते हैं बालों को गिरने से रोक कर उन्हें चमकीले तथा घुंघराले बनाता है। मूल्य प्रति शीशी १॥।), तीन (३) शीशी पूरा कोर्स ४॥) रु०। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैंसी तथा सुन्दर रिस्टवाच जिसकी सुन्दरता और मजबूती की गारंटी १५ साल है और १ अंगूठी न्यु गोल्ड और ३ शीशी के खरीदार को ६ रिस्टवाच तथा ६ अंगूठियां बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

नोट:—ना पसन्द होने पर दाम वापिस।

लंदन कमर्शियल कम्पनी पी० बी० २ (M. B. 152) अमृतसर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम. ए. कृत। जो हिन्दी द्वारा संस्कृत व्याकरण सीखना चाहते हैं उनके लिये यह बहुत बढ़िया पुस्तक है। पक्की जिल्द सहित मूल्य ६) रु०।

अनुवादकला

प्रसिद्ध नवीन पाणिनीय स्वनामधन्य प्रोफ़ेसर।

श्री चारुदेव शास्त्री एम० ए०. एम० ओ० एल, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, श्री दयानंद कालेज, अम्बाला-द्वारा प्रणीत 'अनुवाद-कला अथवा वाग्व्यवहारादर्श' नामक पुस्तक प्रकाशित हो गई। प्रस्तुत पुस्तक में अनुवाद-कला को सरल और सुगम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है—जो अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों—दोनों के लिये परम उपयोगी और व्यावहारिक है। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि उच्च परीक्षाओं के लिए कोई बढ़िया अनुवाद की पुस्तक नहीं थी। यह पुस्तक इन्हीं परीक्षार्थियों के लिये लिखी गई है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन से अनुवाद-कला की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो गई है। इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल २।।) है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्द शास्त्री विरचित अति सरल तथा विस्तृत प्राज्ञतोषिणी नामक हिन्दी व्याख्या सहित। इस हिन्दी टीका में सब रूपसिद्धि भी साथ ही दे दी गई हैं। पुस्तक इतनी सरल कर दी गई है कि कोमल-बुद्धिवाले छात्र भी इस पुस्तक को स्वयं लगा सकते हैं। संपूर्ण पुस्तक १००० पृष्ठ में समाप्त हुई है। मूल्य ७) कमीशन काटकर छात्रों को ६=) में भेजी जाती है।

ज्योतिषरत्नाकर भा० टी०

बलाबल निकालने तथा फलादेश कहने की अनमोल पुस्तक

इस पुस्तक को पढ़कर ज्योतिष का फलादेश कहा जा सकता है। इसमें ग्रहशील, राशिशील, इष्ट संशोधन, निषेक और प्रसूति के विषय को भली भांति दर्शाया गया है, ग्रहों के बलाबल निकलने की सारणियां, लग्न, स्पष्ट, दशम स्पष्ट, कान्ति इत्यादि निकालने के सब प्रकार दिये हुए हैं। आवश्यक स्थानों पर उदाहरण और सारणियां भी दी गई जिससे हर विषय को सुगम बन गया है। ज्योतिष विषय से लाभ उठाने के लिये इस पुस्तक को अवश्य मगवाना चाहिये। मूल्य ४) रु०। इसके फलित खण्ड के भाग छप रहे हैं स्त्री भाव और सुत भाव तनुभाव सहजभाव छप चुके हैं। मूल्य प्रत्येक भाव १।) रु० अन्य भाव भी छप रहे हैं।

मिलने का पता :—पंचांग दिवाकर कार्यालय माईहीरां गेट जालन्धर शहर।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

पं० श्रीविश्वनाथ शास्त्री 'प्रभाकर' प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज 'खन्ना' (१) ह्रस्वदीर्घप्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) सन्धि प्रकरण में मूल के प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) विशेष प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अव्ययों के अर्थ (७) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (८) कर्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (९) कोष्ठक में प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (१०) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (११) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (१२) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धी (१३) सब सूत्रों के हिन्दी में अर्थ। इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१४) लिङ्ग के बोध के लिये लघुलिङ्गानुशासन (१५) व्याकरण, सूत्र, वार्तिक, भाष्य और व्याख्यान के लक्षण और उदाहरण (१६) व्याकरण के चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का, विवरण (१७) विद्यार्थी के लिये लेखोपयोगी नियम और चिह्न (१८) प्रायः अनुवाद में होने वाली अशुद्धियों और उनका संशोधन (१९) अनुवाद के लिये उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद भावार्थ सहित (२०) लघुकौमुदी के मूल तथा टिप्पणी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका हिन्दी भाषा में अर्थ (२१) अव्यय, धातु-पाठ और उनका हिन्दी भाषा में अर्थ, आदि अनेक विशेषताओं से युक्त। इस आवृत्ति में भाषा टीका, तथा काशी, बिहार और पंजाब की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ दे दिये हैं। इन उपरोक्त विशेषताओं के पढ़ते ही आप स्वयं ही अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी अधिक उपयोगी हो सकती है। नया संस्करण मोटे अक्षरों में ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है। मूल्य केवल २) परन्तु छात्रों को कमीशन काटकर केवल १।।।) में दिया जाता है।

प्र०—**मोतीलाल बनारसीदास** पो० ब० ७५, नेपाली खपरा, बनारस

विज्ञापन-बाजों से सावधान!

पञ्जाब-केसरी श्रीसिद्धमहायन्त्र

इस यन्त्र को धारणकर-वीर-यशस्वी महाराजा-पञ्जाब केसरी श्री-रणजीतसिंहजी ने अपने जीवन की सभी चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की थीं। उन्हीं के राजज्योतिषी के घराने से यह सिद्धमहायन्त्र प्राप्त हुआ है और वर्षों से अनेक व्यक्तियों पर इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है, केवल जनता के उपकारार्थ-परमरहस्यमय इस महासिद्धयन्त्र का प्रचार किया गया है, इसे कोरी विज्ञापन बाजी न समझें। सभी स्त्री पुरुष इसे धारण कर मनोवाञ्छित-फल प्राप्त कर सकते हैं।

आप भी एक बार विश्वास पूर्वक इस को धारण कर चमत्कार देखिये। राजा-महाराजाओं के लिये प्रतिष्ठित सुवर्णयन्त्र १०१ रु० साधारण जनता के लिये रजत यन्त्र ५।) रु० ताम्रयन्त्र २।।) रु० डाक व्यय पृथक्।

मिलने का पता—**सिद्धयन्त्र कुटी**, पो० सुन्दरनगर (हिमाचल-प्रदेश)

अनुवाद चन्द्रिका

एलोपैथिक निघंटु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीचक्रधर 'हंस' एम. ए, शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर—इस पुस्तक में हंस जी ने बालकों की कोमल बुद्धि का ध्यान रखते हुए इतनी सरलता से अनुवाद सीखने की प्रणाली दी है जिसको थोड़े ही ध्यान देकर पढ़ने से व्याकरण ज्ञान के साथ-साथ अनुवाद की आशातीत योग्यता प्राप्त हो जाती है। क्योंकि इसकी उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि इसके सात संस्करण हाथों हाथ बिकने के अनन्तर सुन्दर स्वरूप में आठवां संस्करण ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है।

(१) अनुवादार्थ महाकवियों के सरस गद्य-पद्य-संग्रह हैं, (२) अशुद्धि-संशोधन (३) संस्कृत में पत्र-लेखन शैली, (४) वाच्यपरिवर्तन (५) धातु से कृदन्त रूप बनाना, (६) अनुवादार्थ गद्यसंग्रह, (७) लोकोक्ति-संग्रह, (८) पंजाब मैट्रिक, प्राज्ञ, काशी तथा पटना यूनिवर्सिटी के प्रश्नपत्र भी अभ्यासार्थ दिये गये हैं। इसलिये सहानुभूति के साथ छात्रों को हम परामर्श देते हैं कि वे एक बार तो अवश्य इससे लाभ उठावें। मूल्य केवल २।) कमीशन काटकर २)।

जीवन को सुखी बनानेवाली आदर्श पुस्तक

सफल जीवन

लेखक—प्रो० रामचंद्र शर्मा एम. ए.

सुखी जीवन के लिय हर एक मनुष्य लालायित है। पर साधारण मनुष्य वास्तविक सुख क्या है नहीं समझता और अज्ञान के कारण ही ठोकरें खाता फिरता है। लेखक ने साधारण जनता की इसी त्रुटि को अनुभव करते हुये शास्त्रों के आधार पर सच्चा सुख क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, तथा मनुष्य जीवन का उद्देश्य, धर्म और आचार, सफलता के साधन, सत्य और प्रिय भाषण, ब्रह्मचर्य, छूआछूत सन्तोष की आवश्यकता, स्वाध्याय, श्रद्धा और भक्ति, आसन प्राणायाम आदि मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सैंकड़ो विषयों को इस पुस्तकमें दर्शाया है। जो मनुष्य अपने जीवन में वास्तविक सुख का आनन्द लेना चाहते हैं उन्हे एकबार अवश्य इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १)

एलोपैथिक निघंटु

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा की नई रचना

जिसमें औषधियां तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां, नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी० सी०, किलोग्राम, स्टोन, टीकपफुल, क्वार्ट, मन, सेर, तोले इत्यादि २।) ब्रिटिश फार्मेकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप (एसिटा, ऐसिड्स इलिक्सर्स, ऐक्सट्रैक्ट्स, डिकौक्शन्स, लिनिमेन्ट्स, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स, टैब्लेट्स इत्यादि), एम्प्यूल्स, बाथ्स, कैचेट्स, कैप्स्यूल्स, डूश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखनेवाली औषधियां, विस्फोटक संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों की मात्रा, औषधियों की घुलन शीलता, भांति भांति के लोशन तैयार करना, सैंकड़ों पारिभाषिक शब्द, शरीर के विभिन्न अङ्गों पर विभिन्न औषधियों का क्या प्रभाव पड़ता है, भिन्न भिन्न प्रकार के ऐसिड्स, ऐक्वा, इमलशन्स, लिनीमेन्ट्स, लिकर्स, लोशन्स, मिक्सचर्स, पाउडर्स इत्यादि तैयार करने के तरीके, तथा लगभग २००० एलोपैथिक पेटन्ट तथा साधारण औषधियों का वर्णन (मात्रा, मुख्य अवयव, गुण आदि लिखा हुआ है)। यह पुस्तक वैद्यों, हकीमों तथा ग्राम चिकित्सकों के लिये अनिवार्य और आयुर्वेदिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जन साधारण के लिए अत्युपयोगी है। आप इस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र खरीदें क्योंकि पहली बार कुल १००० प्रतियां छपवाई गई है। पृष्ठ ५०७ मूल्य ८) नेट। डाक खर्च ।।।)।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संस्कृत–व्याकरण–सार

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम. ए. कृत। जो हिन्दी द्वारा संस्कृत व्याकरण सीखना चाहते हैं उनके लिये यह बहुत बढ़िया पुस्तक है। पक्की जिल्द सहित मूल्य ६) रु०।

अनुवादकला

प्रसिद्ध नवीन पाणिनीय स्वनामधन्य प्रोफेसर।

श्री चारुदेव शास्त्री एम० ए०. एम० ओ० एल, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, श्री दयानंद कालेज, अम्बाला-द्वारा प्रणीत 'अनुवाद-कला अथवा वाग्व्यवहारादर्श' नामक पुस्तक प्रकाशित हो गई। प्रस्तुत पुस्तक में अनुवाद-कला को सरल और सुगम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है–जो अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों–दोनों के लिये परम उपयोगी और व्यावहारिक है। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि उच्च परीक्षाओं के लिए कोई बढ़िया अनुवाद की पुस्तक नहीं थी। यह पुस्तक इन्हीं परीक्षार्थियों के लिये लिखी गई है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन से अनुवाद-कला की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो गई है। इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल २।।) है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्द शास्त्री विरचित

अति सरल तथा विस्तृत प्राज्ञतोषिणी नामक हिन्दी व्याख्या सहित। इस हिन्दी टीका में सब रूपसिद्धि भी साथ ही दे दी गई हैं। पुस्तक इतनी सरल कर दी गई है कि कोमल-बुद्धिवाले छात्र भी इस पुस्तक को स्वयं लगा सकते हैं। संपूर्ण पुस्तक १००० पृष्ठ में समाप्त हुई है। मूल्य ७) कमीशन काटकर छात्रों को ६=) में भेजी जाती है।

ज्योतिषरत्नाकर भा० टी०

बलाबल निकालने तथा फलादेश कहने की अनमोल पुस्तक

इस पुस्तक को पढ़कर ज्योतिष का फलादेश कहा जा सकता है। इसमें ग्रहशील, राशिशील, इष्ट संशोधन, निषेक और प्रसूति के विषय को भली भांति दर्शाया गया है, ग्रहों के बलाबल निकलने की सारणियां, लग्न, स्पष्ट, दशम स्पष्ट, कान्ति इत्यादि निकालने के सब प्रकार दिये हुए हैं। आवश्यक स्थानों पर उदाहरण और सारणियां भी दी गई जिससे हर विषय को सुगम बन गया है। ज्योतिष विषय से लाभ उठाने के लिये इस पुस्तक को अवश्य मगवाना चाहिये। मूल्य ४) रु०। इसके फलित खण्ड के भाग छप रहे हैं स्त्री भाव और सुत भाव तनुभाव सहजभाव छप चुके हैं। मूल्य प्रत्येक भाव १।) रु० अन्य भाव भी छप रहे हैं।

मिलने का पता :—पंचांग दिवाकर कार्यालय माईथान [illegible]

लघुसिद्धान्तकौमुदी

पं० श्रीविश्वनाथ शास्त्री 'प्रभाकर' प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज 'खन्ना' (१) ह्रस्वदीर्घप्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और वाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) सन्धि प्रकरण में मूल के प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) विशेष प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अव्ययों के अर्थ (७) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (८) कर्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (९) कोष्ठक में प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (१०) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (११) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (१२) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धी (१३) सब सूत्रों के हिन्दी में अर्थ। इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१४) लिङ्ग के बोध के लिये लघुलिङ्गानुशासन (१५) व्याकरण, सूत्र, वार्तिक, भाष्य और व्याख्यान के लक्षण और उदाहरण (१६) व्याकरण के चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का, विवरण (१७) विद्यार्थी के लिये लेखोपयोगी नियम और चिह्न (१८) प्रायः अनुवाद में होने वाली अशुद्धियां और उनका संशोधन (१९) अनुवाद के लिये उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद भावार्थ सहित (२०) लघुकौमुदी के मूल तथा टिप्पणी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका हिन्दी भाषा में अर्थ (२१) अव्यय, धातु-पाठ और उनका हिन्दी भाषा में अर्थ, आदि अनेक विशेषताओं से युक्त। इस आवृत्ति में भाषा टीका, तथा काशी, बिहार और पंजाब की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ दे दिये हैं। इन उपरोक्त विशेषताओं के पढ़ते ही आप स्वयं ही अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी अधिक उपयोगी हो सकती है। नया संस्करण मोटे अक्षरों में ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है। मूल्य केवल २) परन्तु छात्रों को कमीशन काटकर केवल १।।) में दिया जाता है।

प्र०—मोतीलाल बनारसीदास पो० ब० ७५, नेपाली खपरा, बनारस

विज्ञापन-बाजों से सावधान!

पञ्जाब-केसरी श्रीसिद्धमहायन्त्र

इस यन्त्र को धारणकर-वीर-यशस्वी महाराजा-पञ्जाब केसरी श्री-रणजीतसिंहजी ने अपने जीवन की सभी चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की थीं। उन्हीं के राजज्योतिषी के घराने से यह सिद्धमहायन्त्र प्राप्त हुआ है और वर्षों से अनेक व्यक्तियों पर इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है, केवल जनता के उपकारार्थ-परमरहस्यमय इस महासिद्धयन्त्र का प्रचार किया गया है, इसे कोरी विज्ञापन बाजी न समझें। सभी स्त्री पुरुष इसे धारण कर मनोवाञ्छित-फल प्राप्त कर सकते हैं।

आप भी एक बार विश्वास पूर्वक इस को धारण कर चमत्कार देखिये। राजा-महाराजाओं के लिये प्रतिष्ठित सुवर्णयन्त्र १०१ रु० साधारण जनता के लिये रजत यन्त्र ५।) रु० ताम्रयन्त्र २।।) रु० डाक व्यय पृथक्।

मिलने का पता—सिद्धयन्त्र कुटी, पो० सुन्दरनगर (हिमाचल-प्रदेश)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुवाद-चन्द्रिका

श्रीचक्रधर 'हंस' एम. ए, शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर—इस पुस्तक में हंस जी ने बालकों की कोमल बुद्धि का ध्यान रखते हुए इतनी सरलता से अनुवाद सीखने की प्रणाली दी है जिसको थोड़े ही ध्यान देकर पढ़ने से व्याकरण ज्ञान के साथ-साथ अनुवाद की आशातीत योग्यता प्राप्त हो जाती है। क्योंकि इसकी उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि इसके सात संस्करण हाथों हाथ बिकने के अनन्तर सुन्दर स्वरूप में आठवां संस्करण ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है।

(१) अनुवादार्थ महाकवियों के सरस गद्य-पद्य-संग्रह हैं, (२) अशुद्धि-संशोधन (३) संस्कृत में पत्र-लेखन शैली, (४) वाच्यपरिवर्तन (५) धातु से कृदन्त रूप बनाना, (६) अनुवादार्थ गद्यसंग्रह, (७) लोकोक्ति-संग्रह, (८) पंजाब मैट्रिक, प्राज्ञ, काशी तथा पटना यूनिवर्सिटी के प्रश्नपत्र भी अभ्यासार्थ दिये गये हैं। इसलिये सहानुभूति के साथ छात्रों को हम परामर्श देते हैं कि वे एक बार तो अवश्य इससे लाभ उठावें। मूल्य केवल २।) कमीशन काटकर २)।

जीवन को सुखी बनानेवाली आदर्श पुस्तक

सफल जीवन

लेखक—प्रो० रामचंद्र शर्मा एम. ए.

सुखी जीवन के लिय हर एक मनुष्य लालायित है। पर साधारण मनुष्य वास्तविक सुख क्या है नहीं समझता और अज्ञान के कारण ही ठोकरें खाता फिरता है। लेखक ने साधारण जनता की इसी त्रुटि को अनुभव करते हुये शास्त्रों के आधार पर सच्चा सुख क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, तथा मनुष्य जीवन का उद्देश्य, धर्म और आचार, सफलता के साधन, सत्य और प्रिय भाषण, ब्रह्मचर्य, छूआछूत सन्तोष की आवश्यकता, स्वाध्याय, श्रद्धा और भक्ति, आसन प्राणायाम आदि मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सैंकडो विषयों को इस पुस्तकमें दर्शाया है। जो मनुष्य अपने जीवन में वास्तविक सुख का आनन्द लेना चाहते हैं उन्हे एकवार अवश्य इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १)

ऐलोपैथिक निघंटु

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा की नई रचना

जिसमें औषधियां तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां, नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी० सी०, किलोग्राम, स्टोन, टीकपफुल, क्वार्ट, मन, सेर, तोले इत्यादि २।) ब्रिटिश फार्मेकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप (एसिटा, ऐसिड्स इलिक्सर्स, ऐक्सट्रैक्ट्स, डिकौक्शन्स, लिनिमेन्ट्स, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स, टैब्लेट्स इत्यादि), ऐम्प्यूल्स, बाथ्स, कैचेट्स, कैप्स्यूल्स, डूश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखनेवाली औषधियां, विस्फोटक संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों की मात्रा, औषधियों की घुलन शीलता, भांति भांति के लोशन तैयार करना, सैंकड़ों पारिभाषिक शब्द, शरीर के विभिन्न अङ्गों पर विभिन्न औषधियों का क्या प्रभाव पड़ता है, भिन्न भिन्न प्रकार के ऐसिड्स, ऐक्वा, इमलशन्स, लिनीमेन्ट्स, लिकर्स, लोशन्स, मिक्सचर्स, पाउडर्स इत्यादि तैयार करने के तरीके, तथा लगभग २००० ऐलोपैथिक पेटन्ट तथा साधारण औषधियों का वर्णन (मात्रा, मुख्य अवयव, गुण आदि लिखा हुआ है)। यह पुस्तक वैद्यों, हकीमों तथा ग्राम चिकित्सकों के लिये अनिवार्य और आयुर्वेदिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जन साधारण के लिए अत्युपयोगी है। आप इस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र खरीदें क्योंकि पहली बार कुल १००० प्रतियां छपवाई गई है। पृष्ठ ५०७ मूल्य ८) नेट। डाक खर्च ।॥)।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संस्कृत-व्याकरण-सार

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम. ए. कृत। जो हिन्दी द्वारा संस्कृत व्याकरण सीखना चाहते हैं उनके लिये यह बहुत बढ़िया पुस्तक है। पक्की जिल्द सहित मूल्य ६) रु०।

अनुवादकला

प्रसिद्ध नवीन पाणिनीय स्वनामधन्य प्रोफेसर।

श्री चारुदेव शास्त्री एम० ए०. एम० ओ० एल, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, श्री दयानंद कालेज, अम्बाला-द्वारा प्रणीत 'अनुवाद-कला अथवा वाग्व्यवहारादर्श' नामक पुस्तक प्रकाशित हो गई। प्रस्तुत पुस्तक में अनुवाद-कला को सरल और सुगम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है—जो अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों—दोनों के लिये परम उपयोगी और व्यावहारिक है। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि उच्च परीक्षाओं के लिए कोई बढ़िया अनुवाद की पुस्तक नहीं थी। यह पुस्तक इन्हीं परीक्षार्थियों के लिये लिखी गई है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन से अनुवाद-कला की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो गई है। इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल २।।) है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्द शास्त्री विरचित

अति सरल तथा विस्तृत प्राज्ञतोषिणी नामक हिन्दी व्याख्या सहित। इस हिन्दी टीका में सब रूपसिद्धि भी साथ ही दे दी गई हैं। पुस्तक इतनी सरल कर दी गई है कि कोमल-बुद्धिवाले छात्र भी इस पुस्तक को स्वयं लगा सकते हैं। संपूर्ण पुस्तक १००० पृष्ठ में समाप्त हुई है। मूल्य ७) कमीशन काटकर छात्रों को ६=) में भेजी जाती है।

ज्योतिषरत्नाकर भा० टी०

बलाबल निकालने तथा फलादेश कहने की अनमोल पुस्तक

इस पुस्तक को पढ़कर ज्योतिष का फलादेश कहा जा सकता है। इसमें ग्रहशील, राशिशील, इष्ट संशोधन, निषेक और प्रसूति के विषय को भली भांति दर्शाया गया है, ग्रहों के बलाबल निकलने की सारणियां, लग्न, स्पष्ट, दशम स्पष्ट, क्रान्ति इत्यादि निकालने के सब प्रकार दिये हुए हैं। आवश्यक स्थानों पर उदाहरण और सारणियां भी दी गई जिससे हर विषय को सुगम बन गया है। ज्योतिष विषय से लाभ उठाने के लिये इस पुस्तक को अवश्य मगवाना चाहिये। मूल्य ४) रु०। इसके फलित खण्ड के भाग छप रहे हैं स्त्री भाव और सुत भाव तनुभाव सहजभाव छप चुके हैं। मूल्य प्रत्येक भाव १।) रु० अन्य भाव भी छप रहे हैं।

मिलने का पता :—पंचांग दिवाकर कार्यालय माईहीरां गेट जालन्धर शहर।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

पं० श्रीविश्वनाथ शास्त्री 'प्रभाकर' प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज 'खन्ना' (१) ह्रस्वदीर्घप्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) सन्धि प्रकरण में मूल के प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) विशेष प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अव्ययों के अर्थ (७) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (८) कर्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (९) कोष्ठक में प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (१०) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (११) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (१२) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धी (१३) सब सूत्रों के हिन्दी में अर्थ। इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१४) लिङ्ग के बोध के लिये लघुलिङ्गानुशासन (१५) व्याकरण, सूत्र, वार्तिक, भाष्य और व्याख्यान के लक्षण और उदाहरण (१६) व्याकरण के चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का, विवरण (१७) विद्यार्थी के लिये लेखोपयोगी नियम और चिह्न (१८) प्रायः अनुवाद में होने वाली अशुद्धियां और उनका संशोधन (१९) अनुवाद के लिये उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद भावार्थ सहित (२०) लघुकौमुदी के मूल तथा टिप्पणी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका हिन्दी भाषा में अर्थ (२१) अव्यय, धातु-पाठ और उनका हिन्दी भाषा में अर्थ, आदि अनेक विशेषताओं से युक्त। इस आवृत्ति में भाषा टीका, तथा काशी, बिहार और पंजाब की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ दे दिये हैं। इन उपरोक्त विशेषताओं के पढ़ते ही आप स्वयं ही अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी अधिक उपयोगी हो सकती है। नया संस्करण मोटे अक्षरों में ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है। मूल्य केवल २) परन्तु छात्रों को कमीशन काटकर केवल १।।।) में दिया जाता है।

प्र०—**मोतीलाल बनारसीदास** पो० ब० ७५, नेपाली खपरा, बनारस

विज्ञापन-बाजों से सावधान!

पञ्जाब-केसरी श्रीसिद्धमहायन्त्र

इस यन्त्र को धारणकर-वीर-यशस्वी महाराजा-पञ्जाब केसरी श्री-रणजीतसिंहजी ने अपने जीवन की सभी चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की थीं। उन्हीं के राजज्योतिषी के घराने से यह सिद्धमहायन्त्र प्राप्त हुआ है और वर्षों से अनेक व्यक्तियों पर इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है, केवल जनता के उपकारार्थ-परमरहस्यमय इस महासिद्धयन्त्र का प्रचार किया गया है, इसे कोरी विज्ञापन बाजी न समझें। सभी स्त्री पुरुष इसे धारण कर मनोवाञ्छित-फल प्राप्त कर सकते हैं।

आप भी एक बार विश्वास पूर्वक इस को धारण कर चमत्कार देखिये। राजा-महाराजाओं के लिये प्रतिष्ठित सुवर्णयन्त्र १०१ रु० साधारण जनता के लिये रजत यन्त्र ५।) रु० ताम्रयन्त्र २।।) रु० डाक व्यय पृथक्।

मिलने का पता—**सिद्धयन्त्र कुटी**, पो० सुन्दरनगर (हिमाचल-प्रदेश)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अनुवाद-चन्द्रिका

ऐलोपैथिक निघंटु

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुवाद-चन्द्रिका

श्रीचक्रधर 'हंस' एम. ए, शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर—इस पुस्तक में हंस जी ने बालकों की कोमल बुद्धि का ध्यान रखते हुए इतनी सरलता से अनुवाद सीखने की प्रणाली दी है जिसको थोड़े ही ध्यान देकर पढ़ने से व्याकरण ज्ञान के साथ-साथ अनुवाद की आशातीत योग्यता प्राप्त हो जाती है। क्योंकि इसकी उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि इसके सात संस्करण हाथों हाथ बिकने के अनन्तर सुन्दर स्वरूप में आठवां संस्करण ग्लेज कागज पर बढ़िया छपा है।

(१) अनुवादार्थ महाकवियों के सरस गद्य-पद्य-संग्रह हैं, (२) अशुद्धि-संशोधन (३) संस्कृत में पत्र-लेखन शैली, (४) वाच्यपरिवर्तन (५) धातु से कृदन्त रूप बनाना, (६) अनुवादार्थ गद्यसंग्रह, (७) लोकोक्ति-संग्रह, (८) पंजाब मैट्रिक, प्राज्ञ, काशी तथा पटना यूनिवर्सिटी के प्रश्नपत्र भी अभ्यासार्थ दिये गये हैं। इसलिये सहानुभूति के साथ छात्रों को हम परामर्श देते हैं कि वे एक बार तो अवश्य इससे लाभ उठावें। मूल्य केवल २।) कमीशन काटकर २)।

जीवन को सुखी बनानेवाली आदर्श पुस्तक

सफल जीवन

लेखक—प्रो० रामचंद्र शर्मा एम. ए.

सुखी जीवन के लिय हर एक मनुष्य लालायित है। पर साधारण मनुष्य वास्तविक सुख क्या है नहीं समझता और अज्ञान के कारण ही ठोकरें खाता फिरता है। लेखक ने साधारण जनता की इसी त्रुटि को अनुभव करते हुये शास्त्रों के आधार पर सच्चा सुख क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, तथा मनुष्य जीवन का उद्देश्य, धर्म और आचार, सफलता के साधन, सत्य और प्रिय भाषण, ब्रह्मचर्य, छूआछूत सन्तोष की आवश्यकता, स्वाध्याय, श्रद्धा और भक्ति, आसन प्राणायाम आदि मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सैंकड़ो विषयों को इस पुस्तकमें दर्शाया है। जो मनुष्य अपने जीवन में वास्तविक सुख का आनन्द लेना चाहते हैं उन्हे एकबार अवश्य इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १)

एलोपैथिक निघंटु

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा की नई रचना

जिसमें औषधियां तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां, नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी० सी०, किलोग्राम, स्टोन, टीकपफुल, क्वार्ट, मन, सेर, तोले इत्यादि २।) ब्रिटिश फार्मेकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप (एसिटा, ऐसिड्स इलिक्सर्स, ऐक्सट्रैक्टस, डिकौक्शन्स, लिनिमेन्ट्स, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स, टैब्लेट्स इत्यादि), ऐम्प्यूल्स, बाथ्स, कैथेट्स, कैप्स्यूल्स, डूश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखनेवाली औषधियां, विस्फोटक संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों की मात्रा, औषधियों की घुलन शीलता, भांति भांति के लोशन तैयार करना, सैंकड़ों पारिभाषिक शब्द, शरीर के विभिन्न अङ्गों पर विभिन्न औषधियों का क्या प्रभाव पड़ता है, भिन्न भिन्न प्रकार के ऐसिड्स, ऐक्वा, इमल्शन्स, लिनीमेन्टस, लिकर्स, लोशन्स, मिक्सचर्स, पाउडर्स इत्यादि तैयार करने के तरीके, तथा लगभग २००० एलोपैथिक पेटन्ट तथा साधारण औषधियों का वर्णन (मात्रा, मुख्य अवयव, गुण आदि लिखा हुआ है)। यह पुस्तक वैद्यों, हकीमों तथा ग्राम चिकित्सकों के लिये अनिवार्य और आयुर्वेदिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जन साधारण के लिए अत्युपयोगी है। आप इस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र खरीदें क्योंकि पहली बार कुल १००० प्रतियां छपवाई गई है। पृष्ठ ५०७ मूल्य ८) नेट। डाक खर्च ।॥)।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अच्युतग्रन्थमाला की अत्युपयोगी पुस्तकें

१–सिद्धान्तबिन्दु–(वेदान्त का प्रमेय बहुल अपूर्व ग्रन्थ) श्रीमधुसूदनसरस्वती कृत भाषानुवाद सहित मूल्य २)

२–प्रकरणपञ्चक–आत्मबोध, प्रौढानभूति, तत्त्वोपदेश आदि पांच प्रकरण ग्रन्थों का भाषानुवाद सहित संग्रह ।॥)

३–ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य, रत्नप्रभा, भाषानुवाद सहित श्री भोले बाबा जी कृत तीन विशाल काय जिल्दों में संपूर्ण मूल्य १८)

४–सिद्धान्तलेशसंग्रह–श्री अप्पयदीक्षित विरचित–भाषानुवाद सहित । अद्वैत वेदान्त के भिन्न भिन्न सिद्धान्तों का संग्रह मूल्य ४)

५–विवरणप्रमेय संग्रह–श्री विद्यारण्यमुनि कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित । चतुःसूत्री के ऊपर विविध मत मतान्तरों के निरूपण पूर्वक अद्वैत तत्त्व का प्रतिपादक ६) रु०

६–वेदान्तसिद्धान्त कल्पवल्ली–श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वती विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित ।॥)

७–बृहदारण्यकवार्तिकसार–(दो भागों में) श्रीसुरेश्वराचार्य विरचित बृहदारण्यक वार्तिक का संक्षेप श्री विद्यारण्य स्वा० कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित १२)

८–अच्युतलेखमाला–महात्माओं एवं अन्यान्य विशिष्ट विद्वानोंके लेखोंका संग्रह २)

९–भगवद्गीता–श्री शंकरानन्द विरचित (शंकरानन्दी) तथा उसका हिन्दी अनुवाद श्री भोले बाबा जी कृत मूल्य ६)

१०–योगवासिष्ठ–(पांच बृहत्काय भागों में) महर्षि वाल्मीकि विरचित संपूर्ण छहों प्रकरण मूल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ४८) रु० । पृथक् पृथक् भाग भी मिलते हैं प्रथम, १०) द्वितीय १०) तृतीय १०) चतुर्थ १०) पंचम ८)

११–भागवत एकादशस्कन्ध–प्रत्येक पद के अनुवाद तथा हिन्दी भावानुवाद सहित दो भागों में ६॥) रु०

१२–नैष्कर्म्यसिद्धि–श्रीसुरेश्वराचार्य विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित १।॥)

१३–शिवस्तुति–भगवान् शंकर की स्तुति सं० तथा हिन्दी अनुवाद सहित ।॥=)

१४–काशी–केदार माहात्म्य–हिन्दी अनुवाद सहित ३)

१५–माध्यन्दिनशतपथब्राह्मण–तथा अनुक्रमणिका सहित । मलसंपूर्ण अत्युतम ११)

१६–प्रेमपत्तन–श्री कृष्णभक्ति से सराबोर चैतन्य सम्प्रदाय का ग्रंथ संस्कृत १।)

१७–परमार्थसार–श्री पतञ्जलि कृत वेदान्त प्राचीन ग्रन्थ सं० टीका सहित ॥)

१८–तिथ्यर्क–तिथियोंके निर्णय आदि पर अपूर्व ग्रन्थ श्रीदिवाकरकृत संस्कृत २)

१९–प्रत्यक् तत्त्व चिन्तामणि–दो भाग में शंकरभाष्यानुसार सं० टीका सहित ५)

२०–भक्तिरसामृतसिन्धु–श्रीरूपगोस्वामिकृत सं० टीका सहित ४)

२१–कात्यायनश्रौतसूत्र–महर्षि कात्यायन प्रणीत संस्कृत टीका सहित ८)

२२–शुल्बसूत्र–(कात्यायन) संस्कृत टीका सहित ।=)

२३–भगवन्नाम कौमुदी–संस्कृत टीका सहित भक्ति का अपूर्व ग्रन्थ ।॥)

अन्य उपयोगी ग्रन्थ

१–विवाहपद्धति प्रभा–श्री पं० गौरीशंकरजी कृत । पंजाबियों के लिये यह अत्युपयोगी है । मूल्य १॥=)

२–श्रीमद्भागवत भाषाटीका सहित खुला पत्रा संपूर्ण पं० रामतेजकृत ३२)

३–श्रीमद्भागवत भाषाटीका सहित बुक साईज संपूर्ण २०)

४–श्रीमद्वाल्मीकि रामायण भाषाटीका सहित बुक् साईज २४)

५–देवीभागवत भाषाटीका सहित खुला पत्रा ५०)

६–तुलसी रामायण भाषाटीका सहित बड़ा २५) मध्यम गलेज १०) रफ ९)

७–बृहत्पाराशर होरा शास्त्र भाषा टीका सहित १६)

८–मानसागरी पद्धति भाषाटीका सहित ७)

इनके अतिरिक्त सब प्रकार की पुस्तकें मिलने की पता :—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, नेपालीखपरा, बनारस ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(हरीतक्यादि) भावप्रकाशनिघण्टु

——:००:——

पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिजकृत "ललितार्थकरी", अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित। इस में हर एक बूटी का पूर्ण विवरण दिया है वनस्पति के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि हर एक का वर्णन। वनस्पति कब फूलती है, किस भूमि में, किस ऋतु में किस काल में संग्रह करना चाहिये। औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और उन की मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि वनस्पति के पर्याय वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये पर्याप्त हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इस लिये उन्हें भी व्यक्तकर दिया है; जहां जहां आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन एलवा, मुसव्वर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिये है। जहां पर इस पुस्तक में आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहां पाश्चात्य वनस्पति-वेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचार को भी यथा स्थान लिखा है। पाश्चात्य वनौषधि विज्ञान को साथ साथ रखने से वैद्यगण वा विद्यार्थी को अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियां जो विशेष गुण करती हैं तथा अत्यन्त लाभप्रद हैं उनका पता लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमों के सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है। अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। **एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि** की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशक के लिये क्या देना चाहिये। अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। छात्रों तथा वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इस में छूटी नहीं है। यू० पी० इण्डियन मेडिसन बोर्ड ने जो आलुबुखारा, हरमल, औलिव ऑयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षा में निर्धारित की हुई हैं उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है। अब छात्रों के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई है। इसकी भी नकल लोगों ने बड़े बड़े विज्ञापन निकाल कर की है सो आपसे हमारा सप्रेम यही अनुरोध है कि पं० विश्वनाथजी का नाम देखकर पुस्तक खरीदें। पक्की कपड़े की जिल्द सहित का दाम केवल ७) रु०।

रसतरंगिणी

(हिन्दी टीका सहित)

पक्की कपड़े की जिल्द सहित, चतुर्थ संस्करण, मूल्य १०) रु०

आयुर्वेद में रस शास्त्र की कितनी महत्ता है यह बात आज कल के प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली रसचिकित्सा पद्धति के अनुसरण करनेवाले किसी से छिपी नहीं। यही नहीं रसशास्त्र में धातुविद्या का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिये जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सके यह एक बड़ी भारी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुवे लाहौर के सुप्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथजी मित्र तथा उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानंदजी ने उक्त पुस्तक मूल श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्य क्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी ... रसविशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। पुस्तक २४ अध्यायों में समाप्त हुई है। पहले अध्याय में रसशाला के विषय में पूरी जानकारी दी गई है। दूसरे अध्याय में परिभाषा संबंधी सभी बातों का सविस्तर वर्णन है, तीसरे अध्याय में मूषा आदि का वर्णन है चौथे अध्याय में हर प्रकार के यन्त्रों के चित्र, उनके बनाने के तरीके, उपयोग आदि सब दिया है। पांचवें अध्याय में पारद नाम, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप, स्वाभाविक दोष, उनका परिचय, शुद्धि की आवश्यकता, शोधन के लिये पारे का मान, समय, पूजन, छ प्रकार के शोधन हिंगुल से पारा निकालने की विधि, अष्ट संस्कार, स्वेदन, मर्दन, मूर्छन, उत्थापन, ऊर्ध्वपातन, अधः पातन, तिर्यक् पातन, बोधन, नियामन, दीपन, जारण, षड्गुण गन्धक जारण, इन सबके सब प्रकारों का वर्णन दिया है। छठे अध्याय में मूर्च्छना के स्वरूप तथा भेद, मुग्धरस, रसपुष्प, सिक्थतैल, रसकर्पूर, रसकर्पूर द्रव, कज्जली, रसपर्पटिका, रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, आदि इन सब के स्वरूप, भेद, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग आदि विस्तार से दिये हैं। सातवें अध्याय में पारद का सामान्य मारण, मृत पारद लक्षण, सप्त प्रकार, गुण, आमयिक प्रयोग, रसायन में पारद सेवन, क्षेत्रीकरण, रस, भक्षणकाल, मात्रा भेद अपथ्य, पथ्य, उपचार, कूष्मांड आदि का वर्णन है। आठवें अध्याय में गन्धक नाम, स्वरूप, अशुद्ध दोष, शोधनादिके छ प्रकार शुद्ध गन्धक के गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग, कल्प, तैल, अपथ्य, द्रावक, सजलगन्धक आदि गन्धक विषयक विस्तार है। नौवें अध्याय में हिंगुल नाम, स्वरूप, भेद, निर्माण, दोष, प्रकार, शुद्ध हिंगुल गुण, प्रयोग, हिंगुलाद्य मलहर, हिंगुलीय रससिन्दूर, सिद्ध दरदामृत, हिंगुलीयमाणिक्य इन सब के गुण, मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। दसवें अध्याय में अभ्रक के सब प्रकार के भेद, दोष, लक्षण, गुण, शोधन, मारण, भस्म को लोहिती करण, अमृतीकरण, गुण, आमयिक प्रयोगादि, सत्वों की विशेषता, सत्वपातन, पिण्डीकरण, आदि का अभ्रक संबंधि सविस्तर वर्णन है। ग्यारहवें अध्याय में हरताल, मैनसिल, संखिया फिटकिरि, खरिया मिट्टी, चूना, दुग्धपाषाण, गोदन्त आदि सबके नाम, भेद। स्वरूप, शोधन, मारण, मात्रा, गुण, परीक्षा तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। बारहवें अध्याय में शंख, ... समुद्रफन आदि इन सब के नाम, स्वरूप, भेद, शोधन, मारण, गुण तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। तेरहवें अध्याय में यवक्षार, नीम्बुकाम्लीय, सज्जीखार, टङ्कण, टङ्कणाम्ल आदि के नाम, निर्माण, गुण, मात्रा, शोधन तथा आमयिक प्रयोग दिये हैं। चौदहवें में नवसादर, सोरक, क्षार, लवण आदि इन सबके नाम, भेद, गुण शोधन तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। पंद्रहवें में सुवर्ण संबंधी सब प्रकार के नाम, स्वरूप, लक्षण, निर्माण, मात्रा, गुण, मारण तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। सोलहवें में रजत तथा नवसादर बाष्पद्रव आदि के नाम, स्वरूप, हर प्रकार के शोधन, मारण, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोगादि सत्रहवें में ताम्र, नाम, हरप्रकार के स्वरूप, भेदलक्षण, फल, शोधन, मारण, मात्रा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर वर्णन हैं। अठारवें म वंग (रांगा) के नाम लक्षण भेद, शोधन, मारण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर दिये हैं। उन्नीसवें में सीसा, यशद, आदि के नाम, स्वरूप, फल शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोगादि। बीसवें में लोह के भेद, नाम, परिचय, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग, इक्कीसवें में स्वर्णमाक्षिक, तूतिया, सिन्दूर मुर्दाशंख, खर्पर, कान्तपाषाण, काशीस के नाम, भेद, स्वरूप, गुण, शोधन, मारण आमयिक प्रयोग बाईसवें में पित्तल, कांसी अंजन, शिलाजीत, गेरु, आदि के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन मारण, आमयिक प्रयोग। तेईसवें में सब रत्नों के नाम, परीक्षा, दोष, शोधन, मारण, गुण मात्रा प्रयोग आदि। चौबीसवें में सब प्रकार के विषों के भेद, स्वरूप, शोधन, रस, गुण आदि दिया है।

सुश्रुत संहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण पुस्तक का किया है तथा सुविख्यात डा० घाणेकर जी कृत भूमिका सहित पुस्तक बहुत बढ़िया है। बढ़िया छपाई ग्लेज कागज पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य २०) रु०।

सर्वप्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स नं० ७५, नेपालीखपरा, बनारस

CC-0 In Public Domain: Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूनानी चिकित्सा सागर (हिन्दी)

लेखक—श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल,
(वाइस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालिज, दिल्ली)।

बढ़िया कागज—मोटे अक्षरों में—नए टाइप, पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य केवल १०) रु०।

यूनानी चिकित्सा वास्तव में आयुर्वेद से ही ली गई है। सैकड़ों वर्ष यूनानी चिकित्सा पद्धति को राज्याश्रय प्राप्त होने के कारण काफी ख्याति मिली है। इस में अनेक अचूक नुस्खे हैं जो रोगों पर बड़ा अपूर्व असर रखते हैं यही कारण है कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध हकीम अजमल खां साहिब संसार में एक प्रसिद्ध हकीम हो गये हैं। उनके तथा अन्य यूनानी के नामी हकीमों के प्रायः सभी गुप्त नुस्खे पहली बार इस पुस्तक में छाप दिये गये हैं। ये नुस्खे इतने सरल तथा इतने अचूक हैं कि इन के बलपर हकीम लोग हजारों रुपये कमा रहे हैं। इस पुस्तक में अतिसार—संग्रहणी पर २९ योग, अनिद्रा रोग पर ७ योग, मृगी पर १८ योग, लकवा (अर्दित) रोग पर १४ योग, बवासीर पर २५ योग, गुर्दा के रोग पर १६ योग, आनाह (कब्ज) पर ३१ योग, आमवात पर १५ योग, उदर रोग (इमराज-महदा) पर ८८ योग, उन्माद (मालीखोलिया) रोग पर २० योग, उपदंश (आतशक) पर १६ योग, उष्णवात (सुजाक) पर १७ योग, कण्ठमाल पर ८ योग, कण्ठरोग पर ३ योग, कर्ण रोग पर ५ योग, कृमि रोग पर ५ योग, केशबल्य पर ५ योग, कास-श्वास (खांसी दमा) पर ५६ योग, कुष्ठ रोग पर ५ योग, चर्म रोग पर ४ योग, जलोदर रोग पर ९ योग, ज्वर (बुखार) पर २६ योग, दंतरोग पर १६ योग, नेत्र रोग पर ३६ योग, पित्त रोग पर २१ योग, पाण्डु (यर-कान) पर ९ योग, प्रतिश्याय (जुकाम नजला) पर २४ योग, प्रवाहिका (पेचिश) पर १० योग, प्रमेह (जरयान) पर ३३ योग, प्लीहा रोग पर १२ योग प्लेग महामारी पर ४ योग, बालरोग पर १० योग, बल्य तथा वाजीकरण (General Tonics and Sexual Tonics) पर १२० योग, व्रण (जख्म) पर १५ योग, मुखरोग पर ७ योग, मूत्रविकार, पर १० योग, मेदरोग (मोटापा) पर २ योग, मधुमेह पर ७ योग, मस्तिष्कविकार पर ३१ योग, यकृतरोग पर ३६ योग, रक्त पित्त पर ९ योग, रक्तविकार पर २६ योग, वातरोग पर ५३ योग, वातरक्त पर ५योग, विषविकार पर ७ योग, विसूचिका (हैजा) पर ४ योग, वृक्कविकारपर १२ योग, रमन (कै) पर १८ योग, शीतला (चेचक) पर ३ योग, शिरोरोग पर १४ योग, शूलरोग पर २० योग, शोथरोग पर १७ योग, स्त्री-रोग पर ४७ योग, हृदयरोग पर १०३ योग, हिचकी पर ३योग, क्षय (तपेदिक) पर १७ योग, क्षुद्ररोग पर २८ योग, इस प्रकार सब प्रकारके रोगों पर लगभग १२०० योग दिये हैं, जिन में हर एक प्रकार के अतरीफल, अवलेह, माजून, याकूती नोशदारू मफरहात, मुरब्बा, माल जोबन, मरहम, चटनी, लबूब, गुलकन्द, भस्म (कुशता जात) मुरब्बे, लेप, टिकिया, अर्क, तिल्ला, शयाफ, शरबत, मंजन, सकंजबीन, सफूफ, सिरका, रोगन, खमीरे, हलवे, चूर्ण आदि जो भी जानने योग्य दवाइयां यूनानी चिकित्सा पद्धति में हैं सब के बनाने के तरीके, इस्तमाल करने के तरीके सब कुछ इस में दे दिया गया है। अन्त में यूनानी औषधियों का विस्तृत परिचय भी सरल हिन्दी में दिया है जिसे वैद्य लोग नहीं जानते।

चरक संहिता दो संस्कृत टीका सहित

श्री चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेददीपिका तथा जज्जट कृत निरन्तर पद दो प्राचीन संस्कृत व्याख्यासहित बहुत बढ़िया बंबई निर्णय-सागरीटाइप में छपा है। आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री कृत अनेकों उपयोगी टिप्पणियों सहित। संपूर्ण दो पक्की कपड़े की जिल्दों में मूल्य १५) कमीशन काट कर १३=)।

तीन महामारी प्लेग, चेचक और हैजा मूल्य १॥)
लेखक—डा० के० पी० वर्मा M. A. (Pr.) B. Sc. L. T.

१—होमियोपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त—श्री बालकृष्णमिश्र का अपूर्व ग्रन्थ ३॥)

२—होमियोपैथिक चिकित्साविज्ञान—श्री बालकृष्ण-मिश्र कृत होमियोपैथी पर इससे बढ़िया पुस्तक हिन्दी में आज तक नहीं निकली मूल्य १०)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी शास्त्रीकृत संस्कृत टीका तथा रसविशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। पुस्तक २४ अध्यायों में समाप्त हुई है। पहले अध्याय में रसशाला के विषय में पूरी जानकारी दी गई है। दूसरे अध्याय में परिभाषा संबंधी सभी बातों का सविस्तर वर्णन है, तीसरे अध्याय में मूषा आदि का वर्णन है चौथे अध्याय में हर प्रकार के यन्त्रों के चित्र, उनके बनाने के तरीके, उपयोग आदि सब दिया है। पांचवें अध्याय में पारद नाम, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप, स्वाभाविक दोष, उनका परिचय, शुद्धि की आवश्यकता, शोधन के लिये पारे का मान, समय, पूजन, छ प्रकार के शोधन हिंगुल से पारा निकालने की विधि, अष्ट संस्कार, स्वेदन, मर्दन, मूर्छन, उत्थापन, ऊर्ध्वपातन, अधः पातन, तिर्यक् पातन, बोधन, नियामन, दीपन, जारण, षड्गुण गन्धक जारण, इन सबके सब प्रकारों का वर्णन दिया है। छठे अध्याय में मूर्च्छना के स्वरूप तथा भेद, मुग्धरस, रसपुष्प, सिक्थतैल, रसकर्पूर, रसकर्पूर द्रव, कज्जली, रसपर्पटिका, रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, आदि इन सब के स्वरूप, भेद, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग आदि विस्तार से दिये हैं। सातवें अध्याय में पारद का सामान्य मारण, मृत पारद लक्षण, सप्त प्रकार, गुण, आमयिक प्रयोग, रसायन में पारद सेवन, क्षेत्रीकरण, रस, भक्षणकाल, मात्रा भेद अपथ्य, पथ्य, उपचार, कूष्मांड आदि का वर्णन है। आठवें अध्याय में गन्धक नाम, स्वरूप, अशुद्ध दोष, शोधनादि के छ प्रकार शुद्ध गन्धक के गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग, कल्प, तैल, अपथ्य, द्रावक, सजलगन्धक आदि गन्धक विषयक विस्तार है। नौवें अध्याय में हिंगुल नाम, स्वरूप, भेद, निर्माण, दोष, प्रकार, शुद्ध हिंगुल गुण, प्रयोग, हिंगुलाद्य मलहर, हिंगुलीय रससिन्दूर, सिद्ध दरदामृत, हिंगुलीयमाणिक्य इन सब के गुण, मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। दसवें अध्याय में अभ्रक के सब प्रकार के भेद, दोष, लक्षण, गुण, शोधन, मारण, भस्म को लोहिती करणं, अमृतीकरण, गुण, आमयिक प्रयोगादि, सत्वों की विशेषता, सत्वपातन, पिण्डीकरण, आदि का अभ्रक संबंधि सविस्तर वर्णन है। ग्यारहवें अध्याय में हरताल, मैनसिल, संखिया फिटकिरि, खरिया मिट्टी, चूना, दुग्धपाषाण, गोदन्त आदि सबके नाम, भेद। स्वरूप, शोधन, मारण, मात्रा, गुण, परीक्षा तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। बारहवें अध्याय में शंख, शुक्ति, शृङ्ग तथा समुद्रफेन आदि इन सब के नाम, स्वरूप, भेद, शोधन, मारण, गुण तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। तेरहवें अध्याय में यवक्षार, नीम्बुकाम्लीय, सज्जीखार, टङ्कण, टङ्कणाम्ल आदि के नाम, निर्माण, गुण, मात्रा, शोधन तथा आमयिक प्रयोग दिये हैं। चौदहवें में नवसादर, शोरक, क्षार, लवण आदि इन सबके नाम, भेद, गुण शोधन तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। पंद्रहवें में सुवर्ण संबंधी सब प्रकार के नाम, स्वरूप, लक्षण, निर्माण, मात्रा, गुण, मारण तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। सोलहवें में रजत तथा नवसादर बाष्पद्रव आदि के नाम, स्वरूप, हर प्रकार के शोधन, मारण, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोगादि सत्रहवें में ताम्र, नाम, हरप्रकार के स्वरूप, भेदलक्षण, फल, शोधन, मारण, मात्रा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर वर्णन हैं। अठारवें म वंग (रांगा) के नाम लक्षण भेद, शोधन, मारण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर दिये हैं। उन्नीसवें में सीसा, यशद, आदि के नाम, स्वरूप, फल शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोगादि। बीसवें में लोह के भेद, नाम, परिचय, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग, इक्कीसवें में स्वर्णमाक्षिक, तूतिया, सिन्दूर मुर्दाशंख, खर्पर, कान्तपाषाण, काशीस के नाम, भेद, स्वरूप, गुण, शोधन, मारण आमयिक प्रयोग बाईसवें में पित्तल, कांसी अंजन, शिलाजीत, गेरु, आदि के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन मारण, आमयिक प्रयोग। तेईसवें में सब रत्नों के नाम, परीक्षा, दोष, शोधन, मारण; गुण मात्रा प्रयोग आदि। चौबीसवें में सब प्रकार के विषों के भेद, स्वरूप, शोधन, रस, गुण आदि दिया है।

सुश्रुत संहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण पुस्तक का किया है तथा सुविख्यात डा० घाणेकर जी कृत भूमिका सहित पुस्तक बहुत बढ़िया है। बढ़िया छपाई ग्लेज कागज पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य २०) रु०।

सर्वप्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स नं० ७५, नेपालीखपरा, बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूनानी चिकित्सा सागर (हिन्दी)

लेखक—श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल,

(वाइस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालिज, दिल्ली)।

बढ़िया कागज—मोटे अक्षरों में—नए टाइप, पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य केवल १०) रु०।

यूनानी चिकित्सा वास्तव में आयुर्वेद से ही ली गई है। सैंकड़ों वर्ष यूनानी चिकित्सा पद्धति को राज्याश्रय प्राप्त होने के कारण काफी ख्याति मिली है। इस में अनेक अचूक नुस्खे हैं जो रोगों पर बड़ा अपूर्व असर रखते हैं यही कारण है कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध हकीम अजमल खां साहिब संसार में एक प्रसिद्ध हकीम हो गये हैं। उनके तथा अन्य यूनानी के नामी हकीमों के प्रायः सभी गुप्त नुस्खे पहली बार इस पुस्तक में छाप दिये गये हैं। ये नुस्खे इतने सरल तथा इतने अचूक हैं कि इन के बलपर हकीम लोग हजारों रुपये कमा रहे हैं। इस पुस्तक में अतिसार—संग्रहणी पर २९ योग, अनिद्रा रोग पर ७ योग, मृगी पर १८ योग, लकवा (अर्दित) रोग पर १४ योग, बवासीर पर २५ योग, गुर्दों के रोग पर १६ योग, आनाह (कब्ज) पर ३१ योग, आमवात पर १५ योग, उदर रोग (इमराज-मह्दा) पर ८८ योग, उन्माद (मालीखोलिया) रोग पर २० योग, उपदंश (आतशक) पर १६ योग, उष्णवात (सुजाक) पर १७ योग, कण्ठमाल पर ८ योग, कण्ठरोग पर ३ योग, कर्ण रोग पर ५ योग, कृमि रोग पर ५ योग, केशवल्य पर ५ योग, कास-श्वास (खांसी दमा) पर ५६ योग, कुष्ठ रोग पर ५ योग, चर्म रोग पर ४ योग, जलोदर रोग पर ९ योग, ज्वर (बुखार) पर २६ योग, दंतरोग पर १६ योग, नेत्र रोग पर ३६ योग, पित्त रोग पर २१ योग, पाण्डु (यरकान) पर ६ योग, प्रतिश्याय (जुकाम नजला) पर २४ योग, प्रवाहिका (पेचिश) पर १० योग, प्रमेह (जरयान) पर ३३ योग, प्लीहा रोग पर १२ योग प्लेग महामारी पर ४ योग, बालरोग पर १० योग, बल्य तथा वाजीकरण (General Tonics and Sexual Tonics) पर १२० योग, व्रण (जख्म) पर १५ योग, मुखरोग पर ७ योग, मूत्रविकार, पर १० योग, मेदरोग (मोटापा) पर २ योग, मधुमेह पर ७ योग, मस्तिष्कविकार पर ३१ योग, यकृतरोग पर ३६ योग, रक्त पित्त पर ९ योग, रक्तविकार पर २६ योग, वातरोग पर ५३ योग, वातरक्त पर ५योग, विषविकार पर ७ योग, विसूचिका (हैजा) पर ४ योग, वृक्कविकारपर १२ योग, रमन (कै) पर १८ योग, शीतला (चेचक) पर ३ योग, शिरोरोग पर १४ योग, शूलरोग पर २० योग, शोथरोग पर १७ योग, स्त्री-रोग पर ४७ योग, हृदयरोग पर १०३ योग, हिचकी पर ३योग, क्षय (तपेदिक) पर १७ योग, क्षुद्ररोग पर २८ योग, इस प्रकार सब प्रकारके रोगों पर लगभग १२०० योग दिये हैं,जिन में हर एक प्रकार के अतरीफल, अबलेह, माजून, याकूती नोशदारू मफरहात, मुरब्बा, माल जोबन, मरहम, चटनी, लबूब, गुलकन्द, भस्म (कुश्ता जात) मुरब्बे, लेप, टिकिया, अर्क, तिल्ला, शयाफ, शरबत, मंजन, सकंजबीन, सफूफ, सिरका, रोगन, खमीरे, हलवे, चूर्ण आदि जो भी जानने योग्य दवाइयां यूनानी चिकित्सा पद्धति में हैं सब के बनाने के तरीके, इस्तमाल करने के तरीके सब कुछ इस में दे दिया गया है। अन्त में यूनानी औषधियों का विस्तृत परिचय भी सरल हिन्दी में दिया है जिसे वैद्य लोग नहीं जानते।

चरक संहिता दो संस्कृत टीका सहित

श्री चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेददीपिका तथा जज्जट कृत निरन्तर पद दो प्राचीन संस्कृत व्याख्यासहित बहुत बढ़िया बंबई निर्णय-सागरीटाइप में छपा है। आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री कृत अनेकों उपयोगी टिप्पणियों सहित। संपूर्ण दो पक्की कपड़े की जिल्दों में मूल्य १५) कमीशन काट कर १३=)।

तीन महामारी प्लेग, चेचक और हैजा मूल्य १॥)

लेखक—डा० के० पी० वर्मा M. A. (Pr.) B. Sc. L. T.

१—होमियोपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त—श्री बालकृष्णमिश्र का अपूर्व ग्रन्थ ३॥)

२—होमियोपैथिक चिकित्साविज्ञान—श्री बालकृष्ण-मिश्र कृत होमियोपैथी पर इससे बढ़िया पुस्तक हिन्दी में आज तक नहीं निकली मूल्य १०)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गंगयति निदान

मूल लेखक पंजाब निवासी वैद्य यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री। पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गांवों में प्रायः वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगों का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बड़ी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की संप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग, राजयक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग, गुल्मरोग, हृद्रोग, मूत्राघात, अश्मरीरोग प्रमेहरोग, मेदोरोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाड़ीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शूकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिका रोग मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, चिप (चंडा) रोग, कुक्कुररोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्तरोग, जिव्हारोग, तालुरोग, कंठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नेत्ररोग, शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्करोग, बादगंठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनि-व्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया, गर्भरोग, योनिसंवरण गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जंगमविषरोग, नाड़ीविज्ञान, मूत्रविज्ञान, शारीरिकविज्ञान, धनुरोग, उरोग्रह, पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आजकल में होनेवाले हर एक प्रकार के रोगों के पूर्वरूप, भेद, संप्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नहीं छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगों का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढ़ा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

भैषज्यरत्नावली

लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत सुविस्तृत सरल तथा विवेचनात्मक भाषा-टीका सहित। पंचमावृत्ति बड़ी सज धज कर तयार हुई है। अब की बार बहुत परिवर्द्धित कर दी गई है अर्थात् जितने योग इस संस्करण में मिलेंगे वह किसी भी आवृत्ति में आपको नहीं मिल सकेंगे। आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियों की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानिकर देती है, विशेषकर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना करना हि पड़ता है, इसी लिये इस संस्करण में औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है। इसके अतिरिक्त इस पांचवें संस्करणमें भिन्न भिन्न योगों के अन्त में जहां जहां आवश्यक जंचा विशेष वचन दिया गया है। इसमें जहां पाठान्तरों में कहा योग का रूपान्तर दिखाया गया है वहाँ यह भी बताने की चेष्टा की है कि उस योग को रोग की किन अवस्थाओं में प्रयोग किया जाता है वा कराना चाहिये। व्याख्या में जहां जहां परिभाषा के अनुसार मान को दुगना करना चाहिये वहां दुगना ही करके लिखा गया है। अतः हर एक औषध निर्माता यदि व्याख्या में कहे गये मान से औषध बनायेंगे तो औषध ठीक बनेगी। इस संस्करण में सब से बढ़ कर खूबी यह है कि उक्त कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र के अपने अनुभूत कई बड़े कीमती नुस्खे इसमें दिये हैं जो आपको कहीं नहीं मिल सकते। आयुर्वेद का कोई ऐसा प्रसिद्ध नुस्खा नहीं जो इसमें न दिया गया हो। पुस्तक बहुत उपयोगी हो गई है और वैद्यसमाज के बड़े काम की वस्तु है। भैषज्यरत्नावली जब भी खरीदें श्रीजयदेव का नाम देखकर खरीदें क्योंकि नक्कालों ने धोखे से अंड बंड और अशुद्ध संस्करण निकाले हैं। पंचम संस्करण भी लगभग समाप्त है। शीघ्रता करें मूल्य ९) रु०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मलेरिया (एलोपैथिक)

लेखक—डा० मनमोहन धूप मूल्य २।)

यह मलेरिया के ऊपर बड़ा उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें सर्व प्रकार की नवीनतम औषधियां तथा उनके उपयोग, दोष आदि सब विषय दिये हैं। जैसे :—

वर्णन, ज्वर, इतिहास, मलेरिया के कारण, कीटाणु, (प्लाजमोडियम मलेरिया, प्लाज मोडियम वाई वेक्स, प्लाजमोडियम फालसी पारम) मलेरिया से प्रतिवर्ष देश का नुकसान, ज्वर किस प्रकार होता है, मच्छर में साइकील, पैथालॉजी, मलेरिया के लक्षण, प्रथमज्वर, ज्वर आरम्भ होने के लक्षण, प्राड्रोमेटा, कोल्ड स्टेज, हीटस्टेज, पसीने की अवस्था-बिलीयस रेमीटेंट फीवर, सीरीब्रल मलेरिया, मलेरिया का अन्धापन, एलजिओ, कारडायक, रक्तघात परम्पूरिक, मलेरिया रीलेप्स, काकेक्सीया, कम्प्लीकेशन्स, मलेरिया के लक्षणों का चित्र, निदान, अन्य ज्वरों से अन्तर, परिणाम, चिकित्सा, साधारण चिकित्सा, आहार (खान पान) कुनीन मुंह के रास्ते सेवन करने की विधि, कुनीन उबलने वाली, कुनीन बिना कड़ुवापन, कुनीन की कुछ जानने लायक बातें, पुराना मलेरिया, परनीशीयसमलेरिया, कुनीन, हृदय पर कुनीन का प्रभाव, कुनीन का रक्त में प्रवेश, और शरीर से बाहर निकास, मलेरिया नाशक औषधियां, विषैले प्रभाव, पालुड्रीन, पामाक्वीन, नवीन मलेरिया नाशक, मैपाक्रीन हाइड्रोक्लोराईड अटाब्रीन, मैपाक्रीन का टीका, पालुड्रीन प्रोगुनील, कानिक मलेरिया-ज्वर-अनीमिया, मलेरिया से बढ़ी हुई तिल्ली, तिल्ली के बड़ा होने का कारण, ब्लैक वाटर फीवर, लक्षण, परिणाम, चिकित्सा।

अमृतधारा फार्मेसी लिमिटेड देहरादून

की

परीक्षित व शीघ्र-प्रभावी औषधियों का

सूचीपत्र तैय्यार है। इसमें **अमृतधारा** और उसके मिश्रणों के साथ साथ डेढ़ सौ अन्य औषधियों का वर्णन है। तीन पैसे का टिकट भेज कर मुफ्त मंगवा सकते हैं।

पता:—अमृत धारा नं० २२० देहरादून

श्रीमेघमनि प्रणीत—**मेघविनोद**

का सौदामिनी-भाषाभाष्य

भाष्यकर्ता—आयुर्वेद—विद्यावारिधि—

कविराज श्रीनरेन्द्रनाथ शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

द्वितीय संस्करण—बढ़िया छपाई-कागज २८+१५ पृष्ठसंख्या ७५२ मू० केवल ६)

श्रीमेघमुनि जैन धर्मावलम्बी पंजाब म बड़ प्रसिद्ध तथा अनुभवी वैद्य हो गये हैं। इस पुस्तक में उन्होंने हर प्रकार की बिमारी के ऊपर अपने अनुभव से अजमाए हुये बहुत बढ़िया तथा सस्ते नुस्खे (योग) दिये हैं। औषधी भी वह दी हैं जो बाजार में पैसों से बड़ी आसानी से मिल सकती हैं। यही कारण है कि पंजाब के देहातों (गावों-कस्बों) में आज भी इसी एक पुस्तक के सहारे लोग चिकित्सा करते हैं। पुस्तक छन्दोबद्ध भाषा में लिखी गई थी पर सर्वसाधारण को उससे कोई लाभ नहीं था, इसीलिये हमने उक्त वैद्य जी से इसका सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद करवा कर छापा है। अब यह पुस्तक साधारण से साधारण मनुष्य के लिये भी उपयोगी हो गई है। सब धातुओं का संशोधन, मारण, भस्म आदि बनाने के इसमें सरल तरीके दिये गये हैं, जिससे सब कोई आसानी से बना सकते हैं। हमारा दावा है कि इस एक ही पुस्तक से साधारण से साधारण मनुष्य भी हर रोग की चिकित्सा घर में ही स्वयं बड़ी आसानी से कर सकता है। पुस्तक इतनी उपादेय है कि इसका पहला संस्करण हाथों हाथ ही बिक गया था। अब यह दूसरा संस्करण मोटे टाईप तथा ग्लेज कागज पर बहुत बढ़िया छापा गया है। हमारा सप्रेम अनुरोध है कि इस की एक प्रति अवश्य अपने घर में रखें, जिससे आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपके धन तथा चिन्ता की कितनी बचत होती है। इसके योग सब अचूक हैं और निदान भी इतने सरल तरीके से दिये है कि सब समझ सकें। नीचे इसके विषयों से स्वयं आपको इसकी उपयोगिता का पता लग जावेगा।

यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया (सरल हिन्दी में)

मसीह—उल-मुल्क हकीम अजमल खां साहिब ने केवल भारत के लीडर होने की वजह से मशहूर थे लेकिन वह एक चमत्कारी हकीम भी थे। इनके पास अनेकों विदेशों के निराश रोगी आकर स्वास्थ्य लाभ करते थे। हकीम साहिब और उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आनेवाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों को श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल वाईस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालेज दिल्ली ने इस पुस्तक में लिख दिया है तथा हर रोग का खुलासा तथा पथ्य भी साथ दिया है। पुस्तक सर्वसाधारण के अत्यन्त उपयोगी है तथा नुस्खे भी बड़ी आसानी से मिलने वाले हैं। मूल्य ५) रु०।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

हमारे निज प्रकाशित ग्रन्थ

परिवर्द्धित ! नया संस्करण !! छप गया !!!

व्याधि—विज्ञान प्रथम भाग

अनेक ग्रन्थों के रचयिता तथा अनुभवी विद्वान्

लेखक—डा० आशानन्द पञ्जरत्न

एम० बी० बी० एस, बी० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य

प्रिंसिपल आ० पोद्दार मेडिकल (आयुर्वेदिक) कालिज बम्बई

चतुर्थ संस्करण परिवर्द्धित तथा संशोधित-पृष्ठ संख्या लगभग ९०० अनेकों सादे तथा रंगीन चित्रों सहित। बढ़िया मोनोटाइप की छपाई तथा पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य ९) रु०।

उक्त डाक्टर साहिब के अनेकों वर्षों के अनुभव का यह निदान-विषयक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है। इससे न केवल पाश्चात्य निदान का ही ज्ञान होगा प्रत्युत किस प्रकार सफलता पूर्वक आयुर्वेद मतानुसार चिकित्सा की जा सकती है इत्यादि अत्युपयोगी और आवश्यक बातों का भी ज्ञान होगा। इस निदान संबन्धी पुस्तक में वैद्य बन्धुओं को भी चिकित्साक्रम का मार्ग दर्शाने के लिये संक्षेपतः आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा भी लिख दी गई है। पुस्तक कितना उपादेय है यह इसी से पता लगता है कि अनेकों विद्यालयों के पाठ्यक्रम में यह चली आ रही है और इसका यह अब बहुत परिवर्द्धित तथा संशोधित चौथा संस्करण निकला है। पुस्तक की उपयोगिता के कारण लेखक को दो पारितोषिक तथा स्वर्णपदक भी मिल चुके हैं।

विषय

रोगपरीक्षा—परिचय-सामान्य तथा विशेष प्रश्न, शारीरिक परीक्षा-स्पर्शन-ठेपन-विवरणपत्र **पोषणसंस्थानपरीक्षा**—सामान्य, यकृत, प्लीहा, आमाशय, उपान्त्र, बृहदन्त्र, वृक्क, **श्वाससंस्थानपरीक्षा**—सामान्यदर्शन, बाह्य फुप्फुस, फुप्फुसावरण, परीक्षास्पर्शन, शब्दस्पर्श, घर्षणस्पर्श, ठेपन, श्रवण, शब्दश्रवण, प्रश्वास निश्वास, करकरापन, कजन, घर्षण, **रक्त व रक्त-वाहकसंस्थानपरीक्षा**—सामान्य, नाड़ी, रक्तभार, बाह्यदर्शन, हृदय, मर- [illegible] सूक्ष्म-जन्तु और संक्रमण—परिचय, संक्रमणप्रसार रोगक्षमता, रोगपरिपाककाल, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, लक्षण, उपद्रव, विषरक्तता टाक्सीमिया, कीट रक्तता बैक्टीरीमिया, सेप्टीसीमिया, पूयरक्तता पाईमिया, ज्वर, परिचय, सन्तत, अविसर्गी, विसर्गी, चिकित्सासामान्य, उपद्रव, **संक्रमण की विशेषचिकित्सा**—सल्फानामाइडस, पैनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, **दंशजज्वर**—विषम, चातुर्थिक, तृतीयक, तृतीयकविपर्यय, काला आजार, वालुमक्षिका, दण्डक, पुनरावर्तक, अतिनिद्रा, मूषक विषज, बग्नि रोहिणी, ग्रन्थिक, सैप्टीसीमिक, फुप्फुसप्रदाह, टाइफसज्वर, मूषकविषज कामला, **दुष्टाहारजन्य संक्रामक रोग**—आन्त्रिकज्वर, लघ्वान्त्रिक, माल्टा, प्रवाहिका, बैसीलरी प्रवाहिका, अमीबिकप्रवाहिका, विषूचिका, **पीडिकायुक्तज्वर**—मसूरिका गोमसूरिका, लघुमसूरिका रोमान्तिका, लोहितज्वर, लघुरोमान्तिका, **श्वासमार्ग की संक्रामकव्याधियां**—श्वसनकज्वर, तीव्रकास, प्रणालीय फुप्फुस-प्रदाह, वातश्लेष्मिकज्वर, काली खांसी, **क्षयरोग**—क्षयसार्वत्रिक, फुप्फुसीय (राजयक्ष्मा) तीव्रखण्डीय फुप्फुस प्रदाहिका, प्रणालीय, जीर्ण, सौत्रिकतन्तुमय, आन्त्रिक, उदरकला, क्षयजीर्णगण्डमाला, अपची, शीर्षावरणशोथ, अन्यस्थानों का **वातसंस्थानों के संक्रामकरोग**—शीर्षसौषुम्न ज्वर, अन्तः सौषुम्नशोथ तन्द्रात्मिकशोर्द, अलर्कविष, पिटकरशना, **स्थानिकसंक्रामकज्वर**—धनुर्वात, रोहिणी, पाषाणगर्दभ अग्निविसर्प, आमवातिकज्वर, संधिवात, तीव्रगलग्रन्थि-शोथ, **संसर्गिकरोग**—उपदंश, भृशोष्णवात, कुष्ठ **सूक्ष्म प्रणालियों द्वारा उत्पन्न होनेवाले रोग**—महागुदा, अन्त्रदा, चुरवे, उदरावेष्टा, टीनिया सौलियम, टीनिया सैजीनेटा, टीनिया लेटा, टीनिया एकीनोकाकस, फिलेरिया, बार्वी, कशाकार, **अंशुघात-मधुमेह**—कारणसम्प्राप्ति, लक्षण, उपद्रव, रोग मीमांसा, चिकित्सा, आहार, इनसुलीन, उपद्रव, वातरक्त, **बिटामीन तथा उनके अभाव से उत्पन्न रोग**—बिटामीन परिचय, ए, बी, बी१, बेरी-बेरी, बिटामीन बी२ कम्पलेक्स, पैलेग्रा, बिटामीन सी, स्कर्वी शैशव, बिटामीन डी, फक्करोग, बाल्यावस्था का रिकिट्स प्रौढावस्था का रिकिट्स बिटामीन ई, बिटामीन के, भोज्यपदार्थों की तालिका, परिशिष्ट।

सर्व प्रकार की पुस्तक मिलने का एकमात्र स्थान—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, नेपाली खपरा, बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर का अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल २॥) से २५) रु० तक। टेवा २) रु०। शुद्ध विवाह-मुहूर्त प्रश्न और ग्रह-मेलापक (कुण्डली मिलान) की फीस २) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुंडली बनाने की फीस ७) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) से १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारम्भ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहाँ तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। बैरंग-पत्र वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के चांस- अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ, रूई के २१८ चांस पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिए और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें तो वह जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना, अम्बाला के मध्य सरहन्द जंक्शन से लारी [illegible] रहती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक, [illegible] ३ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर से [illegible] दिन में एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड भवन), रेलवे स्टेशन के पास है। निवेदक—मैनेजर, पं० वंशीधर शास्त्री।

पता—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिषकार्यालय,
कुराली (पूर्वी पंजाब)

इस पुस्तक में प्रत्येक नक्षत्र के चरणानुसार बालक व बालिकाओं के अनेकों शास्त्रशुद्ध व सुन्दर नाम लिखे गये हैं। बाल बच्चोंवाले सद्गृहस्थों व ज्योतिषियों कर्मकाण्डियों के बड़े काम की वस्तु है। आज तक ऐसी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी, शास्त्रमर्यादानुसार इस पुस्तक की सहायता से बच्चों का नाम रखने से उनकी आयु वृद्धि के साथ बुद्धि का विकास भी होता है तथा संसार में भी रोशन होता है, हजारों बढ़िया नाम आपको इसमें मिलेंगे। परिवर्द्धित संस्करण यंत्रस्थ है मूल्य १॥)

पता—मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस।

विवाहित पुरुषो-

यदि आप को किसी प्रकार की भी शारीरिक व मानसिक रोग है और स्त्री के कारण आपका सुख दुःख में परिणित हो गया है तो जवाबी लिफाफा भेज कर पत्र व्यवहार करें।

पता—श्री पं० वंशीधर शास्त्री, पो०—कुराली, जि०—अंबाला (पंजाब)

विज्ञानज्योति :—

इस मासिक पत्र में ज्योतिषशास्त्र संबंधी गवेषणापूर्ण ठोस सामग्री तथा व्यापारी वर्ग के लाभार्थ महर्घ, समर्घ, मुहूर्त, ज्योतिष गणित और विज्ञान के चमत्कारादि अनेक अत्युपयोगी विषय छपते हैं जो देखने ही योग्य हैं। वार्षिक चन्दा ५।≈)

श्री पं० विशुद्धानन्द जी ज्योतिषाचार्य, विज्ञानज्योति कार्यालय,
मु० पो० खुरजा (यू० पी०)

जीवन से निराश रोगियों—

यदि आप अपने रोग को असाध्य समझकर जीवन से निराश हो चुके हों तो योगी सेवा आश्रम में पधारें या पत्र व्यवहार करें। योगीराज श्रीमनोहर लाल जी तथा श्रीशिवनाथ जी योगी की कृपा से प्रतिमास सहस्रों रोगी स्वास्थ्यलाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस औषधालय का लाभ गरीब रोगियों पर खर्च होता है।

पता—सेवायोगी आश्रम धर्मार्थ औषधालय, मु. पो.—बराड़ा, जि.—अंबाला (पूर्वी पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एलोपैथिक गाइड

तृताय संस्करण !! (ले०—डा० रामनाथ वर्मा) परिवर्द्धित ।

पुस्तक क्या है ! गागर में सागर । आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिंदी भाषा राष्ट्र भाषा बन गई है । आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आ सके और वह रोगों का ऐलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें । इसी कमी का अनुभव करते हुए डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है । हमारा तो यह दावा है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखकर अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा । डाक्टरजी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अंगों का वर्णन तथा उनका कर्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम टीका लगवाना; बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें रक्त सञ्चार, नाडी परीक्षा रक्तभार, लसीका वाहिनियां, प्रणाली विहीन ग्रंथियां, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रसायनिक संगठन, भोजन बनाने के संबन्ध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न २ प्रकार के खाद्यपदार्थ, भोजनसे रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिमाण, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डुरोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नारी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वाय, टाइफाइड, रोगियों के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन (त्वचा भेद चिकित्सा इसमें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन २ बीमारियों में और कौन २ से) वक्सीन सरेवी सीरम चिकित्सा मुख्य मुख्य रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिक्टस, लिनिमेन्ट्स, लोशन्स, मिक्सचर्स, आइटमेन्टस, पिग्मेन्ट्स् पल्व पाउडर्स रोग और उनमें प्रयोग किये जानेवाले इंजेक्शन्स और पेटन्ट औषधियां कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनीसिलीन, सल्फानेमाइड आदि उनके गुण, दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियां हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषय इस पुस्तक में वर्णन कर दिये हैं । मूल्य ८) रु०

अर्घ-मार्तण्ड

[तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ]

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रूई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तैल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूं, चावल, खली, बिनौला, लकडी, रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरी चान्सों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वह सब तेजी मन्दी के अनुभवसिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं । ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी छपा हुआ नहीं मिलेगा । यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मँगाकर देखने में देरी न करें ग्रंथ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मीप्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिये हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है । व्यापारियों का तो यह जीवन है । ऐसे अनुपमग्रंथ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है व्यापार में हानि उठाये हुए व्यापारी भी यदि इस ग्रंथ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे इस में संदेह नहीं । यह सदैव काम आनेवाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है, मूल्य १०) रुपये । यह पृष्ठों का मूल्य नहीं, गुण की भेंट मात्र है ।

स्तव सार्वभौम—इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियां दूर होकर सर्व शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं । निष्काम पाठ करने से अत्युत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होती है । प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की बलायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था । मूल्य ।)

मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस ।

किनारी बाजार—देहली

बाँकीपुर—पटना

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible]

[illegible]

लग्न कुण्डली

लं ९ - २१. २८ - २
सू. ४. २१. ४१ - २८
चं. ९. २१. ३३. ३१
बु ४. २२. ३३. ४१
शु १ - २१. ४५ - २८
बृ ४. २६ - २२. ४१
श २. ३३. ३३. २८
रा ६. ३२ - २० - ३२
के २. २८. ३३ - ४८

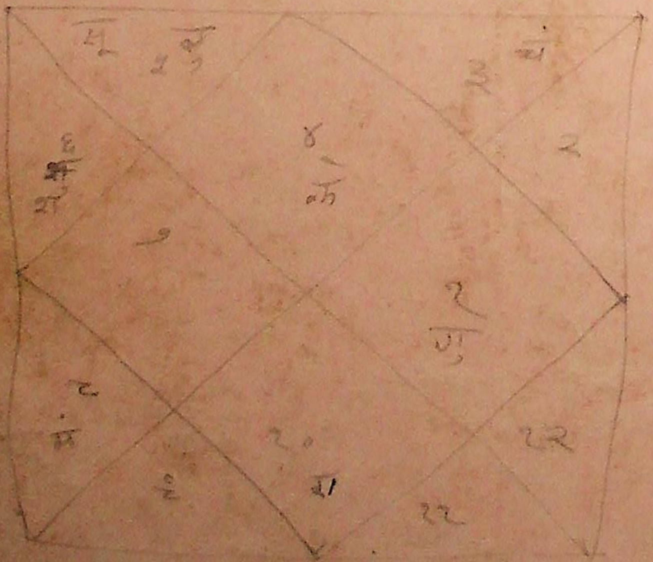

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Pros./Serial Nos.

Subject.

Personal file of Mr. Brajendra Lal Datta (Lower Dn. Clerk)

B-4-37

Previous References.

Service book opened

Later References.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री आश्विन वदि अमावस्या शनिवार तारीख २६ सितम्बर १९५२ को
रात्रि को १० $\frac{१}{२}$ बजे उर्मिला के चौथी लड़की हुई
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुणी
इष्ट ४०।।३६ .. चरणं उत्तराफाल्गुणी का तीसरा चरण॥
जन्म नाम · टी शकुन्तला जन्म कुण्डली

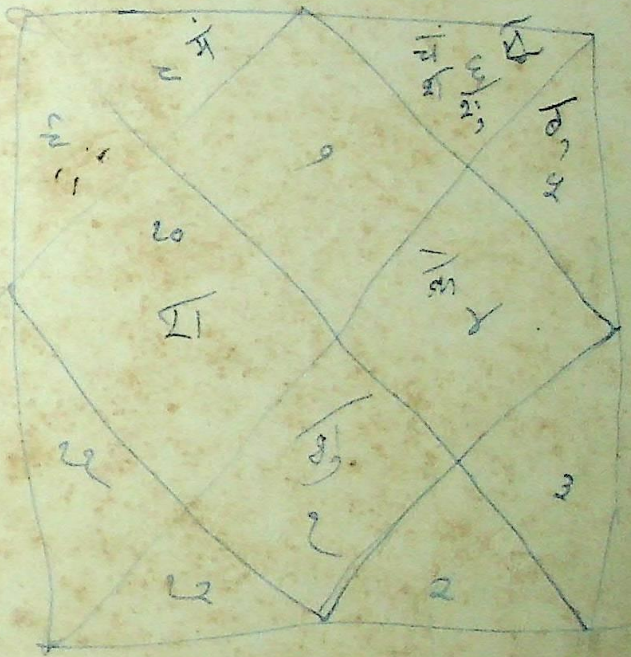

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection